ज्ञानगंगा

[भाग एक]

*

नारायणप्रसाद जैन

भारतीय ज्ञानपीठ
प्रकाशन

लोकोदय ग्रन्थमाला ग्रन्थाक-११
सम्पादक एवं नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन

Lokodaya Series Title No 11

JNANGANGA
(Quotations)

NARAYANPRASAD JAIN

Bharatiya Jnanpith Publication

First Edition 1951
Third Edition 1967

Price Rs 6 00

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

प्रधान कार्यालय
९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता २७

प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी ५

विक्रय-केन्द्र
३६२०।२१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली ६

प्रथम सस्करण १९५१
तृतीय सस्करण १९६७
मूल्य ६ ००

सन्मति मुद्रणालय,
वाराणसी-५

परम स्नेहमयी भाभी

श्रीमती सौभाग्यवती ज्ञानदेवी 'विदुषी'

और

परम श्रद्धेय भाई साहब

गगाप्रसाद जैन एम० ए०, एल०-एल० बी०

को

सादर सप्रेम समर्पित

भूमिका

●

श्री नारायणप्रसाद, 'साहित्यरत्न', हिन्दीके उन इने-गिने लेखकोंमें-से हैं जो साहित्यको साधनाका मार्ग मानकर चलते हैं और जिनकी सफलताका अनुमान विज्ञापनकी बहुलतासे न लगाकर सम्पर्ककी घनिष्ठतासे ही लगाया जा सकता है। साहित्यके अतिरिक्त यदि और किसी दिशामें उनकी रुचि हुई है तो वह है राष्ट्रीय कार्य और लोक-सेवा। इस प्रकारका कार्यक्षेत्र वही व्यक्ति चुनते है जिन्हे जीवनके साधनोको जुटानेकी अपेक्षा साधनाकी उपलब्धिमे अधिक सन्तोष और सुख मिलता है। सुकुमार प्राण, भावुक मन और कर्मठ साधनासे जिस व्यक्तिने जीवनको देखा और परखा है उसकी अन्तदृष्टि कितनी निर्मल और निखरी हुई होगी। श्री नारायणप्रसादकी इसी अन्तदृष्टि और परिष्कृत रुचिने उन्हे प्रेरणा दी है कि उन्हें अपने जीवनव्यापी अध्ययनमे जहाँ कहींसे जो सत्य, शिव और सुन्दर प्राप्त हो वह यत्नसे सग्रह करके लोकजीवनके लिए वितरित कर दें।

भारतीय ज्ञानपीठसे प्रकाशित 'मुक्तिदूत'के ख्यातनामा साहित्य-शिल्पी श्री वीरेन्द्रकुमारने हमे सूचना दी थी कि श्री नारायणप्रसादजीके पास ज्ञानोक्तियो, लोकोक्तियो और सुभाषितोका एक बृहत् सग्रह है जिसे उन्होने परिश्रमसे सकलित किया है और जिसका प्रकाशन ज्ञानपीठके लिए उपादेय होगा। श्री नारायणप्रसादजीको हमने एक पत्र लिखकर पाण्डुलिपि भेज देनेका आग्रह किया। जब पाण्डुलिपि प्राप्त हुई तो कागजोका पुलिन्दा और कतरनोका ढेर देखकर हम अवाक् रह गये। कितने प्रकार और कितने ही आकारके कागजोमें अनेक प्रकारकी स्याहीसे लिखे गये हजारो ज्ञान-वाक्य सगृहीत थे, बिना विषय-क्रम और बिना योजनाके। उस मूल रूपमे सग्रह अपने जन्म और विकासकी कहानी अपने-आप ही कह रहा था। एकके बाद

दूसरी और दूसरीके बाद तीसरी सूक्ति किस प्रकार कब मिली और किस 'मूड' (mood = मन स्थिति) में लेखकने उसे लिपिबद्ध किया यह स्पष्ट झलक रहा था। संग्रहकी उस क्रम-हीनतामें भी एक विशेष आकर्षण और प्रभाव था।

'ज्ञानगंगा' की मूल पाण्डुलिपिमें आरम्भिक सूक्तियोंका क्रम इस प्रकार था

(१) हे प्रभो, मुझे अभीतक प्रकाश नहीं मिला, तो क्या मैं केवल कवि बनकर रह जाऊँ ? — सन्त तुकाराम

(२) पापकी सारी जड खुदीमें है। — गीता

(३) अतिशयोक्ति वह सत्य है जो बौखलायी हुई हालतमें है। — खलील जिब्रान

(४) अपना उल्लू सीधा करनेके लिए शैतान भी धर्मशास्त्रके हवाले दे सकता है। — शेक्सपीयर

(५) सच तो यह है कि गरीब हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हो सकता है लेकिन चरित खोकर धनी बने हुए हिन्दुस्तानका स्वतन्त्र होना मुश्किल है। — गान्धी

(६) अपने प्रेममें ईश्वर सान्तको चूमता है और आदमी अनन्तको। — टैगोर

(७) जिसे दोषविहीन मित्रकी तलाश है वह मित्रविहीन रहेगा। — एक तुरकी कहावत

(८) मायाके दो भेद हैं—अविद्या और विद्या। — रामायण

(९) जोश—आदि गरम, मध्य नर्म, अन्त सर्द। — जर्मन कहावत

(१०) स्याहीकी एक बूंद दस लाख आदमियोंको विचारमग्न कर सकती है। — बायरन

(११) शब्दोका अर्थ नही, अनुभव दखना चाहिए। — शीलनाथ

इन सूक्तियोको पढकर पता चलता है कि मनुष्यके जागरित मनने पृथ्वीके विभिन्न खण्डोमे रहकर अनन्त युगो तक जीवनसे जूझकर और जीवनको अपनाकर अपने अनुभव-द्वारा सत्यको किस प्रकार प्राप्त किया है और उसे किस अमर वाणीमे व्यक्त किया है। यह मानव-सन्ततिका अक्षय भण्डार और अखण्ड उत्तराधिकार है। यहाँ देश, काल, जाति और भाषाकी सीमाओसे परे सारा विश्व ज्ञानके प्रकाशसे उद्भासित, सत्यके बलसे अनुप्राणित और सौन्दर्यके आकर्षणसे एकाकार प्रतीत होता है। ज्ञानकी यह कितनी बडी करामात है कि वह मानवमात्रमे अभेद ही उत्पन्न नही करता, जीवनकी मौलिक एकताका आधार साक्षर-वाणीमे व्यक्त करता है और इतिहासके पृष्ठोपर अमरत्वकी छाप लगा देता है।

सग्रहकी समस्त सूक्तियोको विषयके अनुसार अकारादि क्रमसे व्यवस्थित कर दिया गया है। उदाहरणार्थ, उपर्युक्त ११ सूक्तियोको अकारादि क्रमसे 'ज्ञानगगा' की विभिन्न तरगोके अन्तर्गत क्रमश इन विषयशीर्षकोमे सकलित किया गया है

१ कवि, २ पाप, ३ अतिशयोक्ति, ४ धर्मशास्त्र, ५ चरित्र, ६ चुम्बन, ७ मित्र, ८ माया, ९ जोश, १० स्याही और ११ अनुभव।

उक्त विषयोपर अन्य जितनी सूक्तियाँ मिली है सब विषयवार इन्ही शीर्षकोके अन्तर्गत दे दी गयी है। फिर भी विभाजनमे विषयकी दृष्टिसे पुनरावृत्ति हुई है क्योकि एक ही विषयसे सम्बन्धित सूक्ति उस सूक्तिमे प्रयुक्त प्रमुख शब्दके आदि अक्षरके अनुसार अन्य तरगमे सम्मिलित करनी पडी है।

ऊपर जिन ११ सूक्तियोको उद्धृत किया गया है उनपर दृष्टि डालनेसे मालूम होगा कि प्राय सूक्तियाँ मूलसे या मूलके अन्य अनुवादसे अनूदित है। इस प्रकारकी सूक्तियोका अनुवाद बहुत कठिन होता है क्योकि मूल

सूक्ति अपनी भाषा और शब्दयोजनामें इतनी चुस्त, सीधी और मुहावरे-दार होती है कि इन्हीं गुणोंके कारण उसका प्रभाव टिकाऊ बनता है। भाषा और मुहावरेकी इस शक्तिको अनुवादमें लानेके लिए अनुवादकको कभी-कभी एक-एक शब्दके पीछे घण्टों मगज मारना पड़ता है और फिर भी ऐसा होता है कि पूरा प्रयत्न करनेपर भी सफलता नहीं मिलती अथवा लेखकका मन नहीं भरता। 'ज्ञानगंगा'के संकलनकी यह खूबी है कि श्री नारायणप्रसादने अनुवादकी भाषाको रवानी दी है और मुहावरेकी शक्तिको कायम रखनेकी कोशिश की है। उदाहरणके लिए, शेक्सपीयरकी उपर्युक्त प्रसिद्ध सूक्ति 'Even the Devil can quote scriptures' का अनुवाद इससे अच्छा और क्या हो सकता था ? 'अपना उल्लू सीधा करनेके लिए शैतान भी धर्मशास्त्रके हवाले दे सकता है।' माना कि अनुवादमें मूलकी सूत्रता (aphorism) और करारापन (crispness) नहीं है पर उसका प्राण और मुहावरा जरूर है। इसी प्रकार खलील जिब्रानकी सूक्ति 'अतिशयोक्ति वह सत्य है जो बौखलायी हुई हालतमें है' में अनुवादके लिए 'बौखलायी हुई हालत' की शब्दयोजना सुन्दर और सप्राण है। अतिशयोक्तिका यह सहज चित्रांकन अन्य प्रकारसे कठिन था। लेखकने कहीं-कहीं धर्मशास्त्रके गूढ़ और परम्परागत शब्दोंका अनुवाद उर्दू, फारसी अथवा 'हिन्दुस्तानी'के अनेक ऐसे शब्दोंसे किया है कि पढ़नेपर अटपटा लगता है पर जैसे बिजली-सी कौंध जाती है और गूढ़ अर्थ उजागर हो जाता है।

इन सूक्तियोंको पढ़ते हुए पाठकको अवश्य सोचना होगा कि जिस सूक्तिके अनुवादके पीछे इतना श्रम और चिन्तन है उस मूल सूक्तिके जन्मके पीछे जन्मदाताके जीवनका कितना विशाल अनुभव और मनन छिपा हुआ है। सूक्तिकार द्रष्टा, मनीषी, साधक और कवि सब कुछ एक साथ है और शायद फिर भी वह कहीं-कहीं निपट निरक्षर भी हो सकता है। पाठककी जिम्मेदारी है कि वह प्रत्येक सूक्ति और सुभाषितको ध्यानसे

भूमिका

पढ़े, अर्थपर विचार करे और अर्थके पीछे वक्ताका जो ज्ञान, अनुभव तथा साधना है उसको, उसके अंशमात्रको, आत्मसात् करनेका प्रयत्न करे। युधिष्ठिरने गुरुकी एक सूक्ति, एक शिक्षा, 'सत्य वद' को ही सीखनेमे सारा जीवन लगा दिया था, किन्तु फिर भी महाभारतमे अश्वत्थामाके प्रसगमे 'नरो वा कुजरो वा' के असत्य जालमे फँस ही गये थे। इसलिए, समूची पुस्तकको कहानी या लेखकी तरह पढ डालनेका प्रयत्न करना 'ज्ञानगंगा' के साथ और स्वय अपने साथ अन्याय करना होगा। महात्मा भगवानदीन-जीने आपको सावधान कर दिया है—'देखिए'!

ज्ञानपीठकी इस लोकोदय ग्रन्थमालाका मुख्य उद्देश्य इस प्रकारके सास्कृतिक ग्रन्थोका प्रकाशन है जो लोकजीवनको चेतना और गति दें, जो साहित्यके जागृत और सजीव रूपका प्रतिनिधित्व कर सकें। 'ज्ञानगगा' इसी साहित्य-शृखलाकी एक कडी है।

आशा है 'ज्ञानगगा'की अक्षय धार पाठकोके मनको पावन और हृदयको शीतल करेगी।

नायं प्रयाति विकृतिं विरसो न यः स्यात्
न क्षीयते बहुजनैर्नितरां निपीतः।
जाड्यं निहन्ति रुचिमेति करोति तृप्तिं
नूनं सुभाषितरसोऽन्यरसातिशायी॥

— लक्ष्मीचन्द्र जैन
सम्पादक : लोकोदय ग्रन्थमाला

डालमियानगर,
वसन्तपचमी,
११ फ़रवरी '५१

दो शब्द

चक्रवर्तीकी फानी सम्पदा और इन्द्रलोकके क्षणिक भोग मिलना आसान है, मगर अपने शाश्वत सच्चिदानन्द स्वरूपको पा लेना बड़ा मुश्किल है। सारी कलाएँ व्यर्थ हैं, तमाम ज्ञान-विज्ञान फिजूल हैं, अगर वे इनसानको आत्म-दर्शनकी ओर नही ले जाते।

आत्म-ज्ञान होता है निर्मल अन्त करणवालोको। गुस्सा, घमण्ड, छल-फरेब, अय्यारी-मक्कारी, लोभ-लालच, भय-शोक, राग-द्वेष, आशा-तृष्णा, कामना-वासना, रज-फिकर वगैरह गन्दगियोमे जिनका चित्त लिपटा हुआ है उनपर क्या खाक हकीकत रोशन होगी।

जिन दिव्य हस्तियोने अपने आत्माओमे कर्म-मल धो डाला है उन्ही-की अमृत-वाणी इस दुनियाके सन्तप्त जीवोको शान्ति देनेके लिए 'ज्ञान-गगा' बनकर उनके आँगनमे बह निकली है।

तकदीरवाले! इस ज्ञान-गगामे तैरता चल, यह तुझे दु खी दुनियामे दूर अनन्त सुखके दिव्य लोकमे पहुँचा देगी।

—नारायणप्रसाद जैन

देखिए ।

इस 'ज्ञान-गगा' मे पैरिए भी धीरे-धीरे, नाव चला बैठे तो कुछ हाथ न लगेगा । मोटर-बोटकी तो सोचना तक नही । इस गगामे पूरब-पच्छिम दोनो ओरसे पग-पगपर आकर नयी-नयी विचार-धारें मिली हे, और हर धार कहती है 'मुझे देखिए, मेरा पानी चखिए, बन सके तो मुझमे नहाइए' । धार तो यह कहती हे, पर मै कहता हूँ—'नहाइए और हलके हो जाइए' । हो सकता है किसी धारमे नहाकर आप अपने-आपको इतना महसूस करने लगें कि आपको लगने लगे आपके पाँव जमीनमे उठ जा रहे हे ।

यह कैसी गगा हे कि साथ चल सकती हे ! ट्रकमे समा सकती हे ! जिस देशमे गागरमे सागर रह सकता हो वहाँ गगा गागरमे क्यो न समा सके ?

इस सुभीतेस जिस विचार-धारमे आप नहाना चाहे चट नहा सकते है । इस किताबको, सग्रह करनेवाले श्री नारायणप्रसादजीने, बहुत बडे कामकी चीज बना दिया है ।

इसे कोई अनपढ भी खरीदकर घरमे रख ले तो टोटेमे नही रह सकता । कभी-न-कभी किसीके काम आ ही जायेगी, क्योकि यह सदा नयी बनी रहनेवाली किताब है । गगाजलकी तरह इसका बानी-जल हमेशा जैसेका तैसा बना रहता है, उपयोगितामे रत्ती-भर कमी नही आती ।

यह तो विचारोका खज़ाना है, कभी न घटनेवाला खज़ाना ह, सबके कामका खज़ाना हे । क्या विद्यार्थी, क्या पुजारी, क्या राजनेता, क्या

सिपाही, क्या बनिया, क्या कारीगर,—सभीके कामका खजाना है। लडका पढने लगे तो हरज नही, लडकी पढने लगे तो हरज नही। समझमे आ जाये तो नफा-ही नफा।

इस किताबमे आप सन्तोसे मिलिए, महात्माओसे मिलिए, राज-नेताओसे मिलिए, बहादुर सूरमाओसे मिलिए, नगे फकीरोसे मिलिए, कवियोसे मिलिए, और फिर चाहे नर-नारायनोमे मिलिए, और पूजाके योग्य देवियो और नारियोसे मिलिए।

जरूरत तो इसकी बहुत दिनोसे थी, अब आयी अभी सही।

यह ठीक है कि यह आपकी पूरी भूख न मिटा सकेगी पर ज्ञानकी भूख मिटाना ठीक भी नही। और फिर ज्ञानकी भूख मिटा भी कौन सकता है?

— *भगवानदीन*

४० ए, हनुमान रोड,
नयी दिल्ली

अनुक्रम

अनुक्रम

अनुक्रम

अनुक्रम

अनुक्रम

अनुक्रम

अनुक्रम

अकर्मण्यता

नाचीज बननेका उपाय कुछ नही करना है । – [illegible]व

प्रकृति अपनी उन्नति और विकासमे रुकना नही जानती, और हर अकर्मण्यतापर वह अपने शापकी छाप लगाती जाती है । – गेटे

अंकुश

दूसरोंका डाला अंकुश गिरानेवाला है और अपना बनाया उठानेवाला है । – गान्धी

अकेला

अकेला ही जीवन व्यतीत कर, और किसीपर भरोसा न कर—मेरा इतना ही कहना काफी है । – एक कवि

गरुड अकेले उड़ते है भेडें ही है जो हमेशा भीड लगाती है ।

– सर फिलिप सिडनी

जिसे ईश्वरने संसारमे अकेला बनाया है, धन-वैभव नही दिया है, सुखमे प्रसन्न होनेवाला और दुःखमे गले लगाकर रोनेवाला साथी नही दिया है, संसारके शब्दोमे जिसे उसने 'दुखिया' बनाया है, उसके जीवनमे उसने एक महान् अभिप्राय भर दिया है । – रामकृष्ण परमहंस

एक साधुसे किसीने पूछा कि तू अकेला क्यो बैठा है ? जवाब दिया कि पहले तो अकेला न था, मालिक ध्यानमे साथ था, लेकिन अब तूने आकर अकेला कर दिया । – अज्ञात

जगत्मे विचरण करते-करते अपने अनुरूप यदि कोई सत्पुरुष न मिले तो दृढताके साथ अकेला ही विचरे, मूढके साथ मित्रता अच्छी नही । – बुद्ध

जिसे अकेले भी अपने निर्दिष्ट पथपर चलनेकी हिम्मत है वही सच्चा

बहादुर है। निर्दिष्ट पथपर अकेला अन्त तक वही जा सकता है जिसका पथ सत्पथ है और जिसे सत्पथ ही प्रिय है। — हरिभाऊ उपाध्याय

अक्ल

उसीकी अक्ल ठीक या कायम रह सकती है जिसकी इन्द्रियाँ उसके काबू-मे है। — गीता

अक्लमन्द

अक्लमन्द आदमी बोलनेसे पहले सोचता है, बेवकूफ बोल लेता है और तब सोचता है कि वह क्या कह गया। — फ्रेंच कहावत

जैसे सुनार चाँदीके मैलको दूर करता है, उसी तरह अक्लमन्दको चाहिए कि अपने पापोको हर वक्त थोडा-थोडा दूर करता रहे। — बुद्ध

अक्लमन्दको इशारा और बेवकूफको तमाचा। — हिब्रू कहावत

अखबार

मानसिक अनुशासनकी दृष्टिसे अखबार पढना हानिकर है। मनके लिए दस मिनिटमे चालीस बातें सोचनेसे बदतर क्या हो सकता है? — मजर

धन्य भाग्य है उनके, जो अखबार नही पढते, क्योकि वे प्रकृतिको देखेंगे और प्रकृतिके जरिये परमात्माको। — स्वामी रामतीर्थ

मैं अखबार यह जाननेके लिए पढता हूँ कि ईश्वर दुनियापर किस तरह हुकूमत करता है। — जॉब न्यूटन

अगर

एक 'अगर' से आदमी पैरिसको बोतलमें बन्द कर सकता है।

— फ्रेंच कहावत

अचरज

कल तो एक आदमी था, और आज वह नहीं है। दुनियामें यही बड़े अचरजकी बात है। —तिरुवल्लुवर

अच्छा

मनुष्यको क्या अच्छा लगेगा, इसका विचार करनेसे पहले ईश्वरको क्या अच्छा लगेगा, इसका विचार करो। — अज्ञात

अच्छाई

जीवनका एक रहस्य उसमें अच्छाई देखना है। — अज्ञात

अच्छा-बुरा

न कुछ 'अच्छा' है, न कुछ 'बुरा'। जिस चीज़में पवित्रात्मा 'अच्छाई' निकाल देखता है, उसीमें पतितात्मा 'बुराई'। — अज्ञात

अच्छी

बुरीसे अच्छीका और भी ख़याल रखना चाहिए, वह हँसते-खेलते मारती है, मालूम भी नहीं पड़ने देती कि हम फँसे हुए हैं! — शीलनाथ

अत्याचार

तुम पहले तो आदमीको खाईमें धकेल देते हो और फिर उनसे कहते हो कि 'जिस हालतमें ईश्वरने तुझे डाल दिया है उसमें सन्तुष्ट रह'।

— रस्किन

आज़ाद देशमें चीख़-पुकार ज्यादा होती है दुःख कम, अत्याचारी राज्यमें शिकायत न-कुछ होती है लेकिन दुःख ज्यादा। — कानो

अगर तूने किसीपर अत्याचार किया हो, तो उसके द्रोहसे बच, क्योंकि जो आदमी काँटे बोता है वह अंगूर नहीं काटा करता। — अज्ञात

अत्याचारी

जिसने किसी ऐसे आदमीपर अत्याचार किया है, जिसका ईश्वरके सिवा कोई और सहायक हो नहीं है, तो उसे चाहिए कि सचेत रहे और अपने अत्याचारका फल शीघ्र न पानेसे भ्रममें न पड़ जाये।

— इस्माईल-इब्न-अबूबकर

कोई अत्याचारी ऐसा नही है कि उसे भी किसी अत्याचारीसे पाला न पड़े। — अज्ञात

गुलामोकी अपेक्षा अत्याचार करनेवालोकी स्थिति अधिक खराब होती है। — गान्धी

अत्याचारीसे अधिक अभागा कोई नही है। विपत्तिके दिन उसका कोई साथ नही देता। — अज्ञात

अत्याचारी जब चुम्बन लेने लगे, वह समय खौफ खानेका है। — शेक्सपीयर

अत्युक्ति

अत्युक्ति झूठकी सगी रिश्तेदार है और लगभग उतनी ही दोषी। — बैलन

अति

किसी भी बातका अतिरेक न होने देनेके प्रति बडी खबरदारी रखनी जरूरी है। — विवेकानन्द

अति प्रेम

प्रिय जनोंसे भी मोहवश अत्यधिक प्रेम करनेसे यश चला जाता है और दुनियामे बदनामी होती है। — रामायण

अतिथि

निकम्मे, बहुभोजी, लोक-द्वेषी, अति मायाचारी, बदनाम, देश-कालको न जाननेवाले और बुरे वेषवालेको घरमे न ठहरावे। — विदुर

अतिथि जबतक मेरे घरमे रहता है, तबतक मै निस्सन्देह उसका दास हूँ। इसके अलावा किसी और अवसरपर मेरी टेक दासत्वकी नही है। — अल-मुकन्नआ-उल-किन्दी

अतिथिको अन्न दो। — श्री ब्रह्म चैतन्य

अतिथि जिसका अन्न खाते है उसके पाप धुल जाते हैं। — अथर्ववेद

अतिथि-सत्कार

अतिथि-सत्कारसे इनकार करना ही सबसे ज्यादा गरीबीकी [illegible] है।

— तिरुवल्लुवर

अति भोजन

अति खाना और श्मशान जाना। — मराठी कहावत

जब साधक अधिक खाने लगता है तब देवता रोने लगते है। — अज्ञात

अतिशयोक्ति

अतिशयोक्ति भी असत्य है। — गान्धी

जो अपनी बातको बढा-चढाकर कहते हैं वे अपने-आपको छोटा बनाते है। — सिमन्स

अतिशयोक्ति वह सत्य है जो कि बौखलाई हुई हालतमें है।

— खलील जिब्रान

अतीत

अतीतकी चिन्ता मत करो, उसे भूल जाओ, बीती हुई बातमें चिन्ता-से सुधार नही हो सकता। — जेम्स डगलस

अतृप्त

धन, जीवन, स्त्री और भोजनवृत्तिमें अतृप्त लोग नष्ट हुए हैं, नष्ट होते है और नष्ट होगे। — अज्ञात

अथाह

'समुद्रसे भी अथाह क्या चीज है?' 'दुर्जनोंका दुश्चरित'। — अज्ञात

अर्थ

तुम भगवान् और कुबेर दोनोकी उपासना एक साथ नही कर सकते।

— मैथ्यू

अर्थ-सिद्धि

संसारमे भलीभाँति उसीके अर्थकी सिद्धि होती है जो दूसरोकी सहायताका भरोसा न रखकर फुर्तीके साथ अपने काम आप करता है। – अज्ञात

अर्थशास्त्र

'लोहा और सोना समान है' यह सच्चे अर्थशास्त्रका सूत्र है। – विनोबा

अदब

जो अपना अदब करते है उनका सब अदब करेंगे ही। – बोकन्सफील्ड

अदया

जब तुम किसी दुर्बल मनुष्यको सतानेके लिए उद्यत होओ, तो सोचो कि अपनेसे बलवान् मनुष्यके आगे जब तुम भयसे काँपोगे तब तुम्हे कैसा लगेगा। – तिरुवल्लुवर

लद्दू बैल और गधे लोगोको सतानेवाले इन्सानोसे कही अच्छे है – शेख सादी

अदुःख

त्रिदोषके अदुःखसे ज्वरका दुःख अच्छा। अज्ञानीके आनन्दसे ज्ञानीका दुःख अच्छा। – अज्ञात

अद्वैत

कर्त्तव्य और आनन्द एक रूप होना यह अद्वैतकी एक व्याख्या है, परन्तु ऐसा जबतक नही होता, तबतक कर्त्तव्यसे चिपटे रहनेमे ही कल्याण है। – विनोबा

निरभिमानताका अभिमान जीतना ही अद्वैत है। – विनोबा

अद्वैतवाद

अद्वैतवाद माने अचूक द्वैतसिद्धि। – विनोबा

अधम
अधम कौन ? जो ईश्वरके मार्गका अनुसरण नहीं करता। — जुन्नुन

कोई धनहीन मनुष्यको अधम समझता है, कोई गुणहीन मनुष्यको अधम मानता है, लेकिन तमाम वेद-पुराणोंको जाननेवाले व्यासऋषि नारायण-स्मरण-हीन मनुष्यको अधम कहते है। — अज्ञात

अधर्म
हे लक्ष्मण ! अधर्मसे इन्द्रपद भी मिले तो भी मैं उसकी इच्छा नहीं करता। — रामायण

अध्यवसाय
सतत अभ्याससे दुःसाध्य चीज भी मिल जाती है, दुश्मन दोस्त हो जाते है, विष भी अमृतका काम देने लगता है। — अज्ञात

अति वर्षासे संगमरमर तक घिस जाता है। — शेक्सपियर

महान् कार्य शक्तिसे नही, अध्यवसायसे किये जाते है। — जानसन

हो सकता है तुम्हारा मोती एक और गोतेका इन्तज़ार कर रहा हो। — अज्ञात

अध्यात्म
सर्वोत्तम अध्यात्म, दिव्य ज्ञानकी अपेक्षा दिव्य जीवन है। — जैरेमी हेलर

अर्ध-सत्य
वह झूठ जो अर्धसत्य है हमेशा सबसे काला झूठ है। — टैनीसन

अधिकार
ईश्वरनिर्मित हवा-पानीकी तरह सब चीज़ोंपर सबका समान अधिकार रहना चाहिए। — गान्धी

ज्ञानियोका अज्ञानियोपर एक हक है; वह है उन्हे सिखानेका अधिकार। – एमर्सन

अधिकार दिखानेसे ही अधिकार सिद्ध नही हो जाता। – टैगोर

अधिकार बहुत बुरी चीज है। – गान्धी

कोई शख्स जिसे अधिकार दे दिया गया है, अगर वह सत्य-प्रेम और सेवा भावसे सरशार नही है, उसका दुरुपयोग ही करेगा, ख्वाह वह राजकुमार हो, या जनतामे-से कोई। – फौण्टेन

अधोगति

विषय-चिन्तनसे आसक्ति, आसक्तिसे कामना, कामनासे क्रोध, क्रोधसे मोह, मोहसे स्मृतिभ्रम, स्मृतिभ्रमसे बुद्धिनाश और बुद्धिनाशसे अधोगति पैदा होती है। – गीता

अनजान

अनजान होना इतने शर्मकी बात नही, जितना सीखनेके लिए तैयार न होना। –फ्रेंकलिन

मैने अपने जीवनमे यह बहुत देरमे जाना कि 'मै नही जानता' कहना कितना अच्छा है! – सामरसेट माम

अन्त

कितनी दर्दनाक बात है कि दुनिया छोडनेका वक्त आने तक हम इस बातका अहसास न करें कि हम इस दुनियामे किसलिए आये थे? – वार्लसिघम

अन्तर्नाद

मै मानता हूँ कि सत्यका तादृश ज्ञान, सत्यका साक्षात्कार अन्तर्नाद है। – गान्धी

अन्तःप्रेरणा

तुम मेरे पीछे क्यो पड़े हो ? क्या तुम नहीं जानते कि मैं तुम्हारो अभिलाषाओसे जुदी प्रेरणाएँ रखता हूँ ?

– १३ वर्षकी उम्रमें ईसा अपने वालिदैनसे

अन्तर

अरबी घोडा अगर दुबला-पतला भी हो तो गदहोके पूरे अस्तबलसे अच्छा है । – अज्ञात

अन्तरात्मा

हमारे दिलोमे एक खुदा है—हमारा जमीर । – मीनेण्डर

अन्तरात्माकी आवाजको दुष्परिणाम भोगे बिना, कोई खामोश नहीं कर सका । – श्रीमती जेमसन

निष्ठावान् पुरुष अन्तरात्माके खिलाफ कभी किसी तर्कको नही सुनेगा ।

– अज्ञात

जो मनुष्य जितना अन्तर्मुख होगा, जितनी ही उसकी वृत्ति सात्त्विक और निर्मल होगी, उतनी ही दूरकी वह सोच सकेगा, और उतने ही दूरके वह परिणाम देख सकेगा । – अज्ञात

पूर्ण शान्तिका मुझे कोई रास्ता नही दिखाई देता, सिवाय इसके कि आदमी अपने अन्तरकी आवाजपर चले । – एमर्सन

अन्तरात्मा हमको न्यायाधीशकी तरह सजा देनेके पहले मित्रकी तरह चेतावनी देती है । – अज्ञात

मनुष्य अपने अन्तरका अनुसरण करता है, इसका पता उसकी नजरें दे देती हैं । – रामकृष्ण परमहंस

अनर्थ

यौवन, धन-सम्पत्ति, प्रभुत्व और अविवेक—इनमें-से प्रत्येक अनर्थ करनेके लिए काफी है। जहाँ चारो हो वहाँ क्या होगा? – विदुर

अन्धश्रद्धा

अन्धश्रद्धाके क्या माने? 'तर्क ईश्वर जाने' इस श्रद्धाका नाम अन्ध-श्रद्धा है। – विनोबा

अन्धश्रद्धा अज्ञान है। – समर्थ गुरु रामदास

अन्न

जहाँतक हो सके विषयी धनिक पुरुषोंके अन्नसे तो बचना ही चाहिए। – अज्ञात

दुर्जनका अन्न खानेपर बुरी वृत्ति जरूर पैदा होगी। – श्री ब्रह्मचैतन्य

अन्तर्युद्ध

जब आदमीमें अन्तर्युद्ध शुरू हो जाता है, तब उसकी कुछ क़ीमत हो जाती है। – ब्राउनिंग

अनादर

अति परिचयसे मनुष्यकी अवज्ञा होने लगती है, बार-बार जानेसे अनादर होता है। – अज्ञात

अन्धानुकरण

अन्धानुकरणसे आत्मविकासके बजाय आत्मसंकोच होता है। –अरविन्द घोष

अन्याय

जो अन्याय करता है वह, सहनेवालेकी अपेक्षा हमेशा अधिक दुर्दशामें पड़ता है। – प्लेटो

सत्यको हमेशा सूलीपर लटकाये जाते देखा, असत्यको हमेशा सिंहासन पाते देखा। — जेम्स लॉवेल

अन्याय और अत्याचार करनेवाला उतना दोषी नही है जितना उसे सहन करनेवाला। — तिलक

अन्धकार

जब हर कोई चोरी करता है, धोखा देता है और मजेसे गिर्जाघर जाता है, तो अन्धकार कैसा निबिड है। — रस्किन

जब इच्छा हो, तू इस दीपको बुझा दे, मै तेरे अन्धकारको जानूँगा और उसे प्यार करूँगा। — टैगोर

अनासक्त

जो अनासक्त है वह परमात्माके बराबर सुखी है। — ना० प्र० जैन

जो आदमी अपने अच्छे कामोका इनाम चाहे या बुरे कामोके नतीजेसे बचना चाहे वह बे-लगाव नहीं है और जो इबादत (पूजापाठ) मे लगा रहे या मार्फत (ज्ञान) की चाह रखे वह भी खालिस अल्लाहकी तरफ लगा हुआ नहीं कहा जा सकता। हाँ, जिस किसीकी इबादत और उसके काम अपने लिए नही बल्कि सिर्फ अल्लाहके लिए हैं, वही ईश्वरमे लौ लगाये हुए कहा जा सकता है। — इमाम राजी ('तफ़सीर कबीर'से)

अनासक्ति

आदमी अनासक्त यानी बेलाग और नि स्वार्थ काम करते हुए ही ईश्वरको पा सकता है। इसीमे सबका भला (लोक-सग्रह) है। — गीता

हजार वर्ष तक बिना मन लगाये नमाज़ पढने और रोज़ा रखनेके बजाय एक कणके बराबर ससारके प्रति सच्ची अनासक्ति बढाना अधिक उत्तम है। — हुसेन बसराई

यदि हम अपने कर्मके सिद्धान्तको मानते है और सचमुच उसपर दृढ रहते हैं, तो अनासक्ति अपने-आप आ जाती है। – अज्ञात

अनासक्तिकी कसौटी यह है कि फिर उस वस्तुके अभावमे हम कष्टका अनुभव न करें। – हरिभाऊ उपाध्याय

अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है, क्योकि अनासक्त कार्य भगवान्‌की भक्ति है। – गान्धी

अनासक्तिके मानी है अपने और अपनोके प्रति अनासक्ति और सत्यके प्रति तन्मय आसक्ति। – गान्धी

मोक्षके प्रति भी अनासक्ति, यह फल-त्यागका अन्तिम और सर्वोत्तम अर्थ है। – विनोबा

कर्मफलमे और इन्द्रिय-विषयोमे मन लगाकर कार्य करना ही अनासक्ति है। – अरविन्द घोष

अनित्य

यह बडा-सा सूरज, यह तारे और यह चाँद सब खूबसूरत है। तू इन सबके फेरमे न पड, और हमेशा यही कहता रह कि मै नाशवान् चीज़ोको नही चाहता। – शम्सतरी

अनियमितता

कामकी अधिकता नही, अनियमितता आदमीको मार डालती है। – गान्धी

अनुकरण

जहाँ अनुकरण है, वहाँ खाली दिखावट होगी, जहाँ खाली दिखावट है वहाँ मूर्खता होगी। – जॉन्सन

नकल करके कोई आज तक महान् नही बना। – जॉन्सन

अनुग्रह

जिनका हम आदर करते है, उनके किसी अनुग्रहमे रहना एक प्रकारका रुचिर दासत्व है। – रानी क्रिश्चिना

अनुग्रह स्वीकार करना अपनी स्वतन्त्रता खोना है। – लेबर

जिसपर मै अनुग्रह करना चाहता हूँ, उसको सम्पत्तिको हर लेता हूँ। – भगवान् श्रीकृष्ण

अनुपस्थित

अनुपस्थितकी कोई बुराई न करे। – प्रॉपर्टियस

अनुभव

अनुभव हमे वही ठोकरें लगाता है जिनकी कि हमे आत्म-शिक्षणके लिए जरूरत होती है। – अज्ञात

'उसका मै' इस अनुभवमे अहकार नही है, परन्तु परोक्षता है, 'मेरा मै' इस अनुभवमे परोक्षता नही है, परन्तु अहंकार है, 'तेरा मैं' इस अनुभवमे परोक्षता भी नही है, अहकार भी नही है। – विनोबा

मेरे पास एक दीपक है जो मुझे मार्ग दिखाता है और वह है मेरा अनुभव। – पैट्रिक हेनरी

आत्मानुभवके प्रेमसागरमे गर्क होनेवाला अपना अनुभव कहनेके लिए भी बाहर नही निकलता। – स्वामी रामतीर्थ

बिना अनुभव कोरा शाब्दिक ज्ञान अन्धा है। – विवेकानन्द

औषधि लिये बिना, उसका नाम लेने मात्रसे रोग नही चला जाता, प्रत्यक्ष अनुभव किये बिना ब्रह्मका शब्दोच्चारण करने-भरसे मोक्ष नही मिल जाता। – अज्ञात

शब्दोका अर्थ नही, अनुभव देखना चाहिए। – शीलनाथ

दर्शन विश्वास है, परन्तु अनुभव नग्न सत्य है। – कहावत

जो 'कृष्ण कृष्ण' कहता है वह उसका पुजारी नही, 'रोटी-रोटी' कहनेसे पेट नही भरता, खानेसे ही भरता है । — गान्धी

स्वानुभवमे सगुण-निर्गुणका भेद नही है । — विनोबा

अनुवाद

किसी किताबमे जो कुछ सचमुच सर्वोत्तम है अनुवादके योग्य है । — एमर्सन

अनुसरण

जबतक हमारा अनुसरण करते रहोगे कभी मुक्त न होगे । — भगवान् महावीर

श्रेष्ठ जो करते है कनिष्ठ लोग उसीका पदानुसरण करते है । — गीता

लोकानुवर्तन छोड, देहानुवर्तन छोड, शास्त्रानुवर्तन छोड और स्वरूपपर चढे हुए अध्यासको दूर कर । — विवेकचूडामणि

अनुकूलता

एक आदमीको एक ही काम माफिक आयेगा । — फारसी कहावत

सब अनुकूल हो तब तो सभी लोग अपनेको भला कहलाने लायक आचरण करते है ।

अपने पास सब अनुकूल होनेपर ही काम करना, यह कुछ किया नहीं कहलाता । चाहे जिस लकडीके टुकडेसे बढई आकृति बनाता है, चाहे जिस पत्थरसे मूर्तिकार मूर्तियाँ बनाता है, वैसे ही चाहे जैसे मनुष्योंके साथ रहना और उनसे काम कराना आया तो ही मनुष्यता कहनी चाहिए । मैं तो समझता हूँ कि हमें यही ससारमे सीखना है और इसके लिए हमे समुद्र-सी उदारता चाहिए । — गान्धी

अनेकान्त

एकान्त—एक-देशीय-विचार मिथ्या होता है क्योकि वस्तुमात्र अनन्त धर्मात्मक है । — भगवान् महावीर

अपनत्व

जिसने अपनापन खोया उसने सब खोया। – गान्धी

अपनी ही घडीसे दुनिया-भरकी घडियाँ ठीक करना न चाहो। – अज्ञात

अपना

सूरजमुखी फूल बेनाम फूलको अपना सगा माननेमें शरमाया।

सूरज उगा और उसपर यह कहते हुए मुसकराया, 'अच्छे तो हो तुम, मेरे प्यारे ?' – टैगोर

जो हमने पचाया वह दूसरेका है ही नही, वह अपना हुआ। जो अपना हुआ उसके बारेमे शका न होनी चाहिए और उस विषयके उत्तर अपने पास होने ही चाहिए। – गान्धी

जो चीजें वास्तवमें तेरे लिए है, खिचकर तेरे पास आती हैं। – एमर्सन

हर आदमी अपने मतको सच्चा और अपने बच्चेको अच्छा समझता है, लेकिन इसलिए दूसरेके मत या बच्चेको बुरा कहना उचित नही है। – सादी

अपना-पराया

गैर भी अगर अपना हितेच्छु है तो बन्धु है, और भाई भी अहितेच्छु हो तो उसे गैर समझना। जैसे देहका रोग अहित करता है और जगलकी औषध हितकारी है। – अज्ञात

अपमान

अपमान-भरी जिन्दगीसे मौत अच्छी है। – अज्ञात

अपमानका मक़सद कुछ भी रहा हो उसे हमेशा नजर-अन्दाज़ ही करना सबसे अच्छा है, क्योंकि मूर्खतापर क्या अफसोस करना, और दुर्भावकी सजा उपेक्षा है। – जॉन्सन

अगर कोई हमारा अपमान करता है, तो इसमे हमारा क्या कसूर है ? उसने हमारा क्या लिया ? या क्या बिगाडा ? अपनी अधम सस्कृतिका परिचय अलबत्ते दिया । — हरिभाऊ उपाध्याय

अपराध

दरिद्रता, रोग, दु ख, बन्धन और विपत्ति—ये सब मनुष्यके अपराध-रूपी वृक्षके फल होते है । —अज्ञात

दूसरोके प्रति किये गये छोटे अपराध, अपने प्रति किये गये बडे अपराध है । — कहावत

जुर्मको कबूल कर लेनेसे आधा माफ हो जाता है । — पुर्तगाली कहावत

अर्पण

ससार, साधन और सिद्धि तीनोको भक्त देवके सुपुर्द कर देता है । — विनोबा

अप्रमाद

कलका काम आज ही कर लेना और शामका काम सुबह ही कर लेना, क्योकि मौत यह देखनेके लिए नही खडी रहेगी कि इस आदमीने अपना काम पूरा कर लिया या नही । — महावन

पहले जो प्रमादमे था और अब प्रमादसे निकल गया, वह इस दुनियाको बादलोमे निकले हुए चाँदकी तरह रोशन करता है । — बुद्ध

अपशब्द

अपशब्दासे क्रोध उत्पन्न होता है, क्रोधसे घूँसेबाजी तककी नौबत पहुँचती है, और घूँसोसे प्रिय मित्र घोर शत्रु हो जाते है । — अज्ञात

अप्राप्त

जो हमारे पास नही है उसके पानेकी हम अभिलाषा रखते है और जो हमारे पास है, उससे खुशी मिलनी बन्द हो जाती है । — मोनबेल

अपरिग्रह

आदर्श आत्यन्तिक अपरिग्रह तो उसीका होगा जो मनसे और कर्मसे दिगम्बर है। मतलब, वह पक्षीकी भाँति बिना घरके, बिना वस्त्रोंके और बिना अन्नके विचरण करेगा।........इस अवधूत अवस्थाको तो बिरले ही पहुँच सकते हैं।
— गान्धी

अपरिग्रहकी कैंची ज्ञानपर भी चलानी चाहिए, व्यर्थ भरामर ज्ञानका परिग्रह रखना योग्य नहीं है।
— विनोबा

अपरिग्रहसे मतलब यह है कि हम उस किसी चीज़का संग्रह न करें जिसकी हमें आज दरकार नहीं है।
— गान्धी

परिग्रहकी चिन्तासे अन्तरात्माका अपमान होता है, परिग्रहकी चिन्ता न करनेसे विश्वात्माका अपमान होता है, इसीलिए अपरिग्रह सुरक्षित है।
— विनोबा

उसके दुःख दूर हो गये जिसे मोह नहीं है, उसका मोह मिट गया जिसे तृष्णा नहीं है, उसकी तृष्णा नष्ट हो गयी जिसे लोभ नहीं है, उसका लोभ खत्म हो गया, जो अकिंचन है।
— भगवान् महावीर

अपूर्णता

अपूर्णता ही है जो अपूर्ण चीज़की शिकायत करती है। हम जितने ज्यादा पूर्ण होते हैं उतने ही ज्यादा हम दूसरोंके दोषोंके प्रति मृदु और शान्त हो जाते हैं।
— फ़ैनेलिन

अभ्यास

अभ्यास और वैराग्य ये एक ही वस्तुके विधायक और निषेधक अंग हैं।
— अज्ञात

बिना अभ्यासके सब भूसका कूटना है, जलका बिलोना है।
— सन्त नन्दलाल

अभिमान

अभिमान मोहका मूल है—बडा शूलप्रद। – रामायण

किसीका भी अभिमान रह न सका। – गान्धी

प्रभु और जीवके बीचमें अभिमानके समान अन्तराय दूसरा नहीं है। – अज्ञात

'मुझे अभिमान नही है' ऐसा भासित होना इस सरीखा भयानक अभिमान नही है। – विनोबा

'मै जानता हूँ' ऐसी अभिमान-वृत्ति ही ज्ञानामृत-भोजनकी मक्खी है। वह मक्खी जिसने खा ली उसे ज्ञानभोजन मधुर कैसे लगेगा? – समर्थ गुरु रामदास

अभिमान छोडनेसे मनुष्य प्रिय होता है। – महाभारत

अभिलाषा

जो चाहे उन्हे अपनी आतिशबाजीकी फुफकारती दुनियामें जीने दे। मेरा हृदय तो तेरे सितारोको चाहता है, मेरे प्रभु। – टैगोर

किसी कामके श्रेय पानेकी अभिलाषाके मानो है अपने व्यक्तित्वको मान्य करानेकी इच्छा ही नही बल्कि उसमे रस भी। – अज्ञात

अमंगल

बदबख्तीकी आशका करनेसे ज्यादा मनहूस और अहमकाना चीज कोई नही। आनेके पहले ही *अमंगलको आस लगाना* कैसा दीवानापन है! – सेनेका

अमन

मै अमन-पसन्द आदमी हूँ। ईश्वर जाने मै अमनको क्यो प्रेम करता हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि मै ऐसा बुजदिल कभी न होऊँगा कि दमनको अमन मान बैठूँ – कोसुथ

अमल

अपने अमलको सच्चा रखो और बदनामोको परवाह न करो। गन्दगी मिट्टीकी दीवालसे चिमट सकती है, पॉलिश किये हुए संगमरमरसे नहीं।
— फ्रैंकलिन

जो बहुत-सी विद्याएँ जानता है मगर धर्मपर नहीं चलता वह सचमुच उस उल्लूके मानिन्द है जो सैकड़ो सूर्योके होते हुए भी नहीं देख सकता।
— अज्ञात

जो बहुत-से धर्मशास्त्र पढता है लेकिन उनके अनुसार अमल नहीं करता वह उस ग्वालेके समान है जो दूसरोको गायोको गिनता रहता है। — बुद्ध

जो विवेकके नियमोको तो सीख लेता है, परन्तु जीवनमे उन्हें नही उतारता वह ऐसे आदमीकी तरह है जिसने अपने खेतोमें मेहनत की, मगर बीज नहीं डाला। — सादी

जब हम पढते है, हमे लगता है कि हम शहीद हो सकते है, जब हम अमल करनेपर आते है, हम एक उत्तेजक शब्द नही सहन कर सकते।
— हन्नामोर

जितना हमे ज्ञान है उसपर अमल करनेसे वह हकीकत भी रोशन हो जाती है जिसे हम इस वक्त नही जानते। — रैम्ब्रेण्ट

तुम वह क्यो कहते हो जो नही करते ? — कुरान

जो कुछ नहीं करता, कुछ नही जानता। अपने सिद्धान्तोको परखो, देखो कि वे आजमाइशकी अग्निपरीक्षामे खरे उतरते है कि नही।
— एलोयसियस

अगर तुम किसीको यह इत्मीनान दिलाना चाहते हो कि वह गलतीपर है तो सच्चाईको करके दिखलाओ। आदमी देखी हुई चीज़पर विश्वास करते हैं, उन्हे देखने दो। — थोरो

किसी निश्चयपर पहुँचना ही विचारका उद्देश्य है, और जब किसी बात-का निश्चय हो गया, तो उसको कार्यमें परिणत करनेमें देर करना भूल है। — तिरुवल्लुवर

मोहम्मद साहबकी तलवारकी मूँठपर ये वाक्य खुदे हुए थे—तेरे साथ अन्याय करे उसे क्षमा कर दे, जो तुझे अपनेसे काटकर अलग कर दे उससे मेल कर, जो तेरे साथ बुराई करे उसके साथ तू भलाई कर और सदा सच्ची बात कह, चाहे वह तेरे ही खिलाफ क्यों न जाती हो।

यदि 'मोमिन' होना चाहता है तो अपने पड़ोसियोंका भला कर और यदि 'मुसलिम' होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिए अच्छा समझता है वही मनुष्य मात्रके लिए अच्छा समझ और बहुत मत हँस, क्योंकि निस्सन्देह अधिक हँसनेसे दिल सख्त हो जाता है। — अज्ञात

शास्त्रज्ञान होनेपर भी लोग मूर्ख बने रहते हैं। विद्वान् तो वह है जो क्रियावान् है। — अज्ञात

मैं कोई चीज नहीं हूँ, सिवाय खुदाके भेजे हुए एक मनुष्यके। न मेरे पास अल्लाहके खजाने हैं, न मैं गैबका इल्म रखता हूँ, न मैं फरिश्ता हूँ, मैं केवल उसपर चलता हूँ जो अल्लाहने मेरे घटमें बिठा दिया है।

— हजरत मुहम्मद

पर-उपदेश-कुशल बहुत हैं। स्वयं आचरण करनेवाले पुरुष अधिक नहीं हैं। — रामायण

ईश्वर कहता है कि चाहे मुझे छोड़ दे, पर मेरे कहेपर चले। — तालमुद

दर्शनशास्त्रके दस ग्रन्थ लिखना आसान है, एक सिद्धान्तको अमलमें लाना मुश्किल। — टॉलस्टॉय

अमरता

अमर चाहते हो कि मरते और सड़ते ही तुम भुला न दिये जाओ तो या तो पढ़ने लायक चीजें लिखो या लिखने लायक काम करो। — अज्ञात

जो अपने जीवनको आहुति देता है वही अमर जीवन पाता है। – ईसा

हे मेरी आत्मा ! तू उस तरह मत जी, जिस तरह अबतक प्रशंसा-रहित होकर जीती रही है और हे आत्मा ! जब तू मरे, तब इस तरह मरे, मानो मरी ही नहीं। – मुतनब्बी

क्रियाकाण्डसे, प्रजननसे, धनसे नहीं, अमरत्व तो त्यागसे प्राप्त होता है। – वेद

अमरपन

विशुद्ध सत्त्वके लक्षण है—प्रसन्नता, स्वात्मानुभूति, परम प्रशान्ति, तृप्ति, प्रहर्ष और परमात्मनिष्ठा—इन्हीसे आनन्द-रसका अमरपान पीनेको मिलता है। – अज्ञात

अमीर

जो एक सालमे अमीर बनना चाहता है, आधे सालमे फाँसीपर चढा दिया जायेगा। – अज्ञात

अगर अमीरोमे न्याय होता और गरीबोमें सन्तोष होता, तो दुनियासे भीख माँगनेकी प्रथा उठ गयी होती। – सादी

अमीर-गरीब

अगर कोई मुर्दोंकी मिट्टी खोदे तो अमीर और गरीबमे विवेक नहीं कर सकता। – अज्ञात

अमीरी

यह भी हो सकता है कि गरीबी पुण्यका फल हो और अमीरी पापका। – गान्धी

अनियमित गरीबीसे अनियमित अमीरी ज्यादा खतरनाक है। – बीचर

अमृत

संसाररूपी कटुवृक्षके दो फल अमृत सरीखे होते हैं—एक तो मीठा सुभाषित और दूसरा साधु पुरुषोंकी संगति। – अज्ञात

अरण्यवास

अरण्यवास जंगली जीवनका दूसरा नाम है। — स्वामी रामतीर्थ

अल्पभाषी

अल्पभाषी सर्वोत्तम मनुष्य है। — शेक्सपीयर

अल्पाहार

कम खाना और कम बोलना कभी नुकसान नही करते। —अज्ञात

बडी उम्र चाहते हो तो खाना कम खाओ। — बेंजामिन फ्रेंकलिन

अल्पज्ञ

अगर कोई अल्पज्ञ कोई बुरा काम करे तो उचित है कि तू उसे क्षमा कर दे और उसे बुरा-भला न कहे। — अबुल-फतह-बुस्ती

अलबेला

जिसके चित्तको अलबेलीके कटाक्ष नही छेदते वह तीनो लोक जीतता है। — इब्न-उल-वर्दी

अवकाश

अगर तुझको एक क्षणका भी अवकाश मिले, तो तू उसे शुभ कार्यमें लगा, क्योंकि कालचक्र अत्यन्त क्रूर और उपद्रवी है। — अयास-बिन-इल-हर्स

अवगुण

अवगुण नावकी पेंदीके छेदके समान है जो छोटा हो या बडा, एक दिन उसे डुबा देगा। — कालिदास

अपने अवगुण अपनेको ही तकलीफ देते है। — भोलनाथ

अवतार

साधुओंकी रक्षा करनेके लिए, दुष्टोंका सहार करनेके लिए, धर्मकी संस्थापनाके लिए मैं युग-युगमें अवतार लेता हूँ। —भगवान् श्रीकृष्ण

अव्यवस्था

अव्यवस्था कतई कुछ नहीं बनाती, लेकिन बिगाड़ती हर चीज़को है ।
— ब्लेकी

अवज्ञा

अति संघर्षणसे चन्दनमें भी आग प्रकट हो जाती है, उसी प्रकार बहुत अवज्ञा किये जानेपर ज्ञानीके भी हृदयमें क्रोध उपज आता है । — रामायण

अवसर

अगर तुम्हें असाधारण अवसर मिल जाये तो फौरन् दुस्साध्य कामको कर डालो । — तिरुवल्लुवर

मुझे रास्ता मिलेगा, नहीं तो मैं बनाऊँगा ।
— सर फिलिप सिडनीका सिद्धान्त

जब समय तुम्हारे विरुद्ध हो, तो सारसकी तरह निष्कर्मण्यताका बहाना करो, लेकिन वक्त आये तो बाजकी तरह तेज़ीके साथ झपटकर हमला करो । — तिरुवल्लुवर

अक्लमन्द आदमीको जितने अवसर मिलते हैं उनसे अधिक तो वह पैदा करता है । — बेकन

कोई महान् पुरुष अवसरकी कमीकी शिकायत नहीं करता । — अज्ञात

जिसने अपना रास्ता निकालनेका फैसला कर लिया है उसे हमेशा काफी अवसर मिल जायेंगे, न भी मिले तो वह उनकी सृष्टि करेगा । — स्माइल्स

जो अवसरोंका उपयोग करना जानते हैं वे देखेंगे कि वे उन्हें पैदा भी कर सकते हैं । — जॉन स्टुअर्ट मिल

हर अवसरको महान् अवसर बना दो, क्योंकि तुम नहीं कह सकते कि कब कौन उच्चतर स्थानके लिए तुम्हारी थाह ले रहा हो । — अज्ञात

हमेशा वक्तको देखकर काम करना—यह एक ऐसी डोरी है जो सौभाग्य-को मजबूतीके साथ तुमसे बाँध देगी। — तिरुवल्लुवर

अविचार

बिना बिचारे उतावलीमे कोई काम कभी न करना चाहिए। अविचार सब आपत्तियोका मूल है। विचारपूर्वक कार्य करनेवालेकी मनोवाछित कामनाएँ स्वयं पूर्ण हो जाती हैं। — भारवि

अविनय

अविनय मनुष्यको शोभा नहीं देता, चाहे उसका इस्तेमाल अन्यायी और विपक्षोके प्रति ही क्यो न हो। — तिरुवल्लुवर

जिस तरह बुढापा सुन्दरताका नाश कर देता है उसी तरह अविनय लक्ष्मीका नाश कर देती है। — अज्ञात

अविद्या

अविद्या क्या है ? आत्माकी स्फूर्ति न होना। — शंकराचार्य

अविश्वास

अविश्वास धीमी आत्महत्या है। — एमर्सन

अशान्ति

पूर्णताके अभावमे जो अशान्ति रहती है वह हमे ऊर्ध्वगामी बनाती है, दूसरेकी विभूतिको ईर्ष्यासे जो अशान्ति रहती है, वह अधोगामी।

— अज्ञात

असन्तोष

जिसे सन्तोष नही है उसे बुद्धि नहीं है। — अज्ञात

चिड़िया कहती है 'काश मैं बादल होती ?'
बादल कहता है 'काश, मैं चिड़िया होता !'

— टैगोर

बहुधा, हम दूसरोमे इसलिए असन्तुष्ट रहते हैं कि स्वयमे असन्तुष्ट हैं।
— फ्रांसीसी कहावत

'असन्तोष चाहिए ही। किन्तु वह असन्तोष खुदके बारेमें हो। "अब क्या! अब तो मैं पूर्ण हो गया!" ऐसा समझकर मैं बैठूँगा उसी दिनसे मेरा विनाश शुरू हुआ समझो। अत मुझे अपने बारेमे असन्तोष मालूम होना ही चाहिए। इस असन्तोषका अर्थ यह कदापि नहीं है कि मैं अपने कर्तव्य-कर्ममे हमेशा परिवर्तन करनेकी ही इच्छा करूँ। — गान्धी

असत्य

असत्य अन्धकारका रूप है, इस अन्धकारसे मनुष्य अधोगतिको पाता है। अन्धकारमे फँसा हुआ अन्धकारमे ढके हुए प्रकाशको नही देख सकता।
— महाभारत

दूसरोके प्रति असत्य-वर्तन सिर्फ मामलेको उलझा देता है और उसके हल होनेमें बाधा डालता है, लेकिन अपने प्रति बर्ता गया असत्य, जिसे सत्यकी तरह पेश किया गया हो, आदमीकी जिन्दगीको कतई बरबाद कर देता है। — टॉलस्टॉय

नहिं असत्य सम पातकपुंजा। — रामायण

असत्यमे शक्ति नही होती, उसे अपने अस्तित्वके लिए सत्यका आश्रय लेना पडता है। — विनोबा

मैं क्या हूँ? सत्यका एक व्यक्त रूप। दूसरा क्या है? सत्यका एक व्यक्त रूप। दोनो 'एको' मे जो अन्तर है वह असत्य है। — अज्ञात

प्रत्येक असत्याचरण समाजके स्वास्थ्यपर आघात है। — एमर्सन

असत्य विजयी भी हो जाये, तो भी उसकी विजय अल्पकालिक होती है।
— ल्योनार्ड

असफल

असावधान सफल नही हो सकता, घमण्डी अपने उद्देश्यको पूरा नहीं कर सकता। – सलाह्-उद्दीन सफदी

असफलता

असफलता वही अछूता है जो कोई प्रयत्न ही नही करता। – व्हेटली

अनिश्चितता और विलम्ब नाकामयाबीके वालिदैन है – केनिंग

आदमीको सिर्फ एक असफलतासे डरना है—उस काममे डटे रहनेमे असफलता जिसे वह सर्वोत्तम समझता है। – ईलियर

असम्भव

'असम्भव' शब्द केवल मूर्खोंके कोशमे मिलता है। – नैपोलियन

अगर ठीक मौकेपर साधनोका खयाल रखकर काम शुरू करो और समुचित साधनोको उपयोगमे लाओ तो ऐसी कौन-सी बात है जो असम्भव हो ? – तिरुवल्लुवर

कौवेमे पवित्रता, जुआरीमे सत्य, सर्पमें सहनशीलता, स्त्रीमे कामशान्ति, नामर्दमे धीरज, शराबीमे तत्त्वचिन्ता और राजामे मैत्री किसने देखी या सुनी है ? – पचतन्त्र

सम्भव असम्भवसे पूछता है, 'तुम्हारा निवास-स्थान कहाँ है ?' जवाब आता है 'नामर्दके स्वप्नोमे'। – टैगोर

असमर्थ

बुद्धिमान् लोगोके सामने असमर्थ और असफल सिद्ध होना धर्ममार्गसे पतित हो जानेके समान है। – तिरुवल्लुवर

असंयमी

असंयमी धर्म-अधर्मका फर्क नही जानता। – अज्ञात

असंयम

जिसकी इन्द्रियाँ बसमे नही, वह एक ऐसा मकान है जिसकी दीवारें गिर चुकी है। — सुलेमान

असलियत

दूर करो अपने चेहरेके नकाब।—कार्लाईल चिल्लाता है। 'मुझे तुम्हारी सच्ची हुलिया देखने दो।' — अज्ञात

अस्पृश्य

मेरी अल्पबुद्धिके अनुसार तो भगोपर जो मैल चढ़ता है, वह शारीरिक है और वह तुरन्त दूर हो सकता है। किन्तु जिनपर असत्य और पाखण्डका मैल चढ गया है, वह इतना सूक्ष्म है कि दूर करना बडा कठिन है। किसीको अस्पृश्य गिन सकते है तो असत्य और पाखण्डसे भरे हुए लोगोको। — गान्धी

अस्पृश्यता

जिस प्रकार एक रत्ती सखियामे लोटा-भर दूध बिगड जाता है, उसी प्रकार अस्पृश्यतासे हिन्दू-धर्म चौपट हो रहा है। — गान्धी

असहयोग

अहिंसाके बिना असहयोग पाप है। — गान्धी

असत्पुरुष

जो अपने उच्चकुलका अभिमान करता है और दूसरोको नीची निगाहसे देखता है वह असत्पुरुष है। — बुद्ध

अस्तित्व

रोगियोकी बहुतायतके कारण तन्दुरुस्तीके वजूदसे इनकार नहीं किया जा सकता। — एमर्सन

मिट्टी जिस प्रकार कुम्हारके हाथोमे है उसी प्रकार मेरा अस्तित्व परमात्माके हाथोमे है, वह जैसा चाहता है मुझे वैसा बनाता है। — गान्धी

असूल

दूसरोके साथ वैसा ही सलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें। किसीके साथ कोई ऐसी बात न करो जो तुम नही चाहते कि वह तुम्हारे साथ करें। — सुनहरा असूल

अहंकार

जब तू खुदी (अहकार) को बिलकुल छोड देगा, खुदाको पाकर मालामाल हो जायेगा। — शब्सतरी

शून्यवत् होना माने 'मै करता हूँ' यह वृत्ति छोडना। — गान्धी

'मैं' और 'मेरे' के जो भाव है वे घमण्ड और खुदनुमाईके अलावा और कुछ नहीं है। — तिरुवल्लुवर

वह अहकार, अहकार नही है जो आत्माकी शान प्रकटाये। वह नम्रता नही है जो आत्माको हीन बनाये। — रामकृष्ण परमहस

अहकार छोडे बगैर सच्चा प्रेम नही किया जा सकता। — विवेकानन्द

जिस महफिलमे सूरज एक कणके समान माना जाता है। वहाँ अपनेको बडा समझना बेअदबी है। — हाफिज़

अगर तुम्हारा अहकार चला गया है तो किसी भी धर्म-पुस्तककी एक पक्ति भी बाँचे बगैर, व किसी भी मन्दिरमे पैर रखे बगैर तुमको जहाँ बैठे हो वही मोक्ष प्राप्त हो जायेगा। — विवेकानन्द

इस ससारके अहकारियोसे कह दो कि अपनी पूँजीको कम कर दें। हानि और लाभ यहाँ समान है। — हाफिज़

अहकारको लगता है कि 'मैं न हुआ तो दुनिया कैसे चलेगी'! वस्तु-स्थिति यह है कि मै ही क्या सारा जग भी न हुआ तो भी दुनिया चलती रहती दीखती है। — अज्ञात

जो यह कल्पना करता है कि वह दुनियाके बगैर अपना काम चला लेगा, अपनेको धोखा देता है, लेकिन जो यह कयासआराई करता है कि दुनियाका काम उसके बगैर नही चल सकता और भी बडे धोखेमें है। — रोशे

सुख बाहरसे मिलनेकी चीज नही, हमारे ही अन्दर है; मगर अहकार छोडे बगैर उसकी प्राप्ति नही होनेवाली। – विवेकानन्द

अगर तू तरक्की करके बडा आदमी हो जाये तो भी अपने रास्तेसे डिग मत। तू कमानसे छोडे हुए तीरके मानिन्द है जो थोडी देर हवामे उडकर जमीनपर गिर जाता है। – हाफिज

अहंकारसे ऐश्वर्यका नाश होता है। – अज्ञात

दार्शनिकका पहला काम यह है कि वह अहम्मन्यताको छोड दे। – एपिक्टेटस

अहंकार शैतानका प्रधान पाप है। – चैपिन

क्षुद्र जीवको भी अपनेसे नीचा मत समझो। – जुन्नुन

अकसर, मुर्गी जिसने सिर्फ अण्डा दिया है, ऐसे ककडाती है जैसे किसी नक्षत्रको जन्म दिया हो। – मार्कट्वेन

मुर्गा समझता है कि सूरज बाँग सुननेके लिए उगता है। – जार्ज ईलियट

जरा-सा भी अहकार कार्यविघाती है। – स्वामी रामतीर्थ

अहकार और लोभसे सावधान रहना! अहंकारी अपनेसे तुच्छ माने हुए लोगोका अपमान सहनेके बाद ही मरने पाता है। जबतक दुनियामे भूख-प्याससे पीडा नही पा लेता, तबतक प्रकृति उसे ससारमे-से नहीं जाने देती। – हातिम हासम

पहले प्रभुके दास बनो, और जबतक वैसे न बन पाओ, 'मै ही प्रभु हूँ' ऐसा मत कहो; नही तो घोर नरककी यातना भोगनी होगी। –जुन्नुन

हमारा अहकार ही है जिसके कारण हमें अपनी आलोचना सुनकर दुःख होता है। – मेरी कोनएडी

आदमी जब कपडे पहन लेता है तब ऐसा मालूम होता है मानो वह कभी नगा ही नहीं था और जब अमीर हो जाता है तब ऐसा मालूम होता है मानो वह कभी ग़रीब ही नही था। – जाबिर-बिन-सालव उत-ताई

तुम्हारे क्षुद्र अहकारको समूल नष्ट करके तुमको विश्व-व्यापी बनानेके एकमात्र ध्येयकी खातिर सब धर्मकल्पनाएँ पैदा हुई है। – विवेकानन्द

इस तमाम प्रपचका मूल अहकार है। अहकारके समूल नाशसे तृष्णाओका अन्त हो जाता है। – बुद्ध

अहंकारी

अहकारी वह है जो अपने 'मैं'से शेष समस्त जीवराशिको चुप कर देनेकी कोशिश करता हुआ दिखलाई देता है। – अज्ञात

अहतियात

अपने हृदयके कोसनेसे बचना मनुष्यको पहली अहतियात होनी चाहिए और ससारकी बदनामीसे बचना दूसरी। – एडीसन

अहित

जो मनुष्य मनसे भी अगर प्राणियोका अहित सोचता है उसको इस लोकमे वैसा ही मिलता है, इसमे सशय नही। – हितोपदेश

हम प्रतिघात सहे बगैर किसीका अहित नही कर सकते, जब हम दूसरेको दु खी करते है, हमेशा स्वय दु खमे पडते हैं। – मरसियर

अहिंसा

अहिसाकी शक्ति अमाप है, वैसी ही अहिसककी है। अहिसक खुद कुछ नहीं करता, उसका प्रेरक ईश्वर होता है, इस कारण भविष्यमे ईश्वर उससे क्या करा लेगा, यह वह खुद कैसे बतायेगा? – गान्धी

अहिसा माने अपने भाषणसे या कृतिसे किसीका भी दिल न दुखाना, किसीका अनिष्ट तक न सोचना। – विवेकानन्द

मैं बगुलेको तीरका निशाना बनानेके बजाय उसे उडते देखना चाहता हूँ, किसी बुलबुलको खा जानेकी अपेक्षा उसे गाते सुनना चाहता हूँ। – रस्किन

अहिंसा धर्मका तकाजा है कि हम दूसरोंको अधिकसे अधिक सुविधाएँ प्राप्त करा देनेके लिए स्वयं अधिकसे अधिक असुविधाएँ सहें—यहाँतक कि अपनी जान भी जोखममें डाल दें। – गान्धी

जिन लोगोंका जीवन हत्यापर निर्भर है, समझदार लोगोंकी दृष्टिमें वे मुर्दाखोरोंके समान हैं। – तिरुवल्लुवर

दयाभाव + समता + निर्भयता = अहिंसा। – विनोबा

जहाँतक हो सके एक दिलको भी रंज न पहुँचाओ क्योंकि एक आह सारे संसारमें खलबली मचा देती है। – अज्ञात

अहिंसा परम धर्म है। – भगवान् महावीर

तमाम जीवोंके प्रति पूर्ण अद्रोह भावसे और यह न हो सके तो फिर अल्पत्प द्रोह रखकर जीना परम धर्म है। – अज्ञात

धन्य है वह पुरुष जिसने अहिंसा-व्रत धारण किया है। मौत जो सब जीवोंको खा जाती है, उसके दिनोंपर हमला नहीं कर सकती। – तिरुवल्लुवर

इस दुनियामें प्राणोंसे ज्यादा प्यारी कोई चीज नहीं है। इसलिए मनुष्यको अपनी तरह दूसरोंके प्रति भी दया दिखलानी चाहिए। – अज्ञात

धर्मप्रवचन इसलिए हुआ था कि जीवोंको एक-दूसरेकी हिंसा करनेसे रोका जाये। इसलिए सच्चा धर्म वही है जो जीवोंके प्रति अहिंसाका प्रतिपादन करता है। – अज्ञात

ऐसा हृदय रखो जो कभी कठोर नहीं होता और ऐसा मिज़ाज जो कभी नहीं उकताता और ऐसा स्पर्श जो कभी ईज़ा नहीं पहुँचाता। – डिकिन्स

अगर तुझे अपना नाम बाक़ी रखना है तो किसीको दुःख पहुँचानेकी कोशिश मत कर। – जामी

धर्मका निचोड़, धर्मका दूसरा नाम, अहिंसा है। – गान्धी

अहिंसाका अर्थ है अनन्त प्रेम और उसका अर्थ है कष्ट सहनेकी अनन्त शक्ति। – गान्धी

जरूरतमन्दके साथ अपनी रोटी बाँटकर खाना और हिंसासे दूर रहना, यह सब पैगम्बरोंके तमाम उपदेशोंमें श्रेष्ठतम उपदेश है। – तिरुवल्लुवर

तलवारका उपयोग करके आत्मा शरीरवत् बनती है। अहिंसाका उपयोग करके आत्मा आत्मवत् बनती है। – गान्धी

जिन लोगोंने इस पापमय सांसारिक जीवनको त्याग दिया है उन सबमें मुख्य वह पुरुष है जो हिंसाके पापसे डरकर अहिंसा-मार्गका अनुसरण करता है। – तिरुवल्लुवर

अहिंसाका लक्षण तो सीधे हिंसाके मुँहमें दौड जाना है। – गान्धी

अहिंसाके सामने हिंसा निकम्मी हो जाती है। अगर आज तक ऐसा नहीं हुआ है तो उसका कारण यह है कि हमारी अहिंसा दुर्बलों और भीरुओं-की थी। – गान्धी

नेक रास्ता कौन-सा है ? वही जिसमें इस बातका खयाल रखा जाता है कि छोटेसे छोटे जानवरको भी मरनेसे किस तरह बचाया जाये। – तिरुवल्लुवर

अहिंसाका अर्थ ईश्वरपर भरोसा रखना है। – गान्धी

अहिंसा सब धर्मोंसे श्रेष्ठ धर्म है। सचाईका दर्जा उसके बाद है। – अज्ञात

यदि तुमने अपने सत्यके साथ अहिंसाकी रसायन मिला दी है तो तुम्हारी बातमें रस हुए बिना रह ही नहीं सकता। – हरिभाऊ उपाध्याय

तुम्हारी जानपर भी आ बने तब भी किसीकी प्यारी जान मत लो। – तिरुवल्लुवर

जैसे हिंसाकी तालीममें मारना सीखना जरूरी है, उसी तरह अहिंसाकी तालीममें मरना सीखना पडता है। हिंसामें भयसे मुक्ति नहीं मिलती, किन्तु भयसे बचनेका इलाज ढूँढनेका प्रयत्न रहता है। अहिंसामें भयको स्थान ही नहीं है। – गान्धी

हमारे पास दो अमर वाक्य हैं 'अहिंसा परम धर्म है' और 'सत्यके सिवा दूसरा धर्म नहीं।' – गान्धी

अहिंसकको अक्षय तपका फल मिलता है, अहिंसक सदा यज्ञ करता है, अहिंसक सब प्राणियोको माताकी तरह—पिताकी तरह—लगता है ।

– महाभारत

जहाँ अहिंसा है वहाँ कौडी भी नही रह सकती । – गान्धी

यदि हमारा धर्म अहिंसा है, तो यह हमारा दावा इसी कसौटीपर खरा या खोटा साबित होगा कि समाजमे हम एक हैं कि नहीं ।

– जैनेन्द्रकुमार

द्वेषका कारण हुए बगैर कोई द्वेष नहीं करता, इसीलिए हमारे लिए किसीने द्वेषका कारण जुटाया तो भी उससे द्वेष न करके प्रेम करें। उसपर दया करके सेवा करना ही अहिंसा है। मनुष्योसे प्रेम करनेमे अहिंसा नही है, वह तो व्यवहार है। – गान्धी

अहिंसा, अपने सक्रिय रूपमे, सब जीवोके प्रति सद्भावना है, विशुद्ध प्रेम है। – गान्धी

अहिंसाके बिना प्राप्त की हुई सत्तामे दरिद्रनारायणका स्वराज्य होगा ही नही। स्वराज्यकी प्राप्तिमे जितने परिमाणमे अहिंसा होगी उतने परिमाणमे दरिद्रोका दारिद्र्य दूर हो जायेगा। अहिंसाके माननेवाले रोज अधिकाधिक अहिंसक होते जायेंगे और उससे उनका सेवा-क्षेत्र बढ़ता जायेगा। जो हिंसाके पुजारी होगे उनका क्षेत्र संकुचित होता जायेगा और वह अन्तमे उन्ही तक रह जायेगा। – गान्धी

सीधी बातको भी मनुष्य टेढी समझे, उसे सहन करनेमे कितनी भारी अहिंसा चाहिए ! – गान्धी

अगर तुम्हारे एक लफ्जसे भी किसीको पीडा पहुँचती है तो तुम अपनी सब नेकी नष्ट हुई समझो। – तिरुवल्लुवर

भगवान् महावीरने सबसे पहले अहिंसाको बताया है; वह सब सुखोंको देनेवाली है। – अज्ञात

सत्यके दर्शन, बगैर अहिंसाके हो ही नहीं सकते। इसीलिए कहा है कि 'अहिंसा परमो धर्म'। — गान्धी

इस अनमोल अहिंसा-धर्मको मैं शब्दोके द्वारा नही प्रकट कर सकता। खुद पालन करके ही उसका पालन कराया जा सकता है। — गान्धी

मेरी अहिंसा सारे जगत्के प्रति प्रेम माँगती है। — गान्धी

अहिंसा सब धर्मोमे श्रेष्ठ है, हिंसाके पीछे हर तरहका पाप लगा रहता है। — तिरुवल्लुवर

देहधारी पुरुषोकी अपनी सर्व प्रेमशक्ति, इकट्ठी की हुई सम्पूर्ण सेवाका अन्तिम फलित 'अ-हिंसा'मे व्यक्त होता है। — विनोबा

सम्पूर्ण आत्मशुद्धिके प्रयत्नमे मर मिटना यह अहिंसाकी शर्त है।— गान्धी

अहिंसा परम श्रेष्ठ मानव-धर्म है, पशुबलसे वह अनन्तगुना महान् और उच्च है। — गान्धी

समूची सृष्टिको अपनेमे समा लेनेपर ही अहिंसाकी पूर्ति होती है। — विनोबा

अहिंसा मानो पूर्ण निर्दोषिता ही है। पूर्ण अहिंसाका अर्थ है प्राणिमात्रके प्रति दुर्भावका पूर्ण अभाव। — गान्धी

अक्षरज्ञान

अक्षर-ज्ञानकी हमे मूर्तिपूजा और अन्धपूजा न करनी चाहिए वह कोई कामधेनु नही है। वह तो अपने स्थानपर तभी शोभा पा सकता है जब हम अपनी इन्द्रियोको वशमे कर सकते हो, जब नीतिपर दृढ हो, जब हम उसका सदुपयोग कर सकते हो, तभी वह हमारा आभूषण हो सकता है। — गान्धी

अज्ञान

तुम्हारा अज्ञान ही तुम्हारा वास्तविक पाप है। वही है जो दुख लाता है। — अज्ञात

अज्ञान मनकी रात है, लेकिन ऐसी रात जिसमे न चाँद हैं न तारे।
— कन्फ्यूशियस

मोह और स्वार्थ अज्ञानके पुत्र है, अतएव अज्ञानी मनुष्य ही दुष्ट और कायर होते है। — गान्धी

अज्ञानके अलावा आत्माके और किसी रोगका मुझे पता नही।
— बेन जॉन्सन

दु खमे बचनेके लिए 'अज्ञान' की दलील बेकार है। कोई अज्ञानी अगर बिजलीके तारको छुएगा तो मरेगा ही। आत्माको भी क्रोध, लोभ, मोह वगैरह करनेसे जन्म-जरा-मरणके दु ख भोगने ही पडते हैं।
— अज्ञात

सब मलोमे अज्ञान परम मल है। इस मलको धो डालो भिक्षुओ, और पवित्र हो जाओ। — बुद्ध

अज्ञानके समान आदमीका कोई दुश्मन नही है। — अज्ञात

आधी दुनिया नही जानती कि शेष आधी कैसे जीती है। — रबेले

अज्ञान ईश्वरका शाप है, ज्ञान वह पख है जिससे हम स्वर्गको उडते हैं।
— शेक्सपीयर

मेरे प्रभो, वे लोग जिनके पास सिवाय तेरे सब कुछ है, उन लोगोपर हँसते हैं जिनके पास तेरे सिवाय कुछ नहीं है। — टैगोर

अज्ञानको क्रियाशील देखनेसे भयकर कुछ भी नही है। — गेटे

अज्ञानी रहनेसे पैदा न होना अच्छा, क्योकि अज्ञान तमाम दु खोका मूल है। — प्लेटो

मानव-जाति, युग युगान्तरसे, उन स्वार्थी लोगो-द्वारा अज्ञानमे कैद रखी गयी है, जिनका लक्ष्य मनुष्यके दिमागोको संकुचित और अव्यवस्थित बनाये रखना रहा है। — आर० जैफरीज

तू अपनेसे अनजान है, और इस बातसे और भी अधिक अनजान है कि तेरे लिए क्या योग्य है। — थॉमस कैम्पो

अज्ञानकी दलील दुष्परिणामोंसे नहीं बचा सकती। — रस्किन

अज्ञानी

अज्ञानी होनेसे भिखारी होना अच्छा; क्योंकि भिखारीको तो सिर्फ़ धन चाहिए, मगर अज्ञानी आदमीको इनसानियत चाहिए। — एरिस्टिपस

अज्ञानी आदमीके लिए खामोशीसे बढकर कोई चीज नही और अगर उसमे यह समझनेकी बुद्धि हो तो वह अज्ञानी नही रहेगा। — सादी

अपने पास बहुत-से नौकर-चाकर देखकर एक अज्ञानी भी फूला नही समाता। — हुसेन बसराई

■

आ

आक्रमण

जो साहसपूर्वक जिन्दगीका मोह छोडकर आक्रमण करता है, उसके सामने खड़े रहनेकी हिम्मत इन्द्र तक नही कर सकता। — अज्ञात

दिलेर हमला आधी लडाई जीतनेके बराबर है। — जर्मन कहावत

आँख

ज्ञानेन्द्रियोमे आँखका क्या स्थान हो सकता है अगर वह एक ही नज़रमें दिलकी बात नही जान सकती? — तिरुवल्लुवर

अकेली आँख ही यह बतला सकती है कि हृदयमे घृणा है या प्रेम। — तिरुवल्लुवर

मनमानी आँख अपवित्र हृदयकी परिचायक है। — ऑगस्टाइन

आग

दिलकी आगसे दिमागको धुआँ चढ़ता है। — जर्मन कहावत

चकमककी आग तबतक प्रकट नही होती जबतक उसे रगड़ा न जाये।
– कहावत

जो खुद नही जलता, दूसरोमे आग नही लगा सकता। – अज्ञात

आगन्तुक

मछली और आगन्तुक (Visitors) तीन दिनमे बास मारने लगते हैं।
– फ्रेंकलिन

आचरण

जन्मके पहले तू ईश्वरको जितना प्यारा था, उतना ही मृत्युपर्यन्त बना रहे, ऐसा आचरण कर। – जुन्देद

मित्रतासे मनुष्यको सफलता मिलती है; किन्तु आचरणकी पवित्रता उसकी हर इच्छाको पूर्ण कर देती है। – तिरुवल्लुवर

बुद्धि-बल बाहर देखकर चलता है, आत्म-बल भीतर देखकर। – अज्ञात

भले आदमी जिन बातोंको बुरा बतलाते हैं, मनुष्योको भी चाहिए कि वे अपनेको जन्म देनेवाली माताको बचानेके लिए भी उन कामोको न करें। – तिरुवल्लुवर

जिसने ज्ञान, आचरणमे उतार लिया उसने ईश्वरको ही मूर्तिमन्त कर लिया। – विनोबा

आत्म-त्याग स्वीकार करो, सबको रास्ता दे दो, सबकी बातो और आचरणोको सह लो, इसी प्रकार तुम उन लोगोकी भलाई कर सकोगे; उन लोगोके ऊपर क्रोध उगलकर उनपर कटु वाक्योकी वर्षा करके तुम उन लोगोकी भलाई नहीं कर सकोगे। – महात्मा एपिक्टेटस

समतापूर्वक स्वय आचरण करके लोगोमे कर्मकी रुचि पैदा करनी चाहिए। – मराठी सूक्ति

आचरण बिना और अनुभव बिना, केवल श्रवणसे आत्मज्ञानकी माधुरी-का पता कैसे चले? – ज्ञानेश्वर

जो हदमे चले सो मानव, जो बेहद चले सो साधु, जो हद-बेहद दोनो चले वह अगाध-मति । — कबीर

जो कथनी कथै, सो हमारा शिष्य, जो वेद पढै सो हमारा प्रशिष्य, जो रहनी रहै सो हमारा गुरु, हम तो रहतोके साथी है । — गोरखनाथ

कलियुगमे सब ब्रह्मकी बाते करेगे, कोई उसपर आचरण नही करेगे, सिर्फ शिश्नोदर-परायण रहेगे । — जीवन्मुक्तिविवेक

जैसे व्यवहारकी तुम दूसरोसे अपेक्षा रखते हो, वैसा ही व्यवहार तुम दूसरोके प्रति करो । — ल्यूक

दूसरोका जो आचरण तुम्हे पसन्द नही है वैसा आचरण दूसरोके प्रति मत करो । ("आत्मन· प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत्') — कन्फ्यूशियस

धर्मकी श्रद्धा होनेपर भी धर्मका आचरण कठिन है, ससारमे धर्मश्रद्धालु भी कामभोगके प्रलोभनोसे मूर्छित रहते हैं । हे गौतम ! क्षण-मात्र भी प्रमाद न कर । — भगवान् महावीर

मन-भर चर्चासे कन-भर आचरण अच्छा है । — विनोबा

जो ब्रह्मवार्तामे कुशल परन्तु वृत्तिहीन और सराग है वह भी अज्ञानियों-का शिरोमणि है, वह बार-बार आता है और जाता है । — अपरोक्षानुभूति

जो मनको पवित्र जान पडे उसीका आचरण करना चाहिए । — सस्कृत सूक्ति

वेदान्तमे निष्णात होनेपर भी दुर्जन साधुता नही पाता, समुद्रमे चिर-कालसे निमग्न रहनेपर भी मैनाक मृदु नही हुआ । — जगन्नाथ

अधिक क्या कहे, जो अपने प्रतिकूल हो उसे दूसरोके प्रति कभी न करो; धर्मकी यही आधारशिला है । — मुनि देवसेन

आचार

बिना आचारके कोरा बौद्धिक ज्ञान वैसा ही है जैसा कि खुशबूदार मसाला लगाया हुआ मुरदा । — गान्धी

महज पुस्तकी ज्ञानके प्रदर्शनसे जनतापर कभी सच्चा वज़न नही पडता। अपने उच्चतत्त्व जिस परिमाणमे अपने रोज़के बरतनमे प्रत्यक्ष दिखाई देने लगते है उसी परिमाणमे अपने प्रति लोगोका आदर व पूज्य भाव बढता जाता है। – विवेकानन्द

सदाचारी सुखी है, दुराचारी दु खी। – श्रीमद्राजचन्द्र

आचार्य

आचार्य वह हैं जो अपने आचारसे हमे सदाचारी बनावें। – गान्धी

आज

एक आज दो कलके बराबर है। – क्वार्ल्स

आजसे अपने चित्तमे विकार नही आने दूंगा, मुंहसे दुर्वचन नही निकालूंगा और दोषरहित हो मैत्री भावसे इस ससारमे विचरण करूँगा। – बुद्ध

आजका दिन हमारा है। गुज़रा हुआ कल मर गया, और आनेवाला कल अभी पैदा नही हुआ। – अज्ञात

जो काम कभी भी हो सकता है, वह कभी नही हो सकता है। जो काम अभी होगा वही होगा, जो शक्ति आजके कामको कलपर टालनेमे खर्च हो जाती है उसी शक्तिके द्वारा आजका काम आज ही किया जा सकता है। – अज्ञात

आज ही विवेकी बन, शायद कलका सूर्य तू देख ही न पाये। – अज्ञात

जो कुछ श्रेयस्कर है वह आज ही करो, बुढापेमे क्या कर सकोगे? तबतक तो तुम्हारा शरीर तुम्हारे लिए बोझा हो जायेगा। –अज्ञात

अच्छी तरह जिया हुआ आज हर गुज़रे हुए कलको आनन्दका स्वप्न, और हर आनेवाले कलको आशाका दर्शन बना देता है। – अज्ञात

कल ज़िन्दगीके लिए देर हो जायेगी आज जी! – मार्शल

सोचो कि आजका दिन फिर कभी नही आयेगा। – दान्ते

आजकलकी लड़की

आजकलकी लडकीको अनेक मजनुओको लैला बनना प्रिय है। वह दुस्साहसको पसन्द करती है""आजकलकी लडकी वर्षा या धूपसे बचनेके उद्देश्यसे नही, बल्कि लोगोका ध्यान अपनी ओर खीचनेके लिए तरह-तरहके भडकीले कपडे पहनती है। — गान्धी

आर्जव

साधुजनोके वचन उनके विचारोके अनुसार होते हैं। उनके काम उनके वचनोके अनुसार होते हैं। उनके विचार, वाणी और कृतिमे एकरूपता होती है। — अज्ञात

सब छल-कपट मौत लाते हैं, सरलनाके सब काम ब्रह्मपद तक ले जाते हैं। ज्ञानका विषय बस इतना ही है, अधिक प्रलापसे क्या लाभ ?

— अज्ञात

आज़ाद

गुलाम और आज़ादमे यही फर्क है कि गुलाम मरनेके लिए जीता है मगर आज़ाद जीनेके लिए मरता है, गुलामकी जिन्दगी मौतके बराबर है मगर आज़ादकी मौत भी ज़िन्दगी है। — अज्ञात

कोई आदमी आज़ाद नही है जबतक वह अपनी कषायोपर क़ाबू न पा ले। — अज्ञात

इन्सान आज़ाद पैदा हुआ था, लेकिन हर जगह ज़जीरोमें है। — रूसो

जो स्वय सोचता है, और नकल नही करता, आज़ाद आदमी है।

— क्लापस्टॉक

अगर हम आज़ाद होकर न जी सकते हो तो हमे मरनेमे सन्तोष मानना चाहिए। — गान्धी

आज़ादी

ओ आज़ादी, मानव जातिकी पहली खुशी। – ड्राइडन

दो किस्मकी आज़ादियाँ हैं, झूठी—जहाँ कोई जो चाहे करनेको आज़ाद है, और सच्ची—जहाँ वह वही करनेके लिए आज़ाद है जो कि उसे करना चाहिए। – किंग्सले

आज़ादीसे साँस लेनेके मानी ही जीना नही है। – गेटे

पापकी गुलामी करनेवाली आज़ादीको नष्ट कर दो। – स्वामी रामतीर्थ

आज़ादी इसी वक्त और आज़ादी हमेशाके लिए। – डेनियल वैबस्टर

आज़ादी आत्माकी एक खास हालतका नाम है, न कि मुल्कमे किसी खास हुकूमतका। शेर पिंजडेमे रहकर भी कुछ आज़ाद है, क्योकि वह आदमीकी गाडी नही खीचता। बैल और घोडे खुले रहकर भी गुलाम है। क्योकि वह जुए या साजके नीचे एक टिटकारीपर सिर झुकाकर गरदन या पीठ लगा देते हैं। – महात्मा भगवानदीन

कोई देश बिना आज़ादीके अच्छी तरह नही जी सकता, और न आज़ादी बिना सत्कर्मके बरकरार रह सकती है। – रूसो

बिना फर्माबरदारीके आज़ादी चपला है; बिना आज़ादीके फर्माबरदारी ग़ुलामी है। – अज्ञात

अपनी आज़ादीको बुद्ध, ईसा, मुहम्मद या कृष्णके हाथो न बेच दो। – स्वामी रामतीर्थ

आज़ादीका ध्येय ईश्वरका ध्येय है। – बाउल्स

अपनी आज़ादीको खोना अपनी इनसानियत खोना है, मानवताके हक़ों और फ़र्ज़ोंको खोना है। यह त्याग मनुष्यकी प्रकृतिके अनुकूल नही है, क्योंकि उसकी इच्छा-शक्तिसे तमाम स्वतन्त्रता छीन लेना उसके कार्योंसे तमाम नैतिकता छीन लेना है। – रूसो

मुझे आजाद कहकर न चिढाओ, जब कि तुमने मेरे बन्धनोको केवल सजीली बन्दनवारोमे गूँथ दिया है। — कार्लाइल

क़ानून आदमियोको कभी आज़ाद नही बनायेगा, आदमियोको ही कानूनको आज़ाद बनाना होगा। — थोरो

किसीकी मेहरबानी माँगना अपनी आज़ादी खोना है। — गान्धी

मुझे और सब आज़ादियोसे पहले अपने अन्त करणके अनुसार जानने, सोचने, मानने और बोलनेकी आज़ादी दो। — मिल्टन

आज़ादीकी तडप आत्माका सगीन है। — सुभाष बोस

अल्लाह तुम्हारी किसी बातसे इतना प्रसन्न नही होता जितना गुलामोको आज़ाद करनेसे। — ह० मुहम्मद

जिन्हे आज़ाद होना हो, उन्हे स्वय ही प्रहार करना होगा। — बायरन

बुलबुल पिजडेमे नही गाती। — कहावत

आज़ादी एक शानदार दावत है। — बर्न्स

मोटी चर्बीली गुलामीसे दुबली-पतली आज़ादी अच्छी। — कहावत

निज देशमे गुलाम रहनेकी अपेक्षा परदेशमे आज़ाद रहना अच्छा। — जर्मन कहावत

उससे बदतर गुलाम नही, जो भूठमूठको मानता है कि वह आज़ाद है। — गेटे

क्या आपको पूरी आज़ादी नही है कि साहित्य और इतिहासकी तुच्छ तफसीलोपर वक्त बरबाद कर डाले, क्योकि ये अध्ययन किसी शासक वर्गको नागवार खातिर नही होते? — एनन

जो अपनी स्वतन्त्रताके खोनेसे प्रारम्भ कर सकते है वे अपनी शक्ति खोकर समाप्ति करेगे। — बर्कले

ईश्वराज्ञा पालन करनेमे ही पूर्ण स्वातन्त्र्य है। — सेनेका

सद्ज्ञान और सदाचारके बग़ैर आज़ादी क्या है? सबसे बडा अभिशाप। — बर्क

आजादी वह चीज है जिसे तुम दूसरोको देकर ही पा सकते हो ।
– विलियम

सुखकी पहली लाजिमी शर्त है आजादी । – बलवर

केवल ज्ञानी ही आजाद हैं, और हर बेवकूफ गुलाम है । – स्टोइक सूत्र

नेक आदमी ही आजादीको दिलसे प्यार कर सकते हैं, बाकी लोग स्वतन्त्रताके नही स्वच्छन्दताके प्रेमी होते हैं । – जॉन मिल्टन

आँखोके लिए जो रोशनी है, फेफडोके लिए जो हवा है, हृदयके लिए जो प्रेम है, आत्माके लिए वही आजादी है । – आर० जी० इगरसोल

आजादीका अर्थ है वाणीकी आजादी, धर्मकी आजादी, अभावसे आजादी और भयसे आजादी । – ऐफ० डी० रूजवैल्ट

किसीकी आजादी छीनना आजादीकी निशानी नही है ।
– जयप्रकाश नारायण

आजादीका अभाव शान्तिको खतरेमे डाल देता है ।
– जवाहरलाल नेहरू

आजादी जिसका नाम है उसमे यह सब शामिल है—मिलने-जुलनेकी आजादी, रुपये-पैसेकी आजादी, घर-गृहस्थीकी आजादी, सरकार बनाने-की आजादी, सोचने-विचारनेकी आजादी, और आत्मिक आजादी । एक भी न हो तो आजादी गुलामी है । – महात्मा भगवानदीन

पुण्यशीला आजादीका एक दिन, एक घण्टा भी गुलामीके अनन्तकालसे बढकर है । – ऐडीसन

जहाँ ईश्वर-भाव है, वहाँ आजादी है । – कौरिन्थियन्स

जो नीति आजादीके खिलाफ है वह कुनीति है । – जॉन मैकमरे

ईश्वरने आदमीपर आजाद हो जानेकी, आजादी कायम रखनेकी जिम्मे-दारी रखी है । ख्वाह यह काम कितना ही कठिन हो, इसके लिए कितनी भी कुर्बानी क्यूँ न देनी पडे, इसके लिए कितना ही दुख सहन क्यों न करना पड़े । – निकोलस बर्डीव

ज्ञानी लोग ही स्वतन्त्र है, और हर बेवकूफ गुलाम है। — क्रिसीपस

वह ख्वाहिश जिसे ज़माने इनसानके दिलसे नही मिटा सके, यह है कि मनकी मौजके सिवा कोई मालिक न हो। — बायरन

गुलामीसे ज्यादा गमनाक कोई चीज नही हो सकती, और न आज़ादीसे ज्यादा सुखदायिनी कोई चीज। — स्टर्न

बन्दी राजासे स्वतन्त्र पक्षी होना अच्छा। — डेनिश कहावत

स्वदेशमे गुलाम रहनेके बजाय परदेशमे आज़ाद रहना अच्छा।
— जर्मन कहावत

आज़ादीके माने हैं, खुदका खुदपर काबू। — हीगल

सम्यक् चारित्र भूत और भविष्यसे आज़ाद होता है।
— टी० एस० ईलियट

व्यक्ति-स्वातन्त्र्यके इनकारपर किसी समाजकी रचना नही की जा सकती। — महात्मा गान्धी

स्वतन्त्र होकर ही कोई औरोको स्वतन्त्र कर सकता है। — अरविन्द

साथमे शक्ति न हो तो आज़ादी बरकरार नही रह सकती। — शिलर

जब दुनिया नेक बन जायेगी, तभी उसे अपनी आज़ादी मिल पायेगी।
— जी० फ़ोर्स्टर

गुलामोको आज़ादी देकर हम आज़ादोकी आज़ादीकी हिफ़ाज़त करते हैं। — अब्राहम लिंकन

ईश्वरके लिए आज़ादी ज़रूरी है। — ब्लेडीमीर सोलोवीव

क्या स्वतन्त्रता इच्छानुसार जीनेके अधिकारके अलावा कुछ और चीज़ है? कुछ नही। — ऐपिक्टेटस

ईश्वरका साक्षात्कार कर लो और स्वतन्त्र हो जाओ।
— स्वामी रामतीर्थ

इत्मीनान रखो, आज़ादीके दीवाने आज़ाद होकर रहेंगे।

– ऐडमण्ड बर्क

आज़ाद हुए मानो नया जन्म मिल गया। – गान्धी

धीमे-धीमे आज़ाद होनेके कुछ मानी नही। अगर हम पूर्ण स्वतन्त्र नही तो हम ग़ुलाम हैं। आज़ादी जन्मकी तरह है। हर जन्म क्षण-भरमे हो जाता है। – गान्धी

आदमी अपनी पराधीनताके लिए ख़ुद ही ज़िम्मेदार है, वह चाहते ही आज़ाद हो सकता है। – गान्धी

मेरी निश्चित मान्यता है कि आदमी अपनी ही कमज़ोरीसे अपनी आज़ादी खोता है। – गान्धी

हममे-से बेहतरीन लोग भी बहुत ही काम करते हैं या कर सकते हैं। वह ज़रा-सा काम भी आज़ादीमे रहकर ही किया जाता है।

– रॉबर्ट ब्राउनिंग

पुण्यशीला स्वतन्त्रताका एक दिन, एक घण्टा पराधीनताके अनन्त काल-से बढ़कर है। – ऐडीसन

फ़्रान्सीसियोका उदात्त सूत्र है—'आज़ादी, बराबरी, भाईचारा' यह सिर्फ़ फ़्रान्सीसियोकी ही विरासत नही बल्कि सारी मानव जातिके लिए है।

– गान्धी

ईश्वरने जब हमे ज़िन्दगी दी, तभी आज़ादी भी दी थी।

– थॉमस जफरसन

जिसने अपनी आज़ादी खो दी उसने सब-कुछ खो दिया।

– जर्मन कहावत

ईश्वर किसीको ग़ुलाम नही बनाता, किसी शख़्सको आज़ाद नहीं बनाता, आज़ादी सिर्फ़ अटूट विश्वासमे मिलती है। – रोशे

संकल्पशक्ति (Will) को आज़ादी न देना, नैतिकताको असम्भव बना देना है। – फ़ौडे

आजीविका

मुँह छिपाये और मुँह दबाये जीते रहनेकी शर्तपर आजीविका पाना कोई गौरवकी बात नही है। — जॉन मौर्ले

जो ईश्वरका भरोसा रखते हैं, ईश्वर उनका निर्वाह अवश्य करता है। — जुन्नुन

शिक्षाको आजीविकाका साधन समझकर पढना नीच-वृत्ति कहा जाता है, आजीविकाका साधन तो शरीर है। पाठशाला तो चरित्रगठनका स्थान है। विद्यार्थियोको यह पहलेसे ही जान लेना जरूरी है कि हमें अपनी आजीविकाको बाहुबलसे ही प्राप्त करना है। — गान्धी

चित्तकी शान्तिके लिए बँधी हुई रोज़ी जरूरी है। — सादी

साँपोको अपना भोजन, वायु, बिना माँगे मिल जाता है, घास खानेवाले वनके पशु भी सुखसे रहते हैं, लेकिन ससारी मनुष्योकी जीविका ऐसी है कि उसे ढूँढते रहनेमे ही उनके तमाम गुण समाप्त हो जाते हैं। — सस्कृत सूक्ति

अगर इज्ज़त घटाकर रोज़ी बढती हो तो उस रोज़ीसे गरीबी अच्छी। — सादी

आतंक

यह बात हम सब लोगोमे आम तौरपर पायी जाती है, मगर यह खसूसन् नीच बुद्धिवालेका लक्षण है कि वह उम्दा कपडो और उम्दा फ़र्नीचरसे आतकित हो जाता है। — डिकेन्स

आतंक सबसे ज्यादा नि सत्त्व करनेवाली अवस्था है जिसमे कोई हो सकता है। — गान्धी

आततायी

आततायी अगर सामनेसे आ रहा हो तो बिना सोचे उसे मार डालना चाहिए। — मनुस्मृति

आत्मकल्याण

सर्वस्वका त्याग करके भी मनुष्यको आत्मकल्याण करना चाहिए ।

– अज्ञात

आतिथ्य

अर्ध-आतिथ्य दरवाजा खोल देता है मगर मुँह छिपा लेता है ।

– फ्रेंकलिन

आत्मनिग्रह

आत्मनिग्रहसे स्वास्थ्यकी हानि नही होती, इतना ही नही, बल्कि स्वास्थ्यका यही एक अमोघ साधन है । – गान्धी

आत्मरक्षा

आत्मरक्षा हर उपायसे करनी चाहिए । – अज्ञात

आत्मविस्मरण

दूसरोको खुश कर सकनेके लिए, तुम्हे खुदको भूलना पड सकता है ।

– एविड

आत्म-विश्वास

आत्म-विश्वास वीरताकी जान है । – एमर्सन

महान् कार्य करनेके लिए पहली जरूरी चीज है आत्म-विश्वास ।

– जॉन्सन

आत्म-विश्वास सरीखा दूसरा मित्र नही । आत्म-विश्वास ही भावी उन्नतिका मूल पाया है । – विवेकानन्द

जिसमे आत्म-विश्वास नही है, उसमे अन्य चीजोके प्रति विश्वास कैसे उत्पन्न हो सकता है ? – विवेकानन्द

महान् कार्योंके लिए पहली जरूरी चीज है आत्म-विश्वास ।

– सैम्युएल जॉन्सन

आत्मश्रद्धा

आत्मश्रद्धा हमारे हाथमे एक अमोघ शस्त्र है। किसी भी बातसे मनमें दुर्बलता आने लगे तो पहले उस बातका त्याग करना चाहिए। नही तो दिन-दिन तुम्हारा मानसिक बल कम होता जायेगा और आखिरश मुस्त किल तौरसे नाश पायेगा। — विवेकानन्द

आत्मशक्ति

जैसे कुश्ती लडनेसे शरीर-बल बढता है, कठिन प्रश्नोको हल करनेसे बुद्धि-बल बढता है, उसी तरह आयी हुई परिस्थितिका शान्तिपूर्वक मुकाबला करनेसे आत्म-बल बढता है। — सद्‌गुरु श्री ब्रह्मचैतन्य

सहनशीलता और विश्वास आत्म-शक्तिके लक्षण हैं। — गान्धी

आत्मशक्ति ईश-कृपासे आती है, और ईश-कृपा उस आदमीपर कभी नही होती जो तृष्णाका गुलाम है। — गान्धी

आत्मदर्शन

जिसका मन रागद्वेषादिसे नही डोलता वही आत्मतत्त्वका दर्शन कर सकता है। — अज्ञात

मनुष्य जीवनका उद्देश्य आत्म-दर्शन है और उसकी सिद्धिका मुख्य एवं एकमात्र उपाय पारमार्थिक भावसे जीवमात्रकी सेवा करना है; उनमें तन्मयता तथा अद्वैतके दर्शन करना है। — गान्धी

आँखें आवाजको नही देख सकती, भौतिक दृष्टि आत्माको नहीं देख सकती। — नैष्कर्म्यसिद्धि

आत्मदान

अगर सारी दुनियाको हम पाना चाहते हैं तो हमे यही सीखना है कि पाओ अपनेको देकर। — जैनेन्द्रकुमार

हमारा देश आत्मदानका ऐश्वर्य चाहता है —विपुल धनकी महिमा और शक्तिकी प्रतियोगिता नही। — टैगोर

आत्मनिर्भरता

अगर कोई मुझे अपना फिलॉसफी एक शब्दमें कहनेको कहे, तो मैं कहूँगा, 'आत्मनिर्भरता', 'आत्म-ज्ञान।' – स्वामी रामतीर्थ

आत्म-प्रशंसा

जिसके गुणोंका दूसरे लोग बयान करते हैं तो निर्गुणी भी गुणी हो जाता है, मगर अपने गुणोंका खुद बखान करनेसे इन्द्र भी लघुताको प्राप्त हो जाता है। – अज्ञात

क्या तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारी प्रशंसा करें? तो आत्मप्रशंसा कभी न करो। – पास्कल

अपनी प्रशंसा स्वयं करना अनार्य मनुष्योंका काम है। –अज्ञात

आत्म-प्रेम

आत्म-प्रेम इतना बुरा पाप नहीं है जितना आत्म-उपेक्षा। – शेक्सपीयर

आत्म-परीक्षा

कोई भी शुभ कार्य करते समय तुम निष्कपट हो न? जो कुछ बोल रहे हो निस्स्वार्थ भावसे ही न? जो दान-उपकार कर रहे हो बदलेकी आशाके बिना ही न? जो धन संचय कर रहे हो कृपणता छोड़कर ही न? – हातिम हासम

आत्म-बलिदान

कर्त्तव्यका सारा सबक़ आत्म-बलिदानसे शुरू और आत्म-बलिदानपर खत्म होता है। – लिटन

आत्मरक्षण कुदरत (Nature) का पहला कानून है, आत्मबलिदान दया (Grace) का सर्वोच्च नियम। –अज्ञात

जो खुद अपनी जान दे देता है वह तो उसे पा जाता है और जो उसे बचाता है वह उसे खो देता है। – अज्ञात

आत्म-बुद्धि

खुदका अच्छा बुरापन दूसरेकी दृष्टिसे कभी न नापो, ऐसा करना अपने मनकी दुर्बलता दिखलाना है। – विवेकानन्द

आत्म-सन्तोष

अपने निजी सन्तोषके लिए मैं ताज़ पहननेकी बनिस्बत अपने ही वक़्तका मालिक होना ज्यादा पसन्द करूँगा। – बिशप बर्कले

आत्म-सम्मान

अगर आपने अपना आत्म-सम्मान खोया तो आपने सब कुछ खो दिया। – अज्ञात

आत्म-सम्मान पहला रूप है जिसमे महानता प्रकट होती है। – एमर्सन

आत्म-सम्मान समस्त गुणोकी आधार-शिला है। – सर जॉन हरशल

सब बातोसे पहले आत्म-सम्मान। – पिथागोरस

जिसके यहाँ रहना चाहते हो, उसके यहाँ अपनी आवश्यकता पैदा करो, दयापर पेट पल सकता है आत्म-सम्मान नही। – अज्ञात

धूलसे नीच कौन होगा? मगर वह भी तिरस्कार सहन नही कर सकती —लात मारें तो सिरपर चढती है। – रामायण

आत्मसंयम

आत्म-संयम शालीनताका प्रधान अग है। – अज्ञात

धन्य है वह आत्म-सयम जो मनुष्यको बुजुर्गोंकी सभामें आगे बढ़कर नेतृत्व ग्रहण करनेसे मना करता है। यह एक ऐसा गुण है जो अन्य गुणोसे भी अधिक समुज्ज्वल है। – तिरुवल्लुवर

किसी मनुष्यने अपने लिए कोई हानिकर बात की कि उसका बुरा करने-की बुद्धि अपनेमे होती है। उसका नियमन करना यही आत्मसंयमकी पहली सीढी है। – विवेकानन्द

आत्म-संशोधन

सर्व साहित्यके अभ्याससे अथवा सर्व विश्वके विज्ञानसे जो समाधान नहीं मिलनेवाला वह आत्म-संशोधनसे मिलेगा । – विनोबा

आत्म-ज्ञान

खाना और सोना मुझे तेरे पदसे गिरा देते हैं, तू अपने-आपको उस समय पहचानेगा जब विश्राम और विलासको तिलांजलि दे देगा । – हाफ़िज़

सिर्फ दो तरहके लोगोंको आत्म-ज्ञान हो सकता है । उनको जिनके दिमाग़ विद्वत्ता यानी दूसरोंके उधार लिये हुए विचारोंसे बिलकुल लदे हुए नहीं हैं, और उनको जो तमाम शास्त्रों और साइन्सोंको पढ़कर यह महसूस करने लगे हैं कि वे कुछ नहीं जानते । – अज्ञात

जिसने अपने-आपको पहचान लिया उसने अपने रबको पहचान लिया ।
– मुहम्मद

जिसने अपने-आपको देख और पहचान लिया वह फिर अपने कामिल [सिद्ध या पूर्ण] बननेकी तरफ तेज़ीसे दौड़ने लगता है । – मौलाना रूम

आत्मज्ञान ही शेष समस्त विज्ञानोंका विज्ञान है और अपना भी । – प्लेटो

इस महत्त्वपूर्ण सत्यको कभी नज़रअन्दाज़ न होने देना, कि कोई तबतक सचमुच महान् नहीं हो सकता जबतक कि वह आत्मज्ञान न पा जाये ।
–जिमरमन

समझ लो कि जिसने अपना पता लगा लिया उसके दु:ख समाप्त हो गये ।
– मैथ्यू आर्नोल्ड

संसारका सुख और संसारकी सहूलियतें रखकर जिसे आत्म-ज्ञान लेना है उसे आत्म-ज्ञान नहीं मिलेगा । – अज्ञात

जिसने बुरा स्वभाव नहीं छोड़ा है, जिसने अपनी इन्द्रियोंको नहीं रोका है, जिसका मन चंचल बना हुआ है, वह केवल पढ़ने-लिखनेसे आत्मज्ञानको नहीं पा सकता । – कठोपनिषद्

जीवनमें सबसे मुश्किल बात अपने-आपको जानना है। — थेल्स

जो अपनेको जानता है वह दूसरोंको जानता है। — कोल्टन

ओ इनसान ! अपने-आपको जान, तमाम ज्ञान वहीं केन्द्रीभूत होता है।

— यंग

आत्मा

'नायमात्मा प्रवचनेन लभ्य' (यह आत्मा प्रवचनसे नहीं मिलता।)

— उपनिषद्

इन्द्रियाँ काफ़ी सूक्ष्म हैं, इन्द्रियोंसे ज्यादा सूक्ष्म मन है, मनसे ज्यादा सूक्ष्म बुद्धि है, बुद्धिसे ज्यादा सूक्ष्म आत्मा है। यह आत्मा ही सब कुछ है। वही वह है। — गीता

क्या आत्माका अपना कोई खास घर नहीं है, जो इस वाहियात शरीरमें आश्रय लेना है। — तिरुवल्लुवर

जिसने आत्माके अस्तित्वको स्वीकार किया है, और जो आत्माका विकास करना चाहता है, उसे यह समझनेकी जरूरत नहीं कि देह दमन बिना आत्माकी पहचान या आत्माका विकास असम्भव है। शरीर या तो स्वच्छन्दताका भाजन होगा या आत्माकी पहचान करनेका तीर्थक्षेत्र होगा। जो यह आत्माकी पहचान करनेका तीर्थक्षेत्र हो तो स्वेच्छाचारको स्थान ही नहीं है। देहको क्षण-क्षणपर वश करना आत्माके लिए लाज़िमी होगा ही। — महात्मा गान्धी

जिस तरह एक सूरज सारी दुनियाको रोशनी देता है, उसी तरह एक आत्मा इस सारे मैदानको रोशन करता है। — गीता

जिसका मन संसारकी वार्ताको छोड़कर आत्मारामी बना है, वह अमोघ अमृतकी धारासे सर्वांगीण रूपसे सिंचित होता है। — रत्नसिंह सूरि

तू अपनी आत्माकी ओर ध्यान धर, और उसके गुणोंकी पूर्ति कर, क्योंकि तू आत्माके कारण ही मनुष्य है, न कि शरीरके कारण। — अबुल-फतह-बुस्ती

आत्माकी दौलत इससे नापी जाती है कि वह कितना ज्यादा अनुभवन करती है उसकी गरीबी इससे कि कितना कम। – अलजर

जब कोई विश्वात्माको निजात्मा ही अनुभव करने लगता है तो सारा ब्रह्माण्ड उसको इस तरह सेवा करता है जैसे उसका शरीर।
– स्वामी रामतीर्थ

समुद्रोसे बडी एक चीज है और वह है आकाश, आकाशसे बडी एक चीज है और वह है मनुष्यकी आत्मा। –विक्टर ह्यूगो

सबकी आत्मा एक सरीखी है, सबकी आत्माकी शक्ति समान है मात्र कुछकी शक्ति प्रकट हो गयी है, दूसरोंकी प्रकट होना बाकी है।
– महात्मा गान्धी

आत्माकी प्राप्ति हमेशा सत्यसे, तपसे, सम्यग्ज्ञानसे और ब्रह्मचर्यसे होती है। निर्दोष लोग अपने अन्दर शुभ्र ज्योतिर्मय आत्माको देख सकते हैं।
– अज्ञात

यह आत्मा प्रवचनोसे, बुद्धिसे या बहुश्रवणसे नही मिलता। परन्तु जो आत्माको ही वरता है उसीको आत्मा अपना स्वरूप प्रकट करता है।
– उपनिषद्

दया दिखाना कुछ नही है—तेरी आत्मा दयासे भरी होनी चाहिए, अमलमें पवित्रता कुछ नही है—तुझे हृदयसे भी पवित्र होना चाहिए।
– रस्किन

जैसे कि तमाम कर्व अपन केन्द्रो या फोकसोसे ताल्लुक रखते है, वैसे ही तमाम चरित्रका सौन्दर्य आत्मासे सम्बन्धित है। – थोरो

'आत्माका अस्तित्व' ये शब्द पुनरुक्त हैं कारण कि 'आत्मा' माने, अस्तित्व। – विनोबा

निर्बल आत्मा, बजाय खुद बरकतहीन, तमाम खुशियोके लिए दूसरेकी छातीपर झुकती है। – गोल्डस्मिथ

जिस हस्तीको वेदान्ती ब्रह्म कहते हैं, उसीको योगी आत्मा कहते है, और भक्त भगवान् कहते हैं। – रामकृष्ण परमहंस

उसने अपनी आत्माकी उज्ज्वलताको क़ायम रखा था, इसीलिए लोग उसके लिये यूँ रोये। – बायरन

आत्मा पृथ्वीपर एक अमर मेहमान है, जो कि एक अवास्तविक दावतपर भूखों मरनेको मजबूर है। – हन्नामोर

आत्माको रथमें बैठा हुआ योद्धा जान, शरीरको रथ जान, बुद्धिको सारथी जान, मनको लगाम जान। – कठोपनिषद्

जिसे अपने जीवनके लिए मन, प्राण, शरीरकी गरज नहीं, जिसे अपने ज्ञानके लिए मन और इन्द्रियोंकी गरज नहीं, जिसे अपने आनन्दके लिए पदार्थ मात्रके बाह्य स्पर्शकी दरकार नहीं, उसी तत्त्वको 'आत्मा' नाम दिया गया है। – अरविन्द घोष

आत्मा शक्यता मूर्ति है, आत्माको कुछ भी अशक्य नहीं है। – विनोबा

हम सब शारीरिक पक्षाघातसे डर खाते हैं, और उससे बचनेकी हर तदबीर करते है, लेकिन आत्माको लकवा मार जानेपर किसीको परेशानी नहीं होती। – एपिक्टेटस

शरीरको हमेशा आत्माकी अधीनता और दासत्वमें रहना चाहिए।

– हॉलैण्ड

आत्मा व्यक्तियोंका लिहाज नहीं रखती। – एमर्सन

आत्मा दैविक आनन्दके किनारेपर खड़ा है, वह आनन्द ऐसा है मानो उसमें करोड़ों दुनियावी (इन्द्रिय भोग-जन्य) खुशियाँ घनीभूत हो गयी हो, और उस आनन्दको भोगनेके बजाय, वह दुनियाके तुच्छ मज़ोंसे प्रलोभित होकर मायाके जालमें फँसकर मरता है। – रामकृष्ण परमहंस

मैंने चमकीली आँखें, सुन्दर रूप, खूबसूरत शक्लें देखी। लेकिन एक ऐसी आत्मा न मिली जो मेरी आत्मासे बोलती। – एमर्सन

जिनकी आत्माएँ छोटी-छोटी है वे बडे-बडे पापोके रचयिता होते हैं । — गेटे

देव लोग आत्माकी गहराई पसन्द करते है, न कि उसका कोलाहल । — वर्ड्सवर्थ

आत्मा होठोसे नही, आँखोसे प्रतिबिम्बित होती है । — मैक्डोनल्ड क्लार्क

दुनियामें जुडवाँ आत्माएँ नही हैं । — हॉलैण्ड

क़ीमती चीज़ दुनियामे एक है—सक्रिय आत्मा । — एमर्सन

एक आत्मा सारे ब्रह्माण्डसे बढकर है । — अलेक्जेण्डर स्मिथ

हमारे शरीर भिन्न-भिन्न है तो क्या हुआ, आत्मा तो हमारे अन्दर एक ही है । — गान्धी

हृदय भले ही टूट जाय, मगर आत्मा अचल रहे । — नैपोलियन

आत्मा ही अपना स्वर्ग और नरक है । — उमरख़य्याम

कारपोरेशनके आत्मा नही होती । — कोक

मौन और एकान्त आत्माके सर्वोत्तम मित्र है । — लौंगफैलो

आत्मानुभव

जो शरीरपोषणमे लगा रहकर आत्मानुभव कर लेना चाहता है वह मगरको लट्ठा समझकर नदी पार करना चाहता है । — अज्ञात

आदमी

दुनिया कुछ नही, आदमी ही सब कुछ है । — एमर्सन

आदमी खाना पकानेवाला जानवर है । — बर्क

सिर्फ़ आदमी ही रोता हुआ जनमता है, शिकायतें करता हुआ जीता है, और निराश मरता है । — सर वाल्टर टैम्पिल

सिर्फ़ तीन क़िस्मके आदमी हैं—पतनशील, स्थिर और उन्नतिशील । — लैवेटर

'मैं आश्चर्य करता हूँ कि मछलियाँ समुद्रमे कैसे जीती है !' 'क्यो, जैसे आदमी भूतलपर जीते है, बडे छोटोको निगलकर।' — शेक्सपीयर

हर आदमी एक बरबाद परमात्मा है। — एमर्सन

हर-एक आदमी भक्षक है, उसे उत्पादक होना चाहिए। — एमर्सन

आदमी लिखनेके लिए पैदा हुआ है। — एमर्सन

हमको कार्योंकी नही, आदमियोकी जरूरत है। — एमर्सन

आदर्श

मेरे पास आदर्श है, ऐसा तब ही कहा जाये जब मै उस तक पहुँचनेकी कोशिश करता हूँ। — गान्धी

आदर्शको हमेशा 'वास्तविक'मे-से उगना होता है। — कार्लाइल

जिस आदर्शमे व्यवहारका प्रयत्न न हो वह फिजूल है, जो व्यवहार आदर्श-प्रेरित न हो वह भयकर है। — अज्ञात

मानव जातिकी एकमात्र पाठशाला है—आदर्श, मनुष्य और कही नही सीखता। — बर्क

आदर्श-विहीन मनुष्य मल्लाह रहित जहाज-जैसा है। — गान्धी

आचारधर्म

आचारधर्मका स्वर्णसूत्र है परस्पर-सहिष्णुता, क्योकि यह असम्भव है कि हम सब एक ही तरह विचार करें। हम तो अपने विभिन्न दृष्टिकोणोसे सत्यको अशत ही देख सकते है। सदसद्विवेक-बुद्धि सबके लिए एक ही वस्तु नही होती। इसलिए वह व्यक्तिगत आचरणके लिए बहुत अच्छा पथ-प्रदर्शक जरूर है। लेकिन उस आचारको बलपूर्वक सब लोगोपर लादना व्यक्तिमात्रके बुद्धि-स्वातन्त्र्यमें अक्षम्य और असह्य हस्तक्षेप है। — गान्धी

आध्यात्मिक

'आध्यात्मिक'का सच्चा अर्थ 'वास्तविक' है। – एमर्सन

आनन्द

आनन्द प्रेमके द्वारा ईश्वरको पा लेना है। – ऐमील

शरीर वीणा है और आनन्द संगीत। यह जरूरी है कि यन्त्र दुरुस्त रहे। – बीचर

जबतक तुम पापसे नही लड़ोगे, तबतक तुम कभी वास्तविक आनन्द नही पा सकते। – जे० सी० राइल

हम स्वय आनन्दकी अनुभूति लेनेकी अपेक्षा दूसरोको यह इत्मीनान दिलानेके लिए अधिक प्रयास करते है कि हम आनन्दमे हैं। – कन्फ्यूशियस

बाहर जाओ, और किसीकी कोई सेवा करो, यह तुम्हे 'आपे'से छुड़ायेगा और आनन्द देगा। – जोसेफ जफ़रसन

सिवाय पापके हर चीजमे कुछ-न-कुछ आनन्द है। – श्रीमती सिगोरनी

लालच और आनन्दने कभी एक-दूसरेको नहीं देखा, फिर वह परिचित हों तो कैसे? – फ्रेंकलिन

पार्वती—'स्वामिन्! अभीक्ष्ण, अनन्त, सर्वग्राही आनन्दका मूल क्या है?'
महादेव—'मूल है विश्वास।' – रामकृष्ण परमहंस

दूसरोके साथ हाथ बँटानेसे आनन्द और भी अधिक होता है। –अज्ञात

जीवनका आनन्द जीनेवाले आदमीके अनुरूप है, काम या जगहके अनुरूप नहीं। – एमर्सन

आनन्द क्रियाशीलतामे है, हमारी प्रकृतिकी बनावट ही ऐसी है, वह बहता हुआ चश्मा है, रुका हुआ तालाब नही। – अज्ञात

पशुका आनन्द इन्द्रियतृप्ति है, और मनुष्यका आनन्द बुद्धिगत है।
— विवेकानन्द

पराधीनतामें दु ख है, और स्वाधीनतामे आनन्द। — अज्ञात

अगर कोई मनुष्य शुद्ध मनसे बोलता या काम करता हैं, आनन्द उसके पीछे सायेकी तरह चलता है जो कि उससे कभी अलग नही होता।
— बुद्ध

आत्माका परमात्मासे मिलना ही आनन्द हैं। — पास्कल

सच्चा आनन्द एकान्त-प्रिय है, ज्ञान और शोरका दुश्मन। एक तो वह आत्म-रसलीनतासे मिलता है, और दूसरे थोडे-से चुने हुए मित्रोकी मित्रता और बातचीतसे। — एडोसन

आनन्द वह खुशी है जिसके भोगनेपर पछताना नहीं पडता। — सुक़रात

शोपेनहोर कहता है—'अपने अन्दर आनन्द पाना मुश्किल है।' मगर उसे और कही पा सकना असम्भव है। — स्वामी रामतीर्थ

'सच्चे अनुभव बिना मूढको होनेवाला आनन्द ऐसा ही व्यर्थ है जैसा कि प्रतिबिम्बित वृक्षके फलका स्वाद।' — अज्ञात

जो मनुष्य अपनी आत्मामें परमात्माको देख सकता है और सब तरफ समभावसे देखता है, वही सर्वोत्कृष्ट आनन्द प्राप्त करता है। — मनु

आनन्दकी कीमत सम्यग्ज्ञान है। — यग

आनन्द, परिग्रहके बढानेसे नही, दिलके बढानेसे बढता है। — रस्किन

अगर ठोस आनन्दकी हमे कद्र है तो यह रत्न हमारे हृदयमें रखा हुआ है, वे मूर्ख है जो इसकी तलाशमें बाहर भटकते है। — अज्ञात

जब अपनी आत्मामे-से आनन्द निकलने लगे तब उसमे स्थिति करनी चाहिए। — अज्ञात

शान्ति-रहित आनन्द भौतिक है, आनन्द-सहित शान्ति, शाश्वत है।
– औघे

आनन्द हमारी और ईश्वरकी मरजियोके सामंजस्यसे उत्पन्न आन्तरिक मधुर प्रफुल्लताके अतिरिक्त कुछ नही है। – अज्ञात

आनन्द रुचिमें है चीजोमे नही, और हम अपने अभिलषित पदार्थको पाकर सुखी होते हैं, न कि दूसरोकी तबीयतकी चीज पाकर। – रोची

आनन्द कुरूपताको दूर कर देता है, और सुन्दरताको भी सौन्दर्य प्रदान करता है। – एमील

जो अपने आत्मामे परमात्माको देखता है उसीको शाश्वत आनन्द मिलता है। – अज्ञात

जब मनसे कामिनी और कचनकी आसक्ति धो डाली तो आत्मामे बाकी क्या बचा ? सिर्फ ब्रह्मानन्द। – रामकृष्ण परमहस

एक आनन्दमय मनुष्यसे मिलना सौ रुपयेका नोट पा जानेसे अच्छा है। वह कल्याणकी किरणें बाहर फेंकनेवाला केन्द्र है, और उसका किसी कमरेमे दाखिल होना ऐसा है मानो एक शमा और जला दी गयी।
– आर० एल० स्टीवेन्सन

सत्पुरुषाका आनन्द विजयमे नही, युद्धमे है। – मौण्टलेम्बट

किसीको कोई आनन्द नही मिला जबतक उसने उसे अपने लिए स्वयं न रचा हो। –चार्ल्स मार्गन

मैंने इनसानके आनन्दका रहस्य इसमे पाया कि अपनी शक्तिको सडने न दे। – आदम क्लार्क

बहुत-से शासन कर सकते है, और भी बहुत-से लड सकते है, मगर असंख्य हृदयोंको आनन्द विरले ही दे सकते हैं। – वाल्टर ऐस लेण्डर

आनन्द हर जगह है, और उसका स्रोत हमारे ही दिलोमे है। – रस्किन

जो आनन्द पूर्णतया बाहरसे आता है मिथ्या, अत्यल्प और क्षणिक है। जो आनन्द अन्दरसे आता है वह डालीपर लगे सुगन्धित गुलाबके समान है, अधिक मधुर, सुन्दर और स्थायी। — यग

सब ईश्वर करता है, और वह जो करता है वह अच्छेके लिए है, ऐसा समझकर आनन्दमे रहो। — गान्धी

आनन्द मनकी समता और दृढतामे है। — अज्ञात

आनन्द सर्वोत्तम मदिरा है। — जॉर्ज ईलियट

जीना आनन्दपूर्ण है, फिर भी मरनेसे न डरो। — प्ररया

देखो, जो मनुष्य भ्रमात्मक भावोसे मुक्त है और जिसकी दृष्टि स्वच्छ है, उसके लिए दु ख और अन्धकारका अन्त हो जाता है और उसे आनन्द प्राप्त होता है। — तिरुवल्लुवर

आनन्दमे और दु खमे एक गुण समान है, कि वे विचार-शक्तिका हरण कर लेते है। — प्लेटन

बँटानेसे आनन्द दुगुना हो जाता है। — गेटे

अपने जीवनको सीमित कर लेना हमेशा सुखद होता है। — शोपेनहोर

आनन्द दु खसे अधिक दैविक है, क्योकि, आनन्द आहार है और दु ख औषध है। — वार्ड बीचर

राम नामका सहारा चाहिए। सब उनको अर्पण किया तो आनन्द-ही-आनन्द है। — गान्धी

हमे न तो दौलत ही आनन्द देती है और न महानता ही। — लॉ फ्राण्ट

उस हृदयको जिसे पवित्र आनन्दसे लबालब भरना है, स्थिर रखना होगा। — बोविस

खिताब और पदवियाँ, पोशाक और गणवेष, दर्जा और मरतबा, इसलिए आकर्षित करते हैं कि ये मनुष्यकी प्रदर्शनप्रियताको तृप्त करते हैं, किन्तु जीवनका आनन्द उनमें नहीं है। — ए० पनसोबी

इस सचाईको जान ले (और आदमीके लिए इतना ही जान लेना काफी है) कि सद्गुणशीलतामें ही आनन्द है। — पोप

तर्क शक्तिसे मनुष्यको सत्यका ज्ञान प्राप्त होता है, सत्यसे वह मनकी शान्ति पाता है, और मनकी शान्तिसे उसका दुःख दूर होता है।
— योग वाशिष्ठ

एक फ्रान्सीसी दार्शनिकने आनन्द-प्राप्तिके तीन नियम बतलाये, पहला था कार्य-व्यस्त रहना, दूसरा वही, तीसरा वही। — अज्ञात

आनन्दका मूल सन्तोष है। — मनु

जीवनका आनन्द विवेकपर निर्भर है। — यंग

आनन्दके मानी शरीरकी ही पीडाओं और बीमारियोंसे छूट जाना नहीं है, बल्कि आत्माकी चिन्ताओं और यन्त्रणाओंसे मुक्त हो जाना है।
— टिलटसन

उस व्यक्तिके आनन्दमें क्या वृद्धि की जा सकती है जो स्वस्थ है, ऋण-मुक्त है, और जिसका अन्तःकरण निर्मल है? —आदम स्मिथ

एक क्षण भी बगैर कामके रहना ईश्वरकी चोरी समझो, मैं दूसरा कोई रास्ता भीतरी या बाहरी आनन्दका नहीं जानता हूँ। — गान्धी

आनन्दघन

आनन्दघन स्थिति प्राप्त करनेका साधन चिद्घन अथवा विज्ञान है।
— अरविन्द घोष

आनन्द-मस्त

जो आनन्द-मस्त है वही आनन्द फैला सकता है। — लैवेटर

आनन्दवर्षण

अपने इर्द-गिर्द आनन्दवर्षण (न कि कष्टवर्षण) की इच्छासे बेहतर, सूरत शकल और बरतावको सुन्दर बनानेवाला कोई साधन नही। — एमर्सन

आपत्ति

देखो, जो आदमी ऐशो-आरामको पसन्द नही करता और जो जानता है कि आपत्तियाँ भी सृष्टिनियमके अन्तर्गत है, वह बाधा पडनेपर कभी परेशान नही होता। — तिरुवल्लुवर

आपत्तियोको जो आपत्ति नही समझते वे आपत्तियोको ही आपत्तिमे डालकर वापस भेज देते है। — तिरुवल्लुवर

जो आदमी आपत्तियोसे सुखी होना नही चाहता, उसे दूसरोको हानि पहुँचानेसे बचना चाहिए। — तिरुवल्लुवर

मनुष्यको आपत्तिका सामना करनेके लिए सहायता देनेमें मुसकानसे बढकर और कोई चीज नही है। –तिरुवल्लुवर

दुष्ट मनुष्यपर जब कोई आपत्ति आती है तो बस उसके लिए एक ही मार्ग खुला होता है, और वह यह कि जितनी जल्द मुमकिन हो वह अपने-आपको बेच डाले। — तिरुवल्लुवर

आपदा

ईश्वर आपदाओका भला करे, क्योकि इन्हीके जरिये हमने अपने शत्रुओ और मित्रोको परख लिया है। — अज्ञात

आपा

वही आदमी अपना भला करेगा जिसने अपने आपेको पाक साफ किया, और वह आदमी अपना भला नही कर सकता जिसने अपने आपेको नीचे गिराया यानी अपनेको नापाक किया। — कुरान

आफ़त

सारी आफ़त इच्छा और कामवासनामें है, नही तो इस दुनियामें शरबत-ही-शरबत है। — मौलाना रूम

आभारी

आभारी होना शर्मिन्दगीकी हालत है। — गोल्डस्मिथ

आभूषण

नम्रता और स्नेहार्द्र वाणी, बस ये ही मनुष्यके आभूषण हैं। — तिरुवल्लुवर

आभास

यह ध्यान रख कि जिसे तू सत्य समझकर ग्रहण करता है कही वह उसका आभास मात्र न हो! — अज्ञात

आर्य

जो प्राणियोकी हिंसा करता है वह आर्य नही। समस्त प्राणियोंके साथ जो अहिंसाका बरताव करता है वही आर्य है। — बुद्ध

आयु

जब आयुकी सीमा अन्तमे मृत्यु है, तब आयुका अधिक या न्यून होना बराबर-सा ही है। — अज्ञात

शुद्ध कर्म करनेवाला मनुष्य घण्टे-भर जिये तो अच्छा है, मगर इस लोक और परलोकको बिगाडनेवाला, काले काम करनेवाला लाख बरस जिये तो खराब है। — अज्ञात

करोड मुहरें खर्च करनेसे भी आयुका एक पल भी नही मिल सकता, वह अगर तमाम वृथा गयी तो उससे अधिक हानि क्या है? — शंकराचार्य

आराम

ईसाई धर्ममे कहा है कि ईश्वरने छह दिन तक सृष्टि की और सातवें दिन विश्राम किया। यह सातवां दिन बहुत लम्बा हो गया है। ईश्वरके आराम करनेसे दुनियाके नाकों-दम आ रहा है। – पालशिरर

आलस

पापके लिए प्रायश्चित्त करना तो साधारण है, पर आलसके लिए प्रायश्चित्त करना असाधारण है। – जुन्नुन

आलस्य

पानीमें अगर सिवार हो तो मनुष्य उसमें अपना प्रतिबिम्ब नही देख सकता। इसी प्रकार जिसका चित्त आलस्यसे पूर्ण होता है, वह अपना ही हित नही समझ सकता, दूसरोंका हित कैसे समझेगा? – बुद्ध

आलस्य एक प्रकारकी हिंसा है। – गान्धी

आलस्यमें दरिद्रताका वास है, मगर जो आलस्य नहीं करता उसके परिश्रममें कमला बसती है। – तिरुवल्लुवर

आलस्यकी रफ्तार इतनी धीमी है कि उसे दरिद्रता फौरन् आ दबाती है। – अज्ञात

पहले ईमानदारी, फिर मकानदारी। – अज्ञात

अगर इस दुनियामें आलस्य न होता तो कौन धनी या विद्वान् न बन जाता? सिर्फ आलस्यके कारण ही यह सारी पृथ्वी नर-पशुओं और कंगालोंसे भरी हुई है। – अज्ञात

आलसी

एक दिन आलसी आदमी इस कारण काम नहीं करता कि आज बड़ी कड़ाकेकी सरदी पड़ रही है और दूसरे दिन बेहद गरमीके कारण वह कामसे जी चुराता है। किसी दिन कहता है कि अब तो शाम हो

गयी है, कौन काम करने जाये, और किसी दिन यह कहता है कि अभी तो बहुत सवेरा है, कामका वक्त अभी कहाँ हुआ है ! — बुद्ध

ईश्वर उसीकी सहायता करता है, जो स्वयं अपनी मदद करता है। वह आलसी पुरुषको मरने देना ही अधिक पसन्द करेगा। — गान्धी

आलोचक

बच्चोंको आलोचकोंकी अपेक्षा आदर्शोंकी अधिक आवश्यकता है। — जोवर्ट

मेरा पहला नियम है कि मैं छिद्रान्वेषी आलोचकोंसे दूर रहता हूँ। — गेटे

आलिम

बदतरीन आलिम वह है जो दौलतमन्दोंका मोहताज हुआ; और बहतरीन अमीर वह है जो आलिमका ख्वास्तगार हो। — मुहम्मद

आलोचना

सबसे पहले यह करो कि दोषान्वेषण और आलोचनाकी आदत छोड दो। — प्रोफेसर ब्लेथी

आवश्यकता

जीवनमे हमारी प्रधान आवश्यकता यह है कि कोई ऐसा मिले जो हमसे वह कराये जो हम कर सकते हैं। — एमर्सन

ज़मीन इनसानको ज़िन्दगीकी ज़रूरियात मुहय्या कर दे, तब कहीं उसे फ़ुरसत या इच्छा होगी कि सूक्ष्मतर खुशियोंका अनुशीलन करे। — गोल्डस्मिथ

अपनी आवश्यकताएँ थोडी कर तो सफल होगा; और आवश्यकताकी न्यूनता विद्वत्ताका चिह्न है। — इब्न-उल-वर्दी

खुदकी कुछ आवश्यकता हो, वह न बताना यह बड़ा अभिमान और अन्याय है और उससे अपने प्रियजनोंपर बड़ा बोझ पड़ता है। — गान्धी

आवाज़

चारित्रका परिचायक आवाज़के समान कोई शर्तिया लक्षण नहीं ।

– टैनक्रेड

आशंका

सबसे अटल नियम यह है कि जैसी हम आशका करते हैं वैसा ही गुज़रता है । – थोरो

साँपकी आशकासे अन्धा मनुष्य शिरपर डाली जानेवाली माला फेंक देता है । – कालिदास

आश्चर्य

इससे अधिक आश्चर्यजनक कुछ नही है कि किस आसानीसे थोडे-से लोग बहुतोंपर शासन करते हैं । – अज्ञात

आशा

आशाको जीवनका लगर कहा है, उसका सहारा छोडनेसे आदमी भव-सागरमे वह जाता है, पर बिना हाथ-पैर हिलाये केवल आशा करनेसे ही काम नही सरता । – लुकमान

जो आशाके दास हैं वे सर्वलोकके दास हैं और आशा जिनकी दासी है उनकी तमाम दुनिया दासी बन जाती है । – अज्ञात

जो आशाओंपर जीता है वह फाके करके मरेगा । – फ्रेंकलिन

जो मिल जाये उसीमे सन्तोष मानना, परायी आशासे निराशा अच्छी ।

– हासम

हमेशा ईश्वरका भय रखो और प्रभुके सिवाय किसीकी आशा न रखो ।

– हातिम हासम

धन्य है वह, जो आशा नही रखता, क्योकि वह निराश नही होगा ।

– स्विट

अपनी आशाओंकी मुर्गियोंके पर कँच कर दो, वरना वे तुम्हें अपने पीछे भगा-नचाकर परेशान कर डालेंगी। – फ्रेंकलिन

आशा और आनन्दका रुझान सच्ची दौलत है, भय और रंजका, सच्ची ग़रीबी। – ह्यूम

आशा अमर है, उसकी आराधना कभी निष्फल नही होती। – गान्धी

लोगोंकी आशा छोड, ऐसा करनेसे लोग भी तेरी आशा छोड देंगे। जो साधना करे, गुप्तरूपसे प्रभुके निमित्त कर, ईश्वर अपने-आप जगत्‌की भलाईके लिए तेरे गौरवका प्रसार करेगा। तू दुनियाकी सेवा करेगा तो दुनिया भी तेरी सेवा करेगी। – हातिम हासम

आशा अमर है, परन्तु उसके बच्चे एक-एक करके मरते जाते हैं। – अज्ञात

आशाकी आशामे निश्चित वस्तु न छोड दो। – अज्ञात

जबतक तुम ससारसे सुख-शान्तिकी आशा रखोगे, ईश्वरके प्रति सन्तोषी नही बन सकोगे। यदि तुम सासारिक भयोंसे डरोगे तो तुम्हारे मनमें ईश्वरका डर नहीं समा सकेगा। यदि तुम दूसरेकी आशा रखोगे तो ईश्वरकी आशा निष्फल होगी। – अबु उस्मान

आशा ही वह मधुमक्षिका है जो बिना फूलोंके शहद बनाती है। – इंगरसोल

नरकके बीज बोकर स्वर्गकी आशा रखनेसे अधिक मूर्खता क्या होगी ? – हयहया

आशावादी

आशावादी हर कठिनाईमे अवसर देखता है, निराशावादी हर अवसरमे कठिनाई देखता है। – अज्ञात

आशिक़ी

सूरतपर आशिक़ होनेको अपने-आपसे दुश्मनी करना समझ। – अज्ञात

आश्रय

जो ईश्वरके सिवाय न किसीकी आशा रखता है न किसीका भय, वास्तवमें वही ईश्वरपर निर्भर रहनेवाला है। — फजल अयाज

शैतानको छोडकर खुदाका आश्रय लो। — आबिस

आसक्ति

ईश्वरने कहा है—जो ज्ञानी ससारपर प्रेम रखता है उसके हृदयमें-से मैं ईश्वर-स्तवन और उसके गुणगानमे-से मिठास हर लेता हूँ। — मलिक दिनार

आसक्ति भय और चिन्ताकी जड है। — स्वामी रामतीर्थ

दु खका मूल कारण आसक्ति है। — महाभारत

अनासक्तिका अर्थ प्रेमकी कमी नही, जहाँ प्रेमका फल दु ख होता हुआ दिखाई दे वहाँ समझो कि आसक्ति है। — हरिभाऊ उपाध्याय

रखनेको फूल इकट्ठे करनेके लिए ठिठको मत, बल्कि चलते रहो, क्योंकि फूल तुम्हारे तमाम रास्ते-भर अपनेको खिलाते रहेगे। — टैगोर

आसक्तिका राक्षस नष्ट कर दिया तो इच्छित वस्तुएँ तुम्हारी पूजा करने लगेंगी। — स्वामी रामतीर्थ

यहाँके सुन्दर, कोमल और कीमती कपडो और स्वादिष्ट भोजनोमे आसक्त रहनेवालेको स्वर्गीय अन्न-वस्त्रसे वचित रह जाना पडेगा। — फजल अयाज

बुरेसे बुरा दुर्भाग्य मनकी मौत है, ससारमें आसक्ति होना मनका मरना है। — हुसेन बरसाई

जबतक लोक और लौकिक पदार्थोंमे आसक्ति रहेगी, तबतक ईश्वरमे सच्ची आसक्ति न हो सकेगी। — जुन्नुन

आसुरी-वृत्ति

आसुरी-वृत्तिके खिलाफ युद्ध करनेसे इनकार करना नामर्दी है। — गान्धी

आँसू

ईश्वर कभी-कभी अपने बच्चोंकी आँखोंको आँसुओंसे धोता है, ताकि वे उसकी कुदरत और उसके आदेशोंको सही पढ सकें। – काइलर

अहार

जिसे हवा, पानी और अन्नका परिमाण समझमें आ गया वह अपने शरीरपर जितना अधिकार रख सकता है उतना डॉक्टर कभी नहीं रख सकता। – गान्धी

हम पशुओंकी सतहपर न उतर आयें जिनका कि प्रधान आनन्द खाने और पीनेमें है। हमारे अन्दर एक अमर आत्मा है जो परम कल्याणके सिवाय किसीसे तृप्त नहीं होती। – स्टर्न

कोई इज्जतदार आदमी, खाते वक्त, डटकर नहीं खाता। – कन्फ्यूशियस

शास्त्रदृष्टिसे तीन प्रकारका अन्न त्याज्य है. जिस अन्नसे रजोगुण बढता है वह, जो अन्न गन्दी जगह तैयार किया गया हो वह, और जिस अन्नसे दुष्ट मनुष्यका स्पर्श हो गया हो वह। – विवेकानन्द

आज्ञापालन

दुष्ट आदमी डरसे आज्ञापालन करते हैं, अच्छे आदमी प्रेमसे। – अरस्तू

■

इ

इखलाक़

उम्दा इखलाक़ दौलतसे नहीं मिलते, बल्कि दौलत उम्दा इखलाक़से मिल जाया करती है। – सुक़रात

इच्छा

इच्छासे दुःख आता है, इच्छासे भय आता है, जो इच्छाओसे मुक्त है वह न दुःख जानता है न भय। — बुद्ध

इच्छापर विचारका शासन रहे। — सिसरो

इच्छा कभी तृप्त नही होती, किन्तु अगर कोई मनुष्य उसको त्याग दे तो वह उसी दम सम्पूर्णताको प्राप्त कर लेता है। — तिरुवल्लुवर

जब तुझे किसी मामलेमे भलाई-बुराई न सूझ पडे, उस समय अपनी इच्छाका निरोध कर। — अज्ञात

हमारी इच्छाएँ जितनी ही कम हो, उतने ही हम देवताओके समान हैं। — सुकरात

इच्छा एक रोग है। — स्वामी रामतीर्थ

कुहरा पृथ्वीकी इच्छाकी तरह है, वह उस सूरजको छिपा देता है जिसके लिए वह चिल्लाती है। — टैगोर

तुम अपनी इच्छाओको जितना घटाओगे उतने ही परमात्मपदके निकट होगे। — सुकरात

जिस क्षण तुम इच्छासे ऊपर उठ जाओगे, इच्छित वस्तु हमारी तलाश करने लगेगी, यही नियम है। — स्वामी रामतीर्थ

हमारी इच्छा जिन्दगीके महज कुहरे और भापको इन्द्रधनुषके रग प्रदान करती है। — टैगोर

सासारिक आकाक्षा रखकर कोई साधना न करे, जो केवल प्रभुकी खोज करता है, उसको इच्छा पूर्ण हो जाती है। — अज्ञात

इच्छा शक्ति

अपनी प्रचण्ड इच्छा-शक्तिसे कोई कब क्या बन जायेगा, कह नही सकते। — पटोरिया

महान् आत्माओकी इच्छा-शक्तियाँ होती है, दुर्बल आत्माओकी सिर्फ़ इच्छाएं। — चीनी कहावत

इच्छुक

लोकके इच्छुक क्रूर हैं, परलोकके इच्छुक मजूर हैं, मालिकके इच्छुक शूर है। – अज्ञात

इठलाना

अपने पद या स्थानपर इठलाना, अपनेको उससे नीचा दरशाना है। – स्टेनिस्लो

इज्जत

दुष्ट आदमीको दौलत और इज्जत देना, गोया बुखारके मरीजको तेज शराब पिलाना है। – प्लुटार्क

इज्जत और शर्म किसी दशासे पैदा नही होते, अपने पार्टको अच्छी तरह खेलो, इसीमे सारी इज्जत है। – पोप

दुनियाकी इज्जत-आबरू शैतानकी शराब है। – हयहया

दुनियामे इज्जतके साथ जीनेका सबसे छोटा और सबसे शर्तिया उपाय यह है कि हम जो कुछ बाहरसे दिखना चाहते हैं वैसे ही वास्तवमे हो भी। – सुक़रात

अपनी इज्जतको ईजा पहुँचानेकी अपेक्षा दस हजार बार मरना अच्छा। – एडीसन

आदमीके लिए यह शर्मकी बात है कि वह केवल अपने शरीफ पूर्वजोके कारण ही इज्जत चाहे और खुद अपने सद्गुणोसे उसका हकदार बननेकी कोशिश न करे। – अज्ञात

मेरी इज्जत मेरी जिन्दगी है, दोनो साथ-साथ बढती हैं, मेरी इज्जत ले लो तो मेरी जिन्दगी खत्म हो जाये। – शेक्सपीयर

इतिहास

इतिहास दरशाता है कि चन्द व्यक्तियोकी कषायोने लोगोपर कैसे-कैसे दुख ढाये। – लिंगार्ड

जो लोग इतिहासके मजमून बनते हैं, उन्हे उसके लिखनेकी फुरसत नही होती। – मैंटरनिच

इत्तिफ़ाक़

जिसे लोग इत्तिफाक कहते है वह खुदाकी मुबारिक खबरदारी है। – बेली

इन्द्रिय-निग्रह

जहाँ बुद्धि और भावनाका मेल नही दीखता, वहाँ इन्द्रिय-निग्रहका अभाव है। – विनोबा

जैसे कछुआ अपने सब अगोको समेट लेता है, उसी प्रकार जब मनुष्य अपनी इन्द्रियोको विषयोमे-से खीच लेता है, तभी उसकी बुद्धि स्थिर होती है। – महाभारत

तूफानी घोडेकी रस्सीको ढील देकर उसे चाहे जहाँ जाने देनेके लिए अधिक सामर्थ्यकी जरूरत नही, यह तो कोई भी कर सकता है; मगर रस्सी खीचकर उसे खडा रखनेमे समर्थ है ? – विवेकानन्द

इन्द्रियाँ

इन्द्रियोको वशमे करना सुज्ञ पुरुषका काम है, उसके वश हो जाना मूर्खका। – एपिक्टेटस

इनसान

इनसान जब हैवान बन जाता है उस वक्त वह हैवानसे बदतर होता है। –टैगोर

इबादत

आदत और इबादत एक साथ नही रह सकती अगर तू इबादत करना चाहता है तो आदतका त्याग कर दे। – शम्सतरी

इरादा

हम अपने उत्तमतर कामो तकसे अकसर शर्मिन्दा हो जायें, अगर दुनिया सिर्फ उन इरादोको देख सके जिनकी प्रेरणासे वे किये गये थे।

— रोची

आदमी कृतियोपर विचार करता है, लेकिन ईश्वर इरादोको तोलता है।
— अज्ञात

इलाज

सूरज-तले हर बेहूदगीका इलाज या तो है या नही, अगर इलाज है तो उसका पता लगानेकी कोशिश करो, अगर नही है तो उसको धता पिलानेकी कोशिश करो।
— अज्ञात

समय वह जडी है जो तमाम रोगोका इलाज कर देती है। — फ्रैंकलिन

इहलोक

इस दुनियामे भेपना अच्छा है बजाय इसके कि हमे अगली दुनियामे कष्ट भोगना पडे।
— ह० मुहम्मद

■

ई

ईजा

ईजाओंको खाकपर और मेहरबानियोंको संगमरमरपर लिखो।

— प्लेटो

ईद

ईद नहीं तो फ़ाक़ा।
— अज्ञात

ईमान

ईमान क्या है ? सब्र करना और दूसरोंकी भलाई करना । – मुहम्मद

अगर मोमिन (ईमानवाला) होना चाहता है तो अपने पड़ोसीका भला कर और अगर मुसलिम होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिए अच्छा समझता है वही सबके लिए अच्छा समझ । – मुहम्मद

ईमानदार

ईमानदार आदमीका सोचना लगभग हमेशा न्यायपूर्ण होता है । – रूसो

ईमानदार होना, फ़ी ज़माना, दस हज़ारमें एक होना है । – शेक्सपीयर

ईमानदार मनुष्य ईश्वरकी सर्वोत्कृष्ट कृति है । – फ़ीथिकर

आदमी पहले ईमानदार और नेक बने, और बादमें तहज़ीब और ख़ुशनूदीकी पॉलिश चढ़ाये । – कन्फ्यूशियस

ईमानदार आदमी ईश्वरकी सर्वोत्कृष्ट कृति है । – पोप

ईश-कृपा

जब सत्कर्मीको असह्य कष्ट हो तो समझना चाहिए कि ईश्वर शीघ्र ही उसपर कृपा करनेवाला है । – अज्ञात

ईश्वरकी कृपाके बिना मनुष्यके प्रयत्नसे कुछ भी नहीं मिल सकता । – बायजीद

ईश्वरने कहा है—मैं अपनी स्वाभाविक करुणासे मनुष्यको उसकी इच्छासे भी विशेष देता हूँ । – सादिक

ईश-चिन्तन

जिस मुहूर्तमें या क्षणमें ईश्वरका चिन्तन न किया उसे महाहानि, समझो, उसे महाछिद्र मानो और वही अन्धता, जड़ता और मूढ़ता है । – मार्कण्डेय

जितनी बार साँस लेते हो उससे अधिक बार ईश-चिन्तन करो।
— एपिक्टेटस

ईश-प्राप्ति

जबतक कोई शख्स 'अल्लाह हो! अल्लाह हो! हे भगवन्! हे भगवन्!' चिल्लाता है निश्चय जानो उसे ईश्वर नहीं मिला, जो उसे पा लेता है चुप और शान्त हो जाता है। — रामकृष्ण परमहंस

ज्ञान, उपासना और कर्म ये ईश्वर-प्राप्तिके तीन विभिन्न मार्ग नहीं हैं— ये तीनो मिलकर एक मार्ग हैं। — गान्धी

ईश्वर-प्राप्तिके लिए मुझे अपनी अनासक्ति ही अच्छी लगती है। उसमे सब-कुछ आ जाता है। — गान्धी

ईश-प्रेम

जहाँ ईश्वरके प्रति सबसे ज्यादा प्रेम है वहाँ सबसे सच्ची और सबसे बडी दानशीलता होगी। — सूदे

ईश्वरपर प्रेम करना और फक्त उसीकी सेवा करना इसके सिवाय सब फिजूल है। — अज्ञात

ईश-दर्शन

जबतक कामिनी और कचनका मोह नही छूट जाता, ईश्वरके दर्शन नही हो सकते। — रामकृष्ण परमहंस

ईश्वरके दर्शन तब होते है जब मन बिलकुल शान्त हो जाता है।
— रामकृष्ण परमहंस

मैंने तुझे उसी तरह देखा है, जिस तरह कि अर्ध-जागृत बालक प्रातः-कालके धुँधलेपनमे अपनी माँको देखता हे और तब मुसकराता है फिर सो जाता है। — टैगोर

जबतक इच्छाका लवलेश भी विद्यमान है ईश्वरका दर्शन नही हो

सकता, इसलिए अपनी छोटी-छोटी इच्छाओंको पूरी कर ले, और सम्यक् विचार और विवेक-द्वारा बडी-बडी इच्छाओंका त्याग कर दे।

– रामकृष्ण परमहंस

जिसके चित्तमे तरगे उठती ही रहती हैं वह सत्यके दर्शन कैसे कर सकता है। चित्तमे तरगका उठना समुद्रके तूफान-जैसा है। तूफानमे जो तूफानपर काबू रख सकता है वह सलामत रहता है। ऐसे ही चित्तकी अशान्तिमे जो रामनामका आश्रय लेता है वह जीत जाता है।

– महात्मा गान्धी

ईश्वर

जबतक हम ईश्वरकी लाइनपर काम करते हैं, वह हमारी मदद करेगा। जब हम अपनी लाइनोंपर काम करनेकी कोशिश करते है, तो वह असफलता देकर हमे झिडकता है। – टी० एल० कॉयलर

तपस्वियो, 'उस'से डरो, बस फिर तुम्हे किसी औरसे न डरना पडेगा। 'उस'की सेवाको तुम अपना आनन्द बना लो, तुम्हारी आवश्यकताकी पूर्ति करना 'उस'का काम होगा। – अज्ञात

ईश्वर न दूर है न दुर्लभ है, महाबोधमयी अपनी आत्मा ही ईश्वर है।

– अज्ञात

ईश्वर अन्तरात्मा ही है। – गान्धी

मेरा ईश्वर तो मेरा सत्य और प्रेम है। नीति और सदाचार ईश्वर है, निर्भयता ईश्वर है। – गान्धी

ईश्वर ही पूर्णतः इच्छा-रहित है। मानवीय सद्गुणोंमे वही सर्वोत्कृष्ट और दैविक है जिसमे जरूरत कमसे कम है। – प्लुटार्क

केवल शास्त्र पढ़कर ईश्वरकी व्याख्या करना ऐसा है जैसा बनारस शहरको सिर्फ़ नक्शेमे देखकर किसीको उसका विवरण सुनाना।

– रामकृष्ण परमहंस

जो ईश्वरका क्रोध पहचानता है वह क्रोधरहित होता है। जो ईश्वरकी क्षमा पहचानता है वह क्षमावान् होता है। – विनोबा

ईश्वरसे प्रेम करो, वह तुम्हारे साथ रहेगा, ईश्वराज्ञा पालो, वह तुमपर अपने गहनतम राज रोशन कर देगा। – रॉबर्टसन

ईश्वर कल्पवृक्ष है; जो उसके समक्ष कहता है—'हे प्रभो मेरे पास कुछ नहीं है'—उसे सचमुच कुछ नहीं मिलता, लेकिन जो कहता है—'हे भगवन्, तूने मुझे सब कुछ दिया है'—उसे सब कुछ मिल जाता है। – रामकृष्ण परमहंस

ईश्वरके दो निवास स्थान हैं—एक वैकुण्ठमे, और दूसरा नम्र और कृतज्ञ हृदयमे। – आइज़क वाट्सन

ईश्वरके रहस्यको तू तभी समझ सकेगा जब कि अपने दिलको साफ बना लेगा। – जामी

हवनकी सामग्री भी ब्रह्म है। घी भी ब्रह्म है, आग भी ब्रह्म है, हवन करनेवाला भी ब्रह्म है, और जो आदमी इस ब्रह्म-कर्ममे लगा हुआ है, वह ब्रह्म ही को पहुँचता है। – गीता

शारीरिक काम ज्यादा करो। ...सब काम करनेमे ईश्वरके दर्शन करो, क्योंकि ईश्वर सबमे भरा है। – गान्धी

कोई कहते हैं 'ईश्वर अज्ञेय है' अगर 'अज्ञेय' है तो 'है' किस परसे ? अगर 'है' तो 'अज्ञेय' कैसा ? – अज्ञात

ईश्वर लोगोको गहरे पानीमे डुबानेके लिए नहीं—साफ करनेके लिए लाता है। – औथे

दृश्य ईश्वर क्या है ? गरीबकी सेवा। – गान्धी

ईश्वर भौतिक सृष्टिका उपद्रष्टा, नैतिकताका अनुमन्ता, आस्तिकोंका भर्ता, निष्कामियोका भोक्ता और भक्तोका महेश्वर है। – विनोबा

जबतक कोई हमेशा सच न बोले ईश्वरको नहीं पा सकता, क्योंकि ईश्वर सत्यकी आत्मा है। – रामकृष्ण परमहंस

ईश्वरके नाम तो अनेक हैं, लेकिन एक ही नाम ढूँढें तो वह है सत्-सत्य। इसलिए सत्य ही ईश्वर है। – गान्धी

मनुष्य जिसका ध्यान करता है, उसके मार्फत ईश्वरको निश्चित देखता है। – गान्धी

जो मनुष्य ईश्वरसे डरता है, उसके कामोका फल अच्छा हुआ करता है, और ईश्वर उसे प्रत्येक बुराईसे बचाता है। – अबुल-फतह-बुस्ती

अल्लाह कहता है—कि मैं ऊपर या नीचे, जमीनमे या आसमानमे या अर्शपर कही नही समा सकता, पर मैं मोमिन (विश्वासी भक्त) के दिलमे रहता हूँ, जो मुझे ढूंढना चाहे वही ढूंढ ले। – मुहम्मद

तू अल्लाहको मखलूक यानी दुनियामे अलग मत देख और न मखलूक (आदमियो, जानवरो और सब चीजो) को अल्लाहके सिवा किसी दूसरे रूपका समझ। – सूफी मुहीउद्दीन इब्न

अगर तुम ईश्वरको देखना चाहते हो, तो तुम्हे ईश्वर बन जाना पड़ेगा। – बर्नार्ड शा

जो मुझे (ईश्वरको) सब जगह और सब चीजोको मेरे अन्दर देखता है, वह न कभी मुझसे अलग होता है और न मैं उससे अलग होता हूँ। जो आदमी एक दिल होकर सब जानदारोके अन्दर सबके घटमे रहनेवाले ईश्वरकी पूजा करता है वह योगी चाहे कही भी रहे ईश्वरके अन्दर है। – गीता

ईश्वर हमको कभी नही भूलता, हम उसको भूलते है वही सच्चा दुःख है। – गान्धी

मैं ही मिठाइयोकी मिठास हूँ, मैं ही बादामके अन्दर रोगन हूँ, कभी मैं बादशाहोका ताज होता हूँ, कभी होशियारोकी होशियारी और कभी मुफलिसोकी मुफलिसी। – मौलाना रूमीकी मसनवी

जो अपने सब काम ईश्वरके ऊपर छोडकर बे-लगाव होकर काम करता है उसे पाप नही लगता। – गीता

जो अल्लाहपर तवक्कुल करता है (सब-कुछ उसीपर छोड देता है) उसके लिए अल्लाह काफी है। – कुरान

सन्तोकी वाणी सुनो, शास्त्र पढो, विद्वान् हो लो, लेकिन अगर ईश्वरको हृदयमे स्थान नही दिया तो कुछ नही किया। – गान्धी

मैं पानी-जैसी चीज़ोमे रस हूँ, सूरज और चाँदकी रोशनी हूँ, वेदोमे 'ॐ' हूँ, आकाशमे आवाज हूँ, लोगोमे उनकी हिम्मत हूँ, ज़मीनमे खुशबू हूँ, आगमे उसकी दमक हूँ, तपस्वियोका तप हूँ और सब जानदारोकी जान हूँ। – कृष्ण

अगर मुझे यह विश्वास हो जाता कि मैं हिमालयकी किसी गुफामे ईश्वरको पा सकता हूँ, तो मैं तुरन्त वहाँ चल देता। पर मैं जानता हूँ कि मैं इस मनुष्यजातिको छोडकर उसे और कही नही पा सकता। – गान्धी

ईश्वर-कृपा उनपर होती है जिनके दिमाग साफ हैं और हाथ मजबूत। – वार्ड बीचर

जिसने यह समझा कि ईश्वर नही जाना जा सकता वही जानता है, उसे जाननेका दावा करनेवाले असलमे उसे नही जानते, उसे वे ही जानते हैं जो उसे जाननेका दावा नही करते। – सामवेद

'वह मेरे दिलमे है और मेरा दिल उसके हाथमे है, जिस तरह आइना मेरे हाथमे है और मैं आइनेमे हूँ।' – एक सूफी

वह आप ही प्याला है, आप ही कुम्हार है, आप ही प्यालेकी मिट्टी है और आप ही उस प्यालेसे पीनेवाला है। वह खुद आकर प्याला खरीदता है और खुद ही प्यालेको तोडकर चल देता है। – एक सूफी

ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा बल है और वही आपत्तिके समयमे हमारी रक्षा करता है। — बाइबिल

ईश्वर सत्य और नित्य यानी हक और लाज़वाब है, बाकी सब असत्य और अनित्य यानी बातिल और फानी है, यह समझते हुए अपने सब फर्ज़ोंको पूरा करना असली 'यज्ञ' है। — गीता

वही सब कुछ जानता है और जो उसे जाने जाय वह भी सब कुछ जानता है। — गीता

यह सभी उसका 'विश्वरूप' है। इसलिए आदमीको चाहिए कि दुनियाके सब प्राणियोंके साथ दोस्ती और मेल रखे (निर्वैर सर्वभूतेषु)।
— गीता

आदमी सिर्फ 'आत्मयोग'के ज़रिये यानी अपने नफ्सको काबूमे करके और 'अनन्य भक्ति'के ज़रिये ही उसे जान सकता है, ठीक-ठीक देख सकता है और उसीमे लय होकर समा सकता है। — गीता

ईश्वर ही सत्य है, दुनिया माया है। — स्वामी रामतीर्थ

सब भूतोके हृदय-प्रदेशमे रहनेवाला ईश्वर सब भूतोको, अपनी मायासे, यन्त्रपर बैठे हुओकी तरह चला रहा है। — गीता

ईश्वर सब लोगोमे है, मगर सब लोग ईश्वरमे नही है और इसलिए वे दुःखी है। — स्वामी रामकृष्ण

ईश्वर ही ईश्वरको समझ सकता है। — डॉक्टर यग

ईश्वर आत्माकी दुलहिन या दूल्हा है। — एमर्सन

मानवताकी सेवाके द्वारा ही ईश्वरके साक्षात्कारका प्रयत्न मैं कर रहा हूँ, क्योकि मैं जानता हूँ कि ईश्वर न तो स्वर्गमे है और न पातालमे, बल्कि हर एकके हृदयमे है। — गान्धी

न मैं कैलाशमे रहता हूँ न वैकुण्ठमे, मेरा वास भक्तोके हृदयमे है।
— शिवस्तोत्र

जैसा मेरा हृदय है, वैसा ही मेरा ईश्वर है। — ल्यूथर

ईश्वर-स्मरण

अखण्ड ईश्वर-स्मरण माने अखण्ड कर्त्तव्यजागृति। — विनोबा

ईश्वर-शरणता

ईश्वर-शरणताकी मूर्ति फलका त्याग। — विनोबा

ईश-विमुख

आगमे पड़े[illegible]नेपर भी ईश्वर-विमुख मनुष्योंके हाथका ठण्डा पानी होठोंसे [illegible]ना। — शम्सतरी

ईश्वरार्पण

मनुष्य कब ईश्वरार्पण हो सकता है? जब कि वह अपने-आपको—अपने हर एक कामको बिलकुल भूल जाये, सर्वभावसे उसका आसरा ले ले और उसके सिवा किसी दूसरेसे न तो आशा रखे, न सम्बन्ध रखे। — जुन्नुन

ईश्वरेच्छा

ईश्वरकी मंशाको इस तरह पूरा कर, मानो वह तेरी ही मंशा हो और वह तेरी मंशाको इस तरह पूरी करेगा, मानो कि वह उसकी ही मंशा हो। — रब्बी

ईश-समान

जिसके दिलमे स्त्रीकी आँखोके तीरोने असर नहीं किया, घोर क्रोधकी काली रातमे जो जागता रहा, लोभके फन्देमे जिसने अपना गला नही बँधने दिया, वह आदमी भगवान्‌के समान है। वह गुण साधनसे नही, ईश-कृपासे मिलता है। — रामायण

ईश-साक्षात्कार

यह नही हो सकता कि तुम दुनियाके मज़े ले सको, कि तुम तुच्छ, निकृष्ट, शर्मनाक, गन्दे सासारिक इन्द्रियभोगोके मज़े भी लेते रहो और ईश-साक्षात्कारके भी दावेदार बन सको। — स्वामी रामतीर्थ

मुझे अपने परमात्माकी प्राप्ति इसी जन्ममें करनी है। हाँ, मैं उसे तीन दिनमें प्राप्त कर लूँगा, नहीं, उसके नामको सिर्फ एक बार लेनेसे ही मैं उसे अपने तक जरूर खींच लूँगा,—ऐसे उत्कट प्रेमसे परमात्मा तुरन्त खिंचा चला आता है और उसकी अनुभूति हो जाती है, अर्धविदग्ध प्रेमियोंको अगर वह मिला भी तो युगोंके बाद मिलता है। – रामकृष्ण परमहंस

ईर्ष्या

ईर्ष्या करनेवालेके लिए ईर्ष्याकी बला ही काफी है, क्योंकि उसके दुश्मन उसे छोड़ भी दें तो भी उसकी ईर्ष्या ही उसका सर्वनाश कर देगी।

– तिरुवल्लुवर

सच पूछो तो ईर्ष्याका तात्पर्य यही है कि ईर्ष्यावान् जिसको ईर्ष्या करता है उसको अपनेसे बड़ा मानता है। – वान हापर

ईर्ष्या चारों ओरसे दूसरोंकी कीर्तिके प्रकाश-मण्डलसे घिरी रहती है जिसके भीतर यह बिच्छूकी तरह जो ज्वालासे घिर गया हो अपनेको आप ही डंक मारती हुई मर मिटती है। – लुकमान

लक्ष्मी ईर्ष्या करनेवालेके पास नहीं रह सकती, वह उसको अपनी बड़ी बहन (दरिद्रता) के हवाले करके चली जायेगी। – तिरुवल्लुवर

वह फल जो अकेला है उसे उन काँटोंपर रश्क करनेकी क्या ज़रूरत है जो तादादमें बेशुमार हैं? – टैगोर

■

उ

उच्च

उच्च आदमी सत्कर्मका विचार करता है, तुच्छ आदमी आरामका, उच्च आदमी नियमकी पाबन्दियोंका विचार करता है, तुच्छ आदमी उन मेहरबानियोंका जो उसे प्राप्त हो सकती हैं। – कन्फ्यूशियस

उच्चता
उच्चपद तक टेढी मेढ़ी सीढोके बगैर नहीं पहुँचा जा सकता।
—लार्ड बेकन

उजड्डपन
कोई हो और कही हो, वह हमेशा गलतीपर है अगर वह उजड्डपनसे पेश आता है। — मौरिस बेरिंग

नियम ले लो कि अपने हृदयकी नेकी और दयालुताको बाहरो उजड्डपनके परदेमें कभी न छिपाओगे। — अज्ञात

उत्कटता
साधन अल्प भले ही हो परन्तु उत्कटता तार देगी। — विनोबा

उत्कर्ष
समाजका महान् उत्कर्ष व्यक्तिगत चारित्र्यमे है। — चैनिंग

उत्कृष्टता
बुरा काम करना कमीनापन है, बिना खतरा उठाये अच्छा काम करना, साधारण बात है, लेकिन उत्कृष्ट मनुष्य हो है जो कि महान् और नेक कामोको, अपना सब कुछ होम कर भी, कर दिखाता है। — प्लुटार्क

उत्तरायण
असत्यसे सत्यकी ओर, अँधेरेसे उजालेकी ओर, मृत्युसे अमृतकी ओर ये साधकका उत्तरायण है। —अज्ञात

उत्तर
कुछ जवाब न देना भी एक जवाब है। — कहावत

मूर्खको उसकी मूर्खताके अनुरूप ही उत्तर न दो, नही तो तुम भी उसीके अनुरूप हो जाओगे। — अज्ञात

उतावली

'उतावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा ।' प्रतिक्षण इसका सत्य देखा जाता है। – गान्धी

उत्साह

उत्साह अत्यन्त बलवान है, उत्साह सरीखा दूसरा बल नहीं, उत्साही पुरुषको लोकमे कुछ भी दुर्लभ नही है। – रामायण

अनन्त-उत्साह—बस यही तो शक्ति है, जिनमे उत्साह नही है वे और कुछ नही, केवल काठके पुतले है। – तिरुवल्लुवर

उत्साह प्रेमका फल है। जिसमे सच्चा प्रभु-प्रेम होता है वही उसके दर्शनके लिए उत्सुक रहता है। – अबुउस्मान

उत्साह आदमीकी भाग्यशीलताका पैमाना है। – तिरुवल्लुवर

उदार

दिलदार आदमीका वैभव गाँवके बीचोबीच उगे हुए और फलोसे लदे हुए वृक्षके समान है। – तिरुवल्लुवर

'यह मेरा यह दूसरेका'—ऐसा तगदिल लोग गिनते है। उदार चित्तवाले तो सारी दुनियाको कुटुम्बरूप समझते हैं। – हितोपदेश

विजेता आतक जमाता है, ज्ञानीका हम आदर करते है, लेकिन उदार मनुष्य ही हमारा स्नेह-भाजन होता है। – फ्रेंचसे

उदार मनवाले विभिन्न धर्मोंमे सत्य देखते हैं, सकीर्ण मनवाले सिर्फ फर्क देखते है। – चीनी कहावत

जिसके पास जो है उसीसे उदार नही है, तो वह यह सोचकर कि ज्यादा मिलनेपर उदार बनूँगा, अपने-आपको सिर्फ धोखा देता है। –प्लुमर

जो वास्तवमे उदार है वही वास्तवमे ज्ञानी है, और वह जो कि दूसरोसे प्रेम नहीं करता, बरकतहीन जिन्दगी बसर करता है। – होम

केवल उदार हृदयवाले सच्चे मित्र हो सकते है। नीच और कायर मनुष्य सच्ची मित्रताको नही जानता। — चार्ल्स किसले

उदारता

उदारता अधिक देनेमे नही बल्कि समझदारीसे देनेमे है। — फ्रैंकलिन

जलप्रपात गाता है, 'मै खुशीमे अपना सारा पानी देता हूँ, गोकि प्यासेके लिए इसका ज़रा-सा ही काफी है।' — टैगोर

उदारताके समान सद्‌गुण नही है और कृपणताके समान कोई अवगुण नही है। — अज्ञात

उदार आदमी जबतक जीता है आनन्दसे जीता है, और तगदिलवाला जिन्दगी-भर दु खी रहता है। — कैस-बिन-इल खतीम

जब कि मुझपर लक्ष्मीकी कृपा रहती है, तब मेरी सारी सम्पत्ति औरोके लिए होती है। पर जब मै द्रव्यहीन हो जाता हूँ तो उनकी करुणाका पात्र नही बना करता। — अल-मुकन्नआ-उल-किन्दी

उद्यम

अपने अमूल्य समयको एक-एक घडी उद्यममे गुज़ारनी चाहिए। यही आनन्द है। इससे कोई क्षण ऐसा नही रह पाता जब कि हमे पछतावा या सोच करना पडे। —एमर्सन

एक उद्यमी मजदूर यह नही समझता कि उसका उद्यम उसे उस महान् मजदूरके कितना नजदीक पहुँचाता है जो रात-दिन व्यस्त रहता है। — ह्विटमैन

शरीरको बचानेके लिए बहुत उद्यम करता हूँ, आत्माको पहचाननेके लिए इतना करता हूँ क्या? — गान्धी

उद्योग

शारीरिक उद्योग करना मनुष्यका धर्म है। जो उद्योग नही करता वह चोरीका अन्न खाता है। — गान्धी

उद्योग प्रत्यक्ष है और भाग्य अनुमान है, अनुमानकी अपेक्षा प्रत्यक्षका महत्त्व अधिक है। — गुरु वशिष्ठ

अन्त करणकी पवित्रता, दृढनिश्चय और धीर वृत्ति इतनी ही पूँजीसे उद्योग शुरू कर देना चाहिए। — विवेकानन्द

उद्योग तो करना ही चाहिए। फल उसी तरह मिलेगा। जिस तरह कि उस बिल्लीको मिलता है, जिसके अगर्चे गाय नही है मगर दूध रोज पीती है। — अज्ञात

उद्योग न करनेवाले दरिद्री मनुष्यपर हमेशा सकट पडते रहते ह। — अज्ञात

सतत उद्योग करनेवाला अक्षय सुख प्राप्त करता है। — महाभारत

सतत उद्योग लक्ष्मीका, लाभका और कल्याणका मूल है। — अज्ञात

उद्योग ही उत्कर्ष है। — अज्ञात

उद्धार

सम्पूर्ण भारतक उद्धारका भार बिना कारण सिरपर मत लो। अपना निजका ही उद्धार करो। इतना भार काफी है। सब कुछ अपने व्यक्तित्व-पर ही लागू करना चाहिए। हम स्वय ही भारतवष है, बस यही माननेमे आत्माका बडप्पन हे। तुम्हारा उद्धार ही भारतवर्षका उद्धार है। शेष सब व्यर्थ ह, ढोग है। तुमसे सच्चे आत्म-प्रेमका रस उत्पन्न हो इसीमें तुम डूबे रहो। शेषकी चिन्ता तुमको और मुझको करनेकी कोई आवश्य-कता नही है। दूसरेकी चिन्ता करते-करते कुछ हाथ न आयेगा। — गान्धी

सद्धर्मीको बहुत ही यन्त्रणाएँ सहनी पड़ती है, परन्तु प्रभु उसे उन सबसे तार देता है। — बाइबिल

चतुर मनुष्यको चाहिए कि हर प्रयत्न करके दीन स्थितिसे अपना उद्धार करे। — अज्ञात

ज़मानेके उद्धार करनेवाले तुम कौन ? क्या तुम अपना उद्धार कर चुके हो ? — अज्ञात

जो स्वयं ससारकी वासनाओमे मुग्ध है, वह दूसरोंका उद्धार कैसे कर सकता है ? — आचार्य विजयधर्म सूरि

उद्वेग

उद्वेग जरा भी न रखना चाहिए। 'जो होता है सो भलेके लिए' ऐसा समझकर धैर्य और शौर्यसे सन्तोषका सेवन करना चाहिए। इससे पहाड सरीखे सकट भी दूर हो जाते हैं। — अज्ञात

उधार

जिसे उधार लेना प्रिय लगता है, उसे अदा करना अप्रिय लगता है। — अज्ञात

न उधार दो न लो, क्योकि उधार देनेसे अकसर पैसा और मित्र दोना खो जाते है, और उधार लेनेसे किफायतशारी कुण्ठित हो जाती है। — शेक्सपीयर

उधार माँगना भीख माँगनेसे ज्यादा अच्छा नही है। — लैसिंग

उधार लिया हुआ पैसा शीघ्र ही ग़मका सामान हो जाता है। — अज्ञात

उन्नति

किसी भी राष्ट्रको उन्नतिके रास्ते जाना हो तो सत्य और अहिंसाका उसे आश्रय लेना चाहिए। — गान्धी

आत्माको पहचाननेसे, उसका ध्यान धरनेसे और उसके गुणोका अनुसरण करनेसे मनुष्य ऊँचे जाता है। उलटा करनेसे नीचे जाता है। – गान्धी

मुझे अपने गुणपर बढना चाहिए, न कि दूसरोकी कृपापर, मेरे गुण मुझे बढायेंगे, उसकी कृपा उसे बढायेगी। – अज्ञात

जो लडेगा सो चढेगा। – अज्ञात

चरित्र-सम्बन्धी उन्नतिके माने है 'खुदी'से 'खुदीको' मिटानेकी ओर बढना। – हार्टले

अगर एक मनुष्यकी आध्यात्मिक उन्नति होती है तो उसके साथ सारी दुनियाकी उन्नति होती है, और एक व्यक्तिका पतन होता है तो ससारका भी पतन होता है। – गान्धी

उपकार

क्षुद्रजन भी अपने उपकारीके उपस्थित होनेपर उसका सत्कार करता है, फिर सज्जनका क्या कहना! – कालिदास

नीच मनुष्यके प्रति किया गया उपकार भी अपकारका फल देता है। साँपको दूध पिलानेसे केवल विषवर्धन ही होता है। – अज्ञात

जिसने पहले तुम्हारा उपकार किया हो, वह यदि बडा अपराध करे तो भी उसके उपकारको याद करके उसका अपराध क्षमा करना।

– महाभारत

कारूँ बादशाहका हज़रत मूसाने उपदेश किया कि भलाई वैसी ही गुप्त रीतिसे कर जैसे मालिकने तेरे साथ की है। उदारता वही है जिसमे निहोरेका मेल न हो तभी उसका फल मिलता है। सच्चे उपकारके पेडकी डालियाँ आकाशके परे पहुँचती है। – सादी

जो स्वय संसारकी वासनाओमे लिप्त है वह दूसरोका उपकार नही कर सकता। – अज्ञात

महान् पुरुष जो उपकार करते हैं, उसका बदला नही चाहते। भला, जल बरसानेवाले बादलोका बदला दुनिया कैसे चुका सकती है। – तिरुवल्लुवर

वृक्ष अपने सिरपर गरमी सह लेता है, परन्तु अपनी छायासे औरोको गरमीसे बचाता है। – कालिदास

हार्दिक उपकारसे बढकर कोई चीज न तो इस ससारमे मिल सकती है न स्वर्गमे। – तिरुवल्लुवर

उपदेश

अपनी जबानकी अपेक्षा अपने जीवनसे तुम बेहतर उपदेश दे सकते हो। – अज्ञात

कुछ आदमी अति लम्बे उपदेश देकर लोगोकी जानको आ जाते हैं। सुननेकी शक्ति बडी नाजुक चीज है, वह शीघ्र ही थक जाती और छक जाती है। – ल्यूथर

अपने उपदेशोमे पहले तार्किकता ला, और फिर गर्मजोशी, बिना तार्किकता गर्मजोशी उस दरख्तके मानिन्द है जिसमे पत्तियाँ और कलियाँ तो है मगर जड नही। – सैल्डन

मुझे वह गम्भीर उपदेशक पसन्द है, जो मेरे लिए बोलता है न कि अपने लिए, जिसे मेरी मुक्ति वाछनीय है, न कि अपनी थोथी शान। – मैसीलन

जो उपदेश आत्मासे निकलता है, आत्मापर सबसे ज्यादा कारगर होता है। – फुलर

'परोपदेशे पाण्डित्य' से ही नैतिक दरिद्रता होती है। – स्वामी रामतीर्थ

ममतारतसे ज्ञान कहानी कहना, अतिलोभीसे विरति बखानना, क्रोधीको शमका उपदेश देना, कामीको हरिकथा सुनाना ऐसा है जैसे ऊसरपर बीज बोकर फल पानेकी उम्मीद रखना। – रामायण

उपदेश वह उत्तम नही है जिसे सुनकर श्रोता लोग एक-दूसरेसे बातें करते और वह वक्ताकी तारीफ करते हुए जाये, बल्कि वह जिसे सुनकर वे विचारपूर्ण और गम्भीर होकर जाये और जल्दीसे एकान्त तलाशें ।

— बिशप बर्नेट

वह देवतुल्य है जो अपनी नसीहतोंपर खुद अमल करता है, मैं बीस आदमियोंको आसानीसे सिखा सकता हूँ कि क्या करना अच्छा है, लेकिन मेरी ही नसीहतपर अमल करनेवाले उन बीसमे से एक होना मुश्किल है।

— शेक्सपीयर

हम उपदेश सुनते है मन-भर, देते है टन-भर पर ग्रहण करते है कन भर ।

— अलजर

अक़्लमन्द आदमी नीतिका उपदेश समझदारको ही देता है ।

— यज़ीद-बिन-हुक्म-उल सकफी

पट भरेपर उपवासका उपदेश देना सरल है । — इटालियन कहावत

नीतिका उपदेश दो, तो सक्षेपमे देना । — होरेस

यदि वयस्क लोग उन उपदेशोपर स्वयं अमल करें जो वे बच्चोको देते है, तो दुनिया अगले सोमवारको ही स्वर्ग तुल्य हो जाये । — आर-किग

यह कितनी गलत बात है कि हम मैले रहे और दूसरोको साफ रहनेकी सलाह दें । — गान्धी

जिसे हर एक देता है पर विरला ही कोई लेता है, ऐसी चीज क्या है ? उपदेश, सलाह । — स्वामी रामतीर्थ

दूसरोको उपदेश देनेके बजाय अगर कोई उस समय ईश्वरकी आराधना करे तो यही पर्याप्त उपदेश है । जो अपनेको स्वतन्त्र करनेका प्रयास करता है वही सच्चा उपदेशक है । — रामकृष्ण

मेरे उपदेश देनेमे खास बात यह है कि मैं सख्त दिलको तोडता हूँ और टूटे हुएको जोड़ता हूँ । — जॉन न्यूटन

धर्म और नीतिका उपदेश उसे ही देना चाहिए जिसे कीर्ति, ऐश्वर्य और सगति प्रिय हो । – रामायण

जिसने अपनेको समझ लिया वह दूसरोको समझाने नही जायेगा ।
– धम्मपद

जो आदमी बिना आप पूरा हुए दूसरोको उपदेश देता है वह बहुतोका गला काटता है, पर जो आप पूरा होकर दूसरोको शिक्षा नही देता उसके विषयमे भी यह कहा जा सकता है कि उसने बहुतोकी बलि दे दी ।
– जापान

आध घण्टेसे ज्यादा उपदेश देनेके लिए आदमी या तो खुद फरिश्ता हो या सुननेके लिए फ़रिश्ते रख । – ह्वाइट फोल्ड

ऐ उपदेशक, अगर तरे पास दैविक प्रेरणाका बिल्ला नही है तो चाहे तू बोल-बोलकर अपनी जान तक दे दे, मगर सब फिजूल जायेगा ।
– रामकृष्ण

अगर उपदेशक इस दुनियामे एक कदम चलेगा तो उसके सुननेवाले दो चलेंगे । – सैसिल

मनकी ओर शौला-नुमा उपदेशक न बनो । – एमर्सन

सम्प्रदायोमे जो सबसे ओछा है वही उपदेशकका काम करेगा ।
– हजरत मुहम्मद

लोग पेशेवर उपदेशकको फरिश्तेकी तरह मानते है । हमारी भी मान्यता है कि वह इनसान नही । – अज्ञात

उपद्रव

अगर तू आकस्मिक उपद्रवोको स्थान देता है तो तू अपने तत्त्वज्ञानका कोई इस्तेमाल नही कर रहा । – शेक्सपीयर

उपयोग
दूसरेका उपयोग कर लेनेकी बनिस्बत अपना उपयोग होने दे। यही सच्चा आत्मसमर्पण या स्वार्थ-विस्मृति है। — अज्ञात

उपयोगी
जो अपने लिए उपयोगी नही, वह किसीके लिए उपयोगी नही।
— डेनिस कहावत

उलझन
छुडानेके फन्देमे न पडो, खुद ही उलझ जाओगे। — शीलनाथ

उपवास
प्रकाश और तपके लिए उपवास महान् आदरणीय सस्था है। — गान्धी
अगर तू स्वस्थ शरीर चाहता है, तो उपवास और टहलनेका प्रयोग कर, अगर स्वस्थ आत्मा, तो उपवास और प्रार्थनाका—टहलनेसे शरीरको व्यायाम मिलता है, प्रार्थनासे आत्माको व्यायाम मिलता है, उपवास दोनोको शुद्ध करता है। — क्वार्ल्स

उपासक
ईश्वरपर श्रद्धा रखनेवाला काहिल, सुस्त, निकम्मा और निष्क्रिय नही रह सकता। अनन्त, अखण्ड, अक्षय, अनवरत चैतन्य शक्तिवाले ईश्वरका उपासक मन्द व जड कैसे हो सकता है? — हरिभाऊ उपाध्याय

उपसर्ग
आधि, व्याधि, उपाधि और समाधि यह उपसर्ग चतुष्टय है। — विनोबा

उपहार
जिन उपहारोकी बड़ी आस लगी होती है वे भेट नही किये जाते, अदा किये जाते हैं। — फ्रैंकलिन

वह मुझे सुन्दर उपहार देता है जो मुझे अपूर्व विचार सुनाता है। –बूवी

उपहार लेना स्वतन्त्रता खोना है। – सादी

बहुत-से लोग अपने ऋण चुकानेकी उपेक्षा उपहार देनेमें खुशी मनाते हैं।
– सर फिलिप सिड्नी

उपहास

उपहास करके हम मनुष्यको नीचा दिखाते हैं, अपनेसे दूर ढकेलते हैं।
– अज्ञात

उपादान

बुरे फौलादसे कभी अच्छा चाकू नहीं बना। – फ्रैंकलिन

उपासना

उपासना माने देवके नजदीक बैठना, याने बैठनेकी जगह देवको ले आना।
– विनोबा

कोडोंकी मार पडनेपर भी उपासकको मालूम न हो तभी समझना चाहिए कि वह उपासनामें पूर्ण रूपसे मग्न है। – आबिस

मेरे धर्ममें उपासना ऐच्छिक है, इसलिए अनिवार्य है। – अज्ञात

गुणवन्तकी उपासना सगुण कही जाये तो गुणकी उपासना निर्गुण कही जायेगी। – विनोबा

जो मनुष्य ईश्वरको छोडकर अन्य देवकी उपासना करता है, वह कुछ नहीं जानता। वह विद्वानोंमें पशु तुल्य है। – शतपथ

जिसने अपने मन और इन्द्रियोंको वशमें नहीं किया उसकी उपासना ऐसी समझनी चाहिए जैसे हाथीका नहाना कि इधर तो नहाया उधर शरीरपर धूल डालकर फिर ज्योंका त्यों हो गया। – हितोपदेश

उद्देश्य

जीवनका उद्देश्य मनुष्यको अपनेपनका ज्ञान करना प्रतीत होता है।
— अज्ञात

जिसका उद्देश्य ऊँचा है उसे आरामतलबी और हरदिल-अज़ीज़ीसे खौफ खाना चाहिए।
— एमर्सन

उपेक्षा

भोंकते कुत्तेके ठोकर मारो तो वह और भी ज्यादा भोंकेगा उसकी तरफ कतई तवज्जह न दो, तो वह चुप हो जायेगा।
— अज्ञात

■

ऊ

ऊँचा

पहाडी सरीखा ऊँचा होना मुझे सुखकर नही लगता, मेरी मिट्टी आस-पासकी जमीनपर फैल जाये इसीमे मुझे आनन्द है।
— विनोबा

ऊँचाई

वह ऊँचाई ऊँचाई नही है जिसका आधार सचाई नही है।
— अज्ञात

■

ऋ

ऋषि

जिसको जीवनकला मालूम है वह ऋषि है।
— स्वामी रामतीर्थ

■

ए

एक

एक ही देवताको आराधना करनी चाहिए—केशवकी या शिवकी, एक ही मित्र करना चाहिए—राजा या तपस्वी, एक ही जगह बसना चाहिए—नगरमें या वनमें, एकमें ही विलास करना चाहिए—सुन्दरी नारीसे या कन्दरासे । – भर्तृहरि

एकभुक्त

एक वक्त खाना शेर तकके लिए पर्याप्त होता है, इनसानके लिए तो वह जरूर काफी होना चाहिए । – डाक्टर जॉर्ज फोर्डिस

एक भुक्त सदा रोग-मुक्त । – अज्ञात

एकाग्रता

अनिश्चितमना पुरुष भी मनको एकाग्र करके जब सामना करनेको खड़ा होता है तो आपत्तियोंका लहराता हुआ समुद्र भी दबकर बैठ जाता है । – तिरुवल्लुवर

चित्तकी एकाग्रता योगकी समाप्ति नहीं है । वहाँसे योगकी शुरुआत है । – विनोबा

वह एकाग्रताकी ही शक्ति थी जिसने नेपोलियनको यह विश्वास करा दिया कि 'सूरज-तले कुछ भी नामुमकिन नहीं है । – अज्ञात

अपने सामने एक ही साध्य रखना चाहिए । उस साध्यके सिद्ध होने तक दूसरी किसी बातकी तरफ तवज्जह नहीं देनी चाहिए । रात-दिन सपने तकमें—उसीकी धुन रहे तभी सफलता मिलती है । – विवेकानन्द

जबतक आशा लगी हुई है तबतक एकाग्रता नहीं होती । – स्वामी रामतीर्थ

झूठ, कपट, चोरी, व्यभिचार आदि दुराचारोकी वृत्तियोके नष्ट हुए बिना चित्तका एकाग्र होना कठिन है और चित्त एकाग्र हुए बिना ध्यान और समाधि भी कठिन है। – मनु

एकान्त

एकान्त अच्छी पाठशाला है, परन्तु दुनिया सबसे अच्छी रंगशाला है। – जे० टेरल

सच्चा एकान्त कब हो? जब कि ओछे और निन्द्य जीवनसे परे हो जाओ। – जुन्नुन

बहुत-कुछ अकेले रहना ही महान् आत्माओका भाग्य है। – शोपेनहोर

अगर तू आलसी ही रहना चाहता है या जीवनके मोहमे पडा है, तो जमीनमे एक गुफा बना ले, या आसमानपर सीढी लगाकर चढ़ जा, जिससे तू एकान्तवासी बन जाये। – अबु-इस्माइल-तुगराई

जो एकान्तमें खुश रहता है वह या तो पशु है या देवता। – अज्ञात

बाहरी एकान्त वास्तविक एकान्त नही। मनमे चिन्ता और शकाका प्रवेश न हो वही सच्चा एकान्त है। – आविस

सस्कृति और महत्ताके तमाम रास्ते एकान्त कारावासको ओर जाते है। – एमर्सन

निर्जनतामे निवास करके देख तेरा प्रेम निर्जनतापर है या प्रभुपर? यदि एकान्त ही से प्रेम है तो वहाँसे हटते ही प्रेम भी हट जायेगा और यदि ईश्वरपर प्रेम होगा तो पर्वत, वन, बस्ती सब स्थानोपर वह यकसाँ रहेगा। – हयहया

रातको एकान्त मिलेगा यह जानकर मुझे प्रसन्नता होती है और दिन होनेपर लोगोका हो-हल्ला मच जायेगा यह जानकर मुझे दुःख होता है। लोग आ-आकर मुझे बातोमें लगाते हैं, यह मै बिलकुल नही चाहता। –फ़जल अयाज

एकान्त मूर्खके लिए कैदखाना है, ज्ञानीके लिए स्वर्ग। – अज्ञात

एहसान

सिर्फ वही शख्स फय्याज़ीसे एहसान कर सकता है जो एक मरतबा एहसान करके बिलकुल भूल जाता है। – जॉन्सन

हम सूखी रोटी और गुदडोसे सन्तोष कर लेंगे क्योंकि समारके एहसानके भारसे अपने दुःखका भार हलका है। – अज्ञात

■

ऐ

ऐश्वर्य

खुदको हीन माननेवालेको उत्तम प्रकारके ऐश्वर्य प्राप्त नही होते। – महाभारत

ऐश्वर्यके मदसे मत्त मनुष्य ऐश्वर्यसे भ्रष्ट होने तक होशमें नही आता। – अज्ञात

पापकी कमाईसे कभी बरकत नहीं होती। – कहावत

ऐश्वर्यके मदसे मत्त हर व्यक्ति 'सर्वोऽहं' ऐसा मानता है। – रामायण

ऐश्वर्य—यह ईश्वरका विशेष गुण है। – विनोबा

धन न भी हो तो भी आरोग्य, विद्वत्ता, सज्जनमैत्री, महाकुलमें जन्म, स्वाधीनता मनुष्यके महान् ऐश्वर्य हैं। – अज्ञात

■

औ

औलाद

किसी आदमीके पैदा होनेसे क्या अगर उसके मृत पूर्वजोंको नागवार गुज़रता रहे कि हम कैसी औलाद छोड़ आये । — सर फिलिप सिडनी

औषधि

शरीरके लिए किसी औषधिकी ज़रूरत ही न हो, अगर खाया हुआ खाना हज़म हो जानेके बाद नया खाना खाया जाये । — तिरुवल्लुवर

तमाम औषधियोंमें सर्वोत्तम औषधियाँ विश्राम और उपवास हैं ।

— फ्रैंकलिन

औरत

नेक आदमीके घरमें खराब औरत इसी दुनियामें उसके लिए नरक-तुल्य है । — सादी

उस मकानपर मुखके दरवाज़े बन्द कर दो जिसमें-से औरतकी आवाज़ बुलन्द स्वरोंमें निकलती हो । — सादी

■

क

क़र्ज़

क़र्ज़ वह मेहमान है जो एक बार आकर जानेका नाम नहीं लेता ।

— प्रेमचन्द

ग़रीबी कष्टकर है मगर क़र्ज़ा भयावह है । — अज्ञात

दोस्तको कर्ज न दो वरना मुहब्बतका खात्मा समझो। – सुकरात

आदमीके लिए कर्ज ऐसा है जैसा चिड़ियाके लिए साँप। – अज्ञात

कर्ज देना मानो किसी भारी चीजको पहाड़की चोटीसे नीचे ढकेलना है, मगर उसका वसूल करना उस चीजको चोटी तक चढ़ाना है!

– टॉलस्टाय

कर्ज सबसे बुरी गरीबी है। – अज्ञात

कंजूस

धनिक कंजूस गरीबसे भी गरीब है। – अरबी कहावत

कंजूस, मक्खीचूस, होना ऐसा दुर्गुण नहीं है जिसकी गिनती दूसरी बुराइयोंके साथ की जा सके, उसका दर्जा ही बिलकुल अलग है।

– तिरुवल्लुवर

कंजूसी

कंजूसी मनुष्यके सद्गुणोंको चुरानेवाली है। – अमर-बिन अहतम्

कटुता

सुबह-दम बुलबुलने नये खिले हुए फूलसे कहा कि 'नाज़ कम कर, इस बागमें तुझ-से बहुत खिल चुके हैं।' फूल हँसकर बोला—'मैं सच्ची बात-पर रंज नहीं करता। मगर बात यह है कि कोई आशिक अपने माशूकसे सख्त बात नहीं कहा करता।' – हाफ़िज़

कड़वी बात 'कहना' एक चीज है, व 'लगना' दूसरी चीज। 'कहनेमें' जिम्मेवारी हमारी है, 'लगनेमें' दूसरेकी। – अज्ञात

कठिन

संसारमें जीवोंको इन चार श्रेष्ठ अंगोंका प्राप्त होना बड़ा कठिन है— मनुष्यत्व, धर्म-श्रवण, श्रद्धा और संयममें पुरुषार्थ। – महावीर

कठिनाई

जैसे मेहनतसे शरीर बलवान् होता है वैसे ही कठिनाइयोंसे मन। – सैनेका

न रगड़के बिना रत्नपर पॉलिश होती है, न कठिनाइयोंके बिना आदमीमें पूर्णता आती है। — चीनी कहावत

कुदरत जब कठिनाई बढा देती है, समझदारी भी बढा देती है। — एमर्सन

कठिनाइयाँ हमें आत्मज्ञान कराती है, वे हमे दिखा देती है कि हम किस मिट्टीके बने हैं। — ज० नेहरू

कठोर

यदि तू मेरे प्रति कठोर होता है तो अभी तुझे अपने प्रति ही अधिक कठोर होनेकी जरूरत है। — हरिभाऊ उपाध्याय

कठोरता

जबतक गलती करनेवालेके प्रति तेरे मनमे कठोरता है तबतक तू साधु नहीं हुआ। — अज्ञात

कड़ी

कडी टूटी कि लडी टूटी। — जर्मन कहावत

कर्त्तव्य

प्रत्येक कर्त्तव्य जिसे हम नज़र-अन्दाज कर देते है किसी-न-किसी सत्यको आच्छादित कर देता है जिसका कि ज्ञान हमे हो जानेवाला था। — रस्किन

वक्त थोडा है, तुम्हारे कर्त्तव्य असख्य हैं। क्या तुमने घर व्यवस्थित और बच्चे सुरक्षित कर दिये, दुखियोको राहत दी, गरीबोकी खबर ली, धर्मके काम कर डाले? — अज्ञात

अनासक्त चित्तसे और अपनी सुखकल्पनामें पडे बिना प्राप्त हुए कामोको केवल ईश्वरकी आज्ञा समझकर पूरा करना व फल उसीको अर्पण करना यही कर्त्तव्यकी व्याख्या है। — विवेकानन्द

भलीभाँति अपने कर्त्तव्यका पालन करके सन्तुष्ट हो जाओ और दूसरोको अपने विषयमे इच्छानुसार कहनेके लिए छोड दो। – पैथागोरस

छोटे-छोटे कामोको यथार्थ रूपसे करना प्रसन्नताका आश्चर्यजनक स्रोत है। – फेबरे

कर्त्तव्य करते शरीरको भी जाने देना चाहिए। यह नीति है। परन्तु शक्तिसे बाहर कुछ उठा लेना और उसे कर्त्तव्य मानना राग है। – गान्धी

जब तुम कर्त्तव्यके आगे इच्छाका बलिदान करो तब लोगोको अगर वे चाहे, हँसने दो, तुम्हें आनन्दित होनेके लिए अनन्तकाल पडा है। – थ्योडोर पार्कर

ज्ञानीको अपने बडे कर्त्तव्योका भी पालन करना चाहिए, हमेशा छोटे छोटोका ही नही, क्योकि जो अपने बडे कर्त्तव्योका पालन न करके सिर्फ छोटे कर्त्तव्योका ही पालन किया करता है, भ्रष्ट हो जाता है। – अज्ञात

जो वर्तमान कर्त्तव्यके प्रति झूठा है, वह करघेका एक धागा तोडता है और दोष उसे तब मालूम होगा जब कि वह शायद उसके कारणको भूल जायेगा। – बीचर

उस कर्त्तव्यका पालन करो, जो तुम्हारे निकटतम है। – गेटे

कार्य बिगडे या सुधरे, इसकी मुझे क्या फिक्र? उसपर सब भार डालकर वह इशारा करे उधर जाना इतना ही मेरे बसमे है। – विवेकानन्द

'कर्त्तव्य' और 'सौदे'मे दिन-रातका अन्तर है। कर्त्तव्य बदले या पुरस्कार-की अभिलाषा नही रखता, सौदा तो पूरा बल्कि अधिक बदला चाहता है। – हरिभाऊ उपाध्याय

उस सितारेकी तरह जो बिना इज्तराब और बिना आराम दूरीपर चमकता है, हर आदमी अपना काम स्थिरतापूर्वक और यथाशक्ति करे। – गेटे

तेरी बुद्धिको और हृदयको जो सच मालूम हो वही तुझे करना चाहिए। — गान्धी

कर्त्तव्यमें मिठास है। — गान्धी

एक कर्त्तव्य पूरा कर देनेका पुरस्कार दूसरेको कर सकनेकी शक्तिका प्राप्त कर लेना है। — अज्ञात

जो कर्त्तव्यको छोडकर अकर्त्तव्यको करते है उनका चित्त मलिनसे मलिनतर होता जाता है। — बुद्ध

जिसे अपना कर्त्तव्य नही सूझता वह अन्धा है। — अज्ञात

कृति

कृतियाँ पुल्लिग हैं, शब्द स्त्रीलिंग। — इतालियन कहावत

कृपा

नीच लोगोंका कृपा-पात्र बननेके बदले, मैं अपने लिए यह अच्छा समझता हूँ कि पुराने कपडोंमे नंगा रहकर दिन काटूँ और थोड़ी-सी जीविकापर ही सन्तोष करूँ। — मुहम्मद-बिन बशीर

जो साधुओंका उपदेश सुनता है परन्तु उनकी सेवा नही करता वह उनकी कृपासे वंचित रह जाता है। — अबुअलीमुहम्मद

ईश्वरकी कृपा ईश्वरका काम करनेसे आती है। ईश्वरके काम शरीरसे, मनसे और वाणीसे दु खीकी सेवा करनेसे होते हैं। — गान्धी

कृतज्ञता

मेरे मित्र, कृत्योंसे मुझे धन्यवाद दो, शब्दोंसे नही। — कोर्नर

कृतज्ञताका माप, किये हुए उपकारसे नही, उपकृत व्यक्तिकी शराफतसे होता है। — तिरुवल्लुवर

प्रभुने जो धन-दौलत दी है उसे पाप-कार्यमें लगाकर अपराधी बननेसे बचना ही सच्ची कृतज्ञता दिखाना है। — जुन्नेद

कृति

अपनी कृति, सरस हो अथवा अति फीकी, किसको अच्छी नहीं लगती ? जो दूसरोकी कृति सुनकर हर्षित होते है, ऐसे श्रेष्ठ पुरुष जगत्‌में बहुत नहीं हैं । — रामायण

लफ्ज़ोको जाने दो, कृतियोको जवाब देने दो । — नेपोलियन

हर आदमीको लगता है कि दुनियाकी तमाम सुन्दर भावनाएँ एक सुन्दर कृतिमे हलकी हैं । — लावेल

जो कर्त्तव्यसे बचता है, लाभसे वंचित रहता है । — थ्योडोर पार्कर

मौजूदा क्षणके कर्त्तव्यका पालन करनेसे आनेवाले युगो तकका सुधार हो जाता है । — एमर्सन

बडा काम यह नही कि हम दूरकी धुँधली हकीकतको देखें, बल्कि यह कि हम उस फर्ज़को बजायें जो नज़रके सामने है । — कार्लाइल

हर आदमी काममें सलग्न रहे, अपने स्वभावानुकूल सर्वोच्च कार्यमे संलग्न रहे, और इस चेतनाके साथ मरे कि उसने हद दर्जे तक किया । — सिडनी स्मिथ

कर्त्तव्यपालन

कर्त्तव्यपालन स्वभावत आनन्दमे पुष्पित होता है । — फिलिप्स ब्रुक्स

विश्वमे कुछ नही जिससे मैं डरती होऊँ, सिवा इसके कि मै अपने सम्पूर्ण कर्त्तव्यको न जान पाऊँ व उसके पालन करनेमे असफल रहूँ । — मेरी ल्यौन

जब आत्मा हर कर्त्तव्यका तुरन्त पालन करना चाहे तो उसे ईश्वरकी उपस्थितिका भान है । — बेकन

कर्ता

जो कर्ता संग-रहित, अहन्ता-रहित, धैर्यवान् और उत्साही हो और सफलता-निष्फलतामे हर्ष-शोक न करे, उसे सात्त्विक कर्ता कहते हैं । — गीता

जगका कर्ता कौन ? मेरे जगका मैं ही कर्ता हूँ। दूसरे जगका मुझे परिचय नहीं है। — विनोबा

अपनी इच्छासे नटवरके हाथकी गुडिया बन जानेपर फिर चर्चा किस लिए ? उसे जैसे नचाना होगा वैसे वह नचायेगा। मुख्य बात तो नाचनेकी है न ? जिसे हमेशा नाचनेको मिलेगा उसे और दूसरा क्या चाहिए ? — गान्धी

कथन

सोचो चाहे जो कुछ, कहो वही जो तुम्हे कहना चाहिए। — फ्रान्सीसी कहावत

जो कुछ कहना है उसको जहाँतक हो सके, सक्षेपमे कहो, वरना पढनेवाला उसको छोडता जायेगा, और जहाँतक हो सके सादा लफ्ज़ोमे कहो वरना वह उसका मतलब न समझेगा। — रस्किन

कपड़ा

कपडा अगको ढँकनेके लिए है। ठण्डो-गरमोसे उसकी रक्षा करनेके लिए है, उसे सजानेके लिए नही है। — महात्मा गान्धी

कपटी

सुवेषको देखकर मूर्ख ही भुलावेमे आ जाते है, चतुर लोग नही। मोर देखनेमे सुन्दर लगता है, अमृत सरीखी मीठी बोली बोलता है मगर उसका आहार साँप है। — रामायण

क़ब्र

हर कब्र, जहाँ मिले, आत्माको एक संक्षिप्त सर्मन (प्रवचन) सुनाती है। — हाथौर्न

हर आदमीको अपनी कब्रमे ऐसे लेटना होगा कि वह अपनी जगहपर करवट तक न बदल सकेगा। — मुहनस्बी

कमज़ोर

कमजोर होना दु खी होना है । – मिल्टन

कमज़ोरी

तीखे और कडुए शब्द कमज़ोर पक्षको निशानी हैं । – विक्टर ह्यूगो

कर्म

कर्म ज्ञानका प्रज्वलन है ? ज्ञानाग्नि अखण्ड जलती रखनेके लिए कर्मरूप प्रज्वलन अखण्ड रखना चाहिए । – विनोबा

सूरज हमेशा रोशनी और गरमी देता है। मगर जो सूरजसे भागकर ठण्डमें ठिठुरे, और अँधेरेमें घुसे, उनके लिए सूरज भी क्या करे ? – गान्धी

सचमुच, कर्मकी जगह ही कर्मफल भी उत्पन्न होते है । इसलिए जैसा फल चाहिए, वैसा कर्म कर । – अज्ञात

ससारमे कर्तृत्वहीन मनुष्य न तो पुरुष है न स्त्री । – देवी रानी विदुला

हम अपनेको जानना कैसे सीखेंगे, विचारसे ? कभी नही, सिर्फ कर्मसे अपना फर्ज पूरा करनेकी कोशिश कर, तभी तू जान पायेगा कि तेरे अन्दर क्या है । – गेटे

ईश्वर मनुष्यके अच्छे और बुरे कर्मोंके अनुसार फल देता है जो कर्म करता है उसे ही फल मिलता है । – रामायण

कर्मके आरम्भमे ही उसके फलको गुरुता-लाघवता अथवा उसके दोषको जो नही विचारता वह केवल बालक है । –रामायण

कर्म माने प्रत्यक्ष सेवा, भक्ति माने सेवाभाव । – विनोबा

सर्वोच्च स्थितिमे जानेका कर्म ही एक उपाय है और यह कर्म पूर्ण मुक्तिके बाद भी रहता है । – अरविन्द घोष

कर्म करूँगा तो फल भी लूँगा—यह रजोगुण, फल छोडूँगा तो कर्म भी छोडूँगा—यह तमोगुण, दोनो एक ही हैं । – विनोबा

कर्मकी परिसमाप्ति ज्ञानमे, और कर्मका मूल भक्ति अर्थात् सम्पूर्ण आत्म-समर्पणमे है। —अरविन्द घोष

दुपायों, चौपायो, अपने खेत, अपना मकान, अपनी दौलत, अपना अनाज, और हर चीजको, अपना इच्छाके खिलाफ छोडकर और सिर्फ अपने कर्मोको साथ लिये यह जीव अच्छी या बुरी योनिमे जाता है। — अज्ञात

दुनियामें कर्म प्रधान ह, जो जैसा करता है वैसा फल भोगता है। — रामायण

अच्छी तरह सोचना अक्लमन्दी है, अच्छी योजना बनाना और भी बडी अक्लमन्दी, अच्छी तरह करना सर्वोत्तम और सबसे बडी अक्लमन्दी है। — ईरानी कहावत

अपनी करनी कभी निष्फल नही जाती, सात समुद्र भी आडे आये तो भी आगे आकर मिलती है। — कबीर

कर्म छोडना आवश्यक है क्योकि छोडना भी कर्म ही है। — विनोबा

किसी अडचनसे हताश न होकर, आत्मविश्वास न खोकर, अखण्ड कार्यरत रहना ही तुम्हारा कर्त्तव्य है, अगर यह किया तो इसके सुन्दर फल दिन-दिन बढते हुए प्रमाणमे तुम्हारी नजर पडेंगे। — विवेकानन्द

कर्मकाण्ड

कर्मकाण्डसे मुक्ति नही मिलती। — स्वामी रामतीर्थ

कर्मठ

जैसे आप महान् विचारक है वैसे ही महान् करके दिखा देनेवाले बनें। — शेक्सपीयर

कर्मठता

अपने काहिल मनन और अध्ययनके लिए नही, धर्मिष्ठ भावनाओको सेनेके लिए नही, जिन्दगी तुझे कर्मठ होनेके लिए दो गयी थी, और तेरे कामोसे ही तेरा मूल्य आँका जा सकता है। — फ़िचटे

कर्मनाश
दुष्कर्मके नाशका सच्चा उपाय सद्विचार और सदाचार है । — अज्ञात

कर्म गिन-गिनकर नष्ट नही किये जाते, ज्ञानी तो एक साथ सबका नाश कर देता है । — अज्ञात

कर्मपाश
कर्मपाश अपने-आप नही कट जाता, काटोगे तब कटेगा । — शीलनाथ

कर्मफल
तमाम शास्त्र यही सबक सिखाते है कि 'जैसा करोगे वैसा भरोगे ।' — अज्ञात

हँडियामे जो डाला होगा, चमचेमे वही निकाल सकोगे । — अज्ञात

कर्मफलकी इच्छा करनेवाले कृपण है । — गीता

जो कोई जिस हालतमे रहनेका पात्र हो गया उसकी वह हालत न होने देनेकी ताकत किसीम नही है । — विवेकानन्द

कर्मफलत्याग
ध्यानकी अपेक्षा कर्मफलत्याग श्रेष्ठ कहा है, क्योकि ध्यानमे भी सूक्ष्म स्वार्थ है । — विनोबा

कर्मभोग
कोई किसीको सुख-दुख देनेवाला नही हैं, सब अपने किये हुए कर्मोंका फल भोगते है । — रामायण

कर्मवीर
चकनाचूर कर देनेवाली चोट लगानेके पहले मेढा एक दफे पीछे हट जाता है; कर्मवीरकी निष्कर्मण्यता ठीक इसी तरहकी होती है । — तिरुवल्लुवर

कर्मयोगी

कर्मयोगी सूर्यकी तरह अखण्ड कर्म करता है। सन्यासी सूर्यकी तरह जरा भी कर्म नही करता। — विनोबा

कर्मयोगी—सफेद दूधकी काली गाय, सन्यासी—सफेद दूधकी सफेद गाय। — विनोबा

अगर दो कर्मयोगियोमे-से एकको किसी साम्राज्यका सचालन करने, और दूसरेको किसी सडकपर झाड़ू लगाने भेजा जाये, तो उनको अपना काम बदलनेकी कोई इच्छा न होगी। — अज्ञात

कर्मरेख

ऐसा विचार करके अफसोस मत करो कि विधाताका लिखा हुआ मिट नही सकता। — रामायण

कर्मण्यता

सौ वर्षके आलसी और हीनवीर्य जीवनकी अपेक्षा एक दिनकी दृढ कर्मण्यता कही अच्छी है। — अज्ञात

कमाई

काम किये बिना कमाई नही होनेकी। — अज्ञात

अपने हाथकी कमाईका भरोसा रखो, औलादका नही। मसल है कि एक बाप दस बेटोका पालन कर सकता है पर दस बेटे एक बापका पालन नही कर सकते। — पिथागोरस

धन-दौलत कमानेके पीछे क्यो पडे हुए हो? तुम्हारी जरूरियातको पूरा करने और तुम्हारी देख-भाल रखनेका भार तो उस ईश्वर ही ने ले रखा है, यदि उसका भरोसा करोगे तो सब तरहसे शान्ति और सुख पाओगे। — जुन्नेद

कमाल

कमाल सस्ता नही है, और जो सस्ता है वह कमाल नहीं है। — जॉनसन

अगर कोई आदमी अपने पड़ोसीसे बेहतर किताब लिख सकता है, या बेह-तर उपदेश दे सकता है, या बेहतर चूहेदानी बना सकता है, तो चाहे वह अपना घर जंगलोंमें बना ले, दुनिया उसके दरवाज़ेपर बराबर हाज़िरी बजाती रहेगी। — एमर्सन

कमी

जो आदमियोंकी कमियोंसे झगड़ा करता है वह ख़ुदापर इल्ज़ाम लगाता है। — बर्क

कमीना

उससे दोस्ती कर लो जिसने हत्या की हो, उस शख़्सकी अपेक्षा जो किसी बार भी कमीनापन जतला सका हो। — स्टर्न

करामात

लोग कहते है कि मुहम्मदको उसके रबकी तरफसे करामात दिखानेकी क्यो नही मिलती? उनसे कह दो कि करामात सिर्फ अल्लाहके पास है, मै तो सिर्फ बुरे कामोंके नतीजोंसे खुले तौरपर आगाह करनेवाला हूँ। — मुहम्मद

कल

जो कालको अपना दोस्त कह सके, या जो उससे बच सके, या जो जानता है कि वह मरेगा नही, ऐसा आदमी भले ही निर्णय करे—यह कल किया जायेगा। — अज्ञात

इनसानी ज़िन्दगीका कितना हिस्सा इन्तज़ारीमें निकल जाता है। कल भी तो आज सरीखा ही होगा। ज़िन्दगी बरबाद होती जाती है और हम जीनेकी तैयारीमें ही लगे रहते हैं। — एमर्सन

जो आजकी ईमानदारीको कलपर उठा रखता है, वह बहुत करके अपने कलको कयामत तक उठा रखेगा। — लेवेटर

कला

जो कला आत्माको आत्मदर्शन करनेकी शिक्षा नहीं देती वह कला ही नही है। — गान्धी

सच्ची कला ईश्वरका भक्तिपूर्ण अनुसरण है। — ट्राइन एडवर्ड्स

कला वही है जो सौन्दर्यका सबक सिखाती है। — अज्ञात

कला विचारको मूर्तिमन्त करती है। — एमर्सन

कला मुझे उसी अश तक स्वीकार्य है जिस अश तक वह कल्याणकारी एव मगलकारी है। — गान्धी

तमाम महान कला ईश्वरके, न कि अपने, काममे-आदमीका हर्ष प्रदर्शन है। — रस्किन

हर कलाका सबसे बड़ा काम रूप-द्वारा उच्चतर वास्तविकताकी माया पैदा करना है। — गेटे

सच्ची कलाकृति दैविक परिपूर्णताकी महज छाया है। — अज्ञात

कलाका मिशन प्रकृतिका प्रतिनिधित्व करना है, न कि उसकी नकल। — अज्ञात

साधारण सत्य, या निरा तथ्य, कलाओका ध्येय नही हो सकता—सत्यकी भूमिपर माया-सृजन, यह है ललित कलाओका रहस्य। — अज्ञात

कला प्रकृतिकी नकल नही करती, बल्कि प्रकृतिके अध्ययनको अपना आधार बनाती है—वह प्रकृतिमे-से चुन-चुनकर वे चीजें लेती है जो कि उसकी अपनी मन्शाके अनुकूल हो, और तब उनको वह बख्शती है जो कि प्रकृतिके पास नही है, यानी आदमीका मन और आत्मा। — बलवर

पण्डित कलाका कारण समझते है, अपण्डित उसका आनन्द लेते है। — अज्ञात

उत्तम जीवनकी भूमिकाके बिना कला किस प्रकार चित्रित की जा सकती है? — गान्धी

ज्ञानी हम सब हैं, लोगोमें फर्क ज्ञानका नहीं, बल्कि कलाका है। –एमर्सन

कलाका अन्तिम और सर्वोच्च ध्येय सौन्दर्य है। – गेटे

कला तो सत्यका केवल शृंगार है। – हरिभाऊ उपाध्याय

विशुद्ध कलाकृतिके लिए कलाकारका अन्तःकरण निर्दोष होना चाहिए। – अज्ञात

'कलाके लिए कला' यह तो नास्तिकोका सूत्र है, कला तो जनसमाजको उन्नत करनेके लिए है। – अज्ञात

कला प्रकृतिकी नकल करनेमे नही है—प्रकृति वह सामग्री देती है जिसके ज़रिये वह सौन्दर्य प्रकट किया जाता है जो अभीतक प्रकृतिमें अप्रकट था—कलाकार प्रकृतिमे वह देखता है जिसका स्वयं प्रकृतिको भान न था। – एच० जेम्स

सारी कला सौन्दर्य-सृजनके लिए कठिनाईको पार करनेमे समायी हुई है। – विलियम एलेन ह्वाइट

कलामे मुझे रस तो मालूम होता है, किन्तु ऐसे कितने ही रसोका मैंने त्याग किया—मुझे करना पडा है। सत्यकी खोजमें जो रस मिले उन्हें मैंने छककर पिया, और मिले तो पीनेके लिए तैयार हूँ। – गान्धी

मैं कलाको कलाकारकी विकसित आत्माका प्रतिबिम्ब मानता हूँ और सुसृष्टिके लिए महात्मा होना आवश्यक समझता हूँ। – उग्र

सबसे बडा काम जो कला कर सकती है वह यह है कि वह हमारे सामने शरीफ इनसानकी सही तसवीर पेश करे। – रस्किन

जिसमे छिपाने लायक कुछ है वह कला नही है— – गान्धी

उपयोगी कलाओकी जननी है आवश्यकता, ललित कलाओकी है विलासिता। पहली पैदा हुई बुद्धिसे और दूसरी प्रतिभासे। – शोपेनहोर

कलाकार ईश्वरके निकटतम होते हैं। उनकी आत्माओंमें वह अपना चैतन्य फूंकता है, और उनके हाथोंसे वह सुन्दर, कलामय रूपोंमें निकलकर दुनियाको बरकत देता है। — अज्ञात

कलाकार

सबसे महान् कलाकार वह है जो अपने जीवनको ही कलाका विषय बनाये। — सत्यभक्त

जीवन समस्त कलाओंसे श्रेष्ठ है जो अच्छी तरह जीना जानता है वही सच्चा कलाकार है। — गान्धी

कलाकार वह है जो लोगोंके समूहके साथ इस तरह खेले जिस तरह कोई उस्ताद प्यानोके परदोंके साथ खेलता है। — एमर्सन

सच्चा कलाकार अपनी पत्नीको भूखों मरने देगा, बच्चोंको नंगे पैर घूमने देगा और अपनी माँको सत्तर सालकी उम्रमें अपनी जीविकाके लिए मारे-मारे फिरनेको छोड़ देगा, लेकिन वह कलाकी आराधनाके अलावा कोई काम नहीं करेगा। — बर्नार्ड शा

अत्यन्त पवित्र है कलाकारका पेशा, उसका ईश्वरकी कृतियोंसे सीधा सम्बन्ध रहता है और वह मानव जातिको सृष्टिकी शिक्षाका तात्पर्य बताता है। वह मानो ईश्वरके समक्ष, उन विचारोंको सीखता है जो उसपर रोशन किये जाते है। — अज्ञात

कलाकार जब कलाको कल्याणकारी बनायेंगे और जन-साधारणके लिए उसे सुलभ कर देंगे तभी उस कलाको जीवनमें स्थान रहेगा वही काव्य और वही साहित्य चिरजीवी रहेगा जिसे लोग सुगमतासे पा सकेंगे, जिसे वे आसानीसे पचा सकेंगे। — गान्धी

कलाकार बननेके लिए मुख्य शर्त है मानव मात्रके प्रति प्रेम, न कि कला-प्रेम। — टालस्टाय

कलाकार तथ्यको पेश करनेका हर्गिज नहीं, बल्कि सत्यके आदर्शभूत प्रतिबिम्बको चित्रित करनेका प्रयास करता है। — अज्ञात

कलंक

कलक सजामे नही जुर्ममे है।

कलम

दुनियामे दो ही ताकते हैं, तलवार और कलम, और अन्तमे तलवार हमेशा कलमसे शिकस्त खाती है। — नैपोलियन

कल्याण

कल्याण सार्वजनिक है, वह व्यक्तिका हो नही सकता। — अज्ञात

आजका दिन सर्वश्रेष्ठ गिनकर अपना आत्माके कल्याणार्थ यथाशक्ति कार्य करना और शत्रुओको भी सन्तुष्ट करना। — हातिम हासम

'अधिकसे अधिक लोगोका अधिकसे अधिक कल्याण' और 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' ये नियम मुझे मान्य नही है। 'सबका कल्याण—सर्वोदय' और 'निर्बल प्रथम' ये मनुष्यके लिए नियम हैं। हम पशुओका स्वभाव अबतक छोड नही सके हैं, उसे छोडनेमे ही धर्म है। — गान्धी

कल्पना

मेरे विचारोसे इतिहासकी अपेक्षा कल्पनाका स्थान ऊँचा है, तुलसीदास-ने कहा है कि रामकी अपेक्षा नाम बढकर है, इसका यही अर्थ हो सकता है। — गान्धी

कवि

कविका उद्देश्य है और होना चाहिए, 'प्रसन्न करके सिखाना'। — कार्लाइल

कवि वह बुलबुल है जो अन्धकारमे बैठकर अपने ही एकान्तको मधुर ध्वनियोसे प्रसन्न करनेके लिए गाता है। — शेली

जो किसी रोशन और साहित्यिक समाजका महान् कवि बननेकी महत्त्वाकाक्षा रखता है, उसे पहले एक छोटा बच्चा बनना पडेगा। — मैकॉलि

वह सच्चा कवि है जो कविताकी अनुभूतिमे उत्कृष्ट और उच्च आनन्द पाता है, चाहे उसने अपनी तमाम जिन्दगीमे कविताकी एक लाइन भी न लिखी हो। – श्रीमती ड्यूडवेण्ट

कविकी उँगलियोके स्पर्शसे शब्द चमक उठते है। – जोबर्ट

कवि वे हैं जो फूलोसे महकते विचारोको उतने ही रगीन शब्दोमे लिखते हैं। – श्रीमती क्रूडनर

सच्चा दार्शनिक और सच्चा कवि एक ही हैं, सुन्दर सत्य और सच्चा सौन्दर्य दोनोका उद्देश्य है। – एमर्सन

हे प्रभो ! मुझे अभीतक प्रकाश नही मिला, तो क्या मैं केवल एक कवि बनकर रह जाऊँ ? – सन्त तुकाराम

कविकी आँख, एक लाजवाब दीवानगीमें घूम-घूमकर, भूतलसे स्वर्ग और स्वर्गमे भूतल तकको देख लेती है और ज्यो ही कल्पना अनजानी चीज़ोकी शक्लोको साकार बनाने लगती है, कविकी कलम उनको मूर्तिमान् करने लगती है और हवाई शून्यको यहीका घर और नाम दे देती है। – शेक्सपीयर

अल्लाह, अल्लाह रे हस्ती-ए-शायर कल्ब गुंचेका आँख शबनम की। – जिगर

हमारी अन्तःस्थ भावनाओको जागृत करनेकी सामर्थ्य जिसमे होती है, वह कवि है। – गान्धी

हृदयसे सब आदमी कवि है। – एमर्सन

कवि आत्माका चित्रकार है। – आइजक डिसराइली

ये कवि सौन्दर्यके ईश्वरीय दूत हे। – ब्राउनिंग

वे कवि है जो प्रेम करते है,—जो महान् सत्योकी अनुभूति करते है और उन्हे कहते हैं। – बेली

देखता हूँ कि हर देशमे कविका एक ही स्वरूप है—वर्तमानका आनन्द लेना, भविष्यके प्रति लापरवाही, समझदारकी-सी बातें, बेवकूफकी-सी हरकतें। – गोल्डस्मिथ

पहले शरीफ आदमी हुए बिना कोई अच्छा कवि नही हो सकता ।
—बैन जॉन्सन

आवाजे उसका दिन-रात पीछा करती है और वह सुनता है और जब देव कहता है 'लिख !' तो लाज़िमी तौरसे उसे यह आज्ञा माननी पडती है । — लौंगफैलो

कवि हमे हिला देता है और पिघला देता है, फिर भी हम नही जानते कि कहाँसे और क्योकर । — शेली

कविका एक और शाही लक्षण है उसकी खुशमिजाजी, जिसके बगैर कोई कवि नही हो सकता—क्योकि उसका उद्देश्य सौन्दर्य है । उसे साधुशीलता प्यारी है, इसलिए नही कि वह जरूरी है, बल्कि उसकी मनोहरताके कारण, वह दुनियामे पुरुषमे, स्त्रीमे आनन्द लेता है, उस लावण्यमयी आभाके कारण जो उनसे छिटकती है । आनन्द और मस्तीकी देवी सुन्दरताको वह विश्वमे फैलाता रहता है । — एमर्सन

कवि महान् और ज्ञानकी बातें करते है जिनको कि वे स्वयं नही समझते ।
— प्लेटो

महान् कवि होनेसे दोयम चीज किसी कविको समझनेकी शक्ति है ।
— लौंगफैलो

कवि लिखनेके लिए तबतक कलम नही उठाता जबतक उसकी स्याही प्रेमकी आहोमे शराबोर नही हो जाती । — शेक्सपीयर

कवियोका काम आनन्दका काम है, और उनके लिए मनकी शान्ति आवश्यक होती है । — ओविड

ओ कवि, तू जल-थल-नभका सच्चा स्वामी है । — एमर्सन

समालोचक, दार्शनिक, असफल कवि है । — एमर्सन

कविका प्रधान उद्देश्य सौन्दर्य होता है, दार्शनिकका सत्य । — एमर्सन

कोई आदमी अच्छा आदमी हुए बगैर अच्छा कवि नही हो सकता ।
— बैन जॉन्सन

लोग कैम्पो और कसबोमे इकट्ठे रहते हैं, मगर कवि अकेला रहा करता है। – एमर्सन

कविता

कविता भावनाओंमे रँगी हुई बुद्धि है। – प्रोफेसर विल्सन

तमाम देशोंके महान् कवियोकी सर्वोत्तम कृतियाँ वे नही हैं जो राष्ट्रीय हैं बल्कि वे हैं जो कि सार्वभौम है। – लौंगफैलो

कविता ईश्वरकी इस प्रकार सेवा करनेमे है कि शैतान नाराज न हो। – फुलर

जो कविता वासनामे पैदा होती है हमेशा नीचे गिराती है, वास्तविक हार्दिकतासे पैदा हुई कविता हमेशा शरीफ और ऊँचा बनाती है। – ऐ० ऐ० हॉपकिन्स

मेरा खयाल है कि मैं ऐसा सुन्दर पद्य कभी न देख सकूँगा जैसा कि वृक्ष है। पद्य तो मुझ सरीखे मूर्ख भी बना लेते हैं, लेकिन वृक्षको ईश्वर ही बना सकता है। – जाइस किलमर

कविताकी एक खूबीसे किसीको इनकार न होगा। वह गद्यकी अपेक्षा थोडे शब्दोमे अधिक कहती है। – वोल्टेर

वही कविता है, वही स्त्री है जिसके सुनने-देखनेसे कवि-हृदय या पति-हृदय तुरन्त सरल और तरल हो जाये। – अज्ञात

कविता छाया खडी करनेकी कला है, वह किसी चीजको हस्ती प्रदान नही करती। – बर्क

कविता विचारका सगीत है, जो हम तक वाणीके सगीतमे आता है। – चैटफील्ड

उत्कृष्ट कविकी लाजवाब कविता भी बिना राम नामके शोभा नही देती जैसे कि सब तरहसे सजी हुई सर्वांगसुन्दरी चन्द्रमुखी स्त्री बिना वस्त्रके शोभा नही पाती और अगर किसी कुकविकी सब गुण रहित वाणी राम

नामके यशसे अंकित हो तो बुधजन उसे सादर सुनते-सुनाते है और सन्त लोग मधुकरकी तरह उसके गुणको ग्रहण करते हैं। – रामायण

कविता आत्माका संगीत है और सबसे ज्यादा महान् और अनुभूतिशील आत्माओका। – वोल्टेर

कविता किससे बनी है ? एक भरे हुए हृदयसे, जो कि एक सद्भावनासे लबालब भरा हो। – गेटे

कविता शैतानकी शराब नही, ईश्वरकी शराब है। – एमर्सन

कविताके जजो और समझनेवालोकी अपेक्षा हमे कवि ज्यादा मिलते है—एक अच्छा-सा पद्य समझनेकी अपेक्षा एक रद्दी-सा पद्य लिखना आसान है। – मॉण्टेन

कविता स्वयं ईश्वरकी चीज है—उसने अपने पैगम्बरोको कवि बनाया और जब हम कविताकी अनुभूति करते हैं, प्रेम और शक्तिमे ईश्वरके समान बन जाते हैं। – बेली

कविता सर्वाधिक आनन्दमय और सर्वोत्तम मनस्वियोके सर्वोत्तम और सर्वाधिक आनन्दमय क्षणोका रिकार्ड है। – शेली

कविता अपने दैवी स्रोतके सबसे ज्यादा अनुरूप तब होती है जब कि वह धर्मकी शान्तिमयी विचारधारा बहाती है। – वर्डस्वर्थ

जिससे आनन्द प्राप्त न हो वह कविता नही है। – जोबर्ट

कविता मनके विशाल क्षेत्रमे बडी कष्टकर यात्राओके बाद पैदा होती है। – बालजक

कविताकी कला भावनाओको छूना है और उसका कर्त्तव्य उन्हे सद्गुण-की ओर ले जाना है। – कूपर

कविता स्वयं ही मेरे लिए अतीव महान् पुरस्कार साबित हुई है। उसने मुझे अपने आसपासकी चीज़ोमे अच्छाई और सौन्दर्य देखनेकी आदत दी है। – कॉलेरिज

कविता गहरे हृदय-गम्य सत्यका आलाप है—सच्चा कवि बहुत कुछ पैगम्बरके समान है। – ई० एच० चैपिन

आप कवितासे सत्यपर पहुँचते है, मैं कवितापर सत्यसे पहुँचता हूँ। – जोबर्ट

कविता स्वय ही शक्ति और आनन्द है, ख्वाह सारी मानवजाति उसे सिंहासनपर बिठाये, या वह अपने जादूके तपोवनमे अकेली रहे। – स्टर्लिंग

कविताका काम हमे ठीक तरह सोचनेके लिए नही, ठीक तरह अनुभव करनेके लिए विवश करना है। – एफ० डब्ल्यू० राबर्ट्सन

कविताका जामा पहनकर सत्य और भी चमक उठता है। – पोप

कविता अपनी नाजुक और कोमल भावनाओके सजीव चित्रणसे, और अपने पैगम्बराना नज्जारोके चमकीलेपनसे, विश्वासको भावी जीवनके प्राप्त करनेमे सहायता देती है। – चैनिंग

शायरी गमकी बहन है, हर आदमी जो दुख सहता है और रोता है, शायर है, हर आसू एक गाना है, और हर दिल एक नज्म। – ऐण्ड्री

लोक-हृदयको जीत मकनेवाली कविता रचनेकी शक्ति हो तो फिर राज-सत्ता भोगनेकी क्या जरूरत है। – भर्तृहरि

जिस कृतिका बुद्धिमान् आदर न करे उसके रचनेमे बालकवि वृथा श्रम करते है। उसी सरल कविता और विमल कीर्तिका सुजान लोग आदर करते है जिसको दुश्मन भी, स्वाभाविक वैरको भूलकर, तारीफ करने लगे। – रामायण

सत्यसे सत्यको सुन्दरसे सुन्दर रूप देना कविता है। – श्रीमती ब्राउनिंग

कविता सुन्दरको सुन्दर रूपसे कहना है। – प्रोफेसर डॉब्सन

कविता सिर्फ वही है जो मुझे निर्मल और पुरुषार्थी बनाती है। – एमर्सन

कविताको अगर हम अपने अन्दर नही लिये तो वह कही नही मिलने-वाली। – जोबर्ट

कविता केवल कहनेका सबसे सुन्दर और प्रभावक तरीका है, और इसीलिए उसकी महत्ता है। – मैथ्यू आरनोल्ड

कविता थोड़े शब्दोंकी महान् शक्ति बताती है। – एमर्सन

हर महान् कविता नियमसे सीमित होती है, परन्तु अपने संकेतोंमे निस्सीम और अनन्त। – लौंगफैलो

सबसे अच्छी कविता वह है जो हृदयको सबसे ज्यादा हिला दे। वह उस ईश्वरके सबसे निकट आ जाती है जो कि तमाम शक्तिका स्रोत है। – लेण्टर

गद्य = शब्द सबसे अच्छी तरतीबमे।
पद्य = सबसे अच्छे शब्द सबसे अच्छी तरतीबमे। – कॉलरिज

कविताका सार है खोज, ऐसी खोज, जो अप्रत्याशित बात कहकर, आश्चर्यचकित और आनन्दित कर देती है। – सैमुएल जॉन्सन

कविता तमाम मानवीय ज्ञान, विचारो, भावो, अनुभूतियो और भाषाकी खुशबूदार कली है। – कॉलरिज

कविताका महान् लक्ष्य यह है कि वह लोगोकी चिन्ताओको शान्त करने और उनके विचारोको उन्नत करनेमे मित्रका काम करे। – कीट्स

कविता शब्दोका संगीत है, और संगीत ध्वनिकी कविता है। – फुलर

जिसे वीररसपूर्ण कविता लिखनी है, उसे अपना समूचा जीवन वीररस-पूर्ण बना डालना होगा। – मिल्टन

कविता सत्यका उच्चार है—गहरे, हार्दिक सत्यका। सच्चा कवि बहुत कुछ पैगम्बरके समान है। – चैपिन

कष्ट

छोटे लोगोको छोटी तकलीफे बडी लगती है। – कहावत

सच्चा कष्ट यदि सचाईके साथ सहन किया जाये तो वह पत्थर-जैसे हृदयको भी पानी-पानी कर डालता है। – गान्धी

हज़रत मोहम्मदको तीव्र ज्वरमें बेचैन देखकर उनकी पत्नी रोने लगी। मोहम्मद साहबने कडककर कहा—"खामोश! जिसे ईश्वरपर विश्वास है वह कभी इस तरह नहीं रो सकता। हमारे कष्ट हमारे पापोंका प्रायश्चित्त हैं। निस्सन्देह यदि किसी ईश्वरके विश्वासीको एक काँटा भी चुभता है तो अल्लाह उसका रुतबा बढा देता है और उसका एक पाप धुल जाता है। जिसका जितना पक्का विश्वास होता है उसे उतने ही कष्ट भी दिये जाते है। यदि विश्वास कमजोर है तो कष्ट भी वैसे ही होते है किन्तु किसी सूरतमें भी कष्टोंमें उस समय तक कोई माफी न होगी जबतक कि मनुष्यका एक-एक पाप न धुल जाये और पृथ्वीपर वह निष्कलक होकर न विचरने लगे"। – अज्ञात

क्रोध प्रीतिका नाश करता है, मान विनयका नाश करता है, माया मैत्रीका नाश करती है, और लोभ सबका विनाश करता है।

– भगवान् महावीर

कषाय

लोग अपनी जिन्दगिया कषायोंकी सेवामें गुजार देते है, बजाय इसके कि वे कषायोंको अपनी जिन्दगियोंकी सेवामें जोते। – स्टील

जब कषाय सिहासनपर होती है विवेक घरसे बाहर होता है। – हैनरी

कषाय मनकी मादकता है। – स्पेन्सर

कषायका अन्त पश्चात्तापकी शुरूआत है – फ्रेंकलिन

कसरत

मुझे हर-एक काममें सफलता इसलिए मिली है कि मैं प्रात काल उठता और कसरत करता था। – तेलके बादशाह, धनकुबेर, राक फैलर

कहावत

कहावते युगोंका सद्ज्ञान है। – जर्मन कहावत

कहावते दैनिक अनुभवकी पुत्रियाँ है। – डच कहावत

किसी राष्ट्रकी प्रतिभा, कुशाग्रता और आत्माका पता उसकी कहावतो-से लगता है। – बेकन

कॉटा

तीक्ष्ण कॉटा तुम्हारे अन्दर चुभा हुआ है और उससे तुम पीडित हो रहे हो, आश्चर्य है कि इस दुःख-पीडामे भी तुम्हे नीद आ रही है! प्रज्ञा और अप्रमादके द्वारा यह कॉटा निकाल लो ना? – बुद्ध

क्रान्ति

इस जमानेके दुखो और जुर्मोका एक सर्वाधिक घातक स्रोत इस मान्यतामे है कि चूँकि हालात अर्सा-ए-दराजसे गलत रहे है, यह गैर मुमकिन है कि वे कभी भी ठीक किये जा सके। – रस्किन

बडी क्रान्तियाँ शमशीरोकी अपेक्षा सिद्धान्तोकी कृतियाँ हैं, और वे पहले नैतिक क्षेत्रमे की जाती हैं, और बादमे भौतिकमे। – मैजिनी

निम्नतर वर्गोकी क्रान्तियाँ हमेशा उच्चतर वर्गोके अन्यायका परिणाम होती हैं। – गेटे

कान

दो भले कान सौ जबानोका सुखाकर खुश्क कर सकते है। – फ्रेंकलिन

कानून

यहाँ कानून गरीबोपर शासन करते है और अमीर कानूनोपर शासन करता है। – ओ० गोल्डस्मिथ

क्या बिल्ली कभी चूहोके लिए उचित कानून बना सकती है? – जॉन ब्राइट

कानून दुष्टो-द्वारा दुष्टोके लिए बनाये जाते हैं। – इटालियन कहावत

नये कानून, नये स्वामी, नये धोखे! – कहावत

मक्कारो और गद्दारोके लिए कोई कानून नही है, वे गर्तमे पडनेसे नही रोके जा सकते, ज़मीन आखिरकार उन्हे निगल जाती है, गुरुत्वा-कर्षणके सिवा उनके लिए कोई नियम नही है। – रस्किन

क़ाबू

जो अपने विचारोंपर काबू नहीं रखेगा""जल्द अपनी कृतियोंपर-से काबू खो बैठेगा। — अज्ञात

काम

जो छोटे-छोटे कार्योंके पीछे अजहद पड़े रहते है, वे अकसर बड़े कामोंके लिए नाकाबिल बन जाते है। — रोशे

वही काम करना ठीक है, जिसे करके पछताना न पड़े, और जिसके फलको प्रसन्न मनसे भोग सके। — बुद्ध

मैंने पचास साल तक औसतन् रोजाना बारह घण्टे काम किया है। — वैब्स्टर

यह गैर-मुमकिन है कि आदमी बहुत-से कामोंको करनेकी कोशिश करे और उन सबको अच्छी तरह कर सके। — ज़ेनोफन

काम जीनेका साधन है, मगर वह जीना नहीं है। — जे० जी० हॉलैण्ड

सर्वोत्तम काम कभी कतई धनकी खातिर नहीं किया जाता और न कभी किया जायेगा। — रस्किन

अगर कोई काम नहीं करता तो उसे खाना भी नहीं चाहिए। — बाइबिल

हर अच्छा काम पहले असम्भव दिखता है। — कार्लाइल

अपना काम किये जाओ, उसकी मकबूलियतका खयाल रखकर नहीं बल्कि उसके जमाल व कमालका लिहाज़ रखकर। — एमर्सन

इनसानकी सिरमौर खुशकिस्मती यह है कि वह किसी कामके लिए पैदा हुआ हो जिसमें वह लगा और आनन्द पाता रह सके, ख्वाह वह काम टोकरियाँ बनाना हो या नहरें खोदना, मूर्तियाँ बनाना हो या गाने रचना। — एमर्सन

उन लडकोमे-से आधे जिन्हे मैं इतने परिश्रमसे अक्षरज्ञान कराता हूँ, खेतीके काममे लगा दिये जाये तो अधिक अच्छा हो। – ए० सी० बेन्सन

किसीने एक ऋषिसे पूछा—मैं क्या करूँ ? उसने उत्तर दिया—वह प्रभु क्या करता है ? – बायजीद

कर्मरततामे ही हमे अपनी खुशी और शान पाना चाहिए, और मेहनत, अन्य हर अच्छी चीजकी तरह, स्वय अपना इनाम है। – व्हिपिल

तुम कही हो, दाताकी स्थितिमे रहो याचककीमे नही, ताकि तुम्हारा काम सार्वभौम हो सके, व्यक्तिगत ज़रा भी नही। – स्वामी रामतीर्थ

कर्मशील लोग शायद ही कभी उदास रहते हो—कर्मशीलता और गम-गीनी साथ-साथ नही रहती। – बोवी

जुगनू तभीतक चमकता है जबतक उडता रहता है, यही हाल मनका है। जब हम रुक जाते है, हम अँधरेमे पड जाते है। – बेली

तुम जो काम करना चाहते हो, वह सर्वथा अनिन्द्य होना चाहिए, क्योकि दुनियामे उसकी बेकदरी होती है जो अयोग्य काम करनेपर उतारू हो जाता है। – तिरुवल्लुवर

काम करनेमे आनन्द हमेशा न भी मिले, मगर बिना काम किये आनन्द नही है। – डिसराइली

शरीरके लिए काम ढूंढ लो, मनको खुशी अपने-आप मिल जायेगी।
– कहावत

वह घोडा जिसे चरा-चराकर चर्बीला बनाया जाता है मगर जोता नही जाता, लतखना हो जाता है। – इटालियन कहावत

वह अभागा है, और सर्वनाशके मार्गपर है, जो वह नहीं करता जिसे वह कर सकता है, बल्कि वह करनेकी महत्त्वाकाक्षा रखता है जिसे वह नही कर सकता। – गेटे

काम मानो बोलीमे 'घुला' रहता है। आदमीके बोलनेसे पता चल जाता है कि उससे क्या काम होगा। – कार्लाइल

ईश्वर उस शख्सको कभी मदद नही देता जो काम नहीं करता। – सोफोकिल्स

लोगोके काम उनके विचारोके सर्वोत्तम परिचायक है। – लौके

बुरा काम करना नीचता है। बिना खतरा मोल लिये अच्छा काम करना मामूली बात है। मगर महान् और शरीफाना काम करना सज्जनका ही भाग है। ख्वाह, उनके करनेमे उसे सब कुछ खतरेमे डाल देना पडे। – प्लूटार्क

हम जितना ज्यादा करे उतना ज्यादा कर सकते है, हम जितने ज्यादा मशगूल होते है उतनी ही ज्यादा फुरसत हमे मिलती है। – हैजलिट

कामके मानी है अपने वास्तविक स्वरूपसे सामजस्य और ब्रह्माण्डसे एकरूपता। – स्वामी रामतीर्थ

सच्चा काम अहकार और स्वार्थको छोडे बिना होता नही। – स्वामी रामतीर्थ

हर घडी काम कर, 'पेड' या 'अनपड', बस देख यह कि तू काम करता है। – एमर्सन

लोगोकी जीवनियोमे निस्स्वार्थ और शरीफाना काम सबसे रोशन वर्क है। – थॉमस

अपने कामको चाँद, तारो और सूरजके कामकी तरह निस्स्वार्थ बना दो तभी सफलता मिलेगी। – स्वामी रामतीर्थ

यदि तुम गन्दगीसे और दुनिया-भरके पापोसे बचना चाहो, तो खूब दृढतापूर्वक काम करो, चाहे तुम्हारा काम अस्तबल साफ करना ही क्यो न हो। – थोरो

अगर हमे बड़े ही काम करने हैं, तो आओ हम अपने ही कामोको बड़े बनाये। हर काम असीम लचक रखता है और छोटेसे छोटा भी

दैविक वायुसे भरकर इतना बडा हो सकता है कि वह सूरज और चांद-पर ग्रहण डाल दे। – एमर्सन

बाहरी काम अन्दरूनी इरादेका पता दे देते हैं। – लैटिन सूत्र

कामना

अगर तुम्हें किसी बातकी कामना करनी ही है तो जन्मोंके चक्रसे छुट-कारा पानेकी कामना करो, और वह छुटकारा तभी मिलेगा जब तुम कामनाको जीतनेकी कामना करोगे। – तिरुवल्लुवर

अगर किसी अच्छे ठिकानेपर पडे रहनेसे किसीकी सारी मन कामनाएँ पूरी हो सकती हैं तो सूरज हमेशा एक अच्छे स्थानमे ही पडा रहता। – अबूइस्माइल तूगाई

कामनाको सन्तुष्ट नही करना अच्छा है। लेकिन शुरू करनेके बाद उसे रोकना असम्भव नही तो कठिन तो है ही। – गान्धी

कामना एक बीज है जो जन्मोकी फसल प्रदान करती है। –तिरुवल्लुवर

जिसने अपनी कामनाओका दमन करके मनको जीत लिया और शान्ति पायी तो चाहे वह राजा हो या रक उसे ससारमे सुख-ही-सुख है। – हितोपदेश

कामान्ध

उल्लूको दिनको नही दीखता, कौएको रातको नही दीखता। मगर कामान्ध अजीब अन्धा है जिसे न दिनको सूझता है न रातको! – अज्ञात

कामी

कामसे जो पुरुष आर्त्त है वह जीव और जडमे भेद नही कर सकता है। – कालिदास

दुनियामे जितने कामी और लोभी लोग है वे कुटिल कौवेकी तरह सबसे डरते है। – रामायण

कामिनी

तू मृगनयनियो और उनकी चर्चासे विमुख हो जा, दो टूक बात कह और हँसी-ठट्ठेसे मुँह मोड़ । — इब्न-उल्-वर्दी

कार्य

मनुष्यको अपने कार्यका स्वामी बनना चाहिए, कार्यको अपना स्वामी नही बनने देना चाहिए। — अज्ञात

कार्य-कारण

कार्य-कारणका महान् सिद्धान्त अटल है । — अज्ञात

जिस तरह बबूलके पेडपर आम नही लग सकते, मिर्चके पौधेपर गुलाबके फूल नही आ सकते, उसी तरह बुरे कामोका नतीजा कभी सुखकर नही हो सकता । — अज्ञात

एक मनुष्यकी वर्तमान दशा इस अटल नियमका अवश्यम्भावी परिणाम है कि जैसा वह बोता है वैसा काटेगा, जैसा वह काटता है वैसा उसने बोया भी था । — अज्ञात

कायर

कायर तभी धमकी देता है जब सुरक्षित होता ह । — गेटे

कायर होनेके कारण ही हम दूसरोंके खूनका विचार करते हैं । —गान्धी

जो भागा सो पछताया । — शीलनाथ

अगर कोई बुज़दिल होकर अहिंसाको लेता है तो अहिंसा उसका नाश करेगी । — गान्धी

जो भय मानता है उसे मानसिक कायर समझना चाहिए और जिस वस्तुसे उसे भय है वह ज़रूर घर दबायेगी । — अज्ञात

कायरता

अत्याचार व भय दोनो कायरताके दो पहलू हैं । — अज्ञात

मैं कायरता तो किसी हालतमे बरदाश्त नही कर सकता। आप कायरता-से मरें, इसकी अपेक्षा आपका बहादुरीसे प्रहार करते हुए और प्रहार सहते हुए मरना मैं कही बेहतर समझूंगा। – गान्धी

कायरताकी अपेक्षा बहादुरीके साथ शरीर-बलका प्रयोग करना कही श्रेयस्कर है। – गान्धी

सच तो यह है कि कायरता खुद ही एक सूक्ष्म, और इसलिए भीषण प्रकारकी हिंसा है, और शारीरिक हिंसाकी अपेक्षा उसे निर्मूल करना बहुत ही मुश्किल है। – गान्धी

कारण

कारणको दूर कर दो, कार्य बन्द हो जायेगा। – अँगरेज़ी कहावत

जैसे अनुभव लेता हूँ, पाता हूँ कि आदमी स्वय अपने सुख-दुखका कारण है। – गान्धी

काल

सुबह और शामके आने और जानेने छोटेको जवान और बूढेको नष्ट कर दिया। – सुलतान-उल्-अबदी

कालकी आपदाओसे व्याकुल न हो क्योकि व्याकुल होना मूर्खोंका काम है। – हज़रत अली

कॉलेज

कॉलेज पत्थरके टुकडोको तो चमकदार बनाते हैं किन्तु हीरोपर जग चढ़ा देते हैं। – इगरसोल

काहिल

काहिल आदमी ऐसी घडी है, जिसमे दोनो सुइयोकी कमी है। चलती भी है तो उतनी ही निरर्थक जितनीकी बन्द रहनेपर। – अज्ञात

काहिली

काहिली एक मज़ेदार मगर कष्टप्रद हालत है, आनन्दित होनेके लिए हमे कुछ-न-कुछ करते रहना चाहिए। – हैज़लिट

काहिलीसे कोई अमर नहीं हुआ। – अज्ञात

कुदरतके अटल और उचित कानूनोंके मुताबिक, जहाँ काहिली शुरू हुई कि आनन्दोल्लास खत्म हो जाता है। – पोलक

काहिली जिन्दा आदमीका मदफन है। – जैरेमी टेलर

काहिली और खामोशी मूर्खके गुण हैं। – फ्रेंकलिन

काहिली, बीमारियाँ लाकर जिन्दगीको निहायत छोटी कर देती है। काहिली, जंगकी तरह, परिश्रमकी अपेक्षा अधिक विनाशक है। जो चाभी इस्तेमालमें आती रहती है हमेशा चमकीली रहती है। – फ्रेंकलिन

काहिली दुर्बल मनोंकी शरण है, और मूर्खोंकी छुट्टी। – कहावत

काहिली शुरूमें मकड़ीका जाला होती है, अन्तमें फौलादी जंजीर बन जाती है। – कहावत

किताब

मनुष्य जातिने जो कुछ किया, सोचा और पाया है वह पुस्तकोंके जादू-भरे पृष्ठोंमें सुरक्षित है। – कार्लाइल

अच्छी किताब वह है जो आशासे खोली जाये और लाभसे बन्द की जाये। – ऐमो ब्रॉन्सन ॲलकॉट

बुरी किताबसे बढ़कर डाकू नहीं। – इटली कहावत

प्रसिद्ध किताबोंमें बेहतरीन विचार और घटनाएँ हैं। – एमर्सन

मालूम हुआ है कि हर जमानेको अपनी किताबें खुद लिखना चाहिए। – एमर्सन

किताबोंपर कामिल यकीन करनेसे बेहतर है कि इनसानके पास कोई किताब ही न हो। – अज्ञात

कुछ किताबें चखनेके लिए हैं, कुछ निगले जानेके लिए और कुछ थोड़ी-सी चबाये जाने और हज्म किये जानेके लिए। – बेकन

पुराना कोट पहनो और नयी किताब खरीदो। – अज्ञात

अगर युरॅपके तमाम ताज इस शर्तपर मुझे पेश किये जायें कि मैं अपनी किताबें पढना छोड दूँ, तो मैं ताजोको ठुकराकर दूर फेंक दूँगा और किताबोका तरफ़दार रहूँगा। –फेनेलन

किताबें महज रद्दी कागज है अगर हम विचारसे प्राप्त ज्ञानपर अमल न करे। – बलवर

जब मुझे कुछ पैसा मिलता है, मैं किताबें खरीदता हूँ, और अगर कुछ बच रहता है, तो खाना और कपडे खरीदता हूँ। – इरसमस

बिना किताबोका कमरा बिना आत्माका शरीर है। – अज्ञात

किफायत

गरीबोको किफायतशारीका उपदेश देना भोडा और अपमानजनक है। – ऑस्कर वाइल्ड

अगर तुम जितना पाते हो उससे कम खर्च करना जानते हो, तो तुम्हारे पास पारस पत्थर है। – फ्रैंकलिन

किफायत इसमे नही है कि कोई कितना कम खर्च करता है, बल्कि इसमें कि वह कितनी अक्लमन्दीके साथ खर्च करता है। – अज्ञात

किस्मत

किसीकी किस्मतकी डोर दूसरेके हाथमें नही है। – अज्ञात

कीर्ति

माना कि श्रेष्ठ कार्यमे मेहनत पडती है, मेहनत शीघ्र समाप्त हो जाती है, परन्तु कीर्ति अमर रहती है, जब कि नीच काममें, चाहे उसके करनेमे मजा भी आता रहा हो, मजा शीघ्र चला जाता है, लेकिन कलक हमेशा लगा रहता है। – जॉन स्टुअर्ट

क़ीमत

अगर तू अपनी कीमत आँकना चाहता है, तो अपनी दौलत, जमीन, पदवियोको अलग रखकर अपने अन्तरगकी जाँच कर। – सेनेका

यह है जवाहिरातकी दुकान, और इस रत्न, इस ध्येय, इस स्वर्गके लिए तुम्हें अपना सर देना होगा, अपनी नीचता त्यागनी होगी। अगर तुम यह क़ीमत अदा नहीं कर सकते तो हट जाओ यहाँसे। – स्वामी रामतीर्थ

आपकी क़ीमत वह है जो आपने अपने लिए स्वयं आँक रखी है।
– अज्ञात

हर आदमीकी क़ीमत ठीक उतनी है जितनी उन चीज़ोंकी कीमत जिनमें वह सलग्न है। – ऑरिलियस

अकसर, इस दुनियामें आदमीकी कीमतका अन्दाज़ा इससे लगता है कि ख़ुद उसकी नज़रमे उसकी कीमत क्या है। – ला ब्रूयर

'तुम्हें क्या चाहिए?' ईश्वरने पूछा, 'कीमत दो और ले लो।'
– कहावत

कुकर्म

कुकर्म करते वक्त मीठे और सुखदायी लगते है और कर्मफल भोगते वक्त दु खदायी। – धम्मपद

अगर तुम वह करते हो जो तुम्हे नहीं करना चाहिए, तो तुमको वह सहना पडेगा जो तुम्हें नही सहना पडता। – फ्रेंकलिन

किसी महात्माका वचन है कि दिन-भर कुविचार और कुकर्मोंसे बचना रात-भरके भजन-बन्दगीसे बढकर है। – डिमासथिनीज़

कुटुम्ब

तमाम प्राणिवर्ग परमात्माका कुटुम्ब है, और उन सबमे परमात्माको सबसे प्यारा वह है जो परमात्माके इस कुटुम्बका भला करता है।
– हज़रत मुहम्मद

जो मनुष्य पापके द्वारा कुटुम्बका भरण-पोषण करता है, वह महाघोर नरकका भागी होता है। – अज्ञात

क़ुदरत

कुदरतके कानून न्याय्य ही नही भयकर हैं। उनमें दुर्बल दया नहीं है।
– लौंगफैलो

जब मनुष्य सत्पथपर चलता है तो सारी कुदरत उसकी मुक्तिके लिए प्रयत्नशील हो जाती है।
– अज्ञात

कुदरतन् तुम जो कुछ हो, उसपर साबित-कदम रहो, अपनी व्यक्तिगत विशेषताकी लाइन कभी न छोडो। वही बनो जिसके लिए कि कुदरतने तुम्हे बनाया है, और तुम कामयाब होगे, अगर कुछ और बने तो तुम अवस्तुसे दस हज़ार गुना बदतर होगे।
– सिडनी स्मिथ

कुदरतके सब काम धीरे-धीरे होते है।
– बेकन

कुदरतको भला-बुरा न कहो उसने अपना फर्ज पूरा किया, तुम अपना करो।
–मिल्टन

कुपथ

जो निहायत तेज चलता है, लेकिन गलत रास्ते चलता है, रास्तेसे सिर्फ दूर-दूर होता जाता है।
– प्रायर

कुपन्थ

जो कुपन्थमे पैर रखते है उनमे जरा भी बुद्धिबल नही रह जाता।
– रामायण

कुमारी

कुमारियोको मृदुल और लजीली, सुननेमे तेज और बोलनेमे मन्द होना चाहिए।
– कहावत

क़ुरबानी

जो जानवर कुरबान किये जाते हैं उनका गोश्त या उनका खून अल्लाहको नहीं पहुँचता, अल्लाह तुमसे सिर्फ तुम्हारा तकवा (बुराईसे बचे रहना) कबूल करता है।
– कुरान

कुरीति

कुरीतिके अधीन होना पामरता है उसका विरोध करना पुरुषार्थ है ।
— गान्धी

कुलीन

मैं कुलीन पैदा हुआ हूँ, जिसे कोई अपनी जायदाद नहीं बना सकता; जिसपर कोई हुकूमत नही कर सकता, संसारके किसी भी राज्यका मैं कठपुतली या नमकहलाल नौकर सिद्ध नही हो सकता । — थोरो

सच्चे कुलीन सज्जनमे ये चार गुण पाये जाते है—हँसमुख चेहरा, उदार हाथ, मृदु भाषण और स्निग्ध निरभिमान । — तिरुवल्लुवर

"मैं मजदूर हूँ—तुम मालिक हो । मै दिन-भर मिहनत करके थोडा-सा लेता हूँ—तुम मेरा सब कुछ लेकर थोडा-सा मुझे देते हो ! तुम कुलीन और मै अछूत हूँ क्योकि तुम अपने घरोको गन्दा करते हो और मै उन्हे साफ करता हूँ ।" — अज्ञात

कुशलता

हमारी सारी कठिनाइयाँ अपनी अकुशलतामे है । कुशलता आयी कि हमें आज जो कष्टकारक प्रतीत होता है वही आनन्द देनेवाला मालूम होगा । तन्त्र सुव्यवस्थित और सात्त्विक होगा तो कभी कष्ट मालूम न होना चाहिए । — गान्धी

कुसंग

लायक लोग बुरी सोहबतसे डरते है, मगर छोटी तबीयतके आदमी बुरे लोगोसे इस तरह मिलते-जुलते है मानो वे उनके ही कुटुम्बवाले है ।
— तिरुवल्लुवर

नरकवास अच्छा, ईश्वर दुष्टोकी सगति न दे । — रामायण

कुसगति पाकर कौन नष्ट नही हो जाता ? जो नीच लोगोकी रायपर चलता है उसको बुद्धि नष्ट हो जाती है । — रामायण

कुसंगति शैतानका जाल है। – अज्ञात

कूटनीति

कूटनीति कुदरती इनसानी गुणोके खिलाफ एक ऐसा दुर्गुण है जिसने दुनियाके बडे हिस्सेको गुलामोको जजीरोमें जकड रखा है और जो मानवताके विकासमे बडी बाधा है। – रोम्या रोलाँ

क्रियाशीलता

काहिलोको काहिलीके लिए भी वक्त नही मिलता, न परिश्रमीको विश्रामके लिए। या तो हम कुछ करते रहे या दुःखी बने रहें। – जिमरमन

जुगनू तभीतक चमकता है जबतक उडता है, यही बात मनके लिए है, हम रुके कि प्रकाशहीन हुए। – बेली

क्रियाशीलता यही आनन्दरूप है, और बिना क्रियाशीलताके कोई स्वर्ग हो नही सकता। – बॉस

धन्य है वह पुरुष, जो काम करनेसे कभी पीछे नहीं हटता। भाग्य लक्ष्मी उसके घरकी राह पूछती हुई आती है। – तिरुवल्लुवर

क्रूरता

मूक पशुओके प्रति क्रूरता निम्नतम और कमीनतम लोगोका एक खास पाप है। – जोन्स

क्रोध

जो क्रोधके मारे आपेसे बाहर है वह मृतक-तुल्य है, किन्तु जिसने क्रोधको त्याग दिया है वह सन्त-समान है। – तिरुवल्लुवर

शान्त रहे, क्रोध युक्ति नही है। – डेनियल वैब्स्टर

क्रोध करना दूसरेके अपराधोका बदला अपनेसे लेना है। – अज्ञात

बहुतोंने क्रोधमें ऐसी बातें कही और की है जिन्हे अगर वे फेर ले सकें तो अपना सर्वस्व वार दें।
— अज्ञात

बलवान्को जल्दी क्रोध नही आता। — अज्ञात

क्रोधका सबसे बडा इलाज विलम्ब है। — सेनेका

क्रोध करना बर्रोके छत्तेमे पत्थर मारना है। — मलाबारी कहावत

क्रोध भूलको दोष बनाता है और सत्यको अविवेक बनाता है। — अज्ञात

क्रोधसे सबसे अच्छी तरह वह बचा रहता है जो याद रखता है कि ईश्वर उसे हर वक्त देख रहा है।
—प्लेटो

जब क्रोध उठे, तो उसके नतीजोपर विचार करो। — कन्फ्यूशियस

क्रोध करके हम दूसरेको उसकी गलती नही समझाते है, अपनी पशुताकी स्वीकृति उससे कराना चाहते है। — हरिभाऊ उपाध्याय

क्रोध धनवान्को घृणित और निर्धनको अत्यन्त घृणित बना देता है।
— अज्ञात

सारी दुनियाको एक कर देनेकी कल्पना शीघ्र निकालना आसान है, परन्तु अपने मनके अन्दरका क्रोध जीतना कठिन है। — विनोबा

जिस आगको तुम दुश्मनके लिए जलाते हो वह अकसर तुमको ही ज्यादा जलाती है। — चीनी कहावत

यदि किसीने अवज्ञा की है, या कोई काम बिगाडा है, तो उसपर क्रोध करना आगमे पडे हुएपर तेल छिडकना नही तो क्या है ?
— हरिभाऊ उपाध्याय

क्रोध मूर्खतासे शुरू होता है और पश्चात्तापपर खत्म होता है।
— पिथागोरस

आदमीकी तमाम कामनाएँ तुरन्त पूरी हो जाया करें अगर वह अपने क्रोधको दूर कर दे। — तिरुवल्लुवर

'सारथी' मैं उसीको कहता हूँ जो रास्ता छोडकर जानेवाले रथकी

तरह क्रोधके पैदा होते ही उसे बसमें कर ले। बाकी तो सब रास थामनेवाले हैं। – अज्ञात

क्रोधका अन्त पश्चात्तापका प्रारम्भ है। – बोडेन्स्टेट

क्रोध समझदारीको घरसे बाहर निकाल देता है और दरवाजेकी चटखनी लगा देता है। – प्लुटार्क

जिस तरह खौलते पानीमें अपना प्रतिबिम्ब दिखाई नही दे सकता, उसी तरह क्रोधाभिभूत मनुष्य यह नही समझ सकता कि उसका आत्महित किसमे है। – बुद्ध

क्रोधमे समुन्दरको तरह बहरा, आगको तरह उतावला। – शेक्सपीयर

स्वर्ग उन लोगोके लिए है जो अपने क्रोधको वशमे रखते हैं। – कुरान

अग्नि उसीको जलाती है जो उसके पास जाता है मगर क्रोधाग्नि सारे कुटुम्बको जला डालती है। – तिरुवल्लुवर

क्रोध हँसीको हत्या करता है और खुशीको नष्ट कर देता है। – तिरुवल्लुवर

प्रभुकी आज्ञा है कि मेरा भक्त कभी क्रोध न करे। – मलिक दिनार

गुस्सा [क्रोध] और शहवत [काम] आदमीको अन्धा कर देते है और उसे उसकी ठीक हालतसे भटका देते है। – मौलाना रूम

महात्माओके क्रोधकी शान्ति उनको प्रणाम करनेसे होती है। – कालिदास

इस बातपर खफा न होओ कि तुम दूसरोको वैसा नही बना सकते जैसा तुम चाहते हो, क्योकि तुम स्वय अपनेको भी वैसा नही बना पाते जैसा तुम बनना चाहते हो। – थॉमस कैम्पी

जिस मनुष्यने उच्च पद प्राप्त किया है, उसके हृदयमें द्रोहका बोझ नही हुआ करता। और जिसके स्वभावमे क्रोध हो, वह उच्च पद नही प्राप्त कर सकता। – अज्ञात

क्रोधी

घमण्डीका कोई खुदा नही; ईर्ष्यालुका कोई पडोसी नही, क्रोधीका वह खुद भी नही। – बिशप हॉल

कोमलता

तू किसीकी कोमल बातोंमें धोखेमें न आ जा। साँपकी कोमलतासे दूर रहना ही उचित है। – इनउल-वर्दी

कोमल शब्द सख्त दिलोंको भी जीत लेते है। – अज्ञात

सच्ची कोमलता, सच्ची उदारताकी तरह, अपने प्रति किये गये दुर्व्यवहार-की अपेक्षा, अपने-द्वारा किये गये दुर्व्यवहारसे ज्यादा जख्मी होती है। – ग्रैविले

कोशिश

सही कोशिश किसे कहे ? एक बात यह है कि सही कोशिशसे बहुत वक्त हमे इच्छित फल मिलता है। इसलिए फलसे ही कहा जाता है कि कोशिश सही थी। लेकिन अनुभवमे मालूम होता है कि ऐसा हमेशा नही बनता। सही कोशिश यह है कि साधनकी योग्यताके बारेमे निश्चय है और विपरीत फल देखनेपर भी साधन बदलता नही, न उद्यम बदलता है न कम होता है। – गान्धी

शान तो कोशिशमें है, इनाममे नही। – मिलनर

हम कोशिशसे सन्तुष्ट रहे, बशर्ते कि कोशिश सही और यथाशक्ति हो। परिणाम सिर्फ कोशिशपर निर्भर नही रहता। और चीजें होती हैं जिस-पर हमारा कोई अकुश नही होता। – गान्धी

लोग हमारी कोशिशोंकी कामयाबीसे फैसला देते है ईश्वर कोशिशोंको ही देखता है। – चार्लट एलिजाबेथ

कौशल

करनेका कौशल करनेसे आता है। – एमर्सन

कृतघ्नता

आदमी, बिलाशक, अशरफ-उल मखलूक़ात है, और सबसे निकृष्ट जानवर कुत्ता है, परन्तु सन्त इस बातपर सहमत है कि कृतघ्न आदमीसे कृतज्ञ कुत्ता बेहतर है। – सादी

कृत्य

कृत्योंमें बोलो, लफ्फ़ाज़ोका समय चला गया, सिर्फ काम ही काफी है। – ह्विटर

कृतज्ञ

किसी दार्शनिकको शब्दोकी इतनी कमी कभी महसूस नही हुई जितनी कि कृतज्ञको। – कोल्टन

कृतज्ञता

कृतज्ञता शाब्दिक धन्यवादसे कही बढकर है और कार्य शब्दोसे अधिक कृतज्ञता प्रकट करता है। – लावेल

जिसने कभी उपकार किया हो उससे बडा अपराध हो जाये तो भी उसके उपकारके एवज़मे उसे क्षमा कर देना चाहिए। – अज्ञात

कृतघ्नताके बाद सहनेमे सबसे कष्टप्रद चीज़ कृतज्ञता है। – एच्० डब्ल्यू० बोचर

कृपा

मुझे ऐसा लगता है कि मेरी प्रभुपर जितनी भक्ति है उसकी अपेक्षा प्रभुकी मुझपर कृपा अधिक है। – विनोबा

■

ख

खर्च

जो अपनी आमदनीसे ज्यादा खर्च करे और उधारका रुपया न चुकावे उसे उसी वक्त जेलखाने भेज देना चाहिए, चाहे वह कोई हो। — थैकरे

बुद्धिमानीके साथ खर्च करता हुआ आदमी थोडे खर्चेसे भी अपनी गुजर कर सकता है। मगर फिजूलखर्चीसे सारे ब्रह्माण्डकी सम्पदा भी नाकाफी हो सकती है। — अज्ञात

जो आदमी अपने धनका खयाल न रखकर उसे खुले हाथो लुटाता है, उसकी सम्पत्ति शीघ्र ही समाप्त हो जायेगी। — तिरुवल्लुवर

भरनेवाली नाली अगर तग है तो कोई परवाह नही, बशर्ते कि खाली करनेवाली नाली ज्यादा चौडी न हो। — तिरुवल्लुवर

खज़ाना

साँप हवा खाकर रहते है मगर वे दुर्बल नही होते, जगली हाथी सूखी घास खाकर जीते है मगर कितने बलवान् होते है। साधु लोग कन्द-मूल फल खाकर अपना समय गुज़ारते हैं। सन्तोष ही इनसानका बेहतरीन खज़ाना है। — अज्ञात

खतरा

खतरा गया, खुदा भूला। — कहावत

खतरेकी जगह बेतहाशा दौड पडना बेवकूफी है, बुद्धिमानोका यह भी एक काम है कि जिससे डरना चाहिए, उससे डरें। — तिरुवल्लुवर

बडे कामोके—जिन्हे हम नही कर सकते और छोटे कामोंके—जिन्हें हम नही करना चाहते—के बीचका खतरा यह है कि हम कुछ नही करेंगे। — अज्ञात

खतरा तो जिन्दगीकी रूह है। खतरेका पूर्ण अभाव मौतके बराबर है।
– अज्ञात

हमेशा डरते रहनेसे खतरेका एक बार सामना कर डालना अच्छा।
– नीतिसूत्र

खतरनाक

डायोजीनसे पूछा गया कि किन जानवरोंका काटा सबसे खतरनाक होता है। उसने जवाब दिया कि जंगलियोंमें निन्दकका और पालतुओंमें चापलूसका।
– अज्ञात

खरा

कठोर मगर हितकी बात कहने और सुननेवाले बहुत थोड़े हैं। – रामायण

खरीद

छातीपर पिस्तौल रखकर धान्य छीनना और सोनेकी मुहर देकर खरीदना, इनमे अकसर ज़रा भी फेर-फर्क नही होता।
– विनोबा

खामोशी

खामोश रहो, या ऐसी बात कहो जो खामोशीसे बेहतर है। – पिथागोरस

जैसे कि हमे हर प्रमादपूर्ण बकवासका जवाब देना होगा उसी तरह हर प्रमाद-भरी खामोशीका भी।
– फ्रैंकलिन

जब कि बोलना चाहिए उस वक्त खामोश रहनेसे लोगोका 'खात्मा' हो सकता है, जब कि खामोश रहना चाहिए—उस वक्त बोलनेसे हम अपने शब्दोको फिजूल खर्च करते हैं। अक्लमन्द आदमी सावधानतापूर्वक दोनो गलतियोसे बचता है।
– कन्फ्यूशियस

जब कहनेसे कुछ नही होता, तब पवित्र मासूमियतकी खामोशी, अकसर कारगर होती है।
– शेक्सपीयर

खादी

खादी देशके सब प्रजाजनोंको आर्थिक स्वतन्त्रता और समानताके आरम्भकी सूचक है।
— गान्धी

खाना

एक वक्त खाना शेरके लिए काफी होता है, आदमीके लिए तो होना ही चाहिए।
— फोर्डिस

पशु चरते है, आदमी खाता है, समझदार आदमी ही जानता है कि किस तरह खाना चाहिए।
— ब्रिलेट सेबेरिन

भीख माँगनेसे भी अधिक अप्रिय उस कजूसका जमा किया हुआ खाना है, जो अकेला बैठकर खाता है।
— तिरुवल्लुवर

वे भले आदमी जो दूसरोको देकर बचा हुआ खाना खाते है, सब पापोसे छूट जाते है, और जो पापी लोग सिर्फ अपने लिए ही खाना पकाते है वह पाप ही खाते है।
— गीता

ख़ानदान

धुआँ आसमानसे शेखी बघारता है और राख जमीनसे, कि वे आगके खानदानवाले है।
— टैगोर

ख़िताब

बेवकूफको सचमुच खिताबकी जरूरत है, उससे लोग उसे 'रायबहादुर' और 'सर' कहना सीख जाते है और उसके असली नाम, 'बेवकूफ', को भूल जाते है।
— क्राउन

खिताब आदमियोंको शोभा नही बढाते, बल्कि खिताबोको शोभा आदमियोसे है।
— मैकियाबेली

ख़ुश

तुझे इस बातका खयाल बारबार क्यो आता है कि फलाँ मुझसे खुश

है या नहीं ? तू सदा यही देख कि तेरी अन्तरात्मा तुझसे खुश है या नहीं ? — हरिभाऊ उपाध्याय

ख़ुश करनेकी कला ख़ुश होनेमें है। प्रिय बनना अपनेसे और दूसरोंसे सन्तुष्ट होना है। — हैज़लिट

ख़ुश करना

बहुतोंको खुश करना ज्ञानियोंको नाखुश करना है। — प्लूटार्क

जो लोग हर शख्सको ख़ुश करनेका नियम बना लेते हैं, शायद ही किसीके लिए हृदय रखते हों। उनकी ख़ुश करनेकी इच्छाका रहस्य ख़ुद-पसन्दी है, और उनका मिज़ाज अकसर चंचल और जफ़ाकार होता है। — अज्ञात

ख़ुशकिस्मत

जो ख़ुशकिस्मत हैं वे पुराने लोगोंकी बातोंसे नसीहत हासिल करते हैं, और जो बदकिस्मत हैं उनकी बातोंसे दूसरे नसीहत हासिल करते हैं। — अज्ञात

ख़ुशगोई

विवेक दुर्लभ है, ख़ुशगोईकी भरमार है। — यंग

ख़ुशमिज़ाज

ख़ुशमिज़ाज लोगोंके सहवासमें ताजगी मिलती है, हम यह ख़ुशी दूसरोंको प्रदान करनेका हार्दिक प्रयास क्यों न करें ? इससे हम देखेंगे कि आधी लड़ाई फतह हो गयी बशर्ते कि हम कोई 'मुहर्रमी' बात कभी न कहा करें। — श्रीमती चाइल्ड

ख़ुशमिज़ाज वही हो सकता है; जो ज्ञानवान् और नेक है। — बोवी

दुनियाको अब आवश्यकता है, ज़्यादा ख़ुशमिज़ाज साधुओंकी। — अज्ञात

बिना खुशमिज़ाजीके चतुर आदमी बिना हेण्डिलकी बाल्टीके मानिन्द है—उसमें चीज़ें अमा सकती हैं, लेकिन उससे आपको अधिक सहूलियत नही मिलती। — अज्ञात

तुमने हर फर्ज़ पूरा नही किया जबतक कि तुमने खुशमिज़ाजी और .खुशगवारीका फर्ज़ पूरा नही किया। — बक्सन

.खुशमिज़ाजी, सोसाइटीमें पहननेके लिए एक बेहतरीन पोशाक है। — थैकरे

सम्यक्ज्ञान और सत्कर्मसे खुशमिज़ाजी स्वभावतः पैदा होती है। — ब्लेर

खुशमिज़ाजी तन्दुरुस्ती है, गमगीनी बीमारी। — हैलिबर्टन

.खुशमिजाजीसे दिलमें एक किस्मका उजाला रहता है जो कि चेहरेपर प्रतिबिम्बित रहता है। — अज्ञात

.खुशीकी नज़रें हर रकाबीको दावत बना देती हैं, और वे ही स्वागतकी सिरताज हैं। — मैसिंजर

.खुशहाली

आदमीकी खुशहालियाँ उसकी सच्चरित्रताका फल हैं। — एमर्सन

.खुशामद

खुशामदसे जो चीज़ मिलती है उससे कायाको सुख परन्तु आत्माको दु:ख होता है। — अज्ञात

.खुशामदी

कमीना आदमी एक ही है, और वह है खुशामदी। — अज्ञात

.खुशी

हर खुशीके पहले कुछ क्रियाशीलता रही होती है। — शोपनहोर

सब .खुशियोंमें परिश्रमका फल मधुरतम है। — वौविनर्ग

खुशियोंसे सावधान रह! — यंग

दुनियामें दिखलाई देनेवाली खुशीमें-से अधिकांश ख़ुशी नहीं, कला है।
– साउथ

ख़ुशी परिश्रमसे आती है न कि असंयम और काहिलीसे। इनसान कामसे प्रेम करता है, तो उसका जीवन सुखी है। – रस्किन

इनसानोंको खुशीसे ज्यादा क्या चाहिए? खुशमिज़ाज आदमी बादशाह है। – बिकर स्टाफ

सारी खुशी देनेमें है चाहने या माँगनेमें नहीं। – स्वामी रामतीर्थ

तमाम दुनियाकी खुशियाँ उपभोगके समय इतनी मधुर नहीं होती जितनी आशाके वक्त, परन्तु तमाम आध्यात्मिक खुशियाँ आशाकी अपेक्षा फलित होकर अधिक आनन्द देती है। – फैलथम

उस ख़ुशीसे बच, जो तुझे कल काटे। – हरबर्ट

खुशीको हम जितनी लुटायेंगे उतनी ही हमारे पास अधिक होगी।
– विक्टरह्यूगो

ख़ुदगर्ज़ी

हममें खुदगर्ज़ीकी मौजूदगी, हैवानियतकी निशानी है। – अज्ञात

ख़ुद-पसन्दी

ख़ुद-पसन्दी बिना तलीका प्याला है, उसमें तुम चाहे तमाम बड़ी-बड़ी झीलोंका पानी उँडेल दो, भर कभी नहीं पाओगे। – होम्स

ख़ुदा

महज़ परम्परागत विश्वासुओंका खुदा विश्वकी महा ग़ैर-हाज़िर-मुतलक़ चीज़ है। – डब्ल्यू० आर० एलजर

हालाँकि ख़ुदाकी चक्की बहुत धीरे-धीरे पीसती है, लेकिन बहुत ही बारीक पीसती है। – लौंगफैलो

जैसा आदमी होता है, वैसा ही उसका ख़ुदा होता है, इसीलिए ख़ुदाकी अकसर खिल्ली उडती रही। – गेटे

इस दुनियाका ख़ुदा दौलत, ऐश और अहकार है। – ल्यूथर

अपने रबका नाम याद रखो और सब चीज़ोसे बे-लगाव होकर उसीकी तरफ लगे रहो। – कुरान

ख़ुदाके पानेका रास्ता सिवाय खल्ककी यानी दूसरेकी खिदमतके और कोई नही है। माला लेकर 'अल्लाह, अल्लाह' रटनेसे, चटाई बिछाकर नमाज पढनेसे या गुदडी ओढ लेनेसे अल्लाह नही मिल सकता। – एक सूफी

ख़ुदी

जो ख़ुदीसे भरा हुआ है, ख़ुदासे बिलकुल खाली है। – अज्ञात

पापकी सारी जड ख़ुदीमे है। – गीता

जहाँ ख़ुदी है वहाँ ख़ुदा नही है। – अज्ञात

आदमी आप ही अपना दोस्त है और आप ही अपना दुश्मन। जिस किसी-ने अपने आपे (ख़ुदी) को जीत लिया वह अपना दोस्त है और जिसका आपा उसपर सवार है। वह आप अपना दुश्मन है। – गीता

ख़ुशियाँ

क्षणिक ख़ुशियोको त्याग कर सर्वोच्च हितके रास्ते लग। – अज्ञात

हमारी ख़ुशियाँ वास्तवमे कितनी कम है, अफसोस है कि उनकी खातिर हम अपने चिरन्तन कल्याणको खतरेमे डाल देते है। – बेली

पापमय और ममनूअ ख़ुशियाँ जहरीली रोटियोकी तरह है, उनसे उस वक़्त भूख भले ही मिट जाये, मगर आखिरश उनमे मौत है।

– टायरन एडवर्ड्स

ख़ूबसूरती

तन्दुरुस्ती और ख़ुशमिज़ाजीसे ख़ूबसूरती बनी है – सर वैण्टी

खूबसूरतीको बाहरी गहनोंकी मददकी जरूरत नहीं होती, वह तो सिंगार बिना ही सबसे अधिक शोभा पाती है। — थॉम्सन

किसीने अरस्तूसे पूछा, 'खूबसूरती क्या है?' उसने जवाब दिया, 'यह सवाल अन्धोसे पूछो'। — अज्ञात

खेती

किसी राष्ट्रके लिए धन प्राप्त करनेके सिर्फ तीन तरीके दिखाई देते हैं, पहला है लड़ाईसे, जैसा कि रोमनोंने अपने विजित पड़ोसियोंको लूटकर किया था—यह डकैती है; दूसरा व्यापारसे, जो कि अमूमन् धोखाजनी है, तीसरा खेतीसे, जो कि एकमात्र ईमानदार तरीका है, जिसमे कि आदमी जमीनमें डाले हुए बीजकी वृद्धि पाता है, एक किस्मका वास्तविक चमत्कार, जिसे ईश्वर उसकी मासूम जिन्दगी और पुण्यमय उद्योगके लिए इनामके तौरपर उसके हकमे दिखलाता है। — फ्रेंकलिन

जो कोई अनाजकी एक बालकी जगह दो या घासकी एक पत्तीकी जगह दो उगाता है, ज्यादा खुशहालीका मुस्तहक है, और तमाम राजनीतिज्ञोंकी समूची जातिकी बनिस्बत वह देशकी ज्यादा जरूरी सेवा करता है।

— स्विफ्ट

वह सुन्दरी जिसे लोग धरणी बोलते हैं, अपने मन ही-मन हँसा करती है जब कि वह किसी काहिलको यह कह रोते हुए देखती है,—'हाय, मेरे पास खानेको कुछ भी नहीं है।' — तिरुवल्लुवर

खेल

जो अपनी सारी जिन्दगी खेलमे गुजारता है वह उस शख्सकी तरह है जो सिर्फ किनारियाँ पहनता है, और सिर्फ चटनियाँ खाता है।

— रिचार्ड फुलर

खोना

पूरे तौरसे पाना सबसे अच्छा है, लेकिन अगर वह असम्भव हो तो उसके बाद अच्छी चीज़ पूरे तौरसे खोना है। — टैगोर

खोज

दुनिया शब्दोंसे सन्तुष्ट रहती है, वस्तु-स्वरूपकी खोज करने बिरले ही निकलते हैं। — पास्कल

आकाशमें एक नया ग्रह खोज निकालनेकी अपेक्षा पृथ्वीपर आनन्दके एक नये स्रोतका पता लगाना अधिक महत्त्वपूर्ण है। — अज्ञात

पेश्तर इसके कि दुनिया तुम्हें खोजे तुम्हें अपने-आपको खोज लेना होगा। — अज्ञात

■

ग

गंगा

वह देश धन्य है, जहाँ गंगा है। — रामायण

गंगा इसलिए महान् है कि वह मैल छुडाती है। सच्ची महत्ता दूसरोंका उद्धार करनेमें है। — अज्ञात

गणवेष

ओफ, गणवेष एक तुच्छ आदमीको भी किस क़दर ग़रूरसे भर देता है! — एन० डगलस

गति

आहिस्ता चलनेसे न डर, सिर्फ डर चुपचाप खड़ा रहनेसे। — चीनी कहावत

गदहा

गदहा रेशमी वस्त्र पहन ले तो भी लोग उसे गदहा ही कहेंगे। – अज्ञात

गधा

गधेको बहुत रेंकना पडेगा पेश्तर इसके कि वह सितारोंको हिलाकर गिरा दे। – जॉर्ज ईलियट

गप

गपकी क्या खूब परिभाषा की गयी है कि वह दो और दोको मिलाकर पाँच बनाती है। – अज्ञात

गमन

दावतवाले घरकी बनिस्बत मातमवाले घर जाना बेहतर है। – अज्ञात

ग़रज़

आदमीको किसी भी दूसरेसे अपनी गरज़ पूरी करानेकी इच्छा नही रखनी चाहिए। – गीता

ग़लतियाँ

मैंने जो ज़रा दुनिया देखी है उससे यही सीखा है कि दूसरोंकी गलतियो-पर अफसोस करूँ न कि गुस्सा। – लौंग फैलो

गवर्नमेण्ट

गवर्नमेण्टका सर्वोच्च ध्येय लोगोंको सस्कृत बनाना है। – एमर्सन

ग़रीब

किसी भी गरीब आदमीका अपमान न करो। अपनी आपदाके कारण वह दयाका पात्र है अपमानका नही। – अज्ञात

ग़रीब वह नही है जिसके पास कम है, बल्कि वह जो अधिक चाहता है। – डैनियल

वही ग़रीब है जिसकी तृष्णा विशाल है। मन अगर सन्तुष्ट हो तो कौन धनी है कौन दरिद्री। — अज्ञात

धनवान् होते हुए भी जिसकी धनेच्छा दूर नहीं हुई है, वह सबसे अधिक गरीब है। — इब्राहिम आदम

'मैं गरीब हूँ' ऐसा कहकर किसीको पापकर्ममें लिप्त न होना चाहिए, क्योंकि ऐसा करनेसे वह और भी कंगाल हो जायेगा। — तिरुवल्लुवर

दो तीक्ष्ण काँटे शरीरको सुखा डालते है—गरीबकी इच्छा और कमज़ोरका गुस्सा। — अज्ञात

ग़रीबी

ग़रीबीका लाज़िमी नतीजा पराधीनता है। — जॉन्सन

गरीबीकी शर्म उतनी ही बुरी है जितना धनका अहंकार। — अँगरेजी कहावत

तमाम प्रचारित धूर्ततापूर्ण उपदेशोंमे इससे ज्यादा सड़ा हुआ कोई नही है कि गरीबी चारित्रको निर्मल करती है। — एल० मैरिक

दुष्ट होनेसे निर्धन होना अच्छा। — कहावत

ससार न्यायनिष्ठ और नेक आदमीकी गरीबीको हेय दृष्टिसे नही देखता। — तिरुवल्लुवर

गरीबी तन्दुरुस्तीकी माँ है। — पुरानी अँगरेज़ी कहावत

ग़रीबी ऐसा बड़ा पाप है और इतने अधिक प्रलोभन और दु:खसे ओत-प्रोत है, कि मै दिलोजानसे चाहूँगा कि तुम इससे बचकर रहो। — डॉक्टर जॉनसन

मैंने गरीबीके समान अन्य कोई वस्तु युवकके लिए अधिक दु:खदायी नही देखी। — अबू-नशनाश

ग़रीबी नहीं, गरीबीसे शरमिन्दा होना शरमकी बात है। – फ्रेंकलिन

गरीबी और मौतमें मुझे मौत पसन्द है। मरनेकी तकलीफ थोडी है, दरिद्रताका दुख अनन्त है। – अज्ञात

ग़रूर

गरूर ऐश्वर्यकी उपज है ! – अज्ञात

ग़लती

गलतीको खुले तौरसे मान लेना गलती करनेवालेके लिए आरोग्यप्रद औषधके समान है। – कहावत

गलतीका बचाव गलतीसे ही किया जा सकता है। – बिशप जिवेल

गलती तो कोई आदमी कर सकता है, लेकिन सिवा बेवकूफके उसमे लगा कोई नही रहेगा। – सिसरो

गलतियाँ सबसे होती है, उसका दुख न मानना चाहिए। – गान्धी

अपनी गलतीको मान लेना कोई अपमान नही है। – गजकी

दूसरोकी गलतियोके लिए उन्हे दोष देनेकी बजाय उनसे सबक लो। – स्पेनिश कहावत

कोई आदमी बहुत-सी और बडी-बडी गलतियाँ किये बगैर कभी महान् या भला नही बना। – ग्लेड्स्टन

गहने

चाहे जैसे हलके और खूबसूरत क्यो न हो, हर हालतमे गहने त्याज्य है। – गान्धी

गहराई

ईश्वर आत्माकी गहराईको पसन्द करता है उसके कोलाहलको नही। – वर्ड्सवर्थ

ग्रहण

मेरी समझसे जिससे हम कुछ भी नही ले सकते, ऐसा ससारमे कोई नही है। — गान्धी

ग्रन्थ

ग्रन्थोका काम जिज्ञासा उत्पन्न करना मात्र है। मगर उमे तृप्त करनेका एक ही उपाय है, और वह है स्वानुभव। — विवेकानन्द

ग्रन्थके मानो हमेशा सत्शास्त्र नही होते, अकसर उसके मानो निकलते हैं 'ग्रन्थि' (गाँठ)। — रामकृष्ण परमहस

गाना

वह गाना जो मै गाने आया था, आज तक बे गाया पडा है। — टैगोर

मुझे राष्ट्रके सरल गाने लिखने दो, और मुझे इसकी परवाह नही कि उसके कानून कौन बनाता है। — फ्लैचर ऑफ साल्टन

गाय

यह ईश्वरके द्वारा करुणापर लिखो गयी कविता है। — गान्धी

गाली

मुझे तुम चाहे जितनो गालियाँ दो, यह अकसर ईज्ञाको बनिस्बत फायदा ज्यादा करती है। — अज्ञात

जो धोर, बोर और अक्षोभ है वे गाली देते हुए शोभा नही पाते। — रामायण

एक नीच और दुष्ट आदमी-द्वारा अश्लील गालियां दिये जानेपर कैटोने उससे शान्तभावसे कहा—'मेरा तेरा मुकाबला बडी नाबराबरीका है क्योकि, तू दुर्वचन आसानोसे सह सकता है, और ख़ुशीसे लौटा सकता है, लेकिन मेरे लिए उसका सुनना असामान्य है, और बोलना नाखुशगवार है।' — अज्ञात

गुण

कौएकी चोंचको सोनेसे मढिए, उसके पैरोको माणिकसे जडिए, और उसके हर एक पखमे मोती पिरोइए, तो भी वह कौआ ही रहेगा, राजहस नही हो जायेगा। – अज्ञात

गुणसे ही उच्चता प्राप्त होती है, ऊँचे आसनपर बैठनेसे नहीं। महलके शिखरपर बैठ जानेसे कौआ गरुड हो जाता है क्या ? –अज्ञात

शत्रुके गुण ग्रहण कर लो, और गुरुके दुर्गुण छोड दो। – अज्ञात

जिसे तुम दूसरोमे देखकर खुश होते हो वह तुममे हो तो अकसर दूसरोको खुश करे। – चैस्टरफोल्ड

गुणसे कोई स्पृहणीय होता है न कि रूपसे। – अज्ञात

अकसर उस आदमीमे हो वे अच्छाइयाँ या बुराइयाँ होती है जिन्हे वह मनुष्य जातिपर आरोपित करता है। – शेन्स्टन

अगर किसीमे गुण होगे तो वे खुदबखुद प्रकाशित हो उठेंगे, कस्तूरोको अपनी मौजूदगी क़सम खाकर नही साबित करनी पडती। – अज्ञात

गुण-गान

ईश्वरने कहा—'हे नारद, न मै वैकुण्ठमे रहता हूँ और न तो योगियोके हृदयमे ही रहता हूँ किन्तु मेरे भक्त जहाँपर मेरे गुणोका गान करते है मै वही रहता हूँ।' – अज्ञात

ईश्वरने कहा है—हे सत्यनिष्ठ जनो, ससारमें गुण-गान करके सम्पत्तिवान् बनो। मेरा गुणगान इस लोकमे सम्पत्तिदायक और परलोकमे भी लाभदायक है। – मलिक दिनार

गुण-ग्राहक

गुणीका कद्रदाँ भी गुणी है। – अज्ञात

गुण-ग्राहकता

एक चीज है जो कि योग्यतासे कही ज्यादा विरल, सूक्ष्म और दुर्लभ है। वह है योग्यताको पहचाननेकी योग्यता। – अज्ञात

गुणवान

गुणवान मनुष्योंको कष्ट आते है, निगुणी सुखसे रहते है। तोतेको पिंजडेमे बन्द रहना पडता है परन्तु कौआ आजादीसे उडता फिरता है। – अज्ञात

गुणी

सद्गुणशील, मुन्सिफ मिजाज और दानिशमन्द आदमी तबतक नही बोलता जबतक खामोशी नही हो जाती। – सादी

गुनाह

गुनाह छिपा नही रहता। वह मनुष्यके मुखपर लिखा रहता है। उस शास्त्रको हम पूरे तौरसे नही जानते, लेकिन बात साफ है। – गान्धी

गुप्त

दिलकी ऐसी कोई गुप्त बात नही है जिसे हमारे काम प्रकट न कर देते हो। – मोलियर

अगर तू सफलता और मन कामनाकी पूर्तिका इच्छुक है, तो हर अमीर और गरीबसे अपनी बातोको छिपाये रख। – सलाह-उद्दीन सफदी

गुर

चार हजार वचनोंमे-से मैने चार गुर चुने है जिनमे-से दोको सदा याद रखना चाहिए यानी मालिक और मौत, और दोको भूल जाना चाहिए यानी भलाई जो तू किसीके साथ करे और बुराई जो कोई तेरे साथ करे। – लुकमान

गुरु
शिष्यके ज्ञानपर 'सही' करना यही गुरुका काम है, बाकीके लिए शिष्य स्वावलम्बी है। – विनोबा

गहरी प्रार्थना सच्ची हार्दिकता और तीव्र लालसासे जो स्वय ही ईश्वर तक पहुँच सकता है, उसके लिए गुरुकी आवश्यकता नही है। लेकिन आत्माकी ऐसी लगन बहुत दुर्लभ है, इसलिए गुरुकी आवश्यकता है।
– रामकृष्ण परमहस

धर्माचरण सिखानेवाला सच्चा गुरु अनुभव है। – विवेकानन्द

एक मात्र ईश्वर ही विश्वका पथ-प्रदर्शक और गुरु है।
– रामकृष्ण परमहस

गुरुभक्त
सच्चा गुरुभक्त किसी रोज़ सारी दुनियाको भारी पड जायेगा।
– विवेकानन्द

गुलाम
ग़ुलाम वह है जिसने अपने विचार या मतकी आज़ादी खो दी है।
– अज्ञात

वह आदमी ग़ुलाम नही है जिसकी इच्छा-शक्ति स्वतन्त्र है। – अज्ञात

जिसकी सकल्प-शक्ति आजाद है, वह ग़ुलाम नही है। – टाइरियस

जिसकी अपनी कोई राय नही है, लेकिन दूसरोकी राय और रुचिपर निर्भर रहता है, ग़ुलाम है। – क्लॉपस्टॉक

कुछ गुलाम बाहरी कोड़ोसे काममे जुतते है, शेष अन्य अपनी अशान्ति और महत्त्वाकाक्षाके अन्दरूनी कोड़ोसे। – रस्किन

देहसे ही नही जो दिलसे भी गुलाम हो गये है वे कभी आजादी हासिल नहीं कर सकते । – गान्धी

मुझे वह आदमी दो जो कषायका गुलाम नही है तो मैं उसे अपने हृदयकी कोरमे रखूँगा । अरे, हृदयके हृदयमे रखूँगा ! – शेक्सपीयर

बहुत से आदमी गुलाम है क्योंकि वे 'नही' का उच्चारण नही कर सकते । – अज्ञात

होमरका कथन है कि 'जिस दिन आदमी गुलाम बनता है अपने आधे सद्-गुण खो बैठता हे,' वह सचाईके साथ, यह और कह सकता था कि वह आधेसे ज्यादा खो सकता हैं जब कि वह गुलामोका मालिक बनता है । – व्हेटले

सबसे बडे गुलाम वे है जो अपनो कषायोकी गुलामीमे लगे रहते हैं । – डोजिनीज

गुलामी

इस तथ्यको आप चाहे जितना छिपायें, गुलामी फिर भी कड़ुवा घूँट है । – स्टर्न

अरे आदमियो, गुलामीके लिए तुम अपनेको कैसा तैयार करते हो । – टेसिटस

अपनी कषायोका दासत्व करते रहना सबसे बडी गुलामी हैं । – कहावत

ईश्वरपर निर्भर रहकर ही दुनियाकी गुलामोसे छूटा जा सकता है । धर्मके अनुष्ठानसे जो फल मिले उसे भी प्रभुप्रेमके लिए विसर्जन कर दो । ईश्वराज्ञा पालन करनेपर ही सच्चा आनन्द मिलेगा । – हयहया

जो भी हृदयसे प्रार्थना करता है, वह कभी गुलामीको क़बूल नही कर सकता । – गान्धी

गुलामीमे रहना इनसानकी शानके खिलाफ है । जिस गुलामको अपनी दशाका भान है और फिर भी अपनी जंजीरोको तोडनेका प्रयास नही करता वह पशुसे हीन है । अन्त.करणसे प्रार्थना करनेवाला गुलामी-को हरगिज गवारा नही कर सकता । गान्धी

गुलामीको एक घण्टेके लिए भी रहने देना अन्याय है । — विलियम पिट

गुलामीसे मौत अच्छी है । — अज्ञात

कोई पॉच ही रुपये महीनेपर दासत्व स्वीकार करते है, कोई बडी तन-ख्वाहपर, लेकिन कोई ऐसे भी होते है कि लाख रुपयेपर भी गुलामी मजूर नही करते । — अज्ञात

गुस्सा

गुस्सेमे हो, तो बोलनेसे पहले दस तक गिनो, अगर बहुत गुस्सेमे हो, तो सौ तक । जफरसन

जब कभी तुम गुस्सेमे हो, तो यकीन रखो कि वह सिर्फ मौजूदा बेहूदगी ही नही है, बल्कि यह कि तुमने एक आदत बढा ली । — एपिक्टेटस

गुस्सा बिना सबब नही होता, मगर शायद ही कभी माकूल सबबसे होता हो । — फ्रेंकलिन

गुस्सा करनेके मानी है आत्माकी शान्ति खोना, अपने ऊपर काबू खोना, विचारकी स्पष्टता खोना, परिस्थितिको पकड खोना, और अकसर निकट-वर्ती लोगोका मान खोना । — अज्ञात

जिस वक्त आप गुस्सेमे हो उस वक्त सामनेवाले आदमीको दो बात सुनाना बडा मँहगा पड जाता है । — अज्ञात

गुस्सेका दौरा आत्मगौरवके लिए ऐसा विघातक है जैसा जिन्दगीके लिए सखिया । — जे० जी० हालेण्ड

गोपनीय

मनुष्यको गुप्त रूपसे भी वह बात न कहनी चाहिए जो वह प्रत्येक सभामें नही कह सकता। – अज्ञात

गौरव

जो मनुष्य दर्प, क्रोध और विषय-लालसाओमे रहित है, उसमे एक प्रकारका गौरव रहता है, जो उसके सौभाग्यको भूषित करता है।

– तिरुवल्लुवर

सुख-समृद्धि ईर्ष्या करनेवालोके लिए नही है, ठीक उसी तरह गौरव दुराचारियोंके लिए नहीं है। – तिरुवल्लुवर

गृहस्थ

दुष्टके सामने मान झुकानेवाला गृहस्थ दुनियामें दुष्टताको बढानेका कारण होता है। – विवेकानन्द

■

घ

घर

वह घर दुःखी है जहाँ मुरगेकी अपेक्षा मुरगी ज्यादा बुलन्द आवाजसे बाँग देती है। – अज्ञात

अच्छे घरसे स्वर्ग ज्यादा दूर नही है। – अज्ञात

राजा हो या किसान, सबसे सुखी वह है जो कि अपने घरमे शान्ति पाता है। – गेटे

घण्टी

गिरजेकी घण्टी औरोको बुलाती है, मगर खुद उपदेशपर लक्ष्य नहीं देती ।
— फ्रेंकलिन

घमण्ड

किसी भी हालतमे अपनी शक्तिपर घमण्ड न कर। वह बहुरूपिया आसमान हर घडी हजारो रग बदलता है । — हाफिज़

घुड़दौड़

घुडदौडें प्रधानतः मूर्खों, गुण्डो और चोरोकी खुशी और मुनाफेके लिए चलायी जाती हैं । — जी० गिसिंग

घृणा

घृणा या बदला लेनेकी इच्छासे मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं । — अज्ञात

सत्यपरायण मनुष्य किसीसे घृणा नही करता । — नैपोलियन

■

च

चर्खा

मुझे शान्तिकी तमाम शक्ति चर्खेसे मिलती है । — गान्धी

चमत्कार

बुद्धिका चमत्कार देखना हो तो शास्त्रोको देखो । हृदयका जादू देखना हो तो कलाओके पास जाओ । — अज्ञात

पूर्ण त्याग और ईश्वरमें पूर्ण विश्वास ही हर चमत्कारका रहस्य है।
— रामकृष्ण परमहंस

बुद्धि कोई सन्तोषजनक उत्तर दे या न दे, जो ईश्वरपर सच्ची श्रद्धा रखता है वह कदम-कदमपर चमत्कारोंका अनुभव कर सकता है।
— हरिभाऊ उपाध्याय

चरित्र

सच तो यह है कि गरीब हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हो सकता है लेकिन चरित्र खोकर धनी बने हुए हिन्दुस्तानका स्वतन्त्र होना मुश्किल है। — गान्धी

क्या तुम यह जानना चाहते हो कि अमुक मनुष्य उदारचित्त है या क्षुद्र-हृदय? आचार-व्यवहार चरित्रकी कसौटी है। — तिरुवल्लुवर

चरित्र मनुष्यके अन्दर रहता है, यश उसके बाहर। — अज्ञात

चलन-व्यवहार

चलन व्यवहार माने उधारका एक प्रकार। — विनोबा

चाकरी

नौकर यदि चुप रहता है तो मालिक उसे गूँगा कहता है, यदि बोलता है तो उसे बकवादी कहता है, यदि पास रहता है तो ढीठ कहता है, यदि दूर रहता है तो उसे मूर्ख कहता है, यदि खोटी-खरी सह लेता है तो उसे डरपोक कहता है, और यदि नहीं सहता है तो उसे नीच कुलका कहता है। मतलब यह कि परायी चाकरी बडी ही कठिन है, योगियोंके लिए भी अगम्य।
— भर्तृहरि

चापलूस

तमाम जंगली पशुओंमें मुझे अत्याचारीसे बचाओ, और तमाम पालतू जानवरोंमें चापलूससे।
— बैन जान्सन

चापलूस उन बिल्लियोंकी तरह हैं जो सामनेसे चाटती हैं, और पीछेसे खसोटती हैं। – जर्मन कहावत

चापलूस सबसे बुरे दुश्मन हैं। – टैसीटस

चापलूस मित्र-सरीखे दिखते हैं, जैसे भेड़िये कुत्ते-सरीखे दिखते हैं। – अज्ञात

चापलूसी

चापलूसी बेवकूफोंका आहार है। – अज्ञात

मुश्किलसे कोई आदमी होगा जिसपर चापलूसीका असर न पड़ता हो, लेकिन जब वह किसी खोखे मूर्खपर आजमायी जाती है तो वह उसे चालीस गुना ज्यादा मुतलक़तर अहमक़ बना देती है। – ईसप

चापलूसी मीठा ज़हर है। – अज्ञात

चापलूसीसे दोस्ती, और सचाईसे दुश्मनी पैदा होती है। – कहावत

चापलूसी लेने और देनेवाले दोनोंको भ्रष्ट करती है। – बर्क

चारित्र

प्रकृतिमें वास्तविक सज्जनके चारित्रसे प्रियतर कुछ भी नहीं है। – क्लार्क

जीवनका लक्ष्य सुख नहीं, चारित्र है। – बीचर

चारित्र ही धर्म है। – जैनाचार्य

अगर आप सोचते हैं कि अपनी किताबोंपर उधर बैठे रहकर वीरताका निर्माण कर लेंगे तो यह वह मूढ़तम कल्पना है जो नवयुवकोंको फुसलाकर उनका सर्वनाश किया करती है। आप सपने देख-देखकर चारित्रवान् नहीं बन सकते, अपने चारित्रका निर्माण आपको गढ़-गढ़कर और ढाल-ढालकर करना होगा। – फ्रॉड

मनुष्यको कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे वह अपने-आपको छोटा और हीन समझने लगे। – डॉ० गणेशप्रसाद

दुनियाकी निन्दा-स्तुतिके भरोसे चलनेवालेकी मौत है, अपने हृदयपर हाथ रखकर चल । — अज्ञात

उत्तम व्यक्ति शब्दोंमें सुस्त और चारित्रमें चुस्त होता है । — कन्फ्यूशियस

दुर्बल चरित्रवाला उस सरकण्डेकी तरह है जो हवाके हर झोंकेपर झुक जाता है । — घाघ

बुद्धिसे चारित्र बढ़कर है । — एमर्सन

मैं अपने कैम्पमें चारित्रहीन मनुष्यकी अपेक्षा चेचक, पीला बुखार, हैजा और ताऊनका आना ज्यादा पसन्द करूँगा । — कैप्टिन जाच ब्राउन

आदमीके बर्तनमें कोई हरकत ऐसी नहीं है, ख्वाह वह कितनी ही सरल और नगण्य हो, जिसमें कुछ ऐसी लघु विचित्रताएँ न दिखें जो उसके गुप्त चारित्रको प्रकट कर देती है । कोई बेवकूफ बुद्धिमान् और समझदारकी तरह न तो कमरेमें आता है, न जाता है, न बैठता है, न चुप रहता है, न खड़ा होता है । — ब्रूयर

चारित्र संग-साथमें विकसित होता है और बुद्धि एकान्तमें । — गेटे

बिना चारित्रके ज्ञान शीशेकी आँखकी तरह है—सिर्फ दिखलानेके लिए, और एकदम उपयोगिता-रहित । — स्विनॉक

यश वह है जो कि लोग-लुगाइयाँ हमारे विषयमें सोचते है, चारित्र वह है जो ईश्वर और देव हमारे विषयमें जानते है । — पेन

तुम्हारी एक प्रधान आवश्यकता है—जो ठीक है वह करते रहना, चाहे ऐसा कितनी ही मजबूरीमें करना पड़े, जबतक कि तुम वैसा बिना मज-बूरीके न करने लग जाओ । और तब तुम आदमी हो । — रस्किन

चारित्र-बल

अब तो ज्ञानबल भी चारित्र-बलके लिए स्थान छोड़ता जा रहा है । — अज्ञात

चारित्रवान्

जिसे दूसरे बुद्धि और वक्तृत्व-बलसे कर पाते है, चारित्रवान् उसे अपने प्रभावसे कर देता है । – अज्ञात

मजबूत चरित्रवाला ध्येयकी तरफ सीधा जाता है । – अज्ञात

चाल

यदि तू चाल चल जाता है और मै तुझसे इसकी शिकायत नही करता तो यह न समझ कि मै बेवकूफ हूँ । – अज्ञात

आहिस्ता चलोगे तो दूरकी मजिल तै कर लोगे । – अज्ञात

चालाकी

जहाँ योग्यताका अभाव है वहाँ चालाकी पैदा हो जाती है । – फ्रेंकलिन

चाह

यदि मुझे किसी भौतिक वस्तुकी चाह नही है तो फिर मुझे अनुचित रूपसे किसीके सामने दबनेकी क्या आवश्यकता है ? – अज्ञात

चिकित्सक

सयम और परिश्रम इनसानके दो सर्वोत्तम चिकित्सक है, परिश्रमसे भूख तेज होती है और सयम अति भोगमे रोकता है । – रूसो

चित्तकी प्रसन्नता

चित्तकी प्रसन्नतासे आत्मामे एक प्रकारकी धूप रहती है जो कि उसे एक अभीक्ष्ण और अविनाशी प्रशान्तिसे ओतप्रोत रखती है । – एडीसन

चित्रकला

चित्रकला महान् है, नही, ईश्वर चित्रकार है । – एमर्सन

चित्रकार

चित्रकार अपने कामके करनेके लिहाजसे मिकैनिक है, लेकिन अपनी धारणा, भावना और डिजाइनकी दृष्टिसे कविसे कम नही है । – शिलर

चिन्ता

चिन्ता आपत्तिका वह सूद है जिसे वाजिबुलअदा होनेसे पहले ही अदा कर दिया जाता है । — डीन इंगे

जो दूसरेके कामकी चिन्ता नही करता, वह आराम और शान्ति पाता है । — इटालियन कहावत

मुझे निश्चय है कि चिन्ता जीवनकी शत्रु है । — शेक्सपीयर

बेफिक्र दिल भरी थैलीसे अच्छा है । — अरबी कहावत

हमारी चिन्ताएँ हमेशा हमारी कमजोरियोंके कारण होती है । — जौबर्ट

भक्त लोग अन्न और वस्त्रकी व्यर्थ चिन्ता करते है, जो देव तमाम विश्व-की पालता है वह क्या अपने भक्तोकी उपेक्षा करेगा ? — शौनक

बिस्तरेपर चिन्ताओंको ले जाना अपनी पीठपर गट्ठर बाँधकर सोना है । — हेलिबर्टन

चुगली

मुँहसे कोई कितना ही नेकीकी बातें करे, मगर उसकी चुगलखोर जबान उसके हृदयकी नीचताको प्रकट कर ही देती है । — तिरुवल्लुवर

जो आदमी सदा बुराई ही करता है और नेकीका कभी नाम भी नही लेता, उसको भी प्रसन्नता होती है, जब कोई कहता है—'देखो, यह किसीकी चुगली नही खाता ।' — तिरुवल्लुवर

चुनाव

मधुमक्खिकाकी तरह गुलाबसे मधु ले लो और काँटे छोड दो । — अमेरिकन कहावत

चुप

दूसरेको चुप करनेके लिए पहले खुद चुप हो जाओ । — अज्ञात

चुम्बन

अपने प्रेममें ईश्वर सान्तको चूमता है और आदमी अनन्तको। – टैगोर

चेहरा

जिस तरह बिल्लौरी पत्थर पासवाली चीजका रंग धारण करता है, उसी तरह चेहरा भी दिलकी बातको प्रकट करने लगता है। – तिरुवल्लुवर

शानदार रौबीला चेहरा किस कामका जब कि दिलके अन्दर बुराई भरी हुई है और दिल इस बातको जानता है? – तिरुवल्लुवर

अच्छे चेहरेके पीछे भद्दा दिल छिपा हो सकता है। – कहावत

चेहरा हृदयका प्रतिबिम्ब है। – अज्ञात

अगर तुम्हारा चेहरा मुसकराना चाहता है, मुसकराने दो, अगर नहीं, तो उसे मजबूर करो। – अज्ञात

आईनेमें चेहरा देखकर एक निगाह दिलपर भी डाल। – अज्ञात

एक टोपीके नीचे दो चेहरे मत लिये फिरो। – अज्ञात

चोर

चोर सबको चोर समझता है। – अज्ञात

जो शारीरिक परिश्रम करके माकूल बदला चुकाये बगैर खाता है चोर है। – गान्धी

जो दूसरोंका खयाल नहीं रखता वह 'चोर' है। – गीता

क्या हम नहीं जानते कि हम छोटे चोरोंको फाँसी देते हैं, और बड़े चोरोंके आगे सलाम झुकाते हैं? – जर्मन कहावत

बड़े चोर छोटे चोरोंको फाँसीपर चढ़ाते हैं। – कहावत

जो अपने हिस्सेका काम किये बिना ही भोजन पाते हैं वे चोर हैं। – गान्धी

चोरी

जिस वस्तुकी हमे आवश्यकता नही है उसे रखना, लेना भी चोरी है।
— गान्धी

अगर कोई आदमी मेहनतके रूपमे कीमत चुकाये बगैर जमीनसे फल लेकर खाता है तो वह चोरी करता है। — अज्ञात

उस चीजका भी इस्तेमाल करना जो कि मानो तो हमारी जाती है लेकिन जिसकी हमे जरूरत न हो, चोरी है। — गान्धी

शारीरिक उद्योग करना मनुष्यका धर्म है, जो उद्यम नही करता वह चोरीका अन्न खाता है। — गान्धी

■

छ

छल

वह सभा नही है जिसमे वृद्ध पुरुष न हो, वे वृद्ध नही है जो धर्म ही की बात नही बोलते, वह धर्म नही है जिसमे सत्य नही और न वह सत्य है जो कि छलमे युक्त हो। — महाभारत

छलछन्द

छलछन्द और विवेकमे उतना ही अन्तर है जितना लगूर और आदमीमे।
— अज्ञात

छिछला

छिछले दिमागका इससे ज्यादा अचूक लक्षण दूसरा नही कि वह हमेशा

वस्तुओके 'हास्यास्पद' पहलूके देखनेका आदी होता है। चूँकि हास्यास्पद, जैसा कि अरस्तूने कहा है, 'हमेशा सतहपर ही होता है।' — अज्ञात

छिछलापन

लोग भड़कते है, जोशोखरोश दिखाते है, निश्चयात्मक होते है, क्योकि वे छिछले होते हैं। — एमोल

छिद्रान्वेषण

ऐ मेरे कथनमें अवगुण निकालनेवाले, जान ले कि गुलाबकी सुगन्धि भी गुबरीलेके लिए दु खदायी होती है। — इब्न-उल-वर्दी

छूट

विकारोके अधीन होकर अत्यन्त निर्दोष मालूम होनेवाली छूट भी जो कोई लेता है वह गड्ढेमे गिरता है और दूसरोको भी गिराता है।
— गान्धी

■

ज

जगत्

आत्मा एक, माया शून्य। इस एक और शून्यके सयोगसे असख्य जग है।
— विनोबा

जो अज्ञानीको जगत्रूप दिखता है वही ज्ञानीको भगवान्-रूप दिखता है।
— अज्ञात

जगत्में जो कुछ है वह भगवान्का प्रकाश है — अरविन्द घोष

जड़ता
किसी-किसी अति कठिन रोगकी भी दवा है मगर जड़ताकी कोई औषध नही है। – कैम-बिन-इल खतीम

जनहित
जनहितके लिए उत्साह बाइज्ज़त और शरीफ आदमीका गुण है, और उसे निजी खुशियो, मुनाफो और अन्य तृप्तियोका स्थान ले लेना चाहिए। – स्टील

जन्म
हमारा मानव-अवतार इसलिए हुआ है कि हमारे अन्तरमे जो ईश्वर बसता है उसका साक्षात्कार हम कर सकें। – गान्धी

जन्म-मरण
जो जन्म-मरणकी बात सही हो, और है, तो हम मृत्युसे ज़रा भी क्यो डरें, दु खी हो, और जन्मसे खुश हो? प्रत्येक मनुष्य यह सवाल अपनेसे करे। – गान्धी

जप
इस कलियुगके योग्य वास्तविक भक्तिमय और आध्यात्मिक अभ्यास प्रेमसे प्रभुका नाम जपना है। – रामकृष्ण परमहस

ज़बान
मिल्टनसे पूछा गया, 'क्या आपका इरादा अपनी दुख्तरको मुख्तलिफ ज़बाने सिखानेका है?' जवाबमे वे बोले, 'ना भाई! औरतके लिए एक ज़बान काफ़ी है!' – अज्ञात

लम्बी ज़बान, छोटी जिन्दगी। – अरबी कहावत

दसमे-से नौ सूरतोमे बदज़बानी, दुष्टता या निराशाके कारण होती है। – बेनक्रॉफ्ट

मनुष्य जबतक ज़बानपर क़ाबू नही पा लेता तबतक शेष इन्द्रियोको बसमे कर लेनेपर भी पूरा जितेन्द्रिय नही होता, जिसने रसना जीत ली उसने सब कुछ जीत लिया। — अज्ञात

ज़बानको इतना तेज न चलने दो कि मनसे आगे निकल जाये। — अरबी कहावत

इनसानमे सर्वोत्तम गुण ज़बानको काबूमे रखना है। — चिलो

ज़बान सिर्फ़ तीन इंच लम्बी है, फिर भी छह फीट ऊँचे आदमीको मार सकती है। — जापानी कहावत

मूर्खतापूर्ण और बुद्धिमत्तापूर्ण ज़बानमे वही फर्क है जो घडीकी सुइयोमें है—एक बारहगुना तेज़ चलती है, लेकिन दूसरी बारहगुना दरशाती है। — अज्ञात

और किसीको तुम चाहे मत रोको, मगर अपनी ज़बानको लगाम दो, क्योंकि बेलगाम ज़बान बहुत दु ख देती है। — तिरुवल्लुवर

जिसे अपनी ज़बानपर काबू नही है, उसके हृदयमे सौम्यता नही है। — अज्ञात

आगका जला हुआ तो अच्छा हो जाता है, मगर ज़बानका लगा हुआ जख्म सदा हरा बना रहता है। — तिरुवल्लुवर

ज़बान देखकर वैद्य शरीरके रोग जान लेते है, और दार्शनिक मन और हृदयके रोग। — जस्टिन

भरी ज़बान और खाली दिमाग शायद ही कभी अलग होते हो। — क्वार्ल्स

ऐ ज़बान, खाने और बोलनेमे सयत रह, क्योंकि इनमे-से एक भी अति फौरन् प्राण ले लेती है। — अज्ञात

ज़बान जिनका अस्त्र है, रक्षाके लिए वे अमूमन् पैरोसे काम लेते हैं। — सर फिलिप सिडनी

अगर तू अक्लमन्द समझा जाना चाहता है, तो इतना अक्लमन्द तो बन कि अपनी ज़बानपर काबू किये रह। — क्वार्ल्स

ज़माना

समयके साथ रहो, लेकिन उसके कीडे न बनो, अपने समकालीनोके लिए वह दो जिसकी उन्हे जरूरत है, वह नही जिसकी वे तारीफ करें। — शिलर

कोई आदमी सत्रहवी और उन्नीसवी सदीमे एक साथ नही रह सकता। — कार्लाइल

ज़मीन

ज़मीनका मालिक तो वही है जो उसपर मेहनत करता है। — गान्धी

ज़मीर

सच्चे आनन्दका फव्वारा अन्तरात्मामे है। — सैनेका

अन्तरात्मा तमाम सच्चे साहसकी जड है, अगर किसीको वीर बनना है तो वह अपने अन्तरका कहा माने। — अज्ञात

अन्त करणकी आवाज़ ही सबसे बडा धर्म और राजकीय नियम है। — अज्ञात

इनसानका ज़मीर खुदाका पैगम्बर है। — बायरन

जिसकी सदसद्विवेक बुद्धि शुद्ध है वह आक्षेपोसे नही डरता। — अज्ञात

ज़मीर आत्माकी आवाज़ है, जैसे कि कषाये शरीरकी आवाज है कोई ताज्जुब नही कि वे अकसर एक-दूसरेके विरोधी होते है। — रूसो

जहाँ मेरी राय खतम हो जाती है वहाँसे ज़मीरकी शुरू होती है। — नैपोलियन

कोशिश करो कि तुम्हारे हृदयमे दैनिक ज्ञानाग्निकी वह चिनगारी रोशन रहे जिसे ज़मीर कहते है। — अज्ञात

जिसे हम जमीर कहते है वह अकसर कानिस्टबलका सम्भ्रान्त भय मात्र होता है। – बूवो

निर्मल अन्तःकरणको जिस समय जो लगे, वही सत्य है। उसपर दृढ रहनेसे शुद्ध सत्य मिल जाता है। – गान्धी

अगर तुम ज़मीरकी नही सुनोगे तो वह तुम्हे जरूर कोसेगा। – अज्ञात

मधुरतम सन्तोष अन्तरात्माकी सहमतिसे उमडता है। – मैसन

कोई गवाह ऐसा खौफनाक नही, कोई आक्षेपक ऐसा शक्तिशाली नही, जैसा कि जमीर जो कि हर-एकके दिलमे रहता है। – पोलीबियस

मै अपने अन्दर एक ऐसी शान्तिका अनुभव करता हूँ जो समस्त सासारिक विभूतियोसे बढकर है, एक स्थिर और शान्त अन्तरात्मा। – शेक्सपीयर

ज़रूरत सिर्फ इसकी है कि आदमी अपने ज़मीरकी आवाज सुने, फिर उसके कदम सीधे ही पड़ेंगे। – 'लाइट ऑन दी पाथ'

ज़मीर एक निहायत गैर-रिश्वतखोर कारकुन है, वह जानता ही नही कि गलत रिपोर्ट देना क्या चीज होती है। – बिशप रेनोल्ड्स

ज़रूरत

जो वह खरीदता है जिसकी उसे ज़रूरत नही है, उसे अकसर वह बेचना पडता है जिसकी उसे सख्त ज़रूरत है। – अंगरेजी कहावत

तेरे पास मजबूत दिल है और मजबूत हाथ है, तू अपनी ज़रूरतोको पूरी कर सकता है। – लौंगफैलो

ज़रूरी

जो कुछ आदमीके लिए ज़रूरी है वह उसके पास है। – थोरो

धैर्यके बिना लक्ष्मी नही, शौर्यके बिना सफलता नही, ज्ञानके बिना मुक्ति नही, दानके बिना यश नही। – अज्ञात

जल्दबाजी

क़ुदरत कभी जल्दबाजी नही करती । – एमर्सन

हलचली और जल्दबाजी कामको बिगाडनेवाली है । जल्द चलनेवाला जल्द थक जाता है । – सुलैमान

जवानी

जवानी जिन्दगीका कोई समय नही है, वह तो मनकी एक अवस्था है । इनसान उतना ही जवान है जितना उसका विश्वास और उतना ही बूढा है जितना उसका सन्देह । – अज्ञात

जवानी रजका साथ नही करती । – यूरीपिडोज़

नदीकी बाढें, वृक्षोंके फूल, चन्द्रमाकी कलाएँ नष्ट होकर फिरसे आती है, मगर देह-धारियोंकी जवानी नही । – अज्ञात

जवानीका एक भी घण्टा ऐसा नही कि जिसमे कोई भावी न हो, एक भी पल ऐसा नही है कि जिसके एक बार चले जानेपर उसका निर्धारित काम बादमें कर सकें । गरम लोहेपर चोट न कर पायें तो फिर ठण्डे लोहेको पीटना पडता है । – रस्किन

जवाब

ललकारका जवाब दिया जाना चाहिए । – अज्ञात

जंजीर

पद और दौलत सोनेकी जजीरें है, लेकिन फिर भी है जजीरें ।
– रफिनी

जागरण

यह जीव जब विषय-विलाससे विरक्त हो जाये तभी समझो कि वह जाग गया है । – रामायण

स्वप्नकी विविधता जगनेपर 'एक' हो जाती है, उसी तरह इस जाग्रत संसारकी विविधता 'ब्रह्ममें जगने' पर 'एक' हो जाती है। — अज्ञात

जागृति

यह एक स्वप्न है जिसमें चीजें बिखरी हुई है और परेशान करती है। जब मैं जागूँगा उन्हें तुझमें एकत्र पाऊँगा और मुक्त हो जाऊँगा।
— टैगोर

जाति

मनुष्य कर्मसे ब्राह्मण होता है, कर्मसे क्षत्रिय होता है, कर्मसे वैश्य होता है, कर्मसे शूद्र होता है। — भगवान् महावीर

आखिरकार जाति सिर्फ एक है—मानवजाति — जॉर्ज मूर

जान

मनुष्य जितनी ही अधिक अपनी जान देता है उतनी अधिक वह उसे बचाता है। — गान्धी

जानकारी

आप अपना काम कीजिए और मैं आपको जान जाऊँगा। — एमर्सन

हिमालयके उत्तरमें क्या है? मैंने उसे उत्तरमें ही रहने दिया है क्योंकि मैं कल उसके उत्तरमें जाकर बैठूँगा तो वह दक्षिणकी ओर हो ही जायेगा। — विनोबा

जो तुम दिखलाई देते हो उसे हर कोई देखता है, परन्तु यह कौन जानता है कि तुम क्या हो? — मेकियावैली

जाँच

हर इनसानको जाँचका बेहतरीन तरीका यह है कि उसकी पसन्द उससे पूछी जाये। तुम मुझे बताओ कि तुम्हें क्या पसन्द है और मैं तुमको बता दूँगा कि तुम क्या हो। — रस्किन

जितेन्द्रिय

जो अच्छा या बुरा छूकर, खाकर सूँघकर, देखकर, सुनकर, न तो खुश होता है न नाखुश, उसको जितेन्द्रिय पुरुष जानना। — मनु

जिन्दगी

हर आदमीकी जिन्दगी ऐसी डायरी है जिसमें वह एक कहानी लिखना चाहता है और लिखता है दूसरी। — अज्ञात

काहिल, कम-अक्ल, कम-उम्रकी रातें सोनेमें जाती है और दिन व्यर्थ कामोमें। — अज्ञात

हम हमेशा शिकायत करते रहते है कि हमारे दिन थोडे है और काम ऐसे करते रहते है मानो उनका अन्त कभी न होगा। — एडीसन

किसी नेक आदमीकी जिन्दगीका सबसे अच्छा हिस्सा उसके प्रेम और दयाके छोटे-छोटे, नामरहित, भूले हुए काम है। — वर्ड्सवर्थ

कोई आदमी जिन्दगीका सच्चा मजा नही चखता, सिवाय उसके जो उसे छोडनेके लिए तैयार और रजामन्द रहता है। — सेनेका

'लटके' रहकर जीना दु खदायी वस्तु है, वह तो मकडीकी जिन्दगी है। — स्विफ्ट

जिन्दगी बरबाद होती जाती है जब कि हम जीनेकी तैयारी करते जाते है। — एमर्सन

जिन्दगी समुन्दरका पानी है, और वह उसी वक्त तक साफ सुथरी रह सकती है जबतक आसमानकी तरफ उठती रहे। — अज्ञात

ऐसे आदमी बनो और ऐसी जिन्दगी बसर करो कि अगर हर आदमी तुम सरीखा हो जाये, और हर जिन्दगी तुम्हारी जिन्दगीके सदृश हो जाये, तो यह दुनिया ईश्वरका स्वर्ग बन जाये। — फिलिप्स ब्रुक्स

जिन्दगी चन्दरोजा है। वह छिद्रान्वेषी ताक-झाँक या उजड्ड बकवास, झगडा या डाँट-फटकारके लिए नही है। शीघ्र ही अन्धकार छा जानेवाला है। — एमर्सन

आदमीकी जिन्दगीमें सबसे महान् समय वह नहीं है जब दुनिया उसके कमालको मानती है, बल्कि वह वक्त जब कि बाधाओं और परिस्थितियोंके साथ भीषण रणमें, उसकी शक्ति उसका मार्ग रोकनेवाली हर चीज़पर हावी आ जाती है। — अज्ञात

सिर्फ ज्ञानीके लिए ही जिन्दगी एक उत्सव है। — एमर्सन

जिन्दगी आधी गुज़र जाती है पेश्तर इसके कि हम जानें कि ज़िन्दगी क्या है। — फ्रान्सीसी कहावत

कुछ लोग जिन्दगीकी फिज़ूलियात मुहय्या करनेके इस कदर पीछे पड़ते हैं कि वे इस अहमकाना दौड़में उसकी जरूरियातको कुर्बान कर देते हैं। — गोल्डस्मिथ

ऐ ज़िन्दगी, दुःखीके लिए तू एक युग है, सुखीके लिए एक क्षण। — बेकन

ज़िन्दा

रणमें कदम न रखनेवाला भी मर जाता है, और घनघोर युद्ध करनेवाला भी जिन्दा रहता है। अज्ञात

ज़िम्मेदारी

अपनी तमाम ज़िम्मेदारी ईश्वरपर डालकर, दुनियामें अपना काम करो। — रामकृष्ण परमहंस

जिस्म

जब रूह जिस्मको छोड़ देती है तो मुरदागोश्त और हड्डियोंमें कीड़े पड़ जाते हैं, ऐ नादान इनसान, फानी जिस्म और जवानीकी मस्तियोंपर इस कदर नाज़ाँ न हो। यह सिर्फ कीड़ोंकी खुराक है! — अज्ञात

जिहाद

सबसे उत्तम जिहाद वह है जो आत्म-विजयके लिए किया जाये। — मुहम्मद

जिह्वा

संसारका मित्र होनेका सूत्र जिह्वामें है । — अज्ञात

जिसके भोजनका आशय केवल जीवके निर्वाहका और वचनका आशय सत्यके प्रकाशका है उसका मार्ग लोक-पर-लोक दोनोंमें सीधा और सुगम है । — हितोपदेश

जीना

इस तरह जी कि तेरी जवान और दमकती हुई छाती बिना आहके मौत-का खयाल कर सके । — एलिजा कुक

आज ऐसे जिओ मानो यह आखिरी दिन हो । — बिशप कैर

जीना तीन प्रकारका है—आत्माका शरीरमें जीना, आत्माका आत्मामें जीना, आत्माका परमात्मामें जीना । — सन्त ऑगस्टाइन

जो जीवनका लोभ छोड़कर जीता है, वही जीता है । — गान्धी

बहुत-से लोग तत्त्वदर्शियोंकी तरह बातें करते हैं और मूर्खोंकी तरह जीते हैं । — अँगरेजी कहावत

जीवन

'दुनिया क्या कहेगी', 'मुझपर कोई हँसेगा या क्या', ऐसे दुर्बल विचारों-को न आने देकर अपनेको योग्य लगे वैसा काम हमेशा करना चाहिए । यही सारे जीवनका रहस्य है । — विवेकानन्द

जीवन पुष्प-शय्या नहीं है पर उसे रण-भूमि भी होनेकी ज़रूरत नहीं है । — अज्ञात

जिस तरह दीप 'स्नेह-सूत्र-वैश्वानर' इन तीनोंसे मिलकर होता है, उसी प्रकार यह जीवन ज्ञान, भक्ति और कर्मसे मिलकर होता है । — विनोबा

जिस मनुष्यका जीवन ईश्वरीय है उसकी वाणी ऐसी मृदुल होगी जैसा कि मानसरोवरका कलकल निनाद । — अज्ञात

जो अच्छी तरह जीना चाहता है उसे सत्यको पाना चाहिए, और तभी, उससे पहले नहीं, उसके दु:खका अन्त हो जायेगा। – प्लेटो

बहुत-से लोग ऐसे है जो मर गये, मगर उनके गुण नहीं मरे, और बहुत-से लोग ऐसे है जो जीवित है, किन्तु सर्व-साधारणकी दृष्टिमें मृतक है। – अज्ञात

उन्हींका जीवन सफल है जो खुद तंग हालमे होते हुए भी दूसरोंकी जरूरतोंको अपनेसे पहले पूरा करनेकी कोशिश करते हैं। – कुरान

जो अपनी इन्द्रियोंके सुखमें लगा रहता है उसका जीना निकम्मा और पाप है। – गीता

वह अति सुखमय जीवन जो तूने भोगा था बीत चुका, पर उसका पाप अभी बाकी है। – इब्न-उल वर्दी

जीवन क्रियाशीलताका महज दूसरा नाम है। – जी० एस० हिलार्ड

खुद मरकर औरोंको जीवित रहने देनेकी तैयारीमे ही मनुष्यकी विशेषता है। – गान्धी

प्रेम और मित्रतासे श्रेष्ठतर जीवनमें कोई खुशियाँ नहीं हैं। – जॉनसन

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य छोड़कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जायेगा। – गान्धी

जीवनको वही समझता है जो प्रेम करता है और दान करता है। – स्टीफ़न ज़्विग

निश्चय करनेवाला दिल, योजना बनानेवाला मन, और अमल करनेवाला हाथ। – गिबन

हम सब किसीको प्रसन्न करनेकी आशासे जीते हैं। – जॉनसन

सड़कोंपर कोई आदमी ऐसा नहीं है जिसकी जीवनीसे मैं परिचित न होना चाहूँ। – अज्ञात

जीना मानो मौज नही—खाना, पीना, कूदना नही—बल्कि ईश्वरकी स्तुति करना अर्थात् मानव जातिको सच्ची सेवा करना। – गान्धी

यह बात कुछ महत्त्व नही रखती कि आदमी कैसे मरता है, बल्कि यह कि वह जीता किस तरह है. – जॉनसन

आदमी अपनी आधी जिन्दगी बरबाद करके अपनी गलतियोको छोडता है और अपने सबकोसे फायदा उठाना शुरू करता है। – जेन टेलर

जीवन जागनेके लिए है और इसके समान जीवनमे कोई आनन्द नही है। सम्पत्ति और वैभव मनुष्यको सुख देगे, यह भ्रम है। सौन्दर्य और आनन्द-से ही सुख है। वास्तविक सौन्दर्य, शान्त प्रकृति, पवित्र आचार और पवित्र विचारमे है। ये बाते जिस मनुष्यमे है वही सुखका भोक्ता है। इस सुख-को प्राप्त करनेके लिए मनुष्यको अहर्निश सघर्ष करना चाहिए, यही जीवन है। – प्लेटो

अपना जीवन लेनेके लिए नही देनेके लिए है। – विवेकानन्द

मानव जीवन नश्वर है, उसमे आयुष्य तो बहुत ही परिमित है। एकमात्र मोक्षमार्ग ही अविचल है। यह जानकर काम भोगोसे निवृत्त हो ? – भगवान् महावीर

अगर हम एक-दूसरेकी जिन्दगीकी मुश्किलें आसान नही करते तो फिर हम जीते ही किस लिए है ? – जॉर्ज ईलियट

मुझे आशा है कि मैं सत्य और अहिंसाके व्रतको—जिसके कारण जीवन मेरे लिए जीने योग्य है—झुठलाऊँगा नही। – गान्धी

जिस तरह जबसे दुनिया शुरू हुई है कोई सच्चा काम कभी फिजूल नही गया, उसी तरह जबसे दुनिया शुरू हुई है कोई सच्चा जीवन कभी असफल नही हुआ। – एमर्सन

जीवनका लक्ष्य ईश्वरके समान होना है, और जो आत्मा परमात्माका अनुसरण करती है वह उसीके समान हो जायेगी। – सुकरात

प्रभुमय जीवन माने प्रभुकी तमाम शक्ति सम्पादन करना, ईश्वरके समस्त ऐश्वर्यको प्राप्त करके जीवन उत्कृष्ट करना। – अरविन्द घोष

बुरे आदमी खाने-पीनेके लिए जीते है। भले आदमी इसलिए खाते-पीते है कि वे जी सके। – सुकरात

जब हम न केवल मिथ्या और पापपूर्ण चीजोके लिए 'नही' कह सके, बल्कि ऐसी खुशगवार, फायदेमन्द और अच्छी चीजोके लिए भी कह सके जो हमारे महान् कर्त्तव्यो और हमारे प्रधान काममे बाधा या रोक डाल, तब हम अधिक अच्छी तरह समझेगे कि जिन्दगीकी कीमत क्या है और किस तरह उसका अत्यधिक उपयोग किया जाये। – स्टॉडर्ड

जीवन अधिकाशत झाग—बुलबुला है, दो चीजे पत्थरके समान खडी है—दूसरेके दु खमे दया, और अपने दु खमे हिम्मत। – अज्ञात

वह सबसे अधिक जीता है जो सबसे अधिक सोचता है, उत्कृष्टतम भावनाएँ रखता है, सर्वोत्तम रीतिसे कार्य करता है। – बेली

बहुत कम लोग समझते है कि मानव-जीवनका उद्देश्य परमात्माका देखना है। – अज्ञात

वह आदमी जिसने अन्दरसे गम्भीरतर जीवन शुरू कर दिया बाहरसे सरलतर जीवन शुरू कर देता है। – बुक्स

भूलोके साथ सग्राम करना ही जीवन है। – गान्धी

जीवन अच्छाईसे भरा हुआ है अगर हम उसकी तलाश करे। – अज्ञात

जब कि मैं जानता हूँ कि मेरा जीवन केवल एक क्षण मात्र है, तो मैं क्यो उसे ईश्वरकी स्तुति-प्रार्थना-उपासनामे न लगाऊँ?

– सुलैमान बाजी

कर्मका ही दूसरा नाम जीवन है, निकम्मेका अस्तित्व है, पर वह जीवित नही। – हिलर्ड

पवित्र जीवन एक आवाज है, वह तब बोलती है जब जबान खामोश होती है। – अज्ञात

वे ही लोग जीते है जो निष्कलक जीवन व्यतीत करते है, और जिनका जीवन कीर्ति-विहीन है, वास्तवमे वे ही मुरदे है। – तिरुवल्लुवर

जो मानवताके लिए जीता है उसे अपनेको खोकर सन्तोष मानना चाहिए। – ओ० बी० फ्रौथिंग्टन

जिसका कोई घरबार नही, उसीका घर सारी दुनिया है। जिसने जीवनके बन्धनोको काट डाला है, उसीके हिस्सेमे सच्चा जीवन आया है। – स्टीफन ज्विग

पहले ईश्वरको प्राप्त करो, और तब धन प्राप्त करो, इससे उलटा करनेकी कोशिश न करो। अगर आध्यात्मिकता प्राप्त करनेके बाद, तुम सासारिक जीवन बसर करोगे, तो तुम मनकी शान्तिको कभी नही खोओगे। -- रामकृष्ण परमहस

अगर कोई आदमी यह प्रतिज्ञा कर ले कि वह हर रोज अपनी शक्ति-भर काम करेगा और पवित्र तथा उपकारी जीवन बितानेमे कोई दकीका उठा न रखेगा, तो मैं विश्वास करता हूँ कि उसका जीवन अभीक्ष्ण और आशातीत उत्साहसे लबरेज हो जायेगा।

– बुकर टी० वाशिंगटन

जीवनका स्वाद लेनेके लिए हमे जीवनके लोभका त्याग कर देना चाहिए। – गान्धी

जीवन-कला

जीनेकी कला अधिकाशत इसमे है कि हम उन तुच्छ बातोको झाड़ मार सकें जो हमे चिढ़ा सकती हैं। – अज्ञात

हम सतहोमे रहते हैं, और जीवनकी सच्ची कला उनपर खूबीसे उतारनेमे है। – एमर्सन

जीवन-चरित्र

प्राचीन कालके सुप्रसिद्ध महापुरुषोके जीवनसे अपरिचित रहना अपनी जिन्दगीको बच्चेपनकी हालतमे गुजारना है। – प्लुटार्क

जीवन-पथ

अगर हम जीवन-पथपर फूल नही बखेर सकते, तो कमसे कम उसपर हम मुसकाने तो बखेर सकते हैं। – चार्ल्स डिकेन्स

जीवनोद्देश्य

अपनी टिमटिमाती मेहरबानी और प्रेमकी छायासे मेरी आत्माको तग मत करो। मुझे कठोर इनकारकी बेरहम आजादीमे छोड दो। मुझे भयकरतम निराशामे होकर वीरतापूर्वक जीवनोद्देश्यको प्राप्त करने दो। – टैगोर

जीवन्मुक्त

अगर किसीको यह विश्वास हो जाये कि ईश्वर ही यह सब कुछ कर रहा है, तो वह जीवन्मुक्त हो जाता है। – रामकृष्ण परमहस

जीविका

बहुत से पण्डित व मूर्ख लोग कपटाचरणसे जीविका उपार्जन करनेमे लुब्ध है और वे निर्दोष लोगोको ही नही, साक्षात् वृहस्पतिको भी कमअक्ल समझते है। – महाभारत

वही जीविका श्रेष्ठ है जिससे अपने धर्मकी हानि न हो, और वही देश उत्तम है जिससे कुटुम्बका पालन हो। – शुक्रनीति

जीवित

जीवित कौन ? जो सत्यके लिए हर वक्त मरनेको तैयार है, वह।

– स्वामी रामतीर्थ

जुआ

इनसानकी जिन्दगीमें दो वक्त है जब कि उसे जुआ नही खेलना चाहिए, एक तो जब वह खेल नही सकता और दूसरे जब वह खेल सकता हो।

— सैम्युएल क्लीमेन्स

जुल्म

जहाँ तुम जुल्म देखो, तो अत्यधिक सम्भावना यह है कि सत्य मजलूमकी तरफ है।

— बिशप लैटीमर

जेब

मेरी जेबपर हमला हुआ कि मेरा दिल फटा।

— अज्ञात

जोगी

तनका जोगी और है, मनका जोगी और।

— शीलनाथ

जोरदार

जोरदार वह है जो न दबे, न दूसरोको दबने दे। बल्कि जो दबाया जाता हो उसे सहारा भी दे।

यदि मै तुझसे इसलिए दबता हूं कि तू जोरदार है, मुझे नुकसान पहुचा देगा, तो मैं तुझे मनुष्य नही जालिम और राक्षस समझता हूँ। और मेरे इस प्रकार सिरके झुकानेमे तू राजी रहता है जो तेरे बराबर मूर्ख नही।

— हरिभाऊ उपाध्याय

जोश

आदि गरम, मध्य नम, अन्त मद।

— जर्मन कहावत

ज्योति

मैने गुरुकी सेवामे निवेदन किया कि मेरी स्मरण-शक्ति बिगड गयी, इसपर उन्होने मुझे यह उपदेश दिया कि पापोको छोड दे, क्योंकि विद्या ईश्वरकी ज्योति है, और ईश्वरकी ज्योति पापीको नहीं मिला करती।

— इमाम शाफई

ज्योतिषी

ज्योतिषियोके कहनेपर विश्वास मत रख। उनका कहना सच हो तो भी उसे समझनेमे कोई लाभ नही, हानि स्पष्ट है। – गान्धी

■

झ

झगडा

आदमी गूदेकी अपेक्षा छिलकेपर ज्यादा झगडते हैं। – जर्मन कहावत

झुकाव

हर आदमीमे एक नया झुकाव होता है जिसका उसे अवश्य अनुसरण करना चाहिए। – एमर्सन

लोग नैतिक या भौतिक झुकावको लेकर पैदा होते है। – एमर्सन

झूठ

आधा सच अकसर महान् झूठ होता है। – फ्रेंकलिन

भयकरतम झूठ वह नही जिसे बोला जाता है बल्कि वह जिसपर जिया जाता है। – क्लार्क

किसीने अरस्तूसे पूछा, 'आदमी झूठ बोलकर क्या पाता है?' 'यह कि जब वह सच बोलता है उसका कभी विश्वास नही किया जाता।' उसने जवाब दिया। – अज्ञात

जितनी कमजोरी उतना झूठ। शक्ति सीधी जाती है। दुर्बल तो झूठ बोलेंगे ही। – रिट्चर

बुजदिलोंके सिवाय और कोई झूठ नही बोलते । – मर्फी

क्या बात है कि हम सामान्यतया भी झूठसे नही बचते, भले वह शर्म या डरके मारे क्यो न हो ? क्या यह अच्छा नही होगा कि हम मौन ही धारण करे या आपसमे निडर होकर जैसा हमारे दिलमे है वैसा ही कहे ? – गान्धी

थोडा-सा झूठ भी मनुष्यका नाश करता है जैसे दूधको एक बूंद जहर । – गान्धी

झूठा

झूठमे देव और मनुष्य दोनो घृणा करते है। झूठा अकसर बुजदिल होता है, क्योकि वह सचाईको तसलीम करनेकी हिम्मत नही कर पाता । – सर वाल्टर रेले

ईश्वर झूठोसे नाखुश और सच्चोसे खुश रहता है । – बाइबिल

जो झूठ बोलता है वह नाशको प्राप्त होगा । – बाइबिल

■

ठ

ठगी

कहनीके समान रहनी न हो इसीका नाम ठगी है । – अज्ञात

ठोकर

सत्यपर चलनेवाला जरा भी टेढा चला कि ठोकर खायी । यही उसका सौभाग्य है । यह उसपर ईश्वरी कृपा है । – हरिभाऊ उपाध्याय

ठोकरे सिर्फ धूल ही उडाती हैं, जमीनसे फसले नही उगाती । – टैगोर

दूसरे अनुभवसे होशियारी सीखनेकी मनुष्यको इच्छा नही होती उसको स्वतन्त्र ठोकर चाहिए । – विनोबा

■

त

तकदीर

सिर्फ तकदीर और इत्तिफाककी बातें यह दरशाती है कि हम कार्यकारण-के सिद्धान्तोको कितना कम जानते है । –होसिया बैलन

तजुर्बा

तजुर्बा उस कीमती कन्धेके मानिन्द है जो किसीको उस वक्त दिया जाये जब कि उसके तमाम बाल उड गये हो । –तुर्की कहावत

तटस्थ

तटस्थ आदमी शैतानके साथी है । – चैपिन

तटस्थ वृत्ति

तटस्थ वृत्तिके बिना सृष्टिका रहस्य नही खुल सकता । – विनोबा

तत्परता

पूर्ण तत्परता सब कुछ है और उससे कम कुछ भी नही ।

– चार्ल्स डिकेन्स

तत्त्व

जब तत्त्व आचरणमे उतरता दिखाई नही देता तब समझना चाहिए कि हमने तत्त्व ठीक नही पहचाना । शुद्ध तत्त्व आचरणमे आना ही चाहिए । सम्पूर्णत· कोई भी तत्त्व आचरणमे आ ही नही सकता । किन्तु जो

आचरण तत्त्वके निकट नही जाता वह अशुद्ध और त्याज्य है । – गान्धी

तत्त्वविचार

तत्त्वका विचार उत्तम है, शास्त्रोका विचार माध्यम है, मन्त्रोकी साधना अधम है, और तीर्थोमे फिरना अधममे अधम है । – अज्ञात

तन्दुरुस्ती

जिस तरह तन्दुरुस्ती उस आदमीको ढूंढती है जो पेट खाली होनेपर ही खाना खाता है, उसी तरह बीमारी उसको ढूंढती फिरती है जो हदसे ज्यादा खाता है । – तिरुवल्लुवर

सबसे बडी मूर्खता स्वास्थ्यको किसी अनिश्चित लाभके पीछे बरबाद कर देना है । – शोपेनहोर

तन्दुरुस्ती बगैर जिन्दगी जिन्दगी नही है, बेजान जिन्दगी है । – अज्ञात

तन्दुरुस्ती, जिसके बगैर जिन्दगी जीने लायक नही, सवेरे उठने, व्यायाम करने, गम्भीरता और मिताहारसे क्यो न हासिल होगी ? – कॉबेट

तन्मयता

जो अपने काममे तन्मय हो गया है उसे बोझ या नुकसान कुछ नही मालूम होता । जिसे काममे प्रेम नही उसे थोडा भी अधिक मालूम होता है, जैसे कैदियोको एक दिन वर्षकी तरह मालूम होता है भोगियोको एक वर्ष एक दिनकी तरह । – गान्धी

तप

तप समस्त कामनाओको यथेष्ट रूपसे पूर्ण कर देता है, इसलिए लोग दुनियामे तपस्याके लिए उद्योग करते हैं । – तिरुवल्लुवर

'शान्तिपूर्वक दु ख सहन करना और जीव-हिंसा न करना', बस इसीमे तपस्याका समस्त सार है। – तिरुवल्लुवर

तप और तापकी विभाजक रेखा पहचानना जरूरी है। – विनोबा

जो धनी होकर दान न करे, और निर्धन होकर तप न करे उसे गलेमे पत्थर बाँधकर डुबा देना चाहिए। – विदुर

तप ही परम श्रेय है, इतर सुख मोह करनेवाला है। – रामायण

तप स्वधर्मवर्तित्वम्।
(तप माने अपने कर्त्तव्यका पालन करना।) – अज्ञात

तपश्चर्या

शुद्ध तपश्चर्याके बलसे अकेला एक आदमी भी सारे जगत्को कँपा सकता है, मगर इसके लिए अटूट श्रद्धाकी आवश्यकता है। – गान्धी

तपस्या जीवनकी सबसे बडी कला है। – गान्धी

तर्क

तर्क बडा हलका सवार है, कषायोके घोडे उसे आसानीसे पटक देते है। – स्विफ्ट

तर्क करते समय शान्त रहिए, क्योकि भयानकता गलतीको अपराध बना देती है और सत्यको बदतहजीबी। – हरबर्ट

तर्कमे सगीत-रहित ध्वनि न आने दे। – बैन जॉन्सन

केवल तर्क अनर्थ है, केवल भावना अन्ध है, भावनाघाती तर्क दुष्ट है, तर्क-शत्रु भावना अनिष्ट है। – अज्ञात

तर्कशील

निरा तर्कशील मन उस चाकू-जैसा है जो फल-ही-फल है। वह उसे इस्तेमाल करनेवाले हाथको लोहूलुहान कर देता है। – टैगोर

तर्क-वितर्क

अगर तुझे निरर्थक तर्क-वितर्कमे मजा आया करता है, तो हो सकता है कि तू सोफिस्ताइयो (मिथ्यावादियो) से भिडने लायक हो, परन्तु इसका तुझे भान भी न हो कि मनुष्योसे प्रेम किस तरह किया जाता है।

— सुकरात

तर्कशक्ति

हमारी तर्कशक्ति उसके लिए बहाने खोज निकालती है जिसे हम करना चाहते हैं, और उसके लिए युक्तियाँ गढ लेती है जिसपर हम विश्वास करना चाहते हैं।

— अज्ञात

तलमल

सच्चा साधन एक ही है 'तलमल'। सच्ची सिद्धि एक ही है 'तलमल'।

— विनोबा

'तलमल' शान्त होनेके लिए देवका प्रत्यक्ष स्पर्श चाहिए। थोडा अन्तर भी सहन नही होता। पेटके बिलकुल नजदीक रखे हुए पानीसे क्या प्यास बुझ जाती है ?

— विनोबा

तलाक़

ध्यान रखो कि जिस चीज़को अल्लाह सबसे ज्यादा नापसन्द करता है वह तलाक है।

— ह० मुहम्मद

तलाश

मैं अपने जख्मे दिलके मरहमकी तलाश उस सडकपर कर रहा हूँ, जहाँ सैकडो ईसा जख्मी पडे हुए है।

— अज्ञात

उत्तम व्यक्ति जिसकी तलाश करता है वह उसके अन्दर है, तुच्छ आदमी जिसकी तलाशमे है वह दूसरोमे है।

— कन्फ्यूशियस

तहज़ीब

सद्गुण भी यदि बद-तहज़ीबीके साथ हो, अप्रिय लगते हैं।

— मिडिल्टन

तामस

तामस नम्रताकी, क्षमाकी व सहिष्णुताकी कौडीकी भी क़ीमत नही। उससे कौडीका भी फायदा नही। — अरविन्द घोष

तारनहार

तमाम धर्मग्रन्थ फिजूल हैं जबतक कि पति-पत्नियाँ एक-दूसरेके तारन-हार न बन जाये। — स्वामी रामतीर्थ

तारीफ़

लानत है तुझपर अगर सब लोग तेरी तारीफ़-ही-तारीफ करे।

— बाइबिल

तिरस्कार

दूसरोका तिरस्कार करना और उन्हे नीचा मानना तो बडा भारी मानसिक रोग है। — अबु-उस्मान

तुच्छ

छोटी-छोटी बातोका ख़याल महान् चीज़ोका मदफन है। — वोल्टेर

दीन-हीन बेइज्ज़त आदमी घासके तिनकेके बराबर है। — अज्ञात

तुच्छ मनुष्य जो बात तुझसे कहे उसे तुच्छ मत जान, क्योकि मधुमक्खी एक मक्खी ही है, परन्तु मधुकी स्वामिनी है। — इस्माइल-इब्न-अबीबकर

तुच्छता

तुच्छ लोग तुच्छ चीज़ोसे ख़ुश रहते है। — ओविड

तूफान

जब तुम सख्त परेशानीमे पड जाओ और हर बात तुम्हारे खिलाफ जाती हो, यहाँतक कि तुम्हे ऐसा लगने लगे कि अब तुम एक मिनिट भी और नही ठहर सकोगे, उस समय कभी धीरज न छोडो, क्योकि ठीक वही मुकाम और वक्त है कि तूफान पलटा खायेगा। – अज्ञात

तृष्णा

जो कर्तव्य कर्म समझ लेता है और उसके अनुसार आचरण करता है, उसकी तृष्णा नष्ट-सी हो जाती है। जिसकी तृष्णा मरी नही उसे अपने कर्तव्य कर्मका ध्यान ही नही रहता। तृष्णाके त्यागका अर्थ ही है कर्तव्यका ध्यान। – गान्धी

तृष्णा इस कदर अन्धा बना देनेवाली शक्ति है कि दुनियाकी तमाम दलीले आदमीको यह विश्वास नही दिला सकती कि वह तृष्णावान् है। – अज्ञात

जो मनुष्य होकर दौलत और इज्जतके पीछे पडा हुआ है वह तृषा-रोगी समुद्र-जलसे अपनी प्यास बुझाना चाहता है। जितना ज्यादा पीता है उतना ही ज्यादा और पीना चाहता है, आखिरश पीते-पीते मर जाता है। – अरबी कहावत

जो मनुष्य तर्क-वितर्क आदि सशयोसे पीडित है और तीव्र रागमे फँसा हुआ है तथा सुख-ही-सुखकी अभिलाषा करता है, उसकी तृष्णा बढती ही जाती है और वह प्रतिक्षण अपने लिए और भी मजबूत बन्धन तैयार करता जाता है। – बुद्ध

जिसने तृष्णा जीत ली, उसने अटल स्वर्ग जीत लिया। – महाभारत

मनुष्य ऐश्वर्य मिलनेपर राज्य पानेकी इच्छा करता है, राज्य पानेपर देवत्वकी, देवत्व पानेपर इन्द्रपदकी भी। – महाभारत

तृष्णाको उखाड फेकनेवालेका पुनर्जन्म नही। – बुद्ध

इस दुर्जेय तृष्णापर जो क़ाबू पा लेता है, उसके शोक इस प्रकार झड जाते है जैसे कमलके पत्तेपर-से जलके बिन्दु। – बुद्ध

यह जहरीली तृष्णा जिसे जकड लेती है, उसके शोक वीरन घासकी तरह बढत ही जाते हैं। – बुद्ध

मेरुकी उपमा दिये जाने लायक, बुद्धिमान्, शूर-वीर वा धीर हो उसे भी एक तृष्णा तृणके समान बना देती है। – अज्ञात

चाँदी और सोनेके असख्य हिमालय भी यदि लोभीके पास हो तो भी उसकी तृप्तिके लिए वे कुछ भी नही। कारण कि तृष्णा आकाशके समान अनन्त है। – अज्ञात

तेज

जब कि और लोग छिप जाते है, उस वक्त भी तू मुझे सूरजके समान पायेगा, जो कभी किसी स्थानमे छिपा नहीं करता।

– अहवस-बिन-मुहम्मद-अनसारी

मुखपर प्रसन्नता व दिव्य तेज त्यागवृत्तिके बगैर प्राप्त नही होते।

– स्वामी रामतीर्थ

तेज और क्षमा ये एक-दूसरेकी व्याख्या है। – विनोबा

सिंह चाहे शिशु अवस्थामे ही हो, मदसे मलिन कपोलोवाले उत्तम गज॰के मस्तकपर ही चोट करता है। यही तेजस्वियोका स्वभाव है। निस्सन्देह अवस्था तेजका कारण नही होती। – भर्तृहरि

तोबा

सच्चे दिलसे गुनाहसे तोबा करनेवाला बेगुनाहके बराबर है।

– हु॰ मुहम्मद

त्याग

इस दुनियामे हम जो लेते है वह नही, बल्कि जो देते है वह हमे धनवान् बनाता है। – बीचर

त्यागसे पाप पलटता है। दानसे पापका ब्याज चुकता है। – विनोबा

त्याग और योगकी पक्की 'निरगाँठ' बैठी हुई है, आसक्तिसे बाहरी चीजों-का त्याग किया भी तो वह त्याग 'भोगका भोग' होकर बैठता है।
– विनोबा

पवित्रताकी भावना ही त्यागका स्वरूप है। – स्वामी रामतीर्थ

जिस त्यागसे अभिमान उत्पन्न होता है वह त्याग नही है। त्यागसे शान्ति मिलनी चाहिए। आखिरश अभिमानका त्याग ही सच्चा त्याग है। – विनोबा

धनसे नही और सन्तानसे भी नही, अमृत स्थितिकी प्राप्ति केवल त्याग-से ही होती है। – विवेकानन्द

त्यागसे अनेको प्रकारके सुख उत्पन्न होते है, इसलिए अगर तुम उन्हे अधिक समय तक भोगना चाहो तो शीघ्र त्याग करो।
– तिरुवल्लुवर

सम्भोगजन्य आनन्दका भी जनक त्याग ही है। – स्वामी रामतीर्थ

कुलके लिए व्यक्तिका, गाँवके लिए कुलका, देशके लिए गाँवका और आत्माकी खातिर पृथ्वी तकका त्याग कर देना चाहिए। – हितोपदेश

जिस तरह हाथसे साँप छोडनेसे सुख होता है, उसी तरह धर्मभ्रष्ट पाप-मति पुरुषको त्यागनेसे सुख होता है। – रामायण

जो अपने आराम, अपने खून, अपनी दौलतका कुछ हिस्सा दूसरोके भले-के लिए नही देता, वह एक कगला, कठोर कमीना है। – जोनाबेली

यदि हमे जीवनका सदुपयोग करना है, और उसे बरबाद नही करना है, तो वीरतापूर्वक त्याज्यको त्यागनेका निश्चय करें। – अज्ञात

त्याग यह नही है कि मोटे और सस्त कपडे पहन लिये जाये और सूखी रोटी खायी जाये। त्याग तो यह है कि अपनी आरजू, इच्छा और ख्वाहिशको जीता जाये। – सूफियान सौरी

जिन्होने सब कुछ त्याग दिया है, वे मुक्तिके मार्गपर हैं, बाकी सब मोहजालमे फँसे हुए हैं। — तिरुवल्लुवर

मनुष्यने जो चीज त्याग दी, उससे पैदा होनेवाले दुःखसे उसने अपनेको मुक्त कर लिया। वाछित वस्तुको प्राप्त करनेकी चिन्ता, खो जानेकी आशका, न मिलनेसे निराशा और भोगाभिक्यसे जो दुःख होते है, उनसे वह बचा हुआ है। — तिरुवल्लुवर

प्राणी कर्मका त्याग नही कर सकता, कर्मफलका त्याग ही त्याग है। — गीता

त्यागी

जिसने इच्छाका त्याग किया उसको घर छोडनेकी क्या आवश्यकता है, और जो इच्छाका बंधुआ है, उसको वनमे रहनेसे क्या लाभ हो सकता है? सच्चा त्यागी जहाँ रह वही वन और वही भजन-कन्दरा है। — महाभारत

जिसमे त्याग हे वही प्रसन्न है। बाकी सब गमका असबाब है। — उमर खय्याम

त्रुटि

अपनी त्रुटिका पता चलनेके बाद उसे मिटानेमे थोडा भी समय न खोना चाहिए। इसीमे हम कुछ करते है; यही नही बल्कि सच्चा काम करते हैं। इसके विपरीत आचरण करके अपने धर्मको भूल जाना सच-मुच बुरेसे बुरा काम है। — गान्धी

■

द

दक्ष

जो बुद्धिमान् है, प्रज्ञावान् हे, नीतिशास्त्र-विशारद है वह चाहे घोर आफतमे भी फँस जाये फिर भी उसमे डूबता नही है । — अज्ञात

दख़ल

जिस बातसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नही उसमे दखल न दो ।

— नैतिक सूत्र

दया

दयासे लबालब भरा हुआ दिल ही सबसे बड़ा दौलत है, क्योकि दुनियावी दौलत तो नीच आदमियोके पास भी देखी जाती है ।

— तिरुवल्लुवर

मनुष्यको दयालुओके ही पड़ोसमे रहना चाहिए । जो दयालु और चिन्तारहित है, वही श्रेष्ठ पुरुष है । — कन्फ्यूशियस

दयापात्र होनेसे ईर्ष्यापात्र होना अच्छा । — कहावत

दयावान् वह है जो पशुओके प्रति भी दयावान् हो । — बाइबिल

दयाके शब्द ससारके सगीत है । — फेबर

जो दूसरे आदमीके दुःखमे दया दिखाता है वह स्वय दु खसे छूट जायेगा, और जो दूसरेके दु खकी अवगणना करता है या उसपर हर्ष मनाता है वह कभी-न-कभी उसमे स्वय जा पड़ेगा । — सर वाल्टर रैले

दयालु-हृदय खुशीका फव्वारा है, जो कि अपने पासकी हर चीजको मुसकानोसे भरकर ताज़ा बना देता है । — वाशिग्टन इर्विग

जहाँ दया नही वहाँ अहिंसा नही, अत यो कह सकते है कि जिसमे जितनी दया है, उतनी ही अहिंसा है । — गान्धी

दया वह भाषा है जिसे बहरे सुन सकते हैं और गूँगे समझ सकते है।
– अज्ञात

जो खुदाके बन्दोके प्रति दयालु है, खुदा उसके प्रति दयालु है। – मुहम्मद

दया करना ऊँचा उठना है। परन्तु दया-पात्र बनना अपने तेजको कम करना है। – अज्ञात

दयाशील अन्त करण प्रत्यक्ष स्वर्ग है। – विवेकानन्द

दया धर्मसे हीन धर्म पाखण्ड है। दया ही धर्मका मूल है, और उसका त्याग करनेवाला ईश्वरका त्याग करता है। एकका त्याग करनेवाला सबका त्याग करता है। – गान्धी

दया ज्ञानको ध्वजा है और क्रोध मूर्खताकी भुजा। – अज्ञात

भारी तलवार कोमल रेशमको नही काट सकती, दयालुता और मीठे शब्दोमे हाथीको जहाँ चाहे ले जाओ। – सादी

दु खित हृदयको न दुखा। – अज्ञात

मुझे केवल दयाके लिए भेजा गया है, शाप देनेके लिए नही।
– हज़रत मुहम्मद

दयालु

अगर तुम हर जीवके प्रति यत्नपूर्वक दयालु नही हो तो तुम बहुधा बहुतो-के प्रति क्रूर होगे। – रस्किन

हर-एकके लिए मृदुल और दयालु बनो, लेकिन अपने लिए कठोर।
– अज्ञात

दयालुता

दयालुता, बन्दानवाज़ी, बडी लाजवाब चीज़ है, लेकिन अजीब बात है कि उसकी खुशी किस कदर इकतरफ़ा होती है। –आर० एल० स्टीवेन्सन

दयावान्

कितने देव, कितने मजहब, कितने पन्थ चल पडे है, लेकिन इस गमगीन दुनियाको सिर्फ दयावानोकी जरूरत है। — विलकॉक्स

दरबार

दरबार शरीफ और मशहूर भिखमगोकी जमाअत है। — अज्ञात

दरबारी

इटलीके दरबारियोके साथ मिठाई खानेकी अपेक्षा ग्रीसके दार्शनिकोके साथ भूसा खाना अच्छा। — फ्रेंकलिन

दरबारीके लिए जिन खास खूबियोकी जरूरत है, वे है—लचकदार अन्तरात्मा और गैर-लचीली भद्रता। — लेडी ब्लेसिंग्टन

दरिद्रता

दरिद्रता मानो दु खोकी टकमाल ही है। — अज्ञात

जो मनुष्य दरिद्रतासे डरकर हमेशा धन कमानेमे लगा रहता है, उसका यह काम स्वयमेव दरिद्रता है। — मुतनब्बी

जहाँ पशुओंको कष्ट होता है, जहाँ स्त्रीका अनादर होता है और जहाँ भाई-भाई लडते है वहाँ दरिद्रताका आना सुनिश्चित है।

— अग्निपुराण

दरिद्रता आलस्यका पुरस्कार है। — डच कहावत

दरिद्रता बहुधा मनुष्यको सम्पूर्ण साहस और धर्मसे हीन कर देती है।

— बेंजामिन फ्रेंकलिन

दरिद्रता और द्रव्य, इन दोनो बातोको छिपा और धन कमा, कठिन परिश्रम कर और निर्बुद्धियो और शासनकर्ताओको सगतिसे दूर रह।

— इब्न-उल-वर्दी

दुनियामें दरिद्रताके बराबर कोई दु ख नहीं है। — रामायण

जिसको रोग हुआ है उसीको औषधि लेनी चाहिए। अपनी दरिद्रता स्वय ही दूर करनी चाहिए। – अज्ञात

दरिद्रनारायण

मैं तो यह जानता हूँ कि परमात्मा उच्च समाज और बडे-बडे लोगोकी अपेक्षा अधिकाशत उस सृष्टिमे मिलता है, जिसे हम सबसे हीन समझते है। मैं उन्हींके स्तरपर पहुँचनेकी साधना कर रहा हूँ। उनकी सेवाके बिना मैं वहाँतक नही पहुँच सकता, यही कारण है कि मैं दलितोंका सेवक हूँ। – गान्धी

दरिद्री

दरिद्री जीवित मुरदा है। – अज्ञात

दरियादिली

दूसरोंका बहुत-कुछ खयाल रखना, और अपना न कुछ, खुदगरज़ी छोडकर दरियादिल हो जानेमे ही मानवस्वभावकी परिपूर्णता है। – आदम स्मिथ

विजेता भयका सचार करता है, ज्ञानी हमारे आदरणीय बनते है, मगर दरियादिल ही है जो हमारे प्रेमको जीतता है। – अज्ञात

दर्शन

मुझे मार्क्स क्या कहता है इससे, या सेण्ट लूथर क्या कहता है इससे, किसी-से मतलब नही। मेरा आदेश तो स्पष्ट यह है कि जीवनको अपनी आँखोसे देखो और अपने निर्णय सरल भाषामें रख दो। – सिंक्लेयर

किसी वस्तुको उसके मूल स्वरूपमें देखना ही उसका वास्तविक दर्शन है। – जुन्नेद

हम दूसरोके आर-पार देखना चाहते है, परन्तु खुद अपने आर-पार देखा जाना पसन्द नही करते। – ला रोशे

हम सब स्वप्न-द्रष्टा है और हम वस्तुओमे अपनी ही आत्माका प्रतिबिम्ब देखते है। — एमील

दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्रके दो सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है—सचाईकी खोज और भलाई-पर अमल। — वोल्टेर

दर्शनशास्त्र जीवन-कला है। — प्लुटार्क

विपत्ति-समयका मीठा दूध, दर्शनशास्त्र। — शेक्सपीयर

दलील

अगर मै आपके दलको जानता हूँ तो मै आपको दलीलको पहलेसे ही ताड लेता हूँ। — एमर्सन

दवा

अच्छी हालतमे दवा न लो, वरना बेहतर होनेके लिए कही तुम्हे मरना न पड जाये। — इटालियन कहावत

दवा कुत्तोको फेंक दो, मै उसे कतई नही लूँगा। — शेक्सपीयर

दण्ड

शरीरके किसी भी दण्डसे आत्माकी बीमारी नही जाती। — जेरेमी टेलर

कोई भी किसीके बारेमे निर्णय देनेका अधिकारी नहीं। दण्ड देना ईश्वरके हाथकी बात है, मनुष्यके हाथकी नही। — स्टीफन ज्विग

साधु पुरुषके साथ अनुचित व्यवहार करनेवालेको दण्ड मिले बिना नही रहता। — अज्ञात

दाता

चार तरहके आदमी होते है— १ मक्खीचूस : जो न आप खाये न दूसरेको दे, २ कजूस जो आप तो खाये, पर दूसरेको न दे,

३ उदार जो आप भी खाये और दूसरेको भी दे, ४ दाता जो आप न खाये और दूसरेको दे । सब लोग अगर दाता नही बन सकते तो उदार तो जरूर बन सकते है । – अफलातून

सौमें एक शूरवीर, हजारमें एक पण्डित, दस हजारमे एक वक्ता होता है । परन्तु दाता लाखमे कोई हो और न भी हो । – अज्ञात

दान

जिसको जरूरत हो रखो, जिसको दे सकते हो दे डालो, पर एक बार खोई हुई या दी हुई चीजके वापस आनेकी उम्मीद न रखो ।
– रस्किन

जितना-जितना तू देता रहेगा, उतना-उतना ही दूसरोको लूटनेका पाप धोता जायेगा । – पालशिरर

दो, यदि हो सके तो, गरीब आदमीको हाथ पसारनेकी शर्मसे बचाओ ।
– डाइडरट

खैरातसे मालमे कमी नही आती । – ह० मुहम्मद

सबसे ऊँचे प्रकारका दान आध्यात्मिक-ज्ञान-दान है । – विवेकानन्द

दान परिग्रहका प्रायश्चित्त है, इसमे अभिमानको अवकाश नही है ।
– विनोबा

नाक-भौ चढाकर देना सभ्यताके साथ इनकार करनेसे बुरा है ।
– अज्ञात

उस दानमे कोई पुण्य नही है जिसका विज्ञापन हो । – मसीलन

कोई कृतघ्न हो तो यह उसका कसूर है, लेकिन अगर मै न दूँ तो कसूर मेरा है । – सेनेका

लकडहारेकी कुल्हाडीने दरख्तसे अपने लिए बेटा माँगा । दरख्तने दे दिया । – टैगोर

मौतसे बढकर कडवी चीज और कोई नही है, मगर मौत भी उस वक्त मीठी लगती है, जब किसीमे दान करनेकी सामर्थ्य नही रहती ।

— तिरुवल्लुवर

दानकी सफेद चादरसे हम अपने असख्य पाप छिपाते है । — बीचर

दान लेना बुरा है चाहे उससे स्वर्ग ही क्यो न मिलता हो । और दान देनेवालेके लिए चाहे स्वर्गका द्वार ही क्यो न बन्द हो जाये, फिर भी दान देना धर्म है । — तिरुवल्लुवर

अपने दानको अपनी दौलतके अनुसार बना, वरना कुदरत तेरी दौलत-को तेरी दुर्बल दानशीलताके अनुसार बना देगी । — क्वार्ल्स

देना ही सचमुच पाना है । — स्पर्जियन

जीवनका अनुरोध-भरा पाठ, चाहे इसे हम जल्दी सीखे या देरसे, यह है कि देनेसे दाताकी पहले और सबसे अधिक श्रीवृद्धि होती है और उसमें साधुशीलता आती है । — अज्ञात

जो गरीबको देता है, ईश्वरको उधार देता है । — अज्ञात

सबसे उत्तम दान आदमीको इस योग्य बना देना है कि वह दानके बिना काम चला सके । — तालमुद

ईश्वर दानसे दसगुना देता है । — इसलाम

उदार दानमे भी बढकर है मधुर वाणी, स्निग्ध और स्नेहार्द्र दृष्टि ।

— तिरुवल्लुवर

बादल, तुम बिना गरजे हुए भी चातकको वर्षाजलसे तृप्त करते हो । सज्जनका यही स्वभाव है कि बिना कुछ कहे याचकोकी माँग पूरी करे ।

— कालिदास

तुम्हारे पास कितना धन है—इस बातका ख़याल रखो, और उसके अनु-सार ही दान-दक्षिणा दो, योग-क्षेमका बस यही तरीका है । — तिरुवल्लुवर

बादलोके समान सज्जन भी जिस वस्तुका ग्रहण करते है उसका दान भी करते है। – कालिदास

दी हुई वस्तु मै वापस नही ले सकता। – सादिक़

गरीबोंका देना ही दान है, और सब तरहका देना उधार देनेके समान है। – तिरुवल्लुवर

दानसे धन घटता नही, बढता है। अगूरोंकी शाखें काटनेसे और ज्यादा अगूर आते है। – सादी

दानत

अपनी दानत यही अपना सर्वस्व है, यही अपना धन है और यही अपनी सामर्थ्य है। विवेकानन्द

दानव

जो स्वार्थके लिए दूसरोका बिगाड करते है वे नरपिशाच है, लेकिन जो फिजूल दूसरोको नुकसान पहुँचाते है उन्हें क्या कहा जाये? – अज्ञात

दानवता

मानवकी मानवके प्रति दानवता असख्यातोको रुलाती है। – बर्न्स

दानशीलता

हमारी दानशीलता घरसे शुरू होती है, और अकसर वह वही खत्म हो जाती है जहाँसे शुरू हुई थी। – अज्ञात

दानशीलता देकर धनवान् बनती है, तृष्णा संग्रह करके गरीब बनती है। – जर्मन कहावत

दाम

प्रथम काम; बादमे, मिले तो, काम जितना दाम। यह तो हुई परमात्माकी

सेवा। अगर दाम पहले माँगोगे तो वह हुई शैतानकी सेवा। — गान्धी

दार्शनिक

दार्शनिकका यह काम है कि वह हर रोज़ कषायोंको दबाता रहे, और पूर्वग्रहोंको हटाता रहे। — एडीसन

महज़ दाढ़ी रखा लेनेसे कोई दार्शनिक नहीं हो जाता। — इटालियन कहावत

दावत

आजकी दावत कलका उपवास। — अज्ञात

जो अपने शरीरको लजीज दावतें देता है और अपनी आत्माको आध्यात्मिक आहारके बिना भूखों मारता है, वह उस शख्सके मानिन्द है जो अपने गुलामको दावतें देता है और अपनी घरवालीको भूखों मारता है। — अज्ञात

दासत्व

अगर तुम किसी गुलामकी गरदनमें ज़ंजीर डालो तो उसका दूसरा सिरा खुद तुम्हारी गरदनका फन्दा बन बैठता है। — कहावत

मनुष्यके आधे गुण तो उसी समय विदा हो जाते हैं जब वह दूसरेका दासत्व स्वीकार करता है। — होमर

दिखावा

गुणी बननेका यत्न करना चाहिए, दिखावा करनेसे क्या फायदा ? बिना दूधकी गायें गलेमें घण्टियाँ बाँध देनेसे नहीं बिक जातीं। — अज्ञात

दिन

शरीरकी जो रात है वह आत्माका दिन है। — स्वामी रामतीर्थ

दिन हमेशा उसका है जो उसमे शान्ति और महान् उद्देश्योसे काम करता है । – एमर्सन

दिमाग

एक अच्छा सिर सौ मज़बूत हाथोसे बेहतर है । – कहावत

अच्छे दिमागके सौ हाथ होते है । – रूसी कहावत

दिल

दिलसे निकली बात ही दिल तक जाती है । – ड्राइन

दिलकी वे आँखें है जिनका दिमागको कतई पता नहीं । – पार्क हर्स्ट

बेहतरीन दिमागोकी दानिशमन्दी अकसर बेहतरीन दिलोकी नज़ाकतसे शिकस्त खा जाती है । – फील्डिंग

जहाँ सन्देहका मुकाम हो वहाँ सज्जनोके लिए उनके दिलकी आवाज अचूक प्रमाण है । – अज्ञात

सिवा जब कि मनुष्यका दिल गूँगा हो, आसमान कभी बहरा नही होता । – क्वार्ल्स

हर दिल एक दुनिया है । जो कुछ बाहर है वह सब तुम्हारे अन्दर है । जो दुनिया तुम्हे घेरे हुए है तुम्हारे अन्दरकी दुनियाका प्रतिबिम्ब है । – लेवेटर

दिवा-स्वप्न

दिवा-स्वप्नमे बैठ, ओर उन लहरोके बदलते हुए रगको देख जो मनके काहिल किनारेपर आ-आकर टकराती हैं । – लौगफैलो

दिव्यदृष्टि

यदि तेरी दैवी आंख खुल जायेगी तो ससारके तमाम परमाणु तुझसे रहस्यकी बातें करने लगेंगे । – अज्ञात

दिशा

अगर तुम सच्ची दिशामे काम करो तो बस इतना काफी है। — एमर्सन

दीनता

भिखारीको सारी दुनिया दे दी जाये फिर भी वह भिखारी ही रहेगा।
— फारसी कहावत

दीर्घजीवन

यदि तू जीवनका सदुपयोग करना जानता है तो वह पर्याप्त लम्बा है।
— सेनेका

हैरत है कि लोग जीवनको बढाना चाहते है, सुधारना नहीं। — कोल्टन

जो अपने भोजनकी मात्रा जानता है और उससे ज्यादा नही खाता, उसे कब्जकी तकलीफ नही होती और वह दीर्घ काल तक जवान रहता है।
— बुद्ध

दीर्घजीवी

दीर्घजीवी लोग खासकर मिताहारियोंमे पाये जाते है। — अर्बथनाट

दीर्घसूत्रता

काम शुरू करनेपर दीर्घसूत्रता उचित नही है। — अज्ञात

दीर्घसूत्री

कुशल बन, दीर्घसूत्री नही। — जैन उपदेश

दुई

जो शख्स एक साथ दो खरगोशोके पीछे दौडता है वह एकको भी पकडनेमे कामयाब नही होता। — फ्रेंकलिन

कोई दो मालिकोकी सेवा नही कर सकता, क्योकि या तो वह एकसे घृणा करेगा और दूसरेसे प्रेम, या फिर वह एकके प्रति आसक्ति रखेगा और दूसरेसे नफरत करेगा। तुम ईश्वर और कुबेरकी पूजा एक साथ नही कर सकते। — टॉलस्टॉय

दुनिया

हमारे इर्द-गिर्द फैली हुई ईश्वरकी दुनिया बिला शक शानदार है, मगर हमारे अन्दर रहनेवाली ईश्वरकी दुनिया उससे भी ज्यादा शानदार है। — लौंगफैलो

दुनियाका तरीका है मरे हुए साधुओको प्रशसा करना, और जीवित साधुओको यन्त्रणा देना। — होव

दुनियामे रहो, दुनियाको अपनेमे न रहने दो। — अज्ञात

दुनिया तीन चीजोसे शासित है—ज्ञान, अधिकार और शक्ल। ज्ञान-विचारवानोके लिए, अधिकार हूश आदमियोके लिए और शक्लें उन बहुसख्यक छिछले आदमियोके लिए जो सिर्फ बाहरी रूप देख सकते है। — अज्ञात

दुनियाको तमाम चीजे उसी एक अल्लाहके अलग-अलग मज़ाहिर है। — गुलशनेराज़

अगर यह दुनिया एक नहीं होती तो मै उसमे रहना न चाहूँगा, अलबत्ता अपने जीते जी मै इस सपनेको सच करना चाहूँगा। — गान्धी

ऐ लोगो, दिलको दुनिया और उसके शृगारसे दूर रखो क्योकि दुनियाकी सफाई ही गन्दगी है, और उसका मिलाप ही वियोग है। — अबुल फतह बुस्ती

सावधान रहना, यह दुनिया शैतानकी दूकान है! — हयहया

हम दुनियासे नफरत भले ही करें लेकिन उसके बगैर हमारा काम नही चलता। — फ्रान्सीसी कहावत

दुनियाकी दानिशमन्दी महज अज्ञानका बहाना है। — स्वामी रामतीर्थ

ऐ दुनिया, हम कितने थोडे बरस जीते हैं! काश, जो जीवन तू देती है वास्तविक जीवन होता! — लौंगफैलो

जो दुनियाको सबसे अच्छी तरह समझता है, वह उसे सबसे कम चाहता है। — फ्रैंकलिन

दुनियादारी

दुनियामें रह, मगर दुनियादार मत बन। — रामकृष्ण परमहंस

दुराग्रह

अपने पूर्वजोंके खोदे हुए कुएँका खारा पानी पीकर, दूसरेके शुद्ध जलका त्याग करनेवाले बहुत-से बेवकूफ दुनियामें घूमते-फिरते हैं। — विवेकानन्द

दुराचार

दुराचार मनुष्यको कमीनोंमें जा बिठाता है। — तिरुवल्लुवर

दुराशा

अगर सेवक सुख चाहे, भिखारी मान चाहे, व्यसनी धन चाहे, व्यभिचारी शुभ गति चाहे, लोभी यश चाहे, तो समझ लो कि ये लोग आकाशसे दूध दुहना चाह रहे हैं। — रामायण

दुर्गुण

क्या कारण है कि कोई शख्स अपने दुर्गुणोंको नहीं मानता? क्योंकि वह उनमें लिप्त है। जाग्रत आदमी ही अपना स्वप्न कह सकता है। — सेनेका

दुर्जन

दुर्जनको चाहे जितना उपदेश दो, वह सज्जन नहीं होगा। गदहेको नदीके जलसे चाहे जितना धोओ, क्या वह घोड़ा हो जायेगा? — अज्ञात

साँपके दाँतमे जहर होता है, मक्खीके सिरमे जहर होता है, बिच्छूकी पूँछ-मे जहर होता है, लेकिन दुर्जनके तमाम शरीरमे जहर भरा होता है ।
– अज्ञात

दुर्जन यदि विद्याभूषित भी हो तो भी त्याज्य है । क्या मणिसे अलकृत साँप भयकर नही होते । – भर्तृहरि

दुर्जन जब सन्त होनेका ढोग करता है, तो और भी बदतर हो जाता है ।
– बेकन

दुर्जन अपने आश्रयदाता तकको नाशके घाट उतारता है । – अज्ञात

नागफ़नीपर चाहे आप परम दयालुतासे ही हाथ फेरें, फिर भी वह आपको डक मारेगी । – कहावत

दुर्बलता

आदमियोकी दुर्बलता हमेशा सत्ताधीशोकी उद्धतताको आमन्त्रित करती रहती है । – एमर्सन

अपने दिलकी इस कमजोरीको छोडकर खडा हो जा और लड । यह कम-जोरी तुझे शोभा नही देती । – कृष्ण

अगर तुझे अपनी दुर्बलतापर विजय पाना है तो उसकी तुष्टि कदापि न कर । – पैन

तुम्हारा मन अत्यन्त दुर्बल—करीब-करीब मृत्पिण्ड—हुए बगैर कोई तुम-पर काबू नही पा सकता । – विवेकानन्द

मनकी दुर्बलतासे अधिक भयकर पाप और कोई नही है । – विवेकानन्द

दुर्भाग्य

इनसानकी समूची बदबख्तीका कारण उसका इकलखुरापन है ।
– कार्लाइल

दुर्भाव

मैं किसीके भी प्रति दुर्भाव नही रखता। मै केवल उस सर्वशक्तिमान्‌के बन्दोकी तरह जीना चाहता हूँ। — डिकेन्स

दुर्भावना

दुर्भावना अपने जहरका आधा भाग स्वय पोती है। — सैनेका

दुर्भावनाको मै मनुष्यत्वका कलक मानता हूँ। — गान्धी

दुर्लभ

दूसरोको नसीहत देना सबके लिए आसान है। मगर वह महात्मा दुर्लभ है जो अपने कर्तव्य-पालनमे लगा रहता है। — रामायण

जो मनुष्य मानवता, धर्मश्रवण, श्रद्धा और सयममे पराक्रमको दुलभ जानकर सयमको धारण करता है वह शाश्वत सिद्ध होता है। — महावीर

वह मनुष्य दुर्लभ है, जो प्रताप और नैपोलियनकी तरह पस्तहिम्मती अपने खूनमें नही रखते जो पराजयको नही मानते, जहाँ दूसरे निराशा देखते है वे वहाँ आशा, और जहाँ दूसरे सर्वनाश वहाँ वे विजय देखते है। — अज्ञात

दुनियामे दो चोजें बहुत हो कम पायो जाती है। एक तो शुद्ध कमाईका धन और दूसरे सत्य-शिक्षक मित्र। — अबुल जवायज

जो अप्रिय वचनाके दरिद्री है, प्रिय वचनोके धनी है, अपनी ही स्त्रीसे सन्तुष्ट रहते है और परायी निन्दासे बचते है,—ऐसे पुरुषोसे कहीं-कही ही पृथ्वी शोभायमान है। — भर्तृहरि

दुर्वचन

दुर्वचन पशुओ तकको नागवार खातिर होते है। — बुद्ध

मूर्ख लोग दुर्वचन बोलकर खुद ही अपना नाश करते है। — बुद्ध

दुश्मन

दोस्त हमारा जितना हित कर सकते है एक दुश्मन उससे ज्यादा हानिकर हो सकता है। – नीति

क्या आपके पचास दोस्त हैं ?—यह काफी नही है। क्या आपका एक दुश्मन है ?—यह बहुत ज्यादा है। – इटैलियन कहावत

हर शख़्स खुद ही अपना बदतरीन दुश्मन है। – शेफर

हर आदमी एक दुश्मन अपने दिलमे लिये फिरता है। – डेनिश कहावत

आदमीसे पाप करानेवाली दो ही चीजें है। ये दो ही इस दुनियामें आदमीके दुश्मन है—एक 'काम' और दूसरा 'क्रोध'। जिस तरह धुआँ आगको ढँक लेता है और गर्द शीशेको अन्धा कर देती है, इसी तरह ये दोनो आदमीकी अक्लपर परदा डाल देते है। – गीता

अपने दुश्मनके लिए अपनी भट्टीको इतना गरम न कर कि वह तुझे ही भूनकर रख दे। – शेक्सपीयर

हिरन, मछली और सज्जन ये तीनो केवल घास, जल और सन्तोष सेवन कर अपनी रोजी चलाते है। फिर भी इस दुनियामे शिकारी, धीवर और दुर्जन उनके नाहक दुश्मन बनते है। – भर्तृहरि

दुश्मनी

किसीसे दुश्मनी करना मेरे लिए मौत है, मै इससे घृणा करता हूँ, और तमाम शरीफ आदमियोंके प्रेमका अभिलाषी हूँ। – शेक्सपीयर

दुष्कर्म

दुष्कर्मका एक फल तो तत्काल यह मिलता है कि आत्मा एक 'वज़न', पतनको, महसूस करती है। दूसरेके दिलको दुखाकर आत्मा सुख लाभ

नही करती । इसी तरह चोर अपने चुराये धनको कभी आनन्दोल्लाससे नही भोग सकता । — अज्ञात

जिन्दगी लगातार मौतकी तरफ खिची जा रही है, बुढापा इनसानके जोशको काफूर कर देता है । मेरे शब्दोपर ध्यान दे, भयानक कर्म मत कर । — अज्ञात

दुष्ट

दुष्ट एक घूमघुमारा मूर्ख है । — कॉलरिज

दुष्टोकी शत्रुता अच्छी, न मित्रता । — रामायण

अगर मूर्ख न होते तो दुष्ट भी न होते । — कहावत

लज्जावानोको मूर्ख, व्रत-उपवास करनेवालोको ठग, पवित्रतासे रहनेवालोको धूर्त, शूरवीरोको निर्दयी, चुप रहनेवालोको निर्बुद्धि, मधुरभाषियोको दीन, तेजस्वियोको अहकारी, वक्ताओको बकवादी और शान्त पुरुषोको असमर्थ कहकर दुष्टोने गुणियोके कौन-से गुणको कलकित नही किया ? — भर्तृहरि

हो सकता है कि कोई मुसकराये, और मुसकराये, और फिर भी दुष्ट हो । — शेक्सपीयर

दुष्ट आदमी दूसरेकी बरबादीसे सिर्फ इसलिए खुश होता है कि वह दुष्ट है । — अज्ञात

दुष्ट आदमीकी बुद्धि अति मलिन कार्य करनेमे खूब तेज चलती है । उल्लुओकी दृष्टि अंधेरेमे ही काम करती है । — अज्ञात

दुष्टोका पता हमेशा किसी-न-किसी तरह लग हो जाता है । जो भेडिया है, वह लाजिमी तौरपर भेडियेकी तरह बर्तन करेगा ही । — ला फौण्टेन

वे सचमुच कालके भी काल है जिनको प्राणिवध खेल है, मर्मवेधी वाणी बोलना खिलवाड है, दूसरोको कष्ट देना ही काम है । — अज्ञात

दुष्ट आदमी हरगिज़-हरगिज़ विवेकी नहीं है। — होमर

दुष्टोंके दोषोंकी चर्चा करनेसे अपना चित्त प्रक्षुब्ध ही होता है इसलिए उसके वर्तनकी ओर लक्ष्य न देकर अथवा उसकी चर्चा करने न बैठकर उसकी उपेक्षाकी दृष्टिसे देखना ही अपने लिए श्रेयस्कर है। — विवेकानन्द

कौएको कितने ही प्रेमसे पालिए, वह कभी मास खाना नहीं छोड सकता। — रामायण

दुष्टको उपकारसे नहीं, अपकारसे ही शान्त करना चाहिए। — कालिदास

कोई अपनेको दुष्ट नहीं बतलाता। — कहावत

जिस तरह कसाई पशुओंको वधस्थलपर ले जाता है उसी तरह दुष्ट आदमी अपने शिकारोंको सम्मानकी रस्सीमे बाँधकर नाशकी ओर ले जाता है। — अज्ञात

दुष्टता

दुष्टता दुष्टको पछाड डालती है, और अत्याचारकी चरीका चारा अत्याचारीके अनुकूल नहीं होता। — यज़ीद-बिन-हुक्म-उल-सक़फी

हर दुष्टता निर्बलता है। — मिल्टन

जबतक तुझे दूसरेकी फ़जीहतपर गुदगुदी होती है, तबतक तुझमें दुष्टता बाकी है। — हरिभाऊ उपाध्याय

दुःख

एक समयमें एक दुःखसे अधिक कभी न सहन करो। कुछ लोग हैं जो तीन किस्मके दुःख एक साथ सहन करते हैं—वे तमाम जो आज तक उनपर पडे, वे तमाम जो इस वक़्त पड रहे है, और वे तमाम जिनके पडनेकी उन्हे आशंका है। — अज्ञात

जिस वक्त हमको दु खकी प्राप्ति होती है, उस वक्त किसी औरको दोष देनेका कारण नही। अपना ही दोष ढूँढ निकालना ज्ञानवीरोका काम है।
— विवेकानन्द

तुम जो कुछ भी करो, अगर वह ईश्वरकी आज्ञाके अनुसार नही है तो तुमको दु ख ही मिलेगा। — अज्ञात

दु ख एक प्रकारका छूतका रोग है। हम अगर लटका हुआ मुँह लेकर किसीसे मिलें तो उसका उल्लास कम हो जाता है। — विवेकानन्द

एक बात जो मै दिनकी तरह स्पष्ट देखता हूँ यह है कि दु खका कारण अज्ञान है और कुछ नही। — विवेकानन्द

अगर यह चाहते हो कि दु ख दुबारा न आये, तो फौरन् सुनो कि वह क्या सिखा रहा है। — बर्ग

जिसने कभी दु ख नही उठाया वह सबसे भारी दुखिया है और जिसने कभी पीर नही सही वह बडा बेपीर है। — मेनसियस

लोग नाना प्रकारके दु ख इसलिए भोग रहे है कि अधिकाश जनसमाज धर्महीन जीवन व्यतीत कर रहा है। — टालस्टाय

दु खको न तो नातेदार बँटाते है न रिश्तेदार, न मित्र, न पुत्र। मनुष्य उसे अकेला ही भोगता है, क्योकि कर्म तो करनेवालेके ही पीछे लगते है।
— अज्ञात

दु खका माप विपत्तिके स्वरूपमे नही, बल्कि सहनेवालेके स्वभावसे करना चाहिए। — एडीसन

दु खका कारण हमारी चित्त-वृत्तियोका प्रभाव ही है। — कृष्ण

मिथ्या और अनित्य पदार्थोको सत्य समझनेसे ही मनुष्यको दु खमय जीवन भोगना पडता है। — तिरुवल्लुवर

हाय, कि चन्द सिरचढोकी चालबाजियोका शिकार होकर करोडो दु ख वहन और तीव्र पश्चात्ताप करते रहे! — वाघ

उस सरीखा दु:खी कोई नही जो चाहता सब-कुछ है, करता कुछ नही।
– क्लॉडियस

ईश्वरके मार्गमें विरोधक वस्तुओंपर आसक्त होना प्रकृतिकी सजा भोगनेके लिए तैयार होना है। – अबु मुर्ताज

बड़े दु:खोमे आत्माको महान् करनेकी बड़ी शक्ति है। – विक्टर ह्यूगो

ज्यों-ज्यों काम, क्रोध और मोह छूटते जाते हैं, दु:ख भी उनका अनुसरण करके धीरे-धीरे नष्ट होते जाते हैं। – तिरुवल्लुवर

दु:ख नतीजा है पापका। – बुद्ध

देखो, जो पुरुष मुक्तिके साधनोको जानता है और सब मोहोको जीतनेका प्रयत्न करता है, उसके सब दु:ख दूर हो जाते हैं। – तिरुवल्लुवर

दु:ख-सुख

जो बाहरी चीजोंके अधीन है वह सब दु:ख है, और जो अपने अधिकारमें है वह सुख है। – मनु

जिस सुखके अन्तमे दु:ख है, वह वस्तुत: सुख नहीं दु:ख ही है और जिस दु:खके अन्तमे सुख है, वह दु:ख नही सुख है। – अज्ञात

दु:ख और सुख दोनो कालरूप है। – शीलनाथ

दु:खी

ईर्ष्या करनेवाला, घृणा करनेवाला, सदा असन्तुष्ट रहनेवाला; सदा कोप करनेवाला, सदा वहममे डूबा रहनेवाला, और दूसरोके भाग्य-भरोसे जीनेवाला—ये छह सदा दु:ख भोगते है। – अज्ञात

दु:खी आदमी बदहवास हो जाता है—उसे अच्छे-बुरेका भान नही रहता।
– रामायण

दु:खी लोग कौन-सा पाप नही करते? – रामायण

सब दु:खियोमे कर्तव्यच्युत सबसे अधिक दु खी है। — अज्ञात

दूध

समस्त प्राणियोके दूधका त्याग करना यह धर्म-दीपककी तरह मुझे दिखाई दे रहा है। — गान्धी

दूर

जिनसे तुम्हारा जी नही मिलता उनसे दूर रहो। — बुद्ध

दूरदर्शी

दूरदर्शी पुरुष आनेवाली आपत्तिका पहले ही से निराकरण कर देता है। — तिरुवल्लुवर

दूषण

गृहस्थोके लिए जो भूषणरूप है, साधुओके लिए वह दूषणरूप है। — अज्ञात

दृढ़ता

अमुक मार्गमे जानेका एक बार निश्चय किया कि फिर जान जानेकी नौबत आ जाये तो भी पीछे कदम नही रखना चाहिए। — विवेकानन्द

दृढप्रतिज्ञ

वह दृढप्रतिज्ञ आदमी जो प्राणोत्सर्गके लिए तैयार है ब्रह्माण्ड तकको हाथोपर उठा सकता है। — रोम्याँ रोलाँ

दृष्टि

मेरी आँखें रिवाज, आदर्श और स्वार्थमे अन्धी हो गयी थी। — जॉन न्यूटन

खयाल रखो कि तुम किस तरफ देख रहे हो, क्योकि जिनकी आँखें भटकती रहती है उनका दिल भटकता रहता है। — अज्ञात

कोई आदमी दूर तक नहीं देखता, अधिकांश लोग तो फकत अपनी नाक तक देखते हैं। – कार्लाइल

इन आँखोंसे क्या फायदा जब कि हियेकी फूटी हुई हों ?

– अरबी कहावत

कवि, दार्शनिक और तपस्वीके लिए सब वस्तुएँ पवित्र हैं, सब घटनाएँ लाभदायक हैं, सब दिन पवित्र हैं और सब मनुष्य देवता-तुल्य। – एमर्सन

प्रार्थनामें आँखें बन्द रखें तो नींद आती है, खुली रखें तो एकाग्रता बिगड़ती है, इसलिए अर्धोन्मीलित दृष्टि रखनी चाहिए। – अज्ञात

अर्द्धोन्मीलित दृष्टि माने 'अन्तर हरि बाहर हरि।' – विनोबा

दुर्योधनको यज्ञके सब ब्राह्मण दुष्ट-ही-दुष्ट दिखाई दिये और धर्मराजको भले-ही-भले, यही दोनोंमें अन्तर था – हरिभाऊ उपाध्याय

देर

जिसको बेवकूफ देरसे करता है, अक्लमन्द उसे शुरूमें करता है।

– स्पेनिश कहावत

वक्त न टालो, देरका नतीजा भयंकर है। – शेक्सपीयर

जहाँ कर्तव्य स्पष्ट है वहाँ देर मूर्खतापूर्ण और खतरनाक है। – अज्ञात

देर करनेमें हम अपनी ज्योतिको बरबाद करते हैं, जैसे दिनके दीपक।

– शेक्सपीयर

देव

'भूतमात्र हरि' जिसका यह सूत्र छूट गया उसका देव खो गया।

– विनोबा

लोगोंकी रक्षा करनेके लिए देव लोग, पशुपालोंकी तरह डण्डा नहीं रखते, लेकिन वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं उसे बुद्धि दे देते हैं। – अज्ञात

जबतक हमारी कषाय नही मर जाती, हम हरगिज देवतुल्य नही हो सकते । — डैकर

स्वरूप, विश्वरूप, अरूप—ये देवके तीन रूप है । — अज्ञात

देवता

बिना कहे समझ जावे उसका नाम देवता, कहेसे समझ जावे उसका नाम आदमी, कहेसे भी नही समझे उसका नाम गधा । — भोलनाथ

देश

महान् देश वे है जो महान् व्यक्तियोको जन्म देते है । — डिमराइली

देश-प्रेम

तेरा देश-प्रेम एक खुला बोदापन है । यदि तू यात्रार्थ विदेशमे जायेगा, तो कुटुम्बियोके बदले तुझे कुटुम्बी मिल जायेंगे । — इब्न-उल वर्दी

देह

नखसे लेकर शिखापर्यन्त यह सारा शरीर दुर्गन्धसे भरा हुआ है, फिर भी मनुष्य बाहरसे इसपर अगरु, चन्दन, कर्पूर आदिका लेप करता है । — शकराचार्य

मार्गमे पड़ी हुई हड्डीको देखकर मनुष्य उससे छू जानेके डरसे बचकर चलता है, परन्तु हजारो हड्डियोसे भरे हुए अपने शरीरको नही देखता । — शकराचार्य

दैन्य

दैन्यकी अपेक्षा मरण अच्छा । — अज्ञात

दैववादी

दैववादी मनुष्य तत्काल विनष्ट होता है, इसमे सशय नही । — अज्ञात

दोष

बहुत-से आदमी उन लोगोसे नाराज हो जाते है जो उनके दोष बताते है, जब कि उन्हे नाराज होना चाहिए उन दोषोसे जो कि उन्हे बताये जाते है । — वैनिंग

निर्दोष पत्थरसे सदोष हीरा अच्छा । — चीनी कहावत

अपना दोष कोई नही देख पाता । अपना व्यवहार सभीको अच्छा मालूम देता है । लेकिन जो हर हालतमे अपनेको छोटा समझता है वह अपना दोष भी देख सकता है । — अबु उस्मान

अपना भला चाहनेवालेको छह दोष टालने चाहिए—अतिनिद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस और दीर्घसूत्रता । —नीति

सबसे बडा दोष, किसी दोषका भान न होना है । — कार्लाइल

हजार गुणोका सम्पादन कर लेना आसान है, एक दोष दुरुस्त कर लेना मुश्किल । — ब्रूयर

रात्रिके पूर्वार्द्धमे जब तुम जगे हुए हो अपने दोषोपर विचार करो, और दूसरोके दोषोपर रात्रिके उत्तरार्द्धमे जब कि तुम सोये हुए हो ।
— चीनी कहावत

जब कि हमारे दोष हमे छोडते है, तो हम यह मानकर अपनी चापलूसी करते है कि हम उन्हे छोडते है । — रोशे

ईश्वर उसका भला करे जो मुझपर मेरे दोष ज़ाहिर कर दे । —अज्ञात

मुझे तो ऐसा एक भी व्यक्ति नही दीख पडता जो अपने दोष स्वयं देख सके और अपनेको अपराधी माने । — कन्फ्यूशियस

अपने पडोसीके सौ दोष सुधारनेकी अपेक्षा अपना एक दोष सुधार लेना अच्छा। — अज्ञात

अपने दोषोंको अपनेसे पहले मरने दे। — फ्रेंकलिन

चरित्रवान् अपने दोषोंको सुनना पसन्द करते हैं। दूसरी श्रेणीके लोग नहीं। — एमर्सन

जो तुम्हारे दोषोंको दिखाता है उसे गडे हुए धनका दिखानेवाला समझो। — अज्ञात

दोषदर्शन

जब कभी मुझे दोष देखनेकी इच्छा होती है तो मै अपनेसे आरम्भ करता हूँ और इससे आगे बढ ही नही पाता। —डैविड ग्रेसन

दोषान्वेषण

अगर तुम दूसरोंमें दोष निकालोगे, दुनिया तुम्हे अच्छी नजरसे नही देखेगी। — निजामी

अपने पडोसीकी छतपर पडे हुए बर्फकी शिकायत न करो, जब कि तुम्हारे खुदके दरवाजेकी सीढी गन्दी है। — कन्फ्यूशियस

दोषारोपण

क्या तुमने उस आदमीके विषयमें नही सुना जो सूर्यको इसलिए दोष देता था कि वह उसकी सिगरेट नहीं जलाता? — कार्लाइल

दोस्त

मै अपने दुश्मनोंसे खबरदार रह सकता हूँ, ओ ईश्वर, मुझे मेरे दोस्तोसे बचा! — मिकियावेली

दानिशमन्द और वफादार दोस्तसे बढकर कोई रिश्तेदार नही। — फ्रेंकलिन

इनसानका सबसे अच्छा दोस्त उसका जमीर है। — अज्ञात

बाहर-भीतरसे जागा हुआ मन एक ऐसे दोस्तका काम देता है कि फिर किसी दूसरे दोस्तकी जरूरत ही नही रह जाती। – रबिया

हर-एकको जो दोस्तीका दम भरता हो अपना दोस्त न समझ। – अज्ञात

देखो, जो यह सोचते है कि हमे उस दोस्तसे कितना मिलेगा, वे उसी दर्जेके लोग है कि जिनमें चोरो और बाजारू औरतोकी गिनती है।
– तिरुवल्लुवर

यदि तुमने ईश्वरको पहचान लिया है तो तुम्हारे लिए एक वही दोस्त काफ़ी है। यदि तुमने उसको नही पहचाना है तो उसे पहचाननेवालोसे दोस्ती करो। – जुन्नुन

दानिशमन्द दोस्तके मानिन्द जिन्दगीमे कोई बरकत नही। – एपिक्टेटस

ऐसे दोस्त न रखो जो तुम्हारे समान न हो। – कन्फ्यूशियस

सच्चे दोस्तसे जो खोलकर हाल कहनेसे सुख दूना और दुख आधा हो जाता है। – अज्ञात

जिस दोस्तको तुम्हे खरीदना पडे वह उस कीमतका भी नही है जो तुमने उसके लिए अदा की, ख्वाह वह कितनी भी हो। – जॉर्ज प्रेण्टिस

कोई दोस्त दोस्त नही है जबतक कि वह अपनेको दोस्त साबित करके न दिखा दे। – बोमेण्ट और फ्लेचर

मेरे दोस्तो ! दोस्त हैं ही नही। – अरस्तू

चिढता हुआ दोस्त मुसकराते हुए दुश्मनसे अच्छा है। – एनन

मगमूम जीवको अपना जिगरी दोस्त न बना, वह अवश्य तेरी कम्बख्तीको बढायेगा और खुशहालीको कम करेगा। वह हमेशा भारी बोझ लिये चलता है, और उसका आधा तुझे ले चलना पडेगा। – फुलर

जो ईश्वरका दुश्मन है वह इनसानका सच्चा दोस्त नहीं हो सकता। – यंग

वाल्दैन इत्तिफाकसे मिलते हैं, लेकिन दोस्त अपनी पसन्दसे। – डिलाइली

सच्चे दोस्तोंको न खुशी अकेली होती है न रंज अकेला। – चैनिंग

दोस्ती

इस दुनियामें लोगोंकी दोस्ती बाहरसे देखनेमें सुन्दर, पर भीतरसे ज़हरीली होती है। – मलिक दिनार

मुझे ऐसी दोस्ती नहीं चाहिए, जो मेरे पाँवोंमें उलझकर आगे चलनेमें बाधक हो। – गोर्की

जरूरत सिर्फ इस बातकी है कि हम औरोंके लिए उतने ही सच्चे हों जितने हम अपने लिए हैं, ताकि दोस्तीके लायक हो सकें। – थोरो

एक कुत्ता जो कि हड्डी लिये हुए है किसीसे दोस्ती नहीं पालता। – अज्ञात

तेरा रास्ता अगर किसीको मालूम है तो दिलको, इसलिए उसीसे दोस्ती कर। – निजामी

जहाँ सच्ची दोस्ती है वहाँ तकल्लुफकी जरूरत नहीं। – अज्ञात

दरिद्रकी श्रीमन्तसे, मूर्खकी विद्वान्‌से, शूरकी नामर्दसे क्या दोस्ती? – महाभारत

जो तुमसे बेहतर नहीं है उससे कभी दोस्ती न करो। – कन्फ्यूशियस

दोस्ती करनेमें रफ्तार धीमी रखो, लेकिन जब दोस्ती हो जाये तो फिर मज़बूतीसे यकसाँ जारी रखो। – सुकरात

नज़रानोंसे दोस्ती न खरीदो, जब तुम नज़राने देना बन्द कर दोगे तो ऐसे दोस्त प्रेम करना छोड़ देंगे। – फुलर

दौलत

दुष्टोंकी दौलतसे सज्जनकी निर्धनता अच्छी है। — बाइबिल

दौलतकी कामना न कर। सोनेमे गमका सामान है, उसमे एक कोडा है जो दिलकी कलीको खाता है, उसकी मौजूदगीमें प्रेम स्वार्थपूर्ण और ठण्डा हो जाता है, और घमण्ड और दिखावेका बुखार चढ जाता है। — नीति

सिवा उसके जिसे लोग अपने अन्दर लिये हुए है कोई चीज उन्हे धनवान् और बलवान् नही बनाती। दौलत दिलकी है, हाथकी नही।
— मिल्टन

नीतिमान् पुरुष ही देशकी सच्ची दौलत है। — अज्ञात

अज्ञानीके पास दौलत ऐसे है जैसे गोबरके ढेरपर हरियाली। — अज्ञात

दानके तुल्य निधि नही है। लोभके समान शत्रु नही है। शीलके समान भूषण नही है। सन्तोषके समान धन नही है। — नीति

क्या तुम धन चाहते हो? तो इन छह दोषोंको छोड दो—अतिनिद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता। — नीति

अन्यायसे पैदा किया हुआ धन ज्यादासे ज्यादा दस वर्ष टिकता है। ग्यारहवां वर्ष लगते ही समूल नष्ट हो जाता है। — नीति

वह सच्ची दौलत है जिससे दूसरोंको उपकृत किया जाये। — नीति

वह आदमी जो धनसचय करता है मगर उसे भोगता नही है, उस गधेके मानिन्द है जो सोना ढोता है और काँटे खाता है। — अज्ञात

मेरे प्रभो, मुझसे वह दौलत दूर रख जिससे आँसू, आहे और शाप चिमटे हुए है। ऐसे धनसे निपट निर्धनता अच्छी। — क्रिश्चियन स्क्राइवर

दौलत इनसानको अहकार, अय्याशी और मूढताके सामने ला पटकती है।
— एडीसन

अगर तुम्हारी दौलत तुम्हारी है, तो तुम उसे अपने साथ दूसरी दुनियाको क्यो नही ले जाते ? — अज्ञात

दौलतका रास्ता ऐसा स्पष्ट है जैसा बाजारका रास्ता। यह खासकर दो चीजोपर निर्भर है, मेहनत और किफायत। — फ्रैंकलिन

द्रोह

द्रोहीसे द्रोह करना द्रोहको दूना करता है। द्रोहका जनन प्यार है।

— धम्मपद

द्वन्द्व

जगत् द्वन्द्वसे भरपूर है। इस द्वन्द्वसे हटना अनासक्ति है। द्वन्द्वको जीतनेका उपाय द्वन्द्वको मिटाना नही है, लेकिन द्वन्द्वातीत, अनासक्त होना है।

— गान्धी

द्विविधा

नेल्सनने कहा था कि, "जब मुझे सूझ नही पडता कि लडूँ या न लडूँ तो मै हमेशा लडता हूँ।" — अज्ञात

द्वेष

हजरत अलीने खुदाके नामपर अपने मुखालिफको पछाड दिया। जब उसने अलीके मुँहपर थूक दिया तो उन्होने उसे कत्ल करनेका इरादा छोड दिया व उसकी छातीपर-से उतर पडे। मुखालिफने सबब पूछा तो बतलाया— पहले मै खुदाके कामके लिए कत्ल करना चाहता था, अब तूने जो मुझपर थूक दिया इससे मेरा व्यक्तिगत द्वेष उभर सकता है उससे उत्तेजित होकर तुझे मारूँगा तो वह गुनाह होगा। — हरिभाऊ उपाध्याय

द्वैत

द्वैत दर्शनकी उपेक्षा करो, शास्त्रमे भेद-दर्शनको हेय माना है। – अज्ञात

■

ध

धन

संसारमे सबसे निर्धन वह है जिसके पास सिर्फ धन है और कुछ नही। – अज्ञात

ख्वाहिशसे परहेज करना ही दौलत है। – अरबी कहावत

क्या तुम जानना चाहते हो कि धन क्या है? जाओ कुछ उधार ले आओ। – कहावत

निर्धन आदमी ऐसा है जैसा बिना पंखोका पक्षी या बिना मस्तूलोका जहाज। – अज्ञात

धनी-हृदयके बिना धनवान् एक भद्दा भिखारी है – एमर्सन

मायडास जिस चीजको छूता था सोनेको हो जाती थी। इन दिनो आदमी-को सोनेसे छू दीजिए, बस वह चाहे जिस चीज़मे बदल जायेगा। – अज्ञात

धन एक सापेक्ष वस्तु है; क्योकि, जिसके पास कम है, परन्तु और भी कम चाहता है, वह उससे अधिक धनवान् है, जिसके पास ज्यादा है मगर और भी ज्यादा चाहता है। – कोल्टन

धनकी तीन गति है—दान, भोग और नाश। जो न देता है, न भोगता है, उसकी तीसरी गति होती है। – भर्तृहरि

लोगोका महज उनके धनके कारण आदर न करो, बल्कि उनकी उदारता-के कारण, हम सूरजकी कदर उसकी ऊँचाईके कारण नही करते, बल्कि उसकी उपयोगिताके कारण । – बेलो

धन अनर्थकारक है—ऐसी निरन्तर भावना कर। सचमुच उसमें सुखका लेश भी नही है। धनवान्‌को पुत्र तकसे डरना पडता है, यह रीति सर्वत्र जानी हुई है । – अज्ञात

आश्चर्य ! जीवनकी वास्तविक आवश्यकताओकी पूर्तिके लिए कितने कमकी जरूरत है । – एण्ड्रू कारनेगी

अपना कुल धन निधनोमे बँटवाकर मुहम्मद साहबने कहा—"अब मुझे शान्ति मिली । निस्सन्देह यह शोभा नहीं देता था कि मै अपने अल्लाहसे मिलने जाऊँ और यह साना मेरी मिल्कियत रहे ।" – अज्ञात

धनसे तुमको सिर्फ रोटी मिल सकती है, इसे ही अपना उद्देश्य और साध्य न समझो । – रामकृष्ण परमहंस

दुनियामे सबसे वाहियात खामख्याली यह है कि पैसा आदमीको सुखी बना सकता है। मुझे अपने धनसे तबतक कोई तृप्ति नही मिली जबतक मैने उससे नेक काम करने शुरू न कर दिये । – ग्रैंट

खुदपर खर्च किया हुआ पैसा गलेका पत्थर हो सकता है, दूसरोपर खर्च किया हुआ हमे फरिश्तोके पख दे सकता है । – हिचकॉक

जो धनका स्वामी है, पर इन्द्रियोंका नही, वह इन्द्रियोको वश न रखनेसे धनसे भ्रष्ट हो जाता है। – विदुर

धर्मार्थके लिए ही क्यो न हो, धनकी इच्छा शुभावह नहीं है। कीचडको बादमे धोनेकी अपेक्षा उसके स्पर्शसे दूर रहना ही अच्छा । – अज्ञात

धनकी बडी जबरदस्त उपाधि है । ज्यो ही आदमी धनी हुआ कि बिलकुल बदल जाता है । – रामकृष्ण परमहंस

बेईमानके धनसे ईमानदारकी गरीबी अच्छी । – अज्ञात

आत्माकी किसी भी आवश्यक चीजके खरीदनेके लिए धनकी जरूरत नहीं है। – थोरो

जिसे धनका गरूर है वह बेवकूफ है। – अज्ञात

कोई आदमी धन कमाकर मर जाये और हरामखोरोंके लिए लड़ने-खानेको छोड़ जाये—इससे बड़ा गुनाह नहीं। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि अपनी जिन्दगीमें ही अपने सारे धनको परोपकारमें लुटा दूँगा। – कारनेगी

जो धनका अति सचय करते हैं, वे उसे दूसरोंके लिए ही इकट्ठा करते हैं। मधुमक्खियाँ बड़ी मिहनतसे शहद इकट्ठा करती है, मगर उसे पीते और ही हैं। – अज्ञात

अमीर बनना है तो एक कोनेमें बैठ जाओ और विचार करो। कोई भी चीज हो, यह जरूरी नहीं कि वह कोई बड़ी बात ही हो, बल्कि जो चीज़ तुम्हें दिखे उसीपर सोचने लग जाओ। और अगर तुम उससे पैसा नहीं कमा सकते तो यकीन रखो तुम्हारे दिमागमें फॉसफोरसका एक कण भी नहीं है। – फोनोग्राफका निर्माता एडीसन

जीवनके अतिरिक्त और कोई धन नहीं है,—जीवन जिसमें प्रेम, आनन्द और प्रशंसाकी समस्त शक्तियोंका समावेश है। – रस्किन

धोखा देकर दगाबाज़ीसे धन जमा करना बस ऐसा है जैसा कि मिट्टीके कच्चे घड़ेमें पानी भरकर रखना। – तिरुवल्लुवर

जो धन दया और ममतासे रहित है उसकी तुम कभी इच्छा मत करो और उसको कभी अपने हाथसे मत छुओ। – तिरुवल्लुवर

बना-बनाया धनिक आदमी पा जाना तो ठीक है, मगर यह हो सकता है कि वह बना-बनाया बेवकूफ हो। – जॉर्ज ईलियट

धन परम ईर्ष्याकी वस्तु है परन्तु न्यूनतम उपभोगकी, स्वास्थ्य परम उपभोगकी वस्तु है परन्तु न्यूनतम ईर्ष्याकी। – कोल्टन

धन वह अतल समुद्र है जिसमें इज्जत, जमीर और सचाई डुबोये जा सकते है। — काजले

मानवहृदयके लिए तंगी और तवगरी दोनो ही भार है, जैसे मानव शरीर के लिए हिम और अग्नि दोनो ही घातक है। फाकाकशी और पेटूपन दोनो समानरूपसे मनुष्यके हृदयसे ईश्वरको रुखसत कर देते हैं। — थ्योडोर पार्कर

अन्यायका धन दस वर्ष ठहरता है, ग्यारहवाँ वर्ष लगनेपर समूल नष्ट हो जाता है। — अज्ञात

देखो, जो धन निष्कलकरूपसे प्राप्त किया जाता है उससे धर्म और आनन्दका स्रोत बह निकलता है। — तिरुवल्लुवर

अन्यायसे कमाया धन वशका नाश कर देता है। — महाभारत

सबसे अधिक धनवान् वह है जिसकी सबसे कम आवश्यकताएँ हो। — कहावत

अत्यन्त क्लेशसे, धर्मके त्यागसे और दुश्मनोके पैरो पडनेसे जो धन मिले वह धन मुझे नही चाहिए। — चाणक्य

धन जिसका चाकर है व बडभागी है, जो धनके चाकर है वे अभागी। — हसन

तुम्हारे रुपयोकी सत्ता तुम्हारे पडोसीकी तगीपर है। जहाँ तगी है वही तवगरी रह सकती है। — गान्धी

तमाम पवित्र चीजोमे, धन कमानेमे पवित्रता सर्वोत्तम है। — मनु

धनके लिए किया गया काम सच्चा काम नही है। — रस्किन

धनका प्रेम सब पापोकी जड है। — टिमोथी

जहाँ धन ही परमेश्वर है वहाँ सच्चे परमेश्वरको कोई नही पूजता। — अज्ञात

मनुष्यके जीवनमे वह सबसे बुरी घडी होती है जब वह बिना परिश्रम किये धन कमाना चाहता है। — अज्ञात

धनके साथ दो सन्ताप लगे रहते हैं—अहंकार और खुशामदी। – अज्ञात

धनका दायाँ हाथ परिश्रम और बायाँ हाथ किफायत है। – अज्ञात

धनमद

धनके मदसे मत्त आदमी तबतक होशमें नहीं आता जबतक गिरे नहीं।
– अज्ञात

धनवान

बिना उदारताके धनवान् आदमी धूर्त है, और शायद यह साबित करना मुश्किल बात न होगी कि वह बेवकूफ भी है। – फील्डिंग

घोर परिश्रम और अन्तरात्माकी उपेक्षा किसीको भी दौलतमन्द बना देते हैं। – जर्मन कहावत

जो ईश्वरको अपना सर्वस्व मानता है वही असली धनवान् है और दुनियाकी चीजोंमें अपनी सम्पत्ति माननेवाला तो सदा गरीब ही रहेगा।
– हयहया

जो दूसरोंको खसोटकर धनवान् बना है वह मृतकी है, जो सचाई और ईमानदारीके कारण निर्धन है वह अति शुद्ध। – सादी

धनवान् आदमी अन्यायी आदमी है, या अन्यायीकी सन्तान। – अज्ञात

जो अधिक धनाढ्य है वही अधिक मोहताज है। – सादी

धनवान् दूसरेकी तकलीफको नहीं जानते। – अज्ञात

आदमी मालदार होनेसे धनी नहीं कहा जा सकता बल्कि उदारचित्त होनेसे। – सादी

वह मनुष्य जो सत्यके अनुसरणके लिए दृढ़-प्रतिज्ञ है सबसे अधिक धनवान् है; पैसेके लिहाजसे चाहे वह निर्धनोंमें सबसे अधिक निर्धन ही क्यों न हो। – अज्ञात

जो रोटीकी तरफसे बेफ़िक्र है वह काफी धनवान् है। – अज्ञात

जिस तरह बन पड़े उसी तरह लोगोंको धनवान् होनेकी शिक्षा देना मानो उन्हें 'विपरीत बुद्धि' देना है। – गान्धी

धनवान् होकर मरनेके गरूरपर जहन्नुमवाले दहाड़ मारकर हँस पड़ते हैं। – जॉन फॉस्टर

बिलाशक ऐसे बेशुमार आदमी हैं जो अन्यायी, बेईमान, धोखेबाज, जफाकार, फरेबी, झूठे और विश्वासघाती बनकर धनवान् हुए हैं। क्या यह सोचना पागलपन नहीं है कि ऐसे आदमी सुखी हो सकते हैं? क्या वे इस दौलतके अल्पल्पांशका भी आनन्दसे उपभोग कर सकते हैं? क्या उनका अन्तरात्मा उन्हें दिन-दिन-भर और रात-रात-भर झिड़की, पीड़ा, सन्ताप और यन्त्रणा, नहीं देता रहता होगा? – अज्ञात

अगर तू धनवान् है तो तू कंगाल है, क्योंकि तू उस गधेकी तरह, जिसकी कमर बोझेसे झुकी जा रही है, अपना भारी दौलत ढोये चला जा रहा है, और मौत आकर तेरा बोझा उतारती है। – शेक्सपीयर

धनिक

धनिकोंके आमोद-प्रमाद गरीबोंके आँसुओंसे खरीदे जाते हैं। – अज्ञात

मैं ऐसे समयमें हूँ जिसमें श्रीमन्तको उच्च समझा जाता है, उसका सम्मान करना परम धर्म समझा जाता है और निर्धनको तुच्छ समझा जाता है। – इब्न-उल-वर्दी

धनी

बेहतरीन साथी, मासूमियत और तन्दुरुस्ती, और बेहतरीन दौलत, दौलतसे बेखबरी। – गोल्डस्मिथ

धनसे धनीके पास द्रव्य होता है, पर उसको वह पद नहीं प्राप्त होता जो कि हृदयके धनीको होता है, चाहे उसके पास कम ही धन क्यों न हो। – हजरतअली

मैं तो धनी हूँ क्योंकि ईश्वरके सिवा किसी औरका दास नहीं हूँ, और वस्तुतः निर्बल हूँ पर उसीके सहारे सबल हूँ। – एक कवि

जहाँ बुद्धिहीन धनियोंका नाम भी नहीं सुना जाता, उस बनको चल। – भर्तृहरि

रेशमके लबादोंमें कितनी नंगी आत्माएँ पायी जाती हैं। – थॉमस ब्रुक्स

बिना ज्ञान और विद्वत्ताके धनी लोग सुनहरी ऊनवाली भेड़ों-जैसे हैं। – सोलन

वह आदमी सबसे धनवान् है जिसकी खुशियाँ सबसे सस्ती हैं। – थोरो

धनी बेवकूफ उस सूअरके मानिन्द है जो अपनी ही चर्बीसे घुट मरता है। – कन्फ्यूशियस

धनोपार्जन

प्रत्येक उद्यमी मनुष्यको आजीविका पानेका अधिकार है, मगर धनोपार्जनका अधिकार किसीको नहीं। सच कहें तो धनोपार्जन स्तेय है, चोरी है। जो आजीविकासे अधिक धन लेता है, वह जानमें हो या अनजानमें, दूसरोंकी आजीविका छीनता है। – गान्धी

धन्य

परमेश्वरका दुनियाके प्रति प्रेम ही मातारूपसे प्रकट हुआ है, ऐसा जिसे प्रतीत होता है वह पुरुष धन्य है। परमेश्वरका पितृत्व ही पुरुषरूपसे प्रकट हुआ है ऐसा जिस स्त्रीको प्रतीत है वह स्त्री धन्य है। और माता-पिता केवल परमेश्वरस्वरूप ही हैं ऐसा जिन्हें प्रतीत होता है वे बच्चे भी धन्य हैं। – विवेकानन्द

धमकी

प्रेम भी यदि धमकी लेकर तेरे सामने आवे तो उसे बैरंग वापस कर दे। धौंस सहनेसे बरबाद हो जाना अच्छा है, धौंस सहना रोज़-रोज़ बरबाद होनेका निमन्त्रण देना है। – अज्ञात

धर्म

मुझसे यह मत पूछो कि धर्ममें क्या फायदा है ? बस, एक बार पालकी उठानेवाले कहारोंकी ओर देख लो और फिर उस आदमीको देखो जो उसमें सवार है। — तिरुवल्लुवर

मनके सभी द्वार सत्यके लिए खुले हों और निर्भयता उसकी पृष्ठभूमिमें हो, उस समय हम जो भी विचारें या करें वह सब तत्त्वज्ञान या धर्ममें समाविष्ट हो जाता है। — प्रज्ञाचक्षु प० सुखलालजी

सच्चा धर्म हृदयकी कविता है, वहीं तमाम सद्‌गुण कुसुमित और पुष्पित होते हैं। — जोबर्ट

यह समझकर कि मानो तू सदा ही इस जगत्‌में रहेगा, विद्यार्जन कर, और यह समझकर कि मौतने तेरे बाल पकड रखे हैं, धर्मका अनुष्ठान कर।
— हरिहर

पहले धर्म-ज्ञान प्राप्त करो, पीछे और कुछ। — अबुल अब्बास

धर्म कुछ जीवनसे भिन्न नही है, जीवन ही धर्म माना जाये। बगैर धर्मका जीवन मनुष्य-जीवन नही है, वह पशु-जीवन है। — गान्धी

जैसे हम अपने धर्मको आदर देते है वैसे ही दूसरेके धर्मको दें, मात्र सहिष्णुता पर्याप्त नही है। — गान्धी

आप मेरी सारी जिन्दगीको गौरसे देखिए, मैं कैसे रहता हूँ, कैसे खाता हूँ, कैसे बैठता हूँ, कैसे बातचीत करता हूँ, और आमतौरपर मेरा बरताव कैसा रहता है, सो सब आप पूरी तरह देखिए। इन सबको मिलाकर जो छाप आपपर पडे, वही मेरा धर्म है। — गान्धी

जिसमें मनुष्यता नही है उसमें लवलेश धर्मात्मापन नही है।
— अरबी कहावत

एक धर्मसे दूसरे धर्ममें लोगोंको लेनेकी प्रथा मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगती। दो विभिन्न धर्मोंके स्त्री-पुरुषोंमें विवाह होना असम्भव अथवा अयोग्य है, ऐसा मैं नहीं मानता। – गान्धी

मेरे लिए सत्यसे परे कोई धर्म नहीं है, और अहिंसासे बढकर कोई परम कर्त्तव्य नहीं है। – गान्धी

हर मौके और हर हालतमें जो अपना फर्ज दिखाई दे उसीको अपना 'धर्म' समझकर पूरा करना चाहिए, दूसरे किसी 'धर्म' की तरफ नहीं जाना चाहिए। जैसा भी अपनेसे बन पड़े अपना यह कर्त्तव्य या फर्ज पूरा करते हुए ही मरना ठीक है। – गीता

समाजमें-से धर्मको निकाल फेंकनेका प्रयत्न बाँझके पुत्र पैदा करने जितना ही निष्फल है, और अगर कहीं सफल हो जाये तो समाजका उसमें नाश है। – गान्धी

धर्म-परिवर्तनके बारेमें मेरा कहना यह नहीं है कि कभी धर्म-परिवर्तन हो ही नहीं, किन्तु एक-दूसरेको अपना धर्म बदलनेके लिए प्रेरित न करना चाहिए। मेरा धर्म तो सच्चा और दूसरा झूठा, ऐसे जो विचार ऐसे आमन्त्रणके पीछे है, उन्हें मैं दूषित समझता हूँ। – गान्धी

धर्म अगर सिर्फ बदनकी कसरत, होठोंका हिलाना, घुटनोंका झुकाना होता तो लोग स्वर्गको ऐसी आसानीसे चले जाया करते जैसे किसी दोस्तसे मिलने चले जाते है, लेकिन दुनियाकी प्यारी चीजोंसे अपना मन और आसक्ति हटाना, अपने सब सद्‌गुणोंको विकसित करना, और उनमें-से हर-एकको अपने-अपने कार्यमें लगाना, और तबतक लगाये रखना कि काम हमारे हाथों उन्नत हो जाये—यह, यह है कठिन चीज। – बक्स्टर

जो किसी ठोस धर्मका अनुयायी नहीं है उसका कभी विश्वास न करो, क्योंकि जो ईश्वरके प्रति झूठा है वह मनुष्यके प्रति कभी सच्चा नहीं हो सकता। – लॉर्ड बर्ले

धर्म एक भ्रमात्मक सूर्य है, जो कि मनुष्यके गिर्द तबतक घूमता रहता है, जबतक कि मनुष्य मनुष्यताके गिर्द नही घूमता। —कार्ल मार्क्स

यह कल्पना करना धर्मके लिए बडे कलककी बात है कि वह खुशी और खुशमिजाजीका दुश्मन है, और विचार-निमग्न नजरो और गम्भीर चेहरोकी सख्त अपेक्षा रखता है। — वाल्टर स्काट

धर्म कहते है, हर चीजका इस्तेमाल ईश्वरके लिए करनेको। — बीचर

किसी भी लौकिक विद्याकी अपेक्षा धर्मज्ञान श्रेष्ठ है। — विवेकानन्द

अपने धर्मको दिखने दो। दीपक बोलता नही, चमकता है। — कॉयलर

धम—अहिसा, सयम, तप—सर्वश्रेष्ठ मगल है। जिसका मन इस धर्ममे लगा रहता है उसे देव भी नमस्कार करते है। — महावीर

कोई आदमी जो धमको इसलिए अलग रख देता है कि उसे सोसाइटीमे जाना है, उस आदमीके मानिन्द है जो जूतोको इसलिए उतारकर रख देता है कि उसे काँटोपर चलना है। — मैसिल

उपयोगिता धर्मका शरीर है, चित्त-शुद्धि आत्मा। — विनोबा

आदमी धर्मके लिए झगडेगा, उसके लिए लिखेगा, उसके लिए मरेगा, सब-कुछ करेगा मगर उसके लिए जियेगा नही। — कोल्टन

उस आदमीकी जिन्दगी हैवानकी जिन्दगी है जिसने धर्म, धन और सुख प्राप्त नही किया, लेकिन इन तीनोमे भी धर्म प्रमुख है, क्योकि धर्मके बिना न धन सम्भव है न सुख। — अज्ञात

विरोध, युद्ध और हत्या भी धर्मके अग हो सकते है मगर विद्वेष और घृणा धर्मसे बाहर है। — अरविन्द घोष

हृदयमे धर्मके बिना, बुद्धिका विकास सिर्फ सभ्य बर्बरता है और पोशीदा शैतानियत है। — बुनसैन

धर्म इस ससारसे मोक्षको ले जानेवाला पुल है, इसलिए उसका एक पैर ससारमे और एक पैर मोक्षमे है । – विनोबा

धर्म अपना है—यह एक कल्पना ही है । 'अपना धर्म' क्या है ? जैसे महासागर किसीका नही वैसे ही धर्म भी किसीका नही । – अज्ञात

धर्म जनताके लिए अफीम है । – कार्ल मार्क्स

तू किसी भी धर्मको मानता हो इसका मुझे पक्षपात नही । जिस धर्मसे ससार-मलका नाश हो उसे तू सेवन करना । – अज्ञात

अगर धर्म आपके मिजाजके लिए कुछ नही करता तो उसने आपकी आत्माके लिए कुछ नही किया । – क्लेटन

मनुष्यको शाश्वत जीवन देना ही धर्मका कार्य है । – विवेकानन्द

दो धर्मोका कभी भी झगडा नही होता । सब धर्मोका अधर्मसे ही झगडा है । – विनोबा

धर्म कलाका मोहताज नही है, वह अपनी ही शानपर खडा है । – गेटे

विनयके सामने झुकना धर्म है, ज़ोरो-ज़ब्रके सामने झुकना अधर्म है ।
– गान्धी

जो परम अर्थ-सिद्धि चाहता है उसे शुरूसे ही धर्मपर चलना चाहिए, क्योकि सच्चा लाभ उसी तरह धर्मसे अलग नही है, जिस तरह स्वर्गलोकसे अमृत । – अज्ञात

धर्म ज्ञानमे नही पवित्र जीवनमें है । – अज्ञात

कोई इच्छा पूरी हो जाये इसलिए, अथवा भयसे, लोभसे, या प्राण बचानेके लिए भी धर्म नही छोडना चाहिए । – उपनिषद्

जो काम शुरूसे ही न्याययुक्त हो वही धर्म और जो अनाचार युक्त हो वह अधर्म । – महाभारत

किसी कामको सिद्ध करनेके हेतुसे या भय अथवा लोभके कारण धर्मका त्याग नही करना, आजीविका तकका नाश होता हो तो भी धर्मका त्याग नही करना। धर्म नित्य है सुख-दुःख अनित्य है, जीव नित्य है, शरीर अनित्य है। —महाभारत

प्राणोत्सर्ग होते देखकर भी धर्मका पालन करना चाहिए। — अज्ञात

धर्म केवल लोगोकी सेवामे है, वह तसबीह या मुसल्लामे नही है। — सादी

धर्ममे 'मेरा' 'तेरा' लगाना तो कुफ्रके झण्डेको काबेमे खडा करना है। — महात्मा भगवानदीन

आनन्द-रहित धर्म, धर्म नही है। — थ्योडोर पार्कर

विज्ञान और धर्म एक-दूसरेके उसी तरह अविरोधी है जिस तरह प्रकाश और बिजली। — रेवरेण्ड फौकी

धमके खण्डनका अन्तिम पाठ यह है कि मानवजातिके लिए मानव सर्व-श्रेष्ठ सत्त्व है—(इसलिए) उन सभी परिस्थितियोको खत्म कर दिया जाये, जिन्होने कि मानवको एक पतित, दास, उपक्षित, घृणास्पद प्राणी बना दिया है। — कार्ल मार्क्स

जो न्यायके अनुकूल है वह कभी धर्मके प्रतिकूल नही हो सकता। — ग्लेडस्टन

धर्म मानवी अन्तःकरणके विकासका फल है, इसलिए धर्मके प्रामाण्यका आधार पुस्तक नही अन्तःकरण है। — विवेकानन्द

तत्त्वज्ञान = बौद्धिक तन्मयता, काव्य = भावनामे तन्मयता, धर्म = आचारमे एकता — स्वामी रामतीर्थ

जो धर्म शुद्ध अर्थका विरोधी है वह धर्म नहीं है। जो धर्म शुद्ध राजनीतिका विरोधी है वह धर्म नहीं है। धर्म-रहित अर्थ त्याज्य है। धर्म-रहित राज्य-सत्ता राक्षसी है। अर्थ आदिसे अलग धर्म नामकी कोई वस्तु नहीं है। – गान्धी

अगर आप शिक्षाको धर्मसे वंचित कर देंगे, तो आप चालाक शैतानोंकी एक जाति पैदा करेंगे। – प्रो० ह्वाइटहैड

आप लोग धर्मकी चर्चा मन-भर करते हैं, मगर अमल कण-भर भी नहीं करते। ज्ञानी पुरुषका चाहे समूचा जीवन धर्ममय हो तो भी वह बहुत कम बोलता है। – रामकृष्ण परमहंस

धर्माचरण अकेले करना चाहिए, इसमें सहायककी जरूरत ही नहीं है। – अज्ञात

अगर धर्म कल इस दुनियासे बिलकुल नष्ट हो गया तो क्या होगा? उसमें-से मनुष्य ही नष्ट हो जायेंगे और दुनिया गोया पशुका साम्राज्य हो जायेगी। जंगलमें घूमनेवाले पशुओं और ऐसी स्थितिवाले मनुष्योंमें कोई फर्क नहीं रहनेवाला। केवल इन्द्रियोंकी वासना तृप्त करते बैठना यही मनुष्यका साध्य नहीं है, स्वतः शुद्ध ज्ञानरूप होना यही उसका साध्य है। – विवेकानन्द

मेरे उपदेशित धर्मको बेड़ेकी तरह जानो, वह पार उतारनेके लिए है, ढोकर ले चलनेके लिए नहीं। – बुद्ध

जो धर्मके गौरवको पूज्य मानकर शान्त और नम्र होता है उसीको सच्चा शान्त और सच्चा नम्र समझना चाहिए। अपना मतलब साधनेके लिए कौन शान्त और नम्र नहीं बन जाता? – बुद्ध

स्वधर्मपर प्रेम, पर-धर्मपर आदर, अधर्मपर दया—मिलकर धर्म। – विनोबा

धर्मपालन

धर्मपालन वही कर सकता है जो फाँसीपर भी अपना निश्चय न तोडे।

— अज्ञात

धर्म-प्रसार

अपने धर्मका प्रचार करनेका बेहतरीन तरीका उसे अपने जीवनमे उतारना है।

— अज्ञात

धर्म-मार्ग

जिस जगहपर एक कदम उठाकर पहुँच जाना चाहिए वहाँ पहुँचनेके लिए एक हजार कदम न उठा। धर्मकार्यमे गिन-गिनकर आगे बढेगा तो उस मुकाम तक पहुँच ही नही पायेगा।

— जुन्नेद

धर्म-वचन

हम हर-एक वचनको, जिसके लिए धर्मशास्त्रका वचन होनेका दावा किया गया हो, सत्यकी निहाईपर दयारूपी हथौडेसे पीटकर देख लेना चाहिए। अगर वह पक्का मालूम हो और टूट न जाये तो ठीक समझना चाहिए, नही तो, हजारो शास्त्रवादियोके रहते हुए भी 'नेति-नेति' कहते रहना चाहिए।

— गान्धी

धर्म-शास्त्र

अपना उल्लू सीधा करनेके लिए शैतान धर्म-शास्त्रके हवाले दे सकता है।

— शेक्सपीयर

धर्म-समन्वय

जितना सम्भव था उतना विविध धर्मोका अध्ययन करनेके बाद मै इस निर्णयपर आया हूँ कि सब धर्मोका एकीकरण करना यदि उचित और आवश्यक है, तो उन सबकी एक बडी चाबी होनी चाहिए। यह चाबी सत्य और अहिंसा है।

— गान्धी

धर्मज्ञान

धर्मज्ञानकी प्राप्ति बाहरी दुनियाके पढनेसे नही, अन्दरूनी दुनियाके पढनेस होती है। – विवेकानन्द

धर्मात्मा

मनुष्य धर्मके लिए जोरशोरकी चर्चा करेगा, गीत गायेगा, नाचेगा, धर्म-पर बडी-बडी पुस्तके लिखेगा, लेख लिखेगा, धर्मके लिए जनूनी लडाइयाँ लडेगा, मरेगा, मारेगा, सब-कुछ करेगा मगर जीवनमे धर्म उतारकर स्वय धार्मिक पुरुष—धर्मात्मा—न बनेगा। – सत्यभक्त

हर हालतमे पाँच बाते करना पूर्ण धर्मात्मापन है, वे पाँच बातें हैं गम्भीरता, आत्माकी उदारता, मुखलिसी, लगन और दया। – कनफ्यूशियस

धर्मपुस्तकोके ज्ञानसे मनुष्य धर्मात्मा नही होता, किन्तु उनके अनुसार जीवन बितानेवाला व्यक्ति ही धर्मात्मा है। – टेलर

यदि तुम्हे तुम्हारी सेवा करनेवाले धर्म-परायण मनुष्योमे मिलना है तो वैसे मनुष्य मिलने तो जरूर मुश्किल है, किन्तु यदि तुम खुद धर्म-परायण मनुष्योकी सेवा करना चाहते हो तो वैसे बहुत-से मिलेंगे। – जुन्नेद

अगर तू दुनियामे धर्मात्मा और पुण्यवान् बनना चाहता है तो ऐसे काम कर जिनसे किसीको कष्ट न पहुँचे। मौतका कभी भय मत कर और रोटियोकी चिन्ता छोड दे, क्योकि यह दोनो चीजे वक्तपर खुद ही हाजिर हो जाती है। – शब्सतरी

धन्धा

अपने धन्धेको चला! वह तुझे न चलाने लगे! – फ्रेंकलिन

धार्मिक

वही पुरुष शीलवान् और धार्मिक है जो अपने या दूसरेके लिए पुत्र, धन आदिकी इच्छा नही करता। – बुद्ध

धीर

समुद्रमन्थनसे देवोंको अमूल्य रत्न मिले तो भी सन्तोष नही माना, उसके बाद भयकर विष निकला उसमे डरे नही, जबतक अमृत न निकल आया रुके नही। धीर पुरुष चाहे जितने प्रलोभन या भयके प्रसग आवें मगर निश्चित काय सिद्ध किये बिना चैनसे नही बैठते। — अज्ञात

नीतिनिपुण लोग निन्दा करें या स्तुति, लक्ष्मी आवे या जावे, मृत्यु आज हो आ जाये या युगान्तरके बाद, परन्तु धीर पुरुषोका न्यायमार्गमे कदम नही डिगता। — भर्तृहरि

यथार्थमे धीर पुरुष तो वे ही है जिनका चित्त विकार उत्पन्न करनेवाली परिस्थितिमे भी अस्थिर नही होता। — कालिदास

धूर्त

जो यह कहता है कि ईमानदार आदमी नामक कोई चीज है ही नही, वह खुद धूर्त है। — बर्कले

मुखमे मधु, हृदयमे हलाहल, धन्धा धोकाजनोका। — कहावत

वह बिला शक बडेसे बडा दैत्य है जो बाहरसे भेड और अन्दरमे भेडिया है। — डेनहम

ससारमे दीर्घ अनुभवके बाद, मै ईश्वरके समक्ष, दावेके साथ कहता हूँ कि मेरी जानकारीमे कोई ऐसा धूर्त नही आया जो कि दु खी न हो। — जूनियस

निहायत ईमानदार और समझदार आदमी भी धूर्त-द्वारा छला जा सकता है। — जूनियस

हो सकता है कि आदमी मुसकराये, और मुसकराये, और धूर्त हो। — शेक्सपीयर

धूर्तता

जब लोमडी उपदेश दे, अपनी बतखोकी सँभाल रखना। — कहावत

धरती उकता गयी है, और आसमान थक गया है सत्ताधीशोके उन थोथे शब्दोको सुन-सुनकर जिन्हें वे सत्य और न्याय बघारते हुए इस्तेमाल करते है। – बर्ड्सवर्थ

बहुत-से लोग काटनेसे पहले चाटते है। – कहावत

धूल

ईश्वरकी आँखोमे धूल डालनेकी कोशिश करोगे तो खुद अन्धे हो जाओगे। – स्वामी रामतीर्थ

धैर्य

शूरवीरताका सबसे नफ़ीस, सबसे शानदार और सबसे नायाब अग है धीरज। तमाम खुशियो और तमाम शक्तियोका मूलाधार है धीरज। – जॉन रस्किन

धैर्य, मनुष्यकी दूसरी वीरता, शायद पहलीसे भी बढकर है। – एण्टोनियो

मै अकेला ही सग्राम नही करता; बल्कि इस सग्राममे मेरा साथी धैर्य भी है। – अज्ञात

मनुष्यका धैर्य उसकी प्रशसामे गिना जाता है, और रोना चिल्लाना उसका अवगुण समझा जाता है। – मुतनब्बी

धोखा

वह जो इरादतन् अपने मित्रको धोखा देता है, अपने ईश्वरको धोखा देगा। – लेवेटर

मनुष्य मनुष्यकी आँखोमे धूल झोक सकता है, परमात्माकी आँखोमे नही। – अज्ञात

धोखेबाजको धोखा देना न्याय और उचित नही है। –स्पेनिश कहावत

स्वार्थ छोडना ही धार्मिकताकी सच्ची कसौटी है। – विवेकानन्द

अगर कोई आदमी मुझे एक बार धोखा देता है, तो धिक्कार है उसपर, अगर वह मुझे दो बार धोखा दे जाता है तो लानत है मुझपर।

– कहावत

जब हम दूसरेको धोखा देते हैं उस वक्त हम अपने-आपको ही धोखा देते हैं। – अज्ञात

आदमी जितना दूसरोंको धोखा देने वक्त धोखा खाते हैं उतना कभी नहीं खाते। – ला रोशे

तमाम धोखोंमें पहला और सबसे बुरा अपने-आपको धोखा देना है— इसके आगे शेष पाप कुछ भी नहीं हैं। – बेलो

किसने तुझे इतनी बार धोखा दिया है जितनी बार खुद तूने अपने-आपको ?

– फ्रेंकलिन

तुम सोचते हो कि अमुक आदमी तुम्हारी धोखेबाजीमें आ गया। अगर वह ऐसा ही 'बनता' है तो कौन बडा धोखा खा रहा है, वह या तुम ?

– ब्रूयर

ध्यान

क्या तुम्हें मालूम है—सात्त्विक (पवित्र) प्रकृतिका मनुष्य कैसे ध्यान करता है ? वह आधी रातको, अपने बिस्तरपर, मशहरीके अन्दर, ध्यान करता है, ताकि और लोग उसे न देख सकें। – रामकृष्ण परमहंस

जो जिसका मनसे ध्यान करता है, जिसको वाणीसे बोलता है, जिसको कर्मसे करता है, उसीको प्राप्त होता है। – यजुर्वेद

इच्छाओंसे ऊपर उठ जाना ही ध्यान है। – स्वामी रामतीर्थ

ध्येय

ध्येयके लिए जीना ध्येयकी खातिर मरनेसे मुश्किल है। – अज्ञात

यदि परिस्थिति अनुकूल हो तो सीधे अपने लक्ष्यकी ओर चलो, लेकिन अगर परिस्थिति अनुकूल न हो तो उस मार्गका अनुसरण करो जिसमे सबसे कम बाधा आनेकी सम्भावना हो। – तिरुवल्लुवर

न्याय-परायण रहो और डरो मत, तुम्हारे तमाम ध्येय अपने देश, अपने परमात्मा और सत्यको खातिर हो। – शेक्सपीयर

■

न

नकल

हर मनुष्यके शिक्षणमे एक वक्त आता है जब कि वह इस निर्णयपर पहुँचता है कि ईर्ष्या अज्ञान है, नकल आत्महत्या है! • वह ताकत जो उसमे निवास करती है प्रकृतिमे नयी है और उसके सिवा कोई नही जानता कि वह क्या है जिसे वह कर सकता है, और जबतक वह आजमाये नही न वही जान पाता है। – अज्ञात

नफ़रत

तू भला है फिर भी बुरेम नफरत मत कर। बुरेसे बुरे आदमीसे भी भलाईकी आशा की जा सकती है। – जामी

बुलबुलको इसकी क्या परवाह कि मेढक उसके गानेसे नफरत करता है? – बोचर

दो चीजें है जिनसे मै नफरत करता हूँ; नास्तिक विद्वान् और मूर्ख भक्त। – अज्ञात

नफरत दिलका दीवानापन है। – बायरन

हम कुछ लोगोसे नफरत करते है क्योकि हम उन्हे नहीं जानते, और हम उन्हें नही जानेंगे क्योकि हम उनसे नफरत करते हैं। – कोल्टन

अगर तुम अपने शत्रुओसे घृणा करोगे तो तुम्हारे मनको एक ऐसी विषाक्त आदत पड जायेगी जो कि क्रमश उनपर बरस पडेगी जो कि तुम्हारे मित्र है या जिनके प्रति तुम समभाव रखते हो। — प्लुटार्क

नम्रता

भक्तमे ज्ञान न हो तो नम्रता होनेसे ज्ञान प्राप्त करना उसके लिए सहज होता है। — अज्ञात

फलके आनेसे वृक्ष झुक जाते है, नव वर्षाके समय बादल झुक जाते है, सम्पत्तिके समय सज्जन नम्र हो जाते है—परोपकारियोका स्वभाव ही ऐसा है। — कालिदास

हमे रजकण बनना चाहिए। ससारकी लात सहन करना सीखना चाहिए। — गान्धी

ईश्वरको जाननेपर मनुष्य अपने-आप रजकण हो जाता है। — गान्धी

जिन लोगोने विद्वानोके चातुरी-भरे शब्दोको नही सुना है, उनके लिए वक्तृताकी नम्रता प्राप्त करना कठिन है। — तिरुवल्लुवर

तुमसे पूछे उसे नम्रतासे जवाब देना, तुमको गालियाँ दे उसे मीठे वचन कहना, तुमको दुखी करे उसको 'ईश्वर तेरा भला करे' कहना। क्योकि प्रभुके कामके लिए जिनको निन्दा सहनी पडती है, उनकी प्रभुके दरबार-मे ज्यादा कीमत है। — अज्ञात

जिसने सारी बातोमे नम्रतासे काम लिया है, वह न तो किसी कार्यमे लज्जित हुआ, और न किसीने उसकी निन्दा ही की। — अबुल-फतह-बुस्ती

दुनियाके विरुद्ध खडे रहनेकी शक्ति प्राप्त करनेके लिए मगरूर या तुच्छ बननेकी जरूरत नही है। ईसा दुनियाके खिलाफ खडा रहा। बुद्ध भी अपने जमानेके खिलाफ गया। प्रह्लादने भी वही किया। वे सब नम्रताके पुतले थे। अकेले खडे रहनेकी शक्ति नम्रता बिना असम्भव है। —गान्धी

जबतक मनुष्य अपनी गिनती पृथ्वीके सारे जीवोंके अन्तमें नही करेगा, उसे मोक्ष नही मिलेगा। नम्रताकी चरम सीमाका नाम ही तो अहिंसा है। — गान्धी

हम महत्ताके निकटतम होते है जब हम नम्रतामे महान् होते हैं। — टैगोर

अहकार था जिसने फरिश्तोको शैतान बना दिया, नम्रता है जो इनसानोको फरिश्ते बना देती है। — ऑगस्टाइन

नम्रता महत्ताका लक्षण है। महापुरुष अकडबाज नही होता। दिखावेसे वह दूर रहता है। अहकारी सच्ची प्रार्थना नही बोल सकता। — अज्ञात

अगर हमे स्वर्गको जाना है तो हमे नम्र होना ही पडेगा, वहाँ छत ऊँची है पर दरवाजा नीचा है। — हैरिक

मेरा विश्वास है कि वास्तवमे महान् व्यक्तिका पहला लक्षण उसकी नम्रता है। — रस्किन

उडनेकी अपेक्षा जब हम झुकते है तब विवेकके अकसर अधिक नजदीक होते है। — वर्ड्सवर्थ

नम्रता माने लचीलापन, लचीलेपनमे तननेकी भी शक्ति है, जीतनेकी कला है और शौर्यकी पराकाष्ठा है। — विनोबा

धर्ममे पहली चीज क्या है? धर्ममे पहली, दूसरी और तीसरी चीज— नही, सब कुछ—नम्रता है। — ऑगस्टाइन

नम्रता तमाम सद्गुणोकी सुदृढ बुनियाद है। — कन्फ्यूशियस

नम्रताका अर्थ है अहम् भावका आत्यन्तिक क्षय। — गान्धी

मनुष्य खाकसे पैदा हुआ है, यदि वह खाकसार (नम्र) नही है तो मनुष्य नही है। — अज्ञात

अत्यन्त मधुर सुगन्धवाला फूल सलज्ज और विनीत होता है। — वर्ड्सवर्थ

नरक

आत्माको बरबाद करनेवाले नरकके तीन दरवाजे हैं—काम, क्रोध और लोभ। — गीता

अगर तुम नरकको जानना चाहते हो तो समझ लो कि ईशविमुख अज्ञानी मनुष्यकी सोहबत ही दुनियामें नरक है। — शब्सतरी

नशा

जो आदमी नशेमें मदहोश है उसकी सूरत उसकी माँको भी बुरी मालूम होती है। — तिरुवल्लुवर

नसीहत

दुश्मनो तकसे सीखनेमें खैरियत है, दोस्तोंको नसीहत करनेमें नही। — कोल्टन

मूर्खको नसीहत देना ज्ञानको बरबादी है, साबुन कोयलेको धोकर सफेद नही बना सकता। — अज्ञात

जिसने कालके चक्रोसे कोई नसीहत नही ली उसे वेचरवाहेके ऊँटोके साथ चरना चाहिए। — मस्लाह-उद्दीन सफरी

नहीं

एक तात्कालिक और सुनिश्चित 'नहीं' न कह सकना महान् अभिशाप और दुर्भाग्य है। — सिमन्स

एक 'नहीं' सत्तर बुराइयोंसे बचाती है। — हिन्दुस्तानी कहावत

'नहीं' कहना सीखो, अँगरेजी पढ सकनेकी अपेक्षा यह तुम्हारे लिए ज्यादा लाभदायक होगा। — स्पर्जियन

दूसरोको प्रसन्न करनेके लिए कोई काम न करो। वह वीर है जो 'नहीं' कह सकता है। 'नहीं' कह सकनेसे तुम्हारे चारित्रकी शक्ति प्रकट होती है। — स्वामी रामतीर्थ

बुरे कामके लिए फुसलाये जानेपर जो निश्चयपूर्वक 'नही' नही कह सकता वह सर्वनाशके मार्गपर है—वह अपने बहकानेवालो तककी नजरमे हकीर हो जाता है। — हेवीज्

वह आदमी जिसने 'नही' कहना नही सीखा, जबतक जियेगा दरिद्री नही तो दुर्बल अवश्य बना रहेगा। — मैकलेरन

नापाक

नापाक आदमी हर भले आदमीका दुश्मन होता है। — बीचर

नाम

नाममे क्या है? जिसे हम गुलाब कहते है, किसी दूसरे नामसे भी उतनी ही खुशबू देता रहेगा। — शेक्सपीयर

अपने नामको कमलकी तरह निष्कलक बना। — लौंगफैलो

नामकी महिमा तुलसीदासने ही गायी हो ऐसा नही है। बाइबिलमे मै वही पाता हूँ। दसवें रोमनके १३ कलममे कहते है 'जो कोई ईश्वरका नाम लेंगे वे मुक्त हो जायेंगे।' — गान्धी

नाम जप

शुद्ध भावसे नाम जपनेवालोमे श्रद्धा होती ही है.... ..जो जीभसे होता है वह अन्तमे हृदयमे उतरता है और उससे शुद्धि होती है। यह अनुभव निरपवाद है। 'मनुष्य जैसा विचार करता है वैसा होता है'। नाम जपपर मेरी श्रद्धा अटूट है। — गान्धी

नामुमकिन

नामुमकिन लफ्ज सिर्फ बेवकूफोके लुगतमें मिलता है। — नैपोलियन

नारी

नारी ससारका सार है। — कन्फ्यूशियस

नाश

तृष्णासे सब सुखोका नाश होता है, अभिमानसे पुरुषका नाश होता है, याचना करनेसे गौरव नष्ट होता है, अपनी प्रशसा करनेसे गुणोका, चिन्तासे बलका और अदयासे लक्ष्मीका नाश होता है। — अज्ञात

पराया धन हरनेसे, पर-स्त्री गमन करनेसे और मित्रोके साथ विश्वासघात करनेसे मनुष्य नष्ट हो जाता है। — विदुर

नाशवान्

जब एक साधुको खबर दी गयी कि उसका लडका मर गया, तो उसने केवल यह कहा—'मै जानता था वह नाशवान् है'। — अज्ञात

नास्तिकता

नास्तिकता इनसानके दिलमे नही जीवनमे होती है। — बेकन

क्षणिक जोश, अधैर्य, निराशा और आत्म-विश्वासकी कमी—ये नास्तिकताके चिह्न है। — हरिभाऊ उपाध्याय

स्वार्थ ही वास्तविक नास्तिकता है, निस्स्वार्थता प्रगति-शीलता ही वास्तविक धर्म है। — अज्ञात

नास्तिकता आशाकी मौत और आत्माकी आत्म-हत्या है। — प्लेटो

निकटता

मैं ससारके लोगोमे यह बात पाता हूँ कि जो उनके नजदीक होता जाता है, वह तुच्छ हो जाता है, और जो अपना मान आप करता है, वह प्रतिष्ठाका भागी ठहरता है। — एक कवि

निकम्मा

निकम्मा कौन है? पेटू। — बुजुरचिमिहर

दुनियाने तुझे निकम्मा ठहरा दिया तो तू क्यो घबराता है ? जिस दिन तेरा दिल तुझे निकम्मा ठहरा देगा, उस दिन दुनिया-भरकी प्रशसा तेरे काम नही आयेगी । – अज्ञात

निकृष्ट

ससारमें निकृष्टतम आदमी कौन है ? वे जो अपने कर्त्तव्यको जानते हैं, और उसपर अमल नही करते । – अज्ञात

निकृष्टतम जीव वे है जो वस्तुको तीव्रतम, अधिकतम राग-दृष्टिसे ग्रहण करते है और न्यूनतम ज्ञेय-दृष्टिसे देखते है । – अज्ञात

निगाह

वह शख्स जो इल्तजाकी निगाहको नही समझ सकता उसके सामने अपनी जबानको शरमिन्दा-ए-तकल्लुम न करो । – अज्ञात

निग्रह

मनोनिग्रहकी अपेक्षा शरीरनिग्रहका अभ्यास अधिक आसान है, इसलिए शरीरनिग्रहके अभ्याससे प्रारम्भ करना श्रेयस्कर है। शरीरनिग्रहका अभ्यास अच्छी तरह दृढ होनेपर मनोनिग्रहका अभ्याम करना सरल हो जाता है । – विवेकानन्द

निद्रा

निर्दोष नीद आनेके लिए जाग्रतावस्थामे आचार-विचार निर्दोष होने चाहिए । निद्रावस्था जाग्रतावस्थाकी स्थिति जाँचनेका एक आईना है ।
– गान्धी

जिसके नीचे नरककी आग दहक रही हो और ऊपर स्वर्गका राज्य जिसे बुला रहा हो, वह नीदमें समय कैसे गँवाये ! – अहमद हर्ब

निधि

अन्धकार और दुष्ट शक्तियोसे युद्ध ही मेरी निधि है । – गान्धी

निन्दक

पक्षियोंमें कौवेको चाण्डाल कहा है, पशुओंमें गधेको, और मनुष्योंमें निन्दकको। — अज्ञात

सारे संसारमें सबसे अधिक विवेकभ्रष्ट वह आदमी है जो लोगोंकी निन्दामें दत्तचित्त रहता है—जैसे मक्खी रुग्णस्थानोंको ही ताडा करती है। — इस्माईल-इब्न-अबीबकर

हाथी अपने रास्ते चलता जाता है, कुत्ते भौंकते है, उन्हें भौंकने दे। — कबीर

जो कोई तुम्हारे पास दूसरोके दोष गिनाता हुआ आता है वह निस्सन्देह तुम्हारे दोष दूसरोके सामने ले जायेगा। — अज्ञात

निन्दा

इन्द्रियासक्त मनुष्य, दुराचारी धनवान् और अत्याचारी आचार्य—इनके दोष प्रकट करना निन्दा करना नही है। — हुमैन बमराई

अफलातूनने, यह सुनकर कि कुछ लोग उसे बहुत बुरा आदमी बताते है, कहा 'मैं इस तरह जीनेकी एहतियात रखूँगा कि उनके कहनेपर कोई विश्वास ही नही लायेगा।' — गार्डियन

पर-निन्दा दुर्गतिका असाधारण कारण है। — अज्ञात

जो दूसरोके अवगुण बखानता है वह अपना अवगुण प्रकट करता है। — बुद्ध

चाहे तुम बर्फकी तरह निर्मल और निष्पाप हो जाओ तब भी निन्दासे नही बच सकते। — शेक्सपीयर

अगर कोई तुमसे कहे कि अमुक आदमी तुम्हारा बुराई करता था, तो जो कुछ कहा गया उसके बारेमे बहाने न बनाओ वल्कि जवाब दो— वह मेरे और दोषोंको नही जानता था वरना वह सिर्फ इन्हीका जिक्र न करता।' — एपिक्टेटस

निन्दा किसीकी न करो। – मुहम्मद

अपनी आलोचना या निन्दामें रुचि होना इस बातका सबूत है कि मैंने अपने घरकी देखभाल शुरू कर दी है। – हरिभाऊ उपाध्याय

मालिक देखता है और चुप रहता है, पडोसी देखता नहीं पर शोर मचाता है। – सादी

नेकीसे विमुख हो जाना और बदी करना बेशक बुरा है, मगर सामने हँसकर बोलना और पीठ-पीछे निन्दा करना उससे भी बुरा है। – तिरुवल्लुवर

लोगोंके विरोध या निन्दासे मुक्त होनेकी मैंने कभी इच्छा नहीं की। सबको बनानेवाला वह ईश्वर भी अश्रद्धालु निन्दकोंकी जीभसे नहीं बच पाया, तो मैं उससे बचानेवाला कौन? – हुसेन बसराई

दुर्जनोंको निन्दामें ही आनन्द आता है, सारे रसोंको चखकर कौवा गन्दगीमें ही तृप्त होता है। – महाभारत

पीठ-पीछे किसीकी निन्दा न करो, चाहे उसने तुम्हारे मुँहपर ही तुम्हें गाली दी हो। – तिरुवल्लुवर

ऐ ईमानवालो, दूसरोंपर बहुत शक मत करो, सचमुच कभी-कभी शक करना भी गुनाह हो जाता है। दूसरोंके नुक्स ढूँढते मत फिरो, और न पीठ-पीछे किसीकी बुराई करो। पीठ-पीछे बुराई करना ऐसा ही है जैसा अपने मुरदा भाईका मांस खाना। – कुरान

दूसरेकी निन्दा करनेमें सज्जनको परिताप और दुर्जनको सन्तोष होता है। – अज्ञात

निन्दा एक ऐसा दोष है जो दुहरी मार मारता है, यह निन्दक और निन्दित दोनोंको जख्मी करता है। – सौरिन

सच्चा आदमी अगर निन्दा सुनकर विकल हो उठता है तो वह ईश्वरकी नज़रकी अपेक्षा मनुष्यकी ज़बानसे ज्यादा डरता है। – कोल्टन

निन्दक और ज़हरीले साँप दोनोके दो-दो जीभ होती हैं। — तामिल

ससारमे न किसीकी सदा स्तुति होती है, न निन्दा। — धम्मपद

अगर लोग हमारे बारेमे कुछ औल फौल बकते है, तो हमे उसका बुरा नही मानना चाहिए। जिस तरह कि गिरजाघरकी मीनार अपने इर्द-गिर्द चीलोंके चीखनेका ख़याल नही करती। — जॉर्ज ईलियट

निमित्त

'निमित्तमात्र भव सव्यसाचिन्'—निमित्तमात्र होना माने दाहिना हाथ थक गया तो बायें हाथसे लडनेकी तैयारी रखना। — विनोबा

नियत मार्ग

गंगा अपने नियत मार्गसे बहती है इसलिए उसका लोगोको अधिकसे अधिक उपयोग प्राप्त होता है। लेकिन उपयोगी पडनेके हेतुसे अगर वह अपना नियत मार्ग छोडकर लोगोके आँगनमे बहने लगी तो लोगोकी क्या दशा होगी? — विनोबा

नियम

कुदरतका यह एक साधारण नियम है, जो कभी नही बदलेगा, कि योग्य अयोग्योपर शासन करते रहेंगे। — डायोनीसियस

बगैर नियमके एक भी काम नही बनता। नियय एक क्षणके लिए टूट जाये, तो सारा सूर्यमण्डल अस्त-व्यस्त हो जाये। — गान्धी

जो अपने लिए नियम नही बनाता उसे दूसरोके बनाये नियमोपर चलना पडता है। — हरिभाऊ उपाध्याय

इस प्रकार काम करो कि तुम्हारी प्रवृत्तियोका सिद्धान्त सारे ससारके लिए नियम बना दिया जा सके। — काण्ट

नियामत
जो पुरुष समझ-बूझकर ठीक तरहसे अपनी इच्छाओंका दमन करता है, मेधा और दूसरी न्यामतें उसे मिलेंगी। – तिरुवल्लुवर

निरर्थक
निरर्थक जिन्दगी बिन-आयी मौत है। – गेटे

निरामय
हर जगह व हर वक्त आनन्दित और उत्साही होना पूर्ण निरामय जीवन-का रहस्य है। – स्वामी रामतीर्थ

निराशा
जो अपनेसे निराश हो गया, उससे कौन आशा बाँधेगा। – सर फिलिप सिडनी

निराशा नरकको दलदल है, जिस तरह कि खुशी स्वर्गकी शान्ति है। – डॉने

निर्गुण
सर्वभूतहित यह निर्गुण उपासना है। – विनोबा

निर्णय
जिसका निर्णय दृढ और अटल है वह संसारको अपने साँचेमें ढाल सकता है। – गेटे

याद रहे कि तुम्हारी पहुँच तुम्हारे निर्णयसे ज्यादा ऊँची नहीं हो सकती। – अज्ञात

निर्दोष
बेदाग दिलको आसानीसे खौफजदा नहीं किया जा सकता। – शेक्सपीयर

निर्धन

निर्धनका अपने प्राणो-द्वारा पेटकी आग बुझाना अच्छा, मगर परिभ्रष्ट कृपणसे प्रार्थना करना अच्छा नही। — अज्ञात

गरीब आदमीके शब्दोकी कोई कद्रोकीमत नही होती, चाहे वह कमाल-उस्तादी और अचूक ज्ञानके साथ अगाध सत्यकी ही विवेचना क्यो न करे। — तिरुवल्लुवर

एक तो कगाल हो और फिर धर्मसे खाली—ऐसे अभागे मरदूदमे तो खुद उसकी माँ तकका दिल फिर जायेगा जिसने कि उसे नौ महीने पेटमे रखा। — तिरुवल्लुवर

निर्धनता

क्या तुम यह जानना चाहते हो कि कगालीसे बढकर दुखदायी चीज और क्या है? तो सुनो, कगाली ही कगालीसे बढकर दुखदायी है। — तिरुवल्लुवर

निर्धनता मनुष्यकी बुद्धिको भ्रष्ट कर देती है और अतीव दुखदायी कोडेके समान दुःख देती है। — मुतनब्बी

इतिहासका सबसे बडा आदमी सबसे ज्यादा निर्धन था। — एमर्सन

ललचाती हुई कगाली, खानदानी शान और जबानकी नफासत तककी हत्या कर डालती है। — तिरुवल्लुवर

जिस तरह डूबनेसे सूरजको धब्बा नही लगता, उसी तरह निर्धनतामे गुणवान्‌को कुछ हानि नही पहुँचती। — इब्न-उल वर्दी

जरूरत ऊँचे कुलके आदमियो तककी आन छुडाकर उन्हे अत्यन्त निकृष्ट और हीन दासताकी भाषा बोलनेपर मजबूर करती है। — तिरुवल्लुवर

निर्बलता

निर्बल वह नहीं है जिसे निर्बल कहा जाता है, बल्कि वह है जो अपनेको निर्बल समझता है। – गान्धी

निर्बुद्धि

वह मनुष्य तो बिलकुल ही पतित और निर्बुद्धि है जो यह नही जानता कि मुझपर कैसी चक्की चल रही है। – अज्ञात

निभय

हजारमे-से केवल एक ऐसा होता है जो ससारकी मायासे मुग्ध नही होता, स्वर्गकी लालसा नही करता और नरकसे भी भयभीत नही होता।

– जुन्नुन

निर्भयता

जहाँ पवित्रता है वही निर्भयता रह सकती है। – गान्धी

निर्भय होनेका क्या लक्षण है ? ससार-प्रेमी लोगोमे निस्पृह होना, और मनको साधन-भजनमे लगाकर बडप्पनके मोहसे दूर रहना। – जुन्नुन

यह महान्, अजन्मा, अजर, अमर, निर्भय आत्मा ब्रह्म है। ब्रह्म निर्भय है, जो यह जानता है निर्भय ब्रह्म हो जाता है। – ब्रह्म उपनिषद्

निर्मलता

निर्मल हृदयको आसानीसे भयभीत नही किया जा सकता।

– शेक्सपीयर

निर्मल अन्तःकरणवाले धन्य है, क्योकि उन्हे ईश्वरके दर्शन अवश्य होगे।

– बाइबिल

निर्लज्जता

उस निर्लज्जतासे बढकर निर्लज्जताकी बात और कोई नही है जो यह कहती है कि मै माँग-माँगकर अपनी दरिद्रताका अन्त कर डालूँगी।

– तिरुवल्लुवर

निर्लिप्त

न किसीसे भय, न किसीसे आशा । — अज्ञात

निर्लोभ

जो निर्लोभ हो गये है, वे धन्य है, क्योकि दुनियाको जिन-जिन चीजोका लोभ होता है, वे सब उन्हे अनायास मिल जायेंगे । — पॉलशिरर

निर्वाण

ब्रह्मनिर्वाण उन्हीं लोगोके लिए है जिन्होने अपनी आत्माको जान लिया है । — गीता

'एक-ही-एक' ऐसी अनन्त, अपौरुषेय विराट् सत्तामे व्यक्तिगत स्वतन्त्र सत्ता डुबा देना ही निर्वाण है। बौद्ध मतानुसार आत्माका लोप नही । — अरविन्द घोष

निर्वाणका आनन्द मनसे परे है । — अज्ञात

निर्वाण-पथ

जिस तरह आदमी साँपके फनसे दूर रहता है, उसी तरह जो कामोपभोगसे दूर रहता है वह इस विषयकी तृष्णाका त्याग करके निर्वाण-पथकी ओर अग्रसर होता है । — बुद्ध

निर्वाह

ईश्वरीय ज्ञानका हर-एक व्यवहारमे पालन करनेपर निर्वाहके साधन तो अपने-आप दौडे आयेंगे । — जुन्नेद

निवास

मैं कहाँ रहना चाहता हूँ ?—(१) कही भी (२) सत्सगमे (३) आत्मामें । — अज्ञात

निवृत्ति

निवृत्तिका मतलब अकर्मण्यता नहीं अपितु वैयक्तिक स्वार्थोंके बन्धनसे छूट जाना है । — सत्यभक्त

जो सच्ची निवृत्ति चाहता है उसे चाहिए कि तमाम पापोको और उलटी समझको छोड दे। — अज्ञात

निश्चय

निश्चय किया, कि झझट खत्म। — इटालियन कहावत

इष्ट वस्तुकी प्राप्तिके लिए दृढ निश्चयवाले मनको और निम्नगामी जलकी गतिको कौन फिरा सकता है? — कालिदास

कोई शुभ निश्चय भी मनुष्य भले न करे लेकिन विचारपूर्वक करे तो उसे कभी न छोडे। — गान्धी

उस आदमीसे ज्यादा दु खी कोई नहीं जो कभी किसी निश्चयपर ही नहीं पहुँचता। — विलियम जेम्स

'करूँगा ही' तै कर लेनेपर जमीकी कोई ताकत इनसानको नही रोक सकती। — अज्ञात

अनिश्चित मनवालेने कभी कोई महान् कार्य नही किया। —अज्ञात

निश्चयहीन

उस निश्चयहीन मनुष्यसे अधिक दयाजनक चीज् दुनियामे कोई नही, जो कि दो भावनाओके बीच झूल रहा है, और दोनोको मिलानेको तैयार है, मगर जो यह नही देखता कि कोई चीज् उन दोनोको नही मिला सकती। — गेटे

निश्चयहीन मनुष्यके लिए यह कभी नही कहा जा सकता कि वह खुद अपना मालिक है, वह समुद्रकी एक लहरकी तरह है, या हवामे उडते हुए उस पखकी तरह जिसे हर झोका इधरसे उधर उड़ा देता है। — जॉन फ्रास्टर

निश्चलता

सफलताका रहस्य ध्येयकी निश्चलता है। — डिसराइली

निषिद्ध

निषिद्ध वस्तुको ग्रहण मत कर क्योकि उसकी मिठास जाती रहेगी और उसकी कडवाहट बाकी रह जायेगी । — अज्ञात

निष्कपटता

ऐसे जड मानव विरले ही होगे कि कोमलतासे जिनका प्रेम, निष्कपटतासे जिनका विश्वास, उपेक्षा या तिरस्कारसे जिनकी घृणा न प्राप्त की जा सके । — जिमरमन

निष्क्रियता

क्रियारहित विचार गर्भपातके समान है । — अज्ञात

निष्ठा

जो मनुष्य किसी एक चीजपर एक निष्ठासे काम करता है वह आखिर सब चीज करनेकी शक्ति हासिल करेगा । — गान्धी

निःस्पृह

उदारको धन तृण समान है, शूरवीरको मरण तृण है, विरक्तको स्त्री तृण है और नि स्पृहको जगत् तृण बराबर है । — अज्ञात

पत्थरकी दीवालें जेलखाना नही बनाती, न लोहेकी सलाखे पिंजडा, मासूम और शान्त आत्माएँ उसे तपोवन समझती है । — अंगरेजी

नीच

नीच लोग दरवाजेपर तो टाट भी नही लगा सकते, पर बलि और हरिश्चन्द्र-जैसे महादानियोकी निन्दा करते है, कर्ण और दधीचि तो इनकी नजरोमे कोई चीज ही नही । — तुलसीदास

मर जाना अच्छा मगर नीचोके पास जाना अच्छा नही । — अज्ञात

नीच पराये कामको बिगाडना ही जानता है, बनाना नही जानता, वायु वृक्षको उखाड़ सकती है, पर जमा नही सकती । — अज्ञात

आमके दिव्य रसको पीकर भी कोयल गर्व नही करती, लेकिन कीचडका पानी पीकर मेढक टर्राने लगता है। – अज्ञात

जब नीचको पदवी, चाँदी और सोना मिल जाते है तो वास्तवमे उसके सिरको तमाचेकी आवश्यकता होती है। – अज्ञात

नीचकी नम्रता अत्यन्त दुखदायी है। अकुश, धनुष, साँप और बिल्ली झुककर ही मारते है। दुष्टका प्रिय वाणी ऐसी भयदायक है जैसे अऋतुके फूल। – रामायण

नीचता

शक्तियोका एक नियम है जिसके कारण चीजें समुद्रमे डूबकर अमुक गहराईसे नीचे नही जा सकती, लेकिन नीचताके समुद्रमें जितने गहरे हम जायें डूबना उतना ही आसान। – लॉवैल

नीति

नीतितत्त्वका आधार जिसने ईश्वरको बनाया उसने मजबूत नीवपर इमारत खडी की। – विनोबा

अपनी किताबो और परम्पराओको भूल जाओ, और अपनी तात्कालिक नैतिक दृष्टिका कहना मानो। – एमर्सन

अहकार ही अनीति है व विश्वव्यापकता ही नीति है। – विवेकानन्द

नीति ही राजा है और नीति ही कानून है। – विवेकानन्द

नुक़ताचीनी

दुनियामें सबसे मुश्किल काम अपना सुधार है और सबसे आसान दूसरोकी नुकताचीनी। – अज्ञात

नूतन

वह न कीजिए जो किया जा चुका है। – टैरेन्स

मैं पुराने धर्म और पुराने नबियोके उपदेशोंको नष्ट या बरबाद करने नहीं आया, बल्कि मैं उन्हें पूरा करनेके लिए आया हूँ। – ईसा

मैं सिर्फ पिछली बातोंको आगे चला रहा हूँ, मैं कोई नयी चीज नहीं गढ सकता। — किंग फ़्त्ज़े

बहुत-से बुद्ध मुझसे पहले आये हैं, और बहुत-से मेरे बाद आयेंगे। मैं पुरानी रोशनीको ही फिरसे फैला रहा हूँ। — बुद्ध

नेक

दुष्टके बलिदानसे ईश्वर घृणा करता है, परन्तु नेककी प्रार्थनामें खुश होता है। — कहावत

तुम नेक रहो और संसार तुम्हें बुरा कहे—यह अच्छा है, बनिस्बत इसके कि तुम बुरे रहो और संसार तुम्हें अच्छा कहे। — अज्ञात

जो मनुष्य अपने मनमें भी नेकीसे नहीं डिगता है, उसके रास्तबाज होंठोंसे निकली हुई बात नित्य सत्य है। — तिरुवल्लुवर

नेकनामी

नेकनामी मरद और औरतके लिए उनकी रूहका ज़ेवर है। — शेक्सपीयर

नेकी

नेकी, जितनी ज्यादा की जाती है, उतनी ही फूलती-फलती है। — अज्ञात

नेकी उन बाहरी कामोंमें नहीं है जो हम करते हैं, बल्कि इसमें है कि हम अन्दर क्या हैं। — चैपिन

उस दिनको खोया हुआ गिन, जिस दिन अस्ताचलको जाता हुआ सूर्य तेरे हाथसे कोई अच्छा काम किया गया न देखे। — स्टैनफोर्ड

वास्तविक नेकीसे अधिक दुर्लभ कुछ भी नहीं है। — रोची

महान् आत्माएँ ही जानती हैं कि नेकीमें कितना गौरव है। — सोफोकिल्स

नेकीका एक काम करना स्वर्गकी ओर एक कदम बढाना है। — जे० जी० हॉलैण्ड

जो नेकीका प्रेमी है उसके हृदयमें देवोंका वास है, और वह ईश्वरके साथ रहता है। – एमर्सन

शरारत करनेके मौके दिनमें सौ बार मिलते हैं, नेकी करनेका अवसर सालमें एक बार। – वोल्टेर

नेकी बिला शक एक आसान चीज़ है - मीठा वचन और भोजन हर-एक-को दे। – एक कवि

अगर तू लोगोंके साथ नेकी करेगा तो उनके दिलोंको तू अपना दास बना लेगा। – अबुल-फतह-बुस्ती

नेक काम करनेमें जल्दी करो, ऐसा न हो कि जबान बन्द हो जाये और हिचकियाँ आने लगें। – तिरुवल्लुवर

न तुम्हारी दौलत तुम्हें अल्लाहके नज़दीक ला सकती है और न तुम्हारे बाल-बच्चे।। अल्लाहके नजदीक वही जा सकता है जो बात मान ले और नेक काम करे। – कुरान

अगर तुम नेकी चाहते हो तो कामनासे दूर रहो, क्योंकि कामना जाल और निराशा मात्र है। – तिरुवल्लुवर

सचमुच अल्लाह उसीके साथ है जो बुराईसे बचते हैं और जो दूसरोंके साथ नेकी करते है। – मुहम्मद

शहदकी मक्खियाँ सिफ अँधेरेमें काम करती है, विचार सिर्फ खामोशीमे काम करते है, नेक काम भी गुप्त रहकर ही कारगर होते है। अपने बायें हाथको न मालूम पडने दे कि तेरा दायाँ हाथ क्या करता है। – कार्लाइल

नेता

मै पूर्व वैमनस्यको मनमे नही लाता, क्योकि जातिका नेता वह आदमी नहीं हुआ करता जो मनमे कपट रखनेवाला हो। – अल-मुकन्नआ-उल-किन्दी

नेताको कोई निजी महत्त्वाकाक्षा नहीं रखनी चाहिए। वह अपने लिए कुछ न चाहे, न तो धन, न अधिकार, न पद, न भोग, न उपभोग। और वह ईश्वरको दिनमे चौबीस घण्टे याद रखे। — गान्धी

नैतिकता

सब उपजातियाँ भिन्न-भिन्न है, क्योंकि वे मनुष्यसे आयी है, नैतिकता हर जगह वही है, क्योंकि वह ईश्वरसे आयी है। — वाल्टेर

नौकर

जो अपने नौकरको अपना भेद देता है, वह अपने नौकरको अपना मालिक बनाता है। — ड्राइडन

अगर तुम्हें वफादार और दिलपसन्द नौकरकी जरूरत है तो अपने सेवक स्वय बनो। — बेंजामिन फ्रैंकलिन

देखो, जो आदमी नेकी देखता है और बदी भी देखता है, मगर पसन्द उसी बातको करता है जो नेक है, बस उसी आदमीको अपनी नौकरीमें लो। — तिरुवल्लुवर

नौकरी

श्री रामकृष्ण परमहंस एक नौजवान शिष्यसे बोले, "एक दुनियावी आदमीकी तरह तू तनख्वाहदार नौकर बन गया है। लेकिन तूने अपनी मांकी खातिर यह किया है, वरना मै कहता, "लानत है! लानत है! लानत है!" उन्होने इसे सौ एक मरतबा दुहराया और तब कहा, "सिर्फ भगवान्की नौकरी कर।" — अज्ञात

चाकरीके लड्डुओसे आजादीकी घास अच्छी। — अज्ञात

उसी आदमीको अपनी नौकरीके लिए चुनो जिसमे दया, बुद्धि और द्रुत-निश्चय है, या जो लालचसे आज़ाद है। — तिरुवल्लुवर

मुझे यह सुनकर ज्यादा खुशी होगी कि तुम गगामें डूब गये और मर गये, बनिस्बत इसके कि तुमने धनको खातिर या किसी और दुनियावी चीज़की खातिर किसीका नौकर होनेकी नीचता की। — रामकृष्ण परमहंस

सेवकको सुख और मानका स्वय परित्याग करना पडता है। जिसके लिए वह धन चाहता है वही उसे अलभ्य है। — अज्ञात

कमरपर सुनहरी चपरास बाँधने और चाकरीमे खडे रहनेकी अपेक्षा जौकी रोटी खाना और जमीनपर बैठना अच्छा है। — अज्ञात

नौकरी आत्महत्यासे भी बडा पाप है। — रामकृष्ण परमहस

न्याय

जब भेडिया न्यायाधीश हो तो ईश्वर ही भेडका रक्षक है।

— डेनिश कहावत

हम सत्यमार्गपर हो तो भी ससारको दण्ड देनेका भार नही लेते, उसका न्याय नही करते, बल्कि ससार-द्वारा दी हुई सजा और न्याय चुपचाप सहन कर लेते है। इसीका नाम नम्रता या अहिंसा है। — गान्धी

सत्याग्रही न्याय नही माँगता। यहाँ न्याय माने 'जैसेको तैसा'। सत्याग्रह माने 'शठ प्रत्यपि सत्य'; हिंसाके विरुद्ध अहिंसा, क्रोधके विरुद्ध अक्रोध, अप्रेमके विरुद्ध प्रेम; इसमे न्याय तौलनेके लिए कहाँ जगह है ?

— गान्धी

जिस वक्त 'इन्द्राय तक्षकाय स्वाहा' इस न्यायका प्रयोग किया जाता है तब इन्द्र तो मरनेवाला है ही नही, मात्र तक्षक अमर हो बैठता है।

— अज्ञात

न्यायमें विलम्ब अन्याय है। — लेण्डर

ईश्वर न्यायवान् है। और आखिर न्यायकी ही फतह होती है।

— लौंगफैलो

न्याय-परायण

अगर कोई यह कहे कि उसने एक न्याय-परायण आदमीको रोटीके लिए मोहताज देखा है, तो मैं कहता हूँ कि वह ऐसी जगह था जहाँ दूसरा कोई न्याय-परायण आदमी था ही नही। — सेण्ट क्लीमेण्ट

न्यायाधीश

हम किसीके न्यायाधीश नही हो सकते। — गान्धी

न्यायी

इनसानका फर्ज है कि वह उदार बननेसे पहले न्यायी बने। — डिकेन्स

■

प

पछतावा

कुकर्मका पछतावा व्यर्थ है जबतक कि प्रण न कर लो कि फिर ऐसा काम न करोगे। — अज्ञात

पठन

पढनेमे सस्ता कोई मनोरजन नही, न कोई खुशी उतनी स्थायी। — लेडी मौण्टेग्यू

आज पढना सब जानते है, लेकिन क्या पढना चाहिए यह कोई नही जानता। — जॉर्ज बर्नार्ड शा

महज किताबे पढनेका चटखारा लगा कि खुदकी सारासार विचार-शक्ति कमजोर पड जानेका डर है, और यह शक्ति एक बार नष्ट हुई कि अपनी सारी जिन्दगी कौडी कीमतकी हो जाती है। — विवेकानन्द

पडोसी

पडोसियोकी खुशहाली अन्तमें हमारी ही हो जाती हैं और पडोसियोकी बदहाली भी अन्तमे हमारी ही हो जाती है। – रस्किन

आजकल अधिकाश लोग सोचते हैं कि पडोसीकी सेवा करनेका एकमात्र आशास्पद तरीका यह है कि उससे लाभ उठाया जाये। – रस्किन

हम अपने मित्रोंके बिना जी सकते है, लेकिन अपने पडोसियोके बगैर नही। – अज्ञात

हम पडोसीको उसके स्वार्थके लिए इतना प्यार नही करते जितना अपने स्वार्थके लिए करते है। – बिशप विल्सन

पडोसीके साथ नेकी करना एक प्रशसनीय गुण है। – इब्न मातूक

जो आदमी अपने पडोसियोके प्रेमको प्राप्त करनेकी कोशिश नही करता, वह मरनेके बाद अपने पीछे क्या चीज़ छोड जानेकी आशा रखता है। – तिरुवल्लुवर

कोई इतना धनिक नही है कि पडोसीके बगैर काम चला ले। – डेनिश कहावत

मैंने एक बार एक साधुसे पूछा, 'आप एक ही झोपडेमे, पहाडकी चोटीपर, आबादीसे मीलो दूर; अकेले रहनेका कैसे साहस करते हैं?' उसने जवाब दिया, 'ईश्वर मेरा निकटतम पडोसी है।' – स्टर्न

पडोसीके स्वत्वको न भूल, क्योकि जो इस कर्त्तव्यसे चूक जाता है, वह उच्च पद नही प्राप्त कर सकता। – हज़रत अली

पतन

सब पतनोमें बडेसे बडा पतन आत्माका अविश्वास है। – अज्ञात

पतित

तुझे इस बातपर शर्म आनी चाहिए कि उस ऊँचे स्थानसे गिरकर तू यहाँ-पर अपनी जिन्दगी गुजार रहा है। — शब्सतरी

पत्र

अत्यन्त आनन्दप्रद पत्र भी सम्भाषणके चमत्कारका शतांश नहीं लिये होता। — गेटे

पथ-प्रदर्शन

अगर अन्धा अन्धेको राह दिखाये, तो दोनों खाईमें गिरेंगे।

— हिब्रू कहावत

पथ्य

जो मरणोन्मुख होता है, उसे पथ्य नहीं रुचता। — रामायण

पद

जिस मनुष्यका पद सूरजके स्थानसे भी ऊपर हो, उसको न तो कोई वस्तु घटा ही सकती है और न बढ़ा ही सकती है। — अज्ञात

पदवी

तीन सबसे बड़ी पदवियाँ जो मनुष्यको दी जा सकती हैं शहीद, वीर, महात्मा। — ग्लेड्स्टन

परख

धनुर्धारीकी परख उसके धनुषसे नहीं, लक्ष्यबेधसे होती है। — कहावत

अगर विद्वान् लोगोंने मनुष्योंको साधारण रीतिसे परखा है तो मैंने गूढ़ रूपसे परखा है, मैंने लोगोंके प्रेमको धोखा और उनके धर्मको फूट पाया है। — एक कवि

किसी सेबके पेडका अन्दाजा उसपर-के सबसे बुरे सेबसे करना मुनासिब नहीं है, न किसी आदमीको ही उसके निम्नतम कार्य या भाषणसे परखना चाहिए। — अज्ञात

पर-चर्चा

जो दूसरोके गुण-अवगुणोकी चर्चामे लगा रहता है वह अपने वक्तको महज बरबाद करता है, क्योकि वह वक्त न तो आत्म-विचारमें जाता है न परमात्माके ध्यानमे। — रामकृष्ण परमहस

पर-दु:ख

अगर तू दूसरोकी तकलीफ नही समझता तो तुझे इनसान नही कहा जा सकता। — सादी

पर-द्रोही

पृथ्वी कहती है—पहाड, झील, समुद्र मुझे इतने भारी नहीं लगते जितना कि पर-द्रोही। — अज्ञात

पर-निन्दा

पर-निन्दा किये बगैर दुर्जनको चैन नहीं पडता। जिस तरह कौवा सब रस खाये, फिर भी विष्ठा खाये बिना तृप्त नहीं होता। — अज्ञात

अगर एक ही कर्मसे जगत्‌को वश करनेकी इच्छा हो तो पर-निन्दा छोड दो। — अज्ञात

पर-पीड़ा

'पर-पीडा सम नहिं अधमाई'। — तुलसी

पर-पीड़न

दूसरोको सतानेके बराबर कोई नीचता नही है। — रामायण

परम-शक्ति

आत्म-श्रद्धान, आत्म ज्ञान और आत्म सयम सिर्फ यही तीन मिलकर जीवनको परम शक्तिकी ओर ले जाते हैं। — टेनीसन

परमात्मा

वह परम आत्मा जो ब्रह्माण्डके सिंहासनपर बैठा है न इस वक्त जल्दीमें है, न पहले कभी था, और न आइन्दा कभी होगा। – जे० जो० हॉलेण्ड

परमात्मा सिर्फ पवित्रात्माका दूसरा नाम है। – जैनधर्म

जब हम अपने परम्पराके ईश्वरसे सम्बन्ध तोड लेंगे, और अपने लफ्फाज़ीके खुदाको खत्म कर देंगे, तब परमात्मा हाजिर होकर हमारे हृदयमे जीवन डाल देगा। – एमर्सन

जब हम परमात्माकी परिभाषा करने और उसका वर्णन करनेका प्रयास करते है, तो भाषा और विचार दोनो हमें छोडकर चले जाते है, और हम मूर्खों और जगलियोंकी तरह लाचार हो जाते हैं। – एमर्सन

जिसने अपनी खुदीको जीत लिया, जो शान्त है, और जो सरदी-गरमी, सुख-दु ख, मान-अपमानमे एक सा रहता हैं, उसकी आत्मा ही परमात्मा है। – गीता

मेरे लिए परमात्मा सत्य है, प्रेम है। – गान्धी

परमात्माके सिवा आत्मा किसी चीज़से सन्तोष नही मान सकती। – बेली

जिन्हे दोनो वक्त भूखे रहना पडता है उनसे मैं ईश्वरकी चर्चा कैसे करूँ? उनके सामने तो परमात्मा केवल दाल-रोटीके ही रूपमें प्रकट हो सकते है। – गान्धी

परमात्माकी झलक नैतिक बुद्धिके विकासके बिना असम्भव है। – गान्धी

सिवा परमात्माके किसी भी जीवसे वाह्-वाही चाहना मूर्खता है। – एडीसन

परमात्मा सदैव कृपारूप है। जो शुद्ध अन्त करणसे उसकी मदद माँगता है, उसको वह अवश्य मिलती है। – विवेकानन्द

क्या तुम पूछते हो परमात्मा कहाँ रहता है ? आत्मामें, और जबतक आत्मा शुद्ध और पवित्र न हो, उसमें परमात्माके लिए स्थान नहीं है ।
— अज्ञात

हर-एकके हृदयमे कफनाया और दफनाया हुआ 'अनन्त' पडा हुआ है ।
— एमर्सन

परमार्थ

प्रत्येक व्यक्तिको अपने वैशिष्ट्यका अपने स्वभावनिर्दिष्ट कर्म-द्वारा विकास करनेसे परमार्थ-प्राप्ति होती है । — अरविन्द घोष

करनी और शरण परमार्थकी दो कुंजियाँ है । — गीता

परमुखापेक्षी

त्यागी होकर भी जो परमुखापेक्षी बना रहता है, वह तो कुक्कुरके समान है । — अज्ञात

परमेश्वर

सबके साथ अपने एकपन या अपनेपनको महसूस करनेसे ही आदमी सबके अन्दर परमेश्वरके दर्शन कर सकता है ।

परमेश्वर ही आत्माका, अमृतका और अखण्ड सुखका खजाना है ।

जो आदमी सबके अन्दर रहनेवाले परमेश्वरके साथ अपने दिलको लगाता है वही परमेश्वरको पाता है । वह परमेश्वरमे रहता है और परमेश्वर उसमे । — गीता

परमेश्वर सत्य है, उसकी सचाईके सामने बाकी सब चीजें झूठी है । वह हर तरहके व्यक्तित्वसे अलग है । वहाँ न 'मैं' है न 'तू' है न 'वह' है । वह सबमे रमा हुआ है । — गीता

परम्परा

अपूर्ण, अनिश्चित या भ्रष्ट परम्पराओका इसलिए अनुसरण करना कि हम, निर्णयकी गलतियोसे बच जायें, महज एक खतरेका दूसरेसे तबादला करना है । — व्हेटले

परलोक

परलोकके जीवनमे न तो दौलतकी कीमत है और न गरीबीकी। वहाँ तो कीमत है कृतज्ञता और सहिष्णुताकी। धनवान् होकर प्रभुका उपकार मत भूलो और गरीबीकी हालतमे सहनशीलताको मत छोडो। — हयहया

उस लोकमें अल्लाह उन लोगोको सुख देगा जो इस दुनियामे बडे बननेका प्रयत्न नही करते, जो किसीके साथ अन्याय नही करते। परलोकका आनन्द केवल उन लोगोके लिए है जो इस लोकमे परहेजगारीसे रहते है। — ह० मुहम्मदका अन्तिम उपदेश

अगर तूने स्वर्ग और नरक नही देखा है तो समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है। — जामा

परवश

परवशको धिक्कार है। — रामायण

पर-स्त्री

पर-स्त्रीको माताके समान समझो। — अज्ञात

पर-स्त्रीगमन

शाबाश है उसकी मरदानगीको जो परायी स्त्रीपर नजर नही डालता! वह नेक और धर्मात्मा ही नही, वह सन्त है। — तिरुवल्लुवर

पर स्त्रीगमन करनेसे पाप, दुर्गति, भयभीतकी भयभीतसे अत्यल्प रति, यही मिलता है, इसलिए मनुष्यको पर-स्त्रीगमन नही करना चाहिए। — बुद्ध

पर-स्त्रीगन करना जान-बूझकर अपनी स्त्रीको व्यभिचारिणी बनाना है। — विजयधर्म सूरि

जिन लोगोकी नजर धन और धर्मपर लगी रहती है, वे परायी स्त्रीको चाहनेकी मूर्खता कभी नही करते। — तिरुवल्लुवर

परहित

जिनके मनमें परहित बसा हुआ है, उनको जगमें कुछ भी दुर्लभ नहीं है ।

– रामायण

पराक्रम

हाथियोंके मस्तकोंकी खुजली मिटानेवाला सिंह हिरणोंमें अपने किस पराक्रमका वर्णन करे ?

– भामिनीविलास

अति कष्टप्रिय पराक्रमी पुरुष जब किसी दुस्तर कार्यको ठानता है तब वह किसी मित्रकी सहायता नहीं चाहता ।

– सआद बिन नाशिब

पराक्रमी

पराक्रमी अपनी प्रतिज्ञाको अपनी दोनों आँखोंके सामने रख लेता है, और परिणामके विचारको भूलकर भी चित्तमें नहीं लाता ।

– सआद बिन नाशिब

पराक्रमी जब किसी कामका संकल्प करता है तब उससे वह रोका नहीं जा सकता और वह जो काम करता है निर्भय होकर करता है ।

– सआद बिन नाशिब

पराक्रमी अपने काममें अपनी आत्माके सिवा और किसीसे सलाह नहीं लेता । और न अपने कामनें अपनी तलवारके दस्तेके सिवा किसी औरको अपना साथी ही बनाता है ।

– सआद बिन नाशिब

पराधीन

'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं ।'

– रामायण

पराभक्ति

पराभक्ति माने समता माने ज्ञान माने निर्विकारिता ।

– विनोबा

परावलम्बन

अन्त करण एक बार परावलम्बी बन गया कि फिर वह किसी-न-किसीके पीछे जाये बगैर रह ही नही सकता। कोई नही कह सकता कि उसकी कितनी अधोगति होगी। — विवेकानन्द

परावलम्बी जीव जीते होनेकी बनिस्बत मरे हुए अच्छे। — विवेकानन्द

परिग्रह

जिसको विश्व अपना घर लगता है उसे परिग्रह रखनेकी जरूरत नही। — अज्ञात

परिग्रहका अर्थ है भविष्यके लिए प्रबन्ध करना। सत्यान्वेषी, प्रेमधर्मका अनुयायी, कलके लिए किसी चीजका सग्रह नही कर सकता। — गान्धी

अपरिग्रहका सच्चा अर्थ देहभाव नही-सा होना है। कारण कि देह ही मुख्य परिग्रह है। — विनोबा

भगवान् महावीरने सिर्फ बाहरी चीजोंको ही परिग्रह नही कहा, आसक्तिको भी परिग्रह बताया है। — अज्ञात

सच्चे सुधारका, सच्ची सभ्यताका लक्षण परिग्रह बढाना नही है, बल्कि उसका विचार और इच्छापूर्वक घटाना है। ज्यो-ज्यो परिग्रह घटाइए त्यो-त्यो सच्चा सुख और सन्तोष बढता है, सेवाशक्ति बढती है। — गान्धी

धन किसी क्षणिक आवश्यकताकी क्षणिक पूर्तिका साधन है। अपने परिग्रहको अपना परमात्मा न मान बैठो। — अज्ञात

परिचय

ईश्वरको जानकर भी उसमे प्रेम न करना असम्भव है। जो परिचय प्रेमशून्य है वह परिचय हो नहीं। — बायजीद

परिणाम

यह न कह कि परिणामसे कार्यका औचित्य सिद्ध होता है। — अज्ञात

महान् परिणाम तत्काल नहीं प्राप्त हो जाते, इसलिए हमे जीवनमें कदम-कदम बढते जानेमे सन्तोष मानना चाहिए ।

– सेमुएल स्माइल्स

परिपूर्णता

हथौडेकी चोटें नही, जलके नृत्यका सगीत पत्थरके टुकडोको परिपूर्ण बनाता है । – टैगोर

मामूली बातोसे परिपूर्णता आती है, वह परिपूर्णता मामूली बात नही है । – पोप

छोटे-छोटे कर्त्तव्योके पालनमे परिपूर्णता लाना आनन्दका अद्भुत स्रोत है । – फेवर

परिमितता

परिमितता वह रेशमी सूत्र है जो समस्त सद्‌गुणोकी मुक्तामालामे पिरोया हुआ है । – थॉमस फुलर

परिवर्तन

परिवर्तनका नाम अमगति नही है । परिवर्तन यदि मुझे अपने लक्ष्यकी ओर न ले जाता हो तो असंगति हो सकती है । – अज्ञात

परिश्रम

अच्छे काममे किया गया परिश्रम अवश्य ही सफल होता है । ज्ञानी समर्थ पुरुष कभी नीच विचारवालोकी राहपर नही चलते ।

– कालिदास

वह परिश्रम जिससे कोई उपयोगी परिणाम न निकले, नैतिक पतनका कारण होता है । – जॉन रस्किन

कुएँमे चाहे जितना पानी हो, मगर महज चाहनेसे तो वह नहीं निकल आता । – कन्नड़ कहावत

मरते दम तक तू अपने पसीनेकी रोटी खाना। — बाइबिल

जो काटना चाहता है उसे बोना होगा। — सूत्र

प्रयत्नशीलता सद्भाग्यकी जननी है। — सरवेण्टीज़

अगर तूने कुछ नहीं बोया, तो अन्य किसी बोनेवालेको जब तू कुछ काटते हुए देखेगा, उस समय तू अपने व्यर्थ समय गँवानेपर लज्जित होगा। — एक कवि

देखो, जो मनुष्य परिश्रमके दुःख, दबाव और आवेगको सच्चा सुख समझता है उसके दुश्मन भी उसकी प्रशंसा करते हैं। — तिरुवल्लुवर

बगैर परिश्रम, यानी बगैर तप, कुछ भी हो नहीं सकता है, तो आत्मशोध कैसे हो सके? — गान्धी

नवयुवकोंके लिए मेरा सन्देश तीन शब्दोंमें है—परिश्रम, परिश्रम, परिश्रम। — बिस्मार्क

परिश्रम अन्य हर अच्छी चीज़की तरह स्वयं ही अपना पुरस्कार है। — ह्विपिल

याद रखिए आपमें एक भी स्नायु ऐसा नहीं है जो काम करनेसे बलवान् न होता हो, हमारे शरीर, मन या आत्माकी ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो परिश्रमसे सुधरती न हो। — हॉल

मेहनत करेगा तो पायेगा। — कहावत

ऊँचे-ऊँचे खयाल किसको नहीं आते? कौन महत्त्वाकांक्षी नहीं होता? किसकी अन्तरात्मा उच्चतम पदके लिए मिन्नतें नहीं करती रहती? मगर महत्ताका सेहरा उन्हींके सिर बँधता है जो रात-दिन अन्तःकरणके बताये रास्तेपर लगातार चलते रहते हैं। — अज्ञात

जो न तो अपने लिए करता है न दूसरोंके लिए, उसे खुदाका इनाम नहीं मिलेगा। — मुहम्मद

आदमियोका सुख ज़िन्दगीमे है, और जिन्दगी परिश्रममे है। — अज्ञात

परिश्रमी

लक्ष्मी, महत्ता, दृढता और कीर्ति परिश्रमीको मिलती हैं, आलसीको नहीं। — अज्ञात

परिस्थिति

आदमीकी सबसे बडी खूबी यह है कि वह जितना अधिक मुमकिन हो बाहरी हालातपर शासन करे, और जितना कम हो सके उनसे शासित रहे। — गेटे

सत्यके पुजारीपर परिस्थितिका प्रभाव न पडना चाहिए। उसको भेदकर उसमें-से पार हो जाना ही उसका कर्त्तव्य है। परिस्थितिके कारण बने हुए कितने ही विचार गलत ठहरते है, यह हम देखते है। — गान्धी

अगर तुम किसी गोल छेदमे जा पडो, तो तुम्हें अपनेको गेंद बना डालना होगा। — जार्ज ईलियट

परिस्थितियोके बदलनेसे चरित्रका दोष दुरुस्त नहीं हो जाता। — एमर्सन

नैपोलियन अपने कार्योंको परिस्थितियोके अनुकूल नही बनाता था, बल्कि परिस्थितियोको अपने कार्योंके अनुकूल बनाता था। — अज्ञात

परेशानी

परेशानीको कामसे ज्यादा कोई परेशान नही करता। — अज्ञात

अनागतके लिए परेशान होना ईश्वरका अविश्वास है, जो है उसके लिए परेशान होना ईश्वरके प्रति अधैर्य है, और गुजरी हुई बातोके लिए परेशान होना ईश्वरपर क्रोध करना है। — बिशप पैट्रिक

परोपकार

अठारह पुराणोंके अन्दर व्यासजीने दो ही बातें कही है, वे ये है—दूसरोंका भला करना पुण्य यानी सवाब है, और किसी दूसरेको तकलीफ देना पाप यानी गुनाह है। — अज्ञात

अगर तू किसी एक आदमीकी भी तकलीफको दूर करे तो यह ज्यादा अच्छा काम है बजाय इसके कि तू हज्जको जाये और रास्तेकी हर मंजिलपर एक-एक हजार रकअत नमाज पढता जाये। — सादी

मैंने अमर जीवनको और प्रेमको वास्तविक पाया, और यह कि अगर मनुष्य निरन्तर सुखी बना रहना चाहता है तो उसे परोपकारके लिए ही जीवित रहना चाहिए। — टैगोर

यदि मैं तुझे उठानेका प्रयत्न करता हूँ, तो इससे अपना ही अधिक हित करूँगा, तू तो अपने ही प्रयत्नसे उठ सकेगा। — अज्ञात

किसी बच्चेको खतरेसे बचा लेनेपर हमे कितना आनन्द आता है। परोपकार इसी अनिर्वचनीय आनन्द-प्राप्तिके लिए किया जाता है।
— अज्ञात

परोपकार करनेकी एक खुशीसे दुनियाकी सारी खुशियाँ छोटी है।
— हरबर्ट

पर-हित-सरीखा धर्म नही है भाई! — रामायण

सासारिक कार्योंमे लिप्त हो जानेसे हानि ही होती है, और परोपकारके अतिरिक्त सारे कामामे घाटा-ही-घाटा है। — अबुल-फतह बुस्ती

जिन सज्जनोके हृदयोंमे परोपकार भावना हमेशा जाग्रत रहती है, उनकी विपदाएँ नष्ट हो जाती है, और उनके कदम-कदमपर सम्पदाएँ आती है।
— अज्ञात

जो करोडो ग्रन्थोंमे कहा गया है उसे मैं आधे श्लोकमे कहता हूँ, वह यह कि 'परोपकार करना पुण्य है, और दूसरेको दुःख देना पाप'। — अज्ञात

परोपकारी लोग हमेशा प्रसन्न चित्त होते हैं। – फादर टेलर

मनुष्यके स्थायी सुखका कारण दूसरेको सुखी करनेके सिवा कुछ नही है। आज जैसे लोग पैसा, इज्जत वगैरहके पीछे पागल हुए फिरते है, वैसे ही एक दिन सारी मनुष्य जाति दूसरोको सुखी बनानेके लिए पागल हुई फिरेगी। – अज्ञात

वह वृथा नही जीता जो अपना धन, अपना तन, अपना मन, अपना वचन दूसरोकी भलाईमे लगाता है। – हिन्दू सिद्धान्त

परोपकारी

परोपकारी पुरुष उसी समय अपनेको गरीब समझता है, जब कि वह सहायता माँगनेवालोकी इच्छा पूरी करनेमे असमर्थ होता है।

– तिरुवल्लुवर

परोपदेश

'परोपदेशे पाण्डित्य कभी न होने दो। 'हम जगके गुरु नही शिष्य व सेवक हैं' यह हमेशा ध्यानमे रखना चाहिए। – विवेकानन्द

पवित्र

पवित्रात्माके लिए सब चीजे पवित्र है। – बाइबिल

सचमुच पवित्र-आत्मा वह है जिसने कामिनी और कचनका त्याग कर दिया है। – रामकृष्ण परमहस

पवित्रता

आनन्दसे बढकर दुनियामे सिर्फ एक चीज है, और वह है पवित्रता।

– अज्ञात

अपना हृदय पवित्र रखोगे तो दस आदमियोकी ताकत रखोगे। – अज्ञात

जो कुछ हृदयको पवित्र करता है, उसे मजबूत भी करता है। – स्लेर

पारसाई दुनियाकी ख्वाहिशोंपर लात मारनेसे हासिल होती है।

– हजरतअली

तुम पवित्र रहो और किसीसे न डरो। धोबी मैले कपडेको ही पत्थरपर पछाडता है। – अज्ञात

पवित्रता, आत्माका सन्तुलन है। – फिलिप हैंनरी

ईश्वर साफ हाथोंको देखता है, भरे हाथोंको नही। – साइरस

जिस स्त्रीको अपनी पवित्रताका खयाल है उसपर बलात्कार करनेवाला पुरुष न आज तक पैदा हुआ है, न होगा। – गान्धी

जहाँ पवित्रता है वहाँ सौन्दर्य है, जहाँ सौन्दर्य है वहाँ काव्य है।

– विनोबा

पवित्र वे नही है जो अपने शरीर धोकर बैठ जाते है। पवित्र वे ही है जिनके अन्त करणमे वह रहता है। – नानक

पवित्रके लिए सब वस्तुएं पवित्र है। – सेण्टपॉल

जिसका मन पवित्र नही, उसका कोई काम पवित्र नही होता। – जुन्नेद

कामनासे मुक्त होनेके सिवा पवित्रता और कुछ नही हे। – तिरुवल्लुवर

हम निजी जीवनकी पवित्रताकी आवश्यकता मानते है, इतना ही नही, हम तो ऐसा भी मानते है कि अन्त शुद्धिके बिना केवल वृद्धिसे हुए कार्य चाहे जितने अच्छे मालूम होते हो तो भी कभी चिरस्थायी नही हो सकते। – गान्धी

ईश्वरके मार्गमें तो न आँखोकी जरूरत है और न जीभकी, जरूरत है पवित्र हृदयकी। ऐसा प्रयत्न करो जिससे वह पवित्रता पाकर तुम्हारा मन जाग जाये। – राबिया

पशु-हिंसा

पहले तीन ही रोग थे—इच्छा, क्षुधा और बुढ़ापा। पशुहिंसासे बढते-बढते ये अट्ठानबे हो गये। – बुद्ध

पसन्द

कुत्तेके लिए दुनियामे सर्वोत्कृष्ट वस्तु कुत्ता है, बैलको बैल, गधेको गधा, और सूअरको सूअर। – शोपेनहावर

पहचान

साधु ही साधुको पहचान सकता है। – रामकृष्ण परमहस

अपनेको पहचाननेके लिए मनुष्यको अपनेसे बाहर निकलकर तटस्थ बनकर अपनेको देखना है। – गान्धी

गाफिल, अपने-आपको पहचान। – सुकरात

तीर सीधा होता है और तम्बूरेमे कुछ टेढापन रहता है। इसलिए आदमियोको सूरतसे नही, बल्कि उनके कामोसे पहचानो। – तिरुवल्लुवर

हम आदमीको इससे पहचान सकते है कि वह ईश्वरसे क्या कहता है, लेकिन इस बातमे कभी नही कि ईश्वरने उसे क्या किया है। – पामर

पंख

नफीस परोवाले परिन्दे हमेशा नफीस नही होते। – कहावत

पण्डित

जो मनुष्य खूब सोच-विचारकर काम शुरू करता है, आरम्भ किये कामको समाप्त किये बिना नही छोडता, किसी समय भी काम करनेसे मुँह नहीं मोडता और इन्द्रियोको वशमे रखता है, वही 'पण्डित' कहलाता है। – विदुर

जो आदमी अपने कामोसे खुद अपने लिए सुख हासिल करनेका इरादा नही रखता वही पण्डित है। – गीता

जो करके दिखाता है, वही पण्डित है। – महाभारत

पाकीजगी

पाकीजगी और सादगी एक ही चीजके दो नाम है। — अज्ञात

पात्र-अपात्र

पात्र-अपात्रमें बड़ा भेद होता है—गाय घास खाकर दूध देती है, साँप दूध पीकर जहर उगलता है। — अज्ञात

पाप

पापका प्रारम्भ चाहे प्रातःकालकी तरह चमकदार हो, मगर उसका अन्त रात्रिकी तरह अन्धकारपूर्ण होगा। — टालमेज

सुकरातका कहना है कि पापमात्र अज्ञान है। इसके विपरीत यह भी कहा जा सकता है कि अज्ञान ही पाप है। — विनोबा

एक आदमी पाप करके धनादि लाता है, उसका उपभोग घरके सब लोग करते हैं, लेकिन पापका फल वह अकेला ही भोगता है। — महाभारत

पापकी कल्पना आरम्भमें अफीमके फूलकी तरह सुन्दर और मनोहारिणी होती है, किन्तु अन्तमें नागिनके आलिंगनकी तरह विनाशमयी है।
— हरिभाऊ उपाध्याय

दूसरोंके पाप हमारी आँखोंके सामने रहते हैं, खुदके हमारी पीठके पीछे।
— सैनेका

मैं सिवाय पाप करनेके, और किसीसे नहीं डरता। — स्टर्न

रंजीदा होना पाप है। — यंग

पाप पापीसे जीवन, सुख और लाभ लेता है और उसे मौत, यन्त्रणा और विनाश देता है, पापका झूठ और फरेब समझनेके लिए हमें उसके वादों और भुगतानोंका मुकाबला करके देखना चाहिए। — साउथ

अर्जुन पूछता है, 'इच्छा न होते हुए भी मनुष्य पाप किसलिए करता है ?' भगवान् कहते है, 'इच्छा है इसलिए करता है।' – विनोबा

पाप पहले मजेदार लगता है, फिर वह आसान हो जाता है, फिर हर्षदायक, फिर वह बार-बार किया जाता है, फिर आदतन किया जाता है, फिर उसकी जड जम जाती है, फिर आदमी गुस्ताख हो जाता है, फिर हठी, फिर वह कभी न पछतानेका कस्द कर लेता है और फिर वह तबाह हो जाता है। – लीटन

पापमे पड़ना मनुष्योचित है, पापमे पडे रहना दुष्टोचित है, पापपर दु खित होना सन्तोचित है, तमाम पापको छोड देना ईश्वरोचित है।
– लौगफैलो

छिपकर पाप करना कायरता और खुलकर पाप करना बेहयाई है।
– अज्ञात

पाप कर्म जो करे बुरा हे, परन्तु विद्वान्मे बहुत बुरा है। दुराचारी मूर्ख असयमी विद्वान्से अच्छा है, क्योकि वह तो अन्धा होनेके कारण मार्गसे विचल गया, मगर यह आँखें होते हुए कुऍमे गिरा। – सादी

पापकी पहचान मुक्तिकी शुरुआत है। – ल्यूथर

पाप विनाशकी बसी हे, जिसके काँटेका ज्ञान मछलीको लीलते समय नही मरते समय होता है। – हरिभाऊ उपाध्याय

जो पापमे लगा है, वह पापकी सजा भी भोग रहा है। – स्वेडनबर्ग

एक पाप दूसरे पापके लिए दरवाजा खोल देता है। – अज्ञात

जबतक पाप पकता नही, तभीतक मीठा लगता है, लेकिन जब फलने लगता है, तब बडा दु ख देता है। – बुद्ध

हम सब पापी है, और हममे कोई जिस बातके लिए दूसरेको दोषी ठहराता है उसे अपने ही हृदयमे पायेगा। – सैनेका

अगर हममें पाप न होता तो बाहरसे कोई प्रलोभन नही हो सकता था, क्योंकि कोई पाप खुशगवार नही लग सकता था। – क्राफोर्ड

जो पापमे पडता है, वह आदमी है, जो उसपर दु:खी होता है, साधु है, जो उसपर अभिमान करता है, शैतान है। – फुलर

पाप इसलिए दु:खद नही है कि वह मना है, बल्कि वह इसलिए मना है कि दु:खद है। कर्त्तव्य भी इसलिए हितकर नही है कि उसका आदेश दिया गया है, बल्कि उसका आदेश इसलिए दिया गया है कि वह हितकर है। – फ्रैंकलिन

'मैं ब्रह्म हूँ' यह न कहना पाप है। – स्वामी रामतीर्थ

कोई पाप छोटा नही है। घडीकी मशीनमें कोई रज-कण छोटा नही है। – जैरेमी टेलर

पापकी उत्पत्ति होती है विचारहीनता और हृदयहीनतामे। – टी० हुड

पाप क्या है? 'जो दिलमे खटके।' – मुहम्मद

पापकी जडपर अगर प्रहार कर रहा है तो हजार उसकी टहनियाँ तोड रहे है। – थोरो

जो पापमे तैरता है, वह दु:खमे डूबेगा। – कहावत

दो पापोमें-से एकको भी न चुनो, दो पुण्योमे-से दोनोको चुन लो। – टायन एडवर्डस

एक पापको दो दफे कर दो, बस वह अपराध नही मालूम पडेगा। – तलमद

पापकी शुरूआत लोभसे होती है। – अज्ञात

धमकियो और सजाओंसे पाप नही रोका जा सकता। – स्वामी रामतीर्थ

पापकी चर्चा भी पाप है। – अज्ञात

आत्म-रहित काम ही पाप है। – जैनेन्द्रकुमार

पापको याद करके ज़िन्दगी पापके हवाले न कर दो। — एनीबीसेण्ट

अगर किसीको अपनेसे प्रेम है तो उसे पापकी ओर ज़रा भी न झुकना चाहिए। — तिरुवल्लुवर

जो काम अपनी खुदीको बिलकुल अलग रखकर, अपने निजी सुख-दुःख, नफे-नुकसान और जीत-हारका बिलकुल ख़याल न करते हुए, सिर्फ फ़र्ज समझकर किया जाये, उससे करनेवालेको पाप नही लगता। — गीता

मै सिर्फ उसीपर अमल करता हूँ जो अल्लाह मुझे हुक्म देता है। मेरा काम इसके सिवा कुछ नही कि लोगोको बुरे कामोंके नतीजोसे आगाह करूँ। — मुहम्मद

जो आदमी 'सिर्फ अपने लिए खाना पकाना है' वह पापी है, वह 'पाप' ही खाता है। — गीता

पापको तुच्छ समझना ईश्वरको भी तुच्छ समझना है। — आविस

आदमियोमे अन्याय या बेईमानी या खुदग़र्ज़ीसे बडा पाप नही, जिसने दूसरोका हक़ मार रखा है। — टपर

यह सर्वथा अनुचित है कि ईश्वरके राज्यमें रहकर, उसकी रोजी खाकर, उसीकी आँखोके आगे, उसकी आज्ञाके विरुद्ध पापाचरण किया जाये। — इब्राहिम आदम

पाप-प्रवृत्ति

मै पापके परिणामसे नही, पापकी प्रवृत्तिसे मुक्ति चाहता हूँ। — अज्ञात

पापी

जिनकी आत्माएँ छोटी होती हैं अकसर वे ही बडे-बडे पाप-काण्डोके निर्माता होते है। — गेटे

इस मस्जिदमें-से सबसे बडे पापीको बाहर निकालनेके लिए कहा जाये तो मैं ही सबसे पहले निकलूँगा। – मलिक दिनार

पापीके बराबर मूढ नही, जो हर क्षण अपनी आत्माको दॉवपर लगाता रहता है। – टिलसन

पॉलिसी

नम्रता-सरीखी कोई पॉलिसी नही। – लिटन

पिता

पुत्रके प्रति पिताका कर्त्तव्य यही है कि वह उसे सभामे पहली पंक्तिमे बैठने लायक बना दे। – तिरुवल्लुवर

पीडा

अपने छोटे लडकेके मरनेके बादमे मैने उससे ज्यादा अमली धर्म सीखा है जितना कि मैने अपनी तमाम जिन्दगीमे पहले सीखा था।

– होरेस बुशनैल

जख्म तुम्हारे लिए हैं, पीडा मेरे लिए। – नवॉ चार्ल्स

बात विचित्र लगेगी, मगर दर असल परमात्मा हमको बीमारी, विपत्ति और निराशामे न केवल नेक बल्कि सुखी बनाना चाहता है। – बार्टल

पीडा तो सुकृतियोकी पाठशाला है, यह लहरीपनको दुरुस्त करती है, और पाप करनेके विश्वासमे बाधा डालती है। – एटरबरी

सबकी रक्षा करनेवाला सबका विश्वासपात्र बनता है। जो कोई पीडा नही देता, वह पीडा नही पाता। – महाभारत

पुण्य

प्यारे, पुण्योको मैं बुरा नही मानता, पर बात सिर्फ इतनी है कि वे आत्मा-की महत्ताके साथ नही लागू होते। – नीत्शे

पुण्यका मार्ग शान्तिका मार्ग है। – नैतिक सूत्र

पुत्र

पुत्रसे कोई शाश्वत नाम नही रहता। उसके लिए भी अनेक प्रकारके पाप और उपाधियाँ सहनी पडती हैं। – अज्ञात

पुत्री

मेरा बेटा तबतक मेरा बेटा है जबतक उसे जोरू नही मिल जाती, लेकिन मेरी बेटी जिन्दगी-भर मेरी बेटी बनी रहती है। – कहावत

पुनर्जन्म

मैं सब्जे यानी घासकी तरह पैदा हुआ हूँ। मैने सात-सौ सत्तर जिस्म देखे है। – मौलाना रूम

पुरस्कार

मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह उचित है या नही, इसकी परीक्षा तज्जन्य आर्थिक पुरस्कारसे बचकर करनी होगी। – अज्ञात

पुरुष

उत्तम पुरुषोकी यह रीति है कि वे किसी कामको अधूरा नही छोडते। – वीलेण्ड

पुरुषार्थ

हर आदमी एक ही निश्चित मार्गको अगीकार करनेके बजाय खुदके स्वभावानुसार स्वतन्त्र रीतिमे नया मार्ग निकालकर पुरुषोत्तम हो सके तभी यह कहा जा सकता है कि उसने सच्चा पुरुषार्थ किया। – अरविन्द घोष

ईश्वरमे अपनेको तद्गत करना व स्वय उसको आत्मगत करके उसे सर्वत्र अनुभव करना यही अपना पुरुषार्थ और यही अपना स्वराज्य है। – अरविन्द घोष

स्वतन्त्र रीतिसे आदर्शको पहचानकर, चाहे जितना कठिन होनेपर भी उसे पानेके लिए जीतोड परिश्रम करनेका नाम ही पुरुषार्थ है। – गान्धी

कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनोका जिस जगह ऐक्य होता है वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। — अरविन्द घोष

पुरुषार्थमें दरिद्रता नही, ईश्वर-चिन्तनमे पाप नही, मौन धरनेमे कलह नही, जागनेवालेको भय नही। — चाणक्य

ईश्वरकी कृपाके बिना पत्ता भी नहीं हिलता। किन्तु प्रयत्नरूपी निमित्तके बिना वह हिलता भी नही। — गान्धी

बुद्धिमान् और माननीय लोग पुरुषार्थको बडा मानते है। परन्तु नपुसक, जो पुरुषार्थ नही कर सकते, दैवकी उपासना करते हैं। — शुक्राचार्य

हे राम, शुभ पुरुषार्थसे शुभ फल मिलता है और अशुभसे अशुभ फल मिलता है, तुम्हारी जैसी इच्छा हो वैसा कर्म करो। — वशिष्ठ

जो मनुष्य घरमे बैठा रहता है उसका भाग्य भी बैठ जाता है, जो खडा रहता है, उसका भाग्य खडा हो जाता है, जो सोया रहता है उसका भाग्य भी सो जाता है और जो चलता-फिरता है, उसका भाग्य भी चलने-फिरने लगता है। — ऐतरेय ब्राह्मण

पुरुषार्थी

पुरुषार्थी वह है जो भाग्यकी रेखाएँ मिटा दे। — शीलनाथ

पुरुषार्थीका दैव भी अनुवर्तन करता है। — अज्ञात

पुरुषोत्तम

पाणिनिका उत्तम पुरुष वही भगवान्का पुरुषोत्तम। — विनोबा

पुरुषोत्तम इतना मुक्त है कि वह अपनी मुक्तावस्थामे भी बद्ध नही है। — अरविन्द घोष

उत्कृष्ट व्यक्तिका मार्ग तिहेरा है . पुण्यात्मा—चिन्ताओसे मुक्त, सम्यक्-ज्ञानी—उलझनोंसे मुक्त, दिलेर—भयसे मुक्त। — कन्फ्यूशियस

पुरोहित

अगर दाढी ही सब कुछ होती, तो बकरा शेख हो गया होता।

– डेनिश कहावत

पुस्तक

जो पुस्तकें तुम्हे सबसे अधिक सोचनेके लिए विवश करती हैं, तुम्हारी सबसे बडी सहायक है।

– थ्योडोर पार्कर

पुस्तक-प्रेमी सबसे धनी और सुखी है, उसका दर्जा या स्थान कुछ भी हो।

– जे० ए० लौगफोर्ड

जैसा लेखक वैसी पुस्तक।

– कहावत

पुस्तकोमे अक्षर रहते है, इसलिए पुस्तकोकी सगतिमें जीवन सार्थक करनेकी आशा व्यर्थ है। वचनोंकी कढी और वचनोका ही भात खाकर भला कौन तृप्त हुआ है ?

– विनोबा

पूजनीय

सबसे बडा विषय कौन है ? सभी विषय। सदा दुःखी कौन है ? विषयानुरागी। धन्य कौन है ? परोपकारी। पूजनीय कौन है ? शिवतत्त्वनिष्ठ।

– शकराचार्य

पूजा

जो जिस रूपकी पूजा करता है वह उसी रूपको पाता है।

– गीता

कृतज्ञ और प्रफुल्ल हृदयसे आयी हुई पूजा ईश्वरको सबसे ज्यादा प्रिय है।

– प्लुटार्क

अल्लाहका क्रोध उन लोगोपर हो जो अपने पैग़म्बरोकी कब्रोको पूजाका स्थान बना लेते हैं। ऐ अल्लाह, मेरी कब्रकी कभी कोई पूजा न करे।

– हज़रत मुहम्मद

छोटे फूलने पूछा, 'ऐ सूर्य, मैं तेरी पूजा-स्तुति किस तरह करूँ ?' 'अपनी पवित्रताके सरल मौन-द्वारा', सूर्यने जवाब दिया । — टैगोर

प्राप्त कर्तव्य उत्तम रीतिसे पूरा करना ही परमेश्वरकी पूजा करनेका ऊँचा तरीका है । — विवेकानन्द

पूर्णता

सर्वोच्च पूर्णताकी प्राप्ति सर्वोच्च सयमके बिना सम्भव नही । — गान्धी

पूर्णताकी प्राप्तिका मार्ग इच्छाका नाश करना ही दिखाई पडता है ।
— मनोविज्ञानका एक विद्वान्

मन, वाणी और कर्मसे सम्पूर्ण सयम पाले बगैर आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नही हो सकती । — महात्मा गान्धी

कामिनी और कचनको त्यागे बगैर आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नही हो सकती । — रामकृष्ण परमहस

पूर्वज

स्वच्चरोको फख्र है कि उनके पुरखे घोडे थे । — जर्मन कहावत

जिस आदमीके पास शानदार पूर्वजोके सिवा अभिमान करनेकी कोई चीज नही है, वह आलू-छाप आदमी है—सबसे अच्छा हिस्सा जमीनके अन्दर । — ओवरबरी

पूर्व-धारणा

आदमीमे-से पूर्व-धारणाको तर्क-द्वारा निकालनेकी कोशिश न करो । तर्कसे वह उसमे घुसेडी नही गयी थी, चुनाँचे तर्कसे वह निकल भी नही सकती । — सिडनी स्मिथ

पूर्व-धारणाओसे सावधान रहना ! वे चूहोकी तरह है और आदमियोके मन चूहेदानीकी तरह, पूर्व-धारणाएँ घुस आसानीसे जाती हैं, मगर इसमें सन्देह है कि वे कभी बाहर भी निकलती होगी । — अज्ञात

पूँजीपति

पनामा टोपोको पूँजीपति पसीना बहानेवाले किसानोसे आठ-आठ पेन्सको खरीद लेते है, और दूकानोपर बीस-बीस शिलिंगको बेचते है ।

— अज्ञात

युरोपके अपराधी चोर, उसके तमाम युद्धोके वास्तविक स्रोत, पूँजीपति है, जो कि दूसरोकी मेहनतकी फीमदियोपर जाती है । — जॉन रस्किन

'तू किसीकी दौलतको गृद्ध-दृष्टिसे नही देखेगा,' परन्तु पशु-बल और धूर्तताके जोरसे वे जितना हो सके झपट लेते है और दबाये रखते है ।

— अज्ञात

पेट

पेटको भोजनसे खाली रखो ताकि उसमे ईश्वरीय ज्ञानका प्रकाश हो ।

— सादी

तुम बुद्धिसे इसलिए खाली हो कि नाक तक भोजनसे भरे हुए हो । — अज्ञात

भरा पेट सीख श्रवण नही कर सकता । — रूसी कहावत

मनुष्य अपनेको सरलतासे परमेश्वर क्यो नही समझ लेता, इसका मुख्य कारण 'पेट' है । — नीत्शे

जो खाली पेट शायद ही कभी होता हो, उसे सादा भोजन अरुचिकर लगता है । — होरेस

जो अपने पेटका खयाल नही रखता वह शायद ही किसी और चीजका खयाल रखे । — सैम्युएल जॉन्सन

अपना पेट साफ रखो, तुम्हारा दिमाग साफ रहेगा । — अज्ञात

पेटू

जो पेटका दास है वह शायद ही कभी परमेश्वरकी पूजा कर सकता है ।

— अज्ञात

उनका बावर्चीखाना उनकी मसजिद है, बावर्ची उनका मुल्ला, दस्तरख्वान उनकी कुर्बानगाह और उनका पेट उनका खुदा है। — बक

पेटूपन

हमारी समस्त दुर्बलताओ और तमाम बीमारियोका मूल कारण पेटूपन है। जैसे दीपक अत्यधिक तेलसे घुट मरता है, आग अत्यधिक ईंधनसे बुझ जाता है, उसी तरह असयत आहारसे शरीरका स्वाभाविक स्वास्थ्य नष्ट हो जाती है। — बर्टन

तलवारसे इतने नही मरते जितने अति-भोजनसे। — कहावत

पैग़म्बर

लेकिन ऐ मुहम्मद, अगर लोग तुमसे मुँह फेर लें तो हमने (अल्लाहने) तुम्हे उनके ऊपर चौकीदार बनाकर नही भेजा है तुम्हारा काम सिर्फ अपना पैगाम सुना देना है। — कुरान

पैसा

प्रेम बहुत-कुछ कर सकता है, परन्तु पैसा सब-कुछ कर सकता है।

— फ्रेंच कहावत

जब पैसेका सवाल हो, तो दोस्तीको 'खुदा हाफिज़'। — हाउसमन

अगर तुम पैसेको अपना खुदा बना लोगे तो वह शैतानकी तरह तुम्हे सतायेगा। — अज्ञात

पैसेको ही बडा मानकर जिन्दगी बरबाद कर दी जाये तो बरबादशुदा जिन्दगीको पैसेकी कीमत नही रहती। — अज्ञात

जिसकी राय यह हो कि पैसा सब कुछ कर सकता है, उसके बारेमें यह मुनासिब शंका की जा सकती है कि वह हर काम पैसेकी खातिर करता है।

— अज्ञात

जब दौलतमन्द बीमार पडता है तभी वह पूरी तौरसे अनुभव करता है कि पैसा कैसी नाकारा चीज है। – कोल्टन
जो जीव आत्मेच्छा रखता है वह पैसेको नाकके मैलकी तरह त्याग देता है। – अज्ञात
पैसा पाना ही आदमीका कुल काम नही है, दयालुता जीवन कार्यका कीमती भाग है। – जॉन्सन

पोशाक

पोशाकमे ज्यादती कीमती हिमाकत है, फैसन और प्रदर्शनप्रिय लोगोकी साज-सज्जासे तमाम नगोको सवस्त्र किया जा सकता है – विलियम पेन
कोई आदमी अपनी सजीली-छबीली पोशाकके कारण सिवा मूर्खों और स्त्रियोके और किसीके द्वारा सम्मानित नही होता। – सर वाल्टर रेले
पोशाककी परिपूर्णता तीन बातोके मिलनेमे है—उसका आरामदेह, सस्ता और सुरुचिपूर्ण होना। – बोवी
वह सर्वोत्तम पोशाकमे है जिसकी पोशाक कोई नही देखता। – ट्रोलप
भाषा विचारकी पोशाक है, और रुचिके आधुनिक नियमानुसार वह पोशाक सबसे अच्छी है जो पहननेवालेपरसे कमसे कम ध्यान खीचती है। – लैली स्टीफ़िन्स
यह हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारी पोशाक हमारे मनपर बडा और सीधा प्रभाव डालती है। – अज्ञात
सुरुचिपूर्ण पोशाक स्वयं ही एक सिफ़ारिशी पत्र है। – अज्ञात
कीमती पोशाक किसीके सौन्दर्यको नही बढाती, मुमकिन है वह कुछ रोब-सा पैदा कर दे, मगर वह तो प्रेमका दुश्मन है। – शेन्स्टन
खाओ अपनी खुशीका, पहनो दूसरोकी खुशीका। – फ़ैंकलिन

पोषण

बुरेको पोसना भलेको चोट पहुँचानेके समान है। – सादा

प्यार

प्यार, रजीदगीकी तरह, छोटी बातोंको बडी बनाता है, लेकिन एकका यह बडा-बनाना आसमानके सितारोंको दूरबीनमे देखनेकी तरह है, दूसरे-का, राक्षसोको खुर्दबीनसे बडा बनानेकी तरह । — लीहण्ट

प्यारा

सब मखलूक (सृष्टि) अल्लाहका कुनबा है और उन सबमे अल्लाहका सबसे प्यारा वह है जो अल्लाहके इस कुनबेका भला करता है। — मुहम्मद

प्रकाश

दयामय प्रकाश, मुझे रास्ता दिखा, इस दुःखान्धकारके घेरेमे-से तू मुझे निकाले चला चल। — न्यूमैन

बहुत-सी चिनगारियोमे प्रकाश तुच्छ ही मिलता है — एमील

जबतक तुम्हे 'प्रकाश' प्राप्त है चले चलो, ताकि कही तुम्हे 'अन्धकार' न आ घेरे। — अज्ञात

सबसे अधिक दैवी प्रकाश सिर्फ उन हृदयोमे चमकता है जो तमाम दुनियावी कूडे-करकट और इनसानी नापाकीजगीसे पाक-साफ है। — सर वाल्टर रैले

लम्बा और कठिन है वह रास्ता जो नरकसे प्रकाशकी ओर जाता है। — मिल्टन

ज्यो-ज्यो प्रकाश बढता है हम खुदाको अपने कायमसे बदतर पाते है। — अज्ञात

प्रकाशमान

जो स्वय प्रकाशमान है, उपग्रहोकी तरह नही घूमते । — एमर्सन

प्रकृति

शक्तिशालिनी, दयालु, परमप्रिय प्रकृतिने धीमेसे कहा,—"प्यारे, परवा मत कर !" — एमर्सन

यदि तुमको मेरे ढग बुरे मालूम होते है तो भी तुम्हे अपनी सुष्ठु प्रकृति न छोडनी चाहिए। — अज्ञात

प्रकृति और विवेक हमेशा एक ही बात कहते है। — जुवैनल

सूर्योदयमे जो नाटक है, जो सौन्दर्य है, जो लीला है, वह और कही देखनेको नही मिल सकती, ईश्वर-सरीखा दूसरा सूत्रधार नही मिल सकता; और आकाशसे बढकर भव्य रगभूमि दूसरी नही मिल सकती।

— गान्धी

अगर मुझे पूरी तरह अन्दरूनी जिन्दगी बसर करनी है तो मुझे रूढियोकी पवित्रतासे क्या करना? मेरी प्रकृतिके नियमके अलावा मुझे कोई कानून मान्य नही, 'अच्छा' और 'बुरा' तो नाम है जो कभी इसके लिए और कभी उसके लिए आसानीसे लगा दिये जाते है, वही सही है जो मेरी प्रकृतिके माफिक है, और वही गलत है जो उसके खिलाफ है।

— एमर्सन

प्रगति

'आप नसैनीके किस डण्डेपर है?' सवाल यह नही है, बल्कि यह कि 'आपका मुख किधरको है?' — अज्ञात

आगे न बढना पीछे हटना है। — कहावत

हर साल एक बुरी आदतको जडसे खोदकर फेंका जाय तो कुछ कालमे बुरेसे बुरा आदमी भला हो सकता है। — फ्रैंकलिन

इस दुनियामे बडी चीज यह नही है कि हम कहाँ है, बल्कि यह कि हम किस तरफ चल रहे है। — होम्स

मैं यह भी मानता हूँ कि आर्थिक प्रगति सच्ची प्रगतिके प्रतिकूल है। कुबेर और भगवान्की सेवा एक साथ नही हो सकती। यह अर्थशास्त्रका एक अमूल्य तत्त्व है। दौलत और ईश्वरका बे-बनाव है। ईश्वर तो गरीबोके यहाँ रहता है। — गान्धी

अगर कोई आदमी फरिश्ता बननेके लिए ऊपर नहीं उठ रहा, तो इत्मीनान रखो, वह शैतान बननेके लिए नीचे गर्क हो रहा है। वह पशुकी अवस्थामें ही नहीं रुका रह सकता। — कॉलरिज

प्रचार

जो अच्छी तरह जीता है वह अच्छी तरह प्रचार करता है। — स्पेनिश कहावत

प्रचुरता

तंगीकी तरह प्रचुरता भी बहुतोंका नाश कर देती है। — नीतिसूत्र

प्रजातन्त्र

यह निश्चित रूपसे सिद्ध किया जा सकता है कि पूर्ण अहिंसाकी पृष्ठभूमिके बिना पूर्ण प्रजातन्त्र असम्भव है। — गान्धी

प्रण

प्रण-हीनता प्राण-हीनताके समान है। — स्वामी शिवानन्द

जिसने किसी कामके पूरा करनेका प्रण ठान लिया वह उसको अवश्य कर लेगा। — कालिदास

प्रणको तोड़नेसे पुण्य नष्ट हो जाते है। — रामायण

प्रतिध्वनि

जहाँ प्रतिध्वनियाँ होती हैं वहाँ हमें अकसर खालीपन और खोखलापन मिलता है, दिलकी प्रतिध्वनियोंमें इससे उलटा होता है। — बौइज

प्रतिभा

प्रतिभा एक तरहका आचरण है और आचरण भी [illegible] तरहका आवरण है। — नीत्शे

परिमितता विवेककी सहयोगिनी है, परन्तु प्रतिभासे उसका दूरका भी वास्ता नही। – कोल्टन

प्रतिभावान् वह है जिसमे समझदारी और कार्यशक्ति विशेष हो। – शॉपेनहोर

प्रतिभावान्का एक लक्षण यह है कि वह मान्यताओको हिला देता है। – गेटे

प्रतिभा केवल स्वतन्त्र वातावरणमे स्वतन्त्रतापूर्वक साँस ले सकती है। – जे० एस० मिल

प्रतिभा हमारी साधारण शक्तियोके सुतीक्ष्ण रूपके अतिरिक्त कुछ नही। – हेडन

प्रतिभावान्के लिए आवश्यक पहली और आखिरी चीज सत्यका प्रेम है। – गेटे

प्रतिशोध

पर्वतोमे पानी नही रहता, महापुरुषोके मनमे प्रतिशोधकी भावना नही रहती। – चीनी सूत्र

प्रतिष्ठा

शरीफ-मिज़ाज बनो ! हमारा ही हृदय हमे सच्ची प्रतिष्ठा देता है, लोगोकी राये नही। – शिलर

जिसने अपनी प्रतिष्ठा खो दी, उसका सब कुछ खो गया। – अज्ञात

स्वार्थके सिद्धान्तोपर बनी हुई प्रतिष्ठा शर्मनाक अपराध है। – कूपर

प्रतिज्ञा

प्रतिज्ञा न लेनेका अर्थ अनिश्चित या डाँवाडोल रहना है। – गान्धी

सत्यवादी अपनी प्रतिज्ञा कभी नही छोडते, प्रतिज्ञापालन—यही बडप्पनका लक्षण है। — रामायण

प्रदर्शन

लोगोको अपनी बाहरी हालतके सिवा और कुछ न दिखा। चाहे समय तेरे अनुकूल न हो, अथवा कोई मित्र ही क्यो न तुझपर अत्याचार कर रहा हो। — हज़रतअली

आदमी शक्तिशाली हो, लेकिन अगर वह अपनी योग्यता न दिखाये तो लोग उसका तिरस्कार ही करते है। आग जबतक लकडीमे छिपी रहती है तबतक हर कोई उसे लॉघ जाता है, मगर जलती हुईको नही। — अज्ञात

या तो जैसा अपनेको बाहरसे दिखाते हो वैसा ही भीतरसे बनो, या जैसे भीतर हो वैसे ही बाहरसे दिखाओ। — अज्ञात

जो नम्रतापूर्वक किसी गुमराहको रास्ता बताता है, उसके समान है जो अपने चिरागसे दूसरेका चिराग रोशन करता है, ताहम जो चिराग दूसरेके लिए जलता है स्वय उस व्यक्तिको ही आलोकित करता है। — अज्ञात

प्रफुल्लता

अपने कामपर गाओ। प्रफुल्लताकी शक्ति आश्चर्यजनक है। — अज्ञात

हृदयकी प्रफुल्लतासे वह अनुपम लावण्य आता है, जो कि अङ्गोपाङ्गकी निर्दोषता और चेहरेकी सुन्दरतामे नही है। — अज्ञात

प्रभाव

ज्ञान और सब तरहकी चतुरतासे क्या लाभ ? अन्दर जो आत्मा है उसका ही प्रभाव सर्वोपरि है। — तिरुवल्लुवर

हमारा प्रभाव हमारे ज्ञानपर, या हमारी कृतियोपर भी, इतना निर्भर नही है, जितना कि इसपर कि हम क्या है। — अज्ञात

प्रभुता

प्रभुताको सब कोई भजते है, प्रभुको कोई नही भजता। प्रभुको भजे तो प्रभुता चेरी हो जाय। — कबीर

दुनियामें ऐसा कोई नही जन्मा जिसे प्रभुता पाकर गर्व न हुआ हो। — रामायण

प्रभु-स्मरण

जो गम्भीरतापूर्वक प्रभु-स्मरण करता है वह दूसरे सब पदार्थोंको भूल जाता है, उसे तो सभी पदार्थोंमें एक वह प्रभु ही दिखाई देने लग जाता है। — जुन्नुन

प्रमाद

काहिलीसे बच, क्योकि आत्माके प्रमादसे शरीर सडने लगता है। — कैटो

प्रमाद न करो, ध्यानमे लीन रहो, लोगोके चक्करमे न पडो, प्रमादके कारण तुम्हें लोहेका लाल-गरम गोला न निगलना पडे और दु खकी आगसे जलते वक्त तुम्हे यूँ न चीखना पडे कि 'हाय यह दु ख है।' — बुद्ध

जब रोनेका प्रकरण हो तब हँसना कैसे मुमकिन हो जाता है! जब कर्त्तव्य पुकारता हो तब प्रमाद कैसे बरदाश्त होता है!! — अज्ञात

जग खा-खाकर खत्म होनेकी अपेक्षा घिस-घिसकर मिटना अच्छा। — बिशप कम्बरलेण्ड

मनुष्यकी अपेक्षा तो भेड-बकरे भी अधिक सचेत होते हैं, क्योकि वे गडेरियेकी आवाज सुनकर खाना-पीना भी छोडकर उसकी ओर तुरन्त दौड पडते है, दूसरी ओर मनुष्य इतने लापरवाह है कि ईश्वरकी ओर जानेकी बाँग सुनकर भी उधर न जाकर आहार-विहारमें तल्लीन रहते हैं। — हुसैन बसराई

शैतान औरोंको प्रलोभित करता है, प्रमादी आदमी शैतानको प्रलोभित करता है। — अँगरेजी कहावत

जैसे वृक्षका पत्ता रात्रिकालके चले जानेके बाद पीला होकर गिर जाता है, वैसे ही मनुष्यका जीवन भी आयु समाप्त होनेपर नष्ट हो जाता है। इसलिए गौतम, क्षण-मात्रका भी प्रमाद न कर। — भगवान् महावीर

हे आत्मा, तुझे उदासीनता धारण करना योग्य नहीं। कारण कि प्रात काल तो गया, सन्ध्या तक रहनेका भी कहाँ ठिकाना है? — रत्नसिंह सूरि

अगर तुम अपनी प्राकृतिक शिथिलता या पाली हुई काहिलीको नहीं जीत सकते तो यकीन रखो कि तुम 'सैकेण्ड-रेट' से ज्यादा कुछ नहीं हो सकते और ताज्जुब नहीं पूर्ण असफल रहो। — अज्ञात

प्रमाद मौत है। प्रमाद नहीं करना। — अज्ञात

प्रमादसे कटुतर तुम्हारा कोई शत्रु नहीं। — जैन सिद्धान्त

प्रमाद उतना शरीरका नहीं जितना मनका होता है। — रोशे

अच्छा, तो भिक्षुओ, मैं तुमसे कहता हूँ—'संसारकी सभी चीजें बनी हैं इसलिए बिगडनेवाली हैं, नश्वर हैं। तुम अपने लक्ष्यकी प्राप्तिमें प्रमाद न करना।' यही तथागतके अन्तिम शब्द हैं। — बुद्ध

प्रयत्न

प्रयत्न देवता है और भाग्य दैत्य है इसलिए प्रयत्न देवकी उपासना करना ही श्रेयस्कर है। — समर्थ रामदास

प्राप्तिकी अपेक्षा प्रयत्नका आनन्द अधिक है। — अज्ञात

अन्तर्यामीकी 'तलमल' नहीं-सी होनेसे प्रयत्न ढीला पड जाता है। — विनोबा

बिना प्रयत्नके या अल्प प्रयत्नसे मिट्टीके ढेले भले ही प्राप्त हो जायें, मगर रत्नकी प्राप्ति तो महान् प्रयत्नसे ही होती है। — अज्ञात

यह न समझ कि मानव-प्रयत्नसे कुछ नही मिल सकता, प्रयत्न ईश्वरका स्वरूप है । – अज्ञात

शक्ति-भर प्रयत्नसे कुछ भी कम खुद तुम्हारी ही तुष्टि नही प्राप्त कर सकता । – अज्ञात

योग माने कर्म करनेका कौशल । – गीता

दैव-प्रतिकूल होनेसे प्रयत्न व्यर्थ जानेपर सत्त्वशील पुरुष विषाद नही करते । – अज्ञात

निष्फल प्रयत्न करनेसे जगत्मे कौन नही हँसा जाता । – कालिदास

प्रयास

क्या तुमने कभी ऐसे आदमीका नाम सुना है, जिसने श्रद्धा और सरलताके साथ जीवन-भर प्रयास किया हो और किसी अशमे भी सफल न हुआ हो ? अगर कोई आदमी उन्नतिके लिए प्रयत्न करता है, तो क्या वह उन्नत नही होता ? क्या कभी किसी आदमीने वीरता, महत्ता, सत्य, दयालुताको आजमाया है और यह पाया है कि इनसे कोई लाभ नही है, यह प्रयास वृथा है ? – थोरो

किसी सम्यक् प्रयासको जब एक बार शुरू कर दिया, तो पूर्ण सफलता मिले बगैर नही छोडना चाहिए । – शेक्सपीयर

माँग, और वह तुझे अवश्य दिया जायेगा, खोज और तू अवश्य पायेगा, खटखटा, तेरे लिए दरवाजा अवश्य खुलेगा । – बाइबिल

प्रलोभन

मालूम करो कि तुम्हारे प्रलोभन क्या है, और तुम्हे बहुत-कुछ मालूम हो जायगा कि खुद क्या हो । – बीचर

बदकिस्मतियोकी तरह प्रलोभन भी हमारे नैतिक बलकी परीक्षा करने भेजे जाते है । – मारगरिट

कुछ लोग बड़े-बड़े प्रलोभनोसे दूर रहते है, परन्तु छोटे-छोटे प्रलोभनोसे परास्त हो जाते हैं। — अज्ञात

बेवकूफ चिड़िया दाना तो देखती है, फन्दा नही। — अफ़ग़ानी कहावत

फन्देमें तड़फड़ानेकी बनिस्बत प्रलोभनमें बचकर निकलना अच्छा है। — ड्राइडन

सारेके सारे दार्शनिक जितना सिखा सकते है उससे ज्यादा दर्शनशास्त्र एक प्रलोभन सिखा देता है। — लॉवेल

शैतान फिलफौर प्रलोभित करते है, लगते ऐसे है कि 'प्रकाश'के देवदूत हो। — शेक्सपीयर

जिसे शैतानके साथ व्यापार करनेका इरादा नही है उसे इतना अक्लमन्द होना चाहिए कि उसकी दूकानसे दूर रहे। — साउथ

प्रलोभनके प्रतिरोधका हर क्षण विजयस्वरूप है। — फेबर

हम किसी दुनियावी प्रलोभनमे आकर मनुष्यताको कुरबान नही कर सकते। — अज्ञात

हर प्रलोभन ईश्वरके ज्यादा नज़दीक पहुँचनेका मौका है। — आदम्स

सबसे ऊँची 'बोली बोलनेवाले' के सामने अडिग रह सकनेका सद्गुण बिरले लोगोमे ही होता है। — वाशिंगटन

कल्याण-स्वरूप है वह व्यक्ति जो प्रलोभनोपर विजय पाता है। — अज्ञात

प्रवृत्ति

प्रवृत्ति रजोगुणका लक्षण है, अप्रवृत्ति तमोगुणका, इधर खाई उधर कुआँ। — विनोबा

प्रश्न

अगर कोई आदमी अपने-आपमे नही पूछता 'क्या करूँ ? क्या करूँ ?' तो सचमुच मैं नही जानता कि ऐसे आदमीका क्या करूँ ? — कनफ्यूशियस

प्रशसा

दानादि सत्कर्मोंको करते समय होनेवाली अपनी प्रशसाकी ओर कान भी न दो। वह प्रशसा तुम्हारी नही, उस ईश्वरकी महिमा है। — जुन्नुन

ऊपरके देव और नीचेके देव दोनो समान रूपसे प्रशसा-गानसे प्रसन्न होते हैं। — होरेस

चापलूसी करना बहुत-से लोग जानते है, बहुत कम लोग जानते हैं कि प्रशसा कैसे की जाती है। — वेण्डेल फिलिप्स

जो केवल बाहरी वाहवाही चाहता है, उसने अपना सारा आनन्द दूसरेकी मुट्ठीमें दे रखा है। — गोल्डस्मिथ

प्रशसा आदमीके मनको इस कदर प्यारी लगती है कि वह उसके लगभग तमाम कार्योंकी मूल प्रेरणा बनी हुई है। — जॉनसन

किसीके गुणोकी प्रशसा करनेमे अपना समय नष्ट न करो, उसके गुणोको अपनानेका प्रयत्न करो। — कार्ल मार्क्स

प्रशसा विभिन्न व्यक्तियोपर प्रभाव डालती है, वह विवेकीको नम्र बनाती है और मूर्खको और भी अहकारी बनाकर उसके दुर्बल मनको मदहोश कर देती है। — फैलथम

प्रशसाके भूखे यह साबित करते है कि वे योग्यतामे कँगले हैं। — प्लुटार्क

प्रशसा उत्कृष्ट मनस्वियोका प्रोत्साहन होती है, दुर्बल व्यक्तियोंका ध्येय। — कोल्टन

प्रशंसा अज्ञानकी बच्ची है। — फ्रैंकलिन

जो शुभ कार्यके लिए प्रशसाके भूखे रहते है, उनकी वास्तविक प्रीति शुभ कार्यसे नही, प्रशसासे है । — हरिभाऊ उपाध्याय

स्वार्थ-सिद्धिके लिए प्रशसा करना दाताके हाथ स्वाभिमानको बेच देना है । — हरिभाऊ उपाध्याय

प्रसन्न

प्रसन्न रहनेका नियम ले लेना चाहिए । छोटी-मोटी मर्यादा भी लोकमे पूजित होती है । — अज्ञात

प्रसन्न-चित्त

चिन्तामे डूबे रहनेवालेको अन्न अच्छी तरह नही पचता, प्रसन्न-चित्त रहनेसे भोजन अच्छी तरह पचता है । — अज्ञात

प्रसन्नता

मन और शरीरमे गहरा और अविच्छिन्न सम्बन्ध है, यदि मन प्रसन्न है तो शरीर स्वस्थता और स्वतन्त्रता अनुभव करता है, प्रसन्नतासे बहुत-से पाप पलायन कर जाते हैं । — गेटे

प्रसन्नता वसन्तकी तरह, दिलकी तमाम कलियाँ खिला देती है । — जीन पॉल

प्रसन्नता समस्त सद्गुणोकी माँ है । — गेटे

जीवन-वृक्ष केवल खुशमिजाजोके लिए खिलता है । — आरण्ट

प्रसन्नतामे योगदान देनेवाली वस्तुओमे तन्दुरुस्तीसे बढकर और दौलतसे घटकर कुछ नही । — शॉपेनहोर

प्रसन्नता परम स्वास्थ्यवर्धक है, शरीर और मन दोनोके लिए मित्र-तुल्य ! — एडीसन

प्रसन्नचित्त आदमी अधिक जीता है । — शेक्सपीयर

चित्तकी प्रसन्नता—प्रफुल्लता एक वस्तु है, आमोद-प्रमोद दूसरी। पहलीके लिए भीतरसे सामग्री मिलती है, दूसरीके लिए बाहरसे । — हरिभाऊ उपाध्याय

ससारमे प्रसन्न रहनेका एक ही उपाय है—वह यह कि अपनी आवश्यकता-ओको कम करो। – गान्धी

प्रसन्नता सीधा और तात्कालिक लाभ है—आनन्दका मानो वह सिक्का है। – आर्थर शॉपेनहोर

चित्तके प्रसन्न होनेसे सब दु ख नष्ट हो जाते है। जिसका चित्त प्रसन्न, निर्मल हो गया है उसकी बुद्धि भी शीघ्र स्थिर हो जाती है। – गीता

हमेशा खुश रहा करो, इससे दिमागमे अच्छे खयालात आते है और तबीयत नेकीकी तरफ लगी रहती है। – टैगोर

प्रसन्नता आत्माका स्वास्थ्य है, गमगीनी उसका ज़हर। – स्टेनिसलास

चित्तकी अभीक्ष्ण प्रसन्नता ज्ञानी होनेका सबसे स्पष्ट लक्षण है। – माण्टेन

कार्य-रत रहनेसे ही चित्तको प्रसन्नता मिलती है। मै एक ऐसे आदमीको जानता हूँ जो एक श्मशान-यात्रासे हर्षमस्त लौटा, सिर्फ इस कारण कि उसका इन्तज़ाम उसके सुपुर्द था। – विशप होर्न

जो अपनी छलकती आँखोसे, पवित्र विचारोसे, मीठे शब्दोसे और शुभ कार्यो से आनन्द बरसाता है, लोग उसको हमेशा प्रसन्न रखते है। – अज्ञात

प्रसिद्धि

यह अकसर होता है जिनका हम जमीनपर न्यूनतम उल्लेख करते है वे स्वर्गमे सर्वाधिक प्रसिद्ध होते है। – कौसिन

प्रसिद्धि वीरताके कामोकी सुगन्ध है। – सुकरात

प्रसिद्धि, सज्जनता या महत्ताकी कोई जरूरी शर्त नही है। – अज्ञात

किसी भी व्यक्तिमे कोई एक ही विशेषता होती है और उसीसे वह प्रसिद्धि पा जाता है। देखिए, क्या केवडेमे फल लगते है ? क्या पानकी बेलमे फूल या फल लगते है ? — अज्ञात

प्रज्ञा

जैसे कछुआ अपने अगोको समेट लेता है उसी तरह जो अपनी इन्द्रियोको उनके विषयोसे हटा लेता है, उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है। — गीता

प्रज्ञावान्

भारी-भरकम शरीरके होते हुए भी मूर्ख मनुष्यको हम बडा नही कह सकते, जो प्रज्ञावान् है, वही बडा है। — बुद्ध

प्राचीनता

प्राचीनता! उसके पुनर्निर्माणकी अपेक्षा उसके खण्डहर ज्यादा पसन्द करता हूँ। — जोबर्ट

प्राप्ति

श्रद्धासे जो कुछ माँगोगे, तुम्हे मिलेगा। — बाइबिल

जितना त्यागोगे, ईश्वरसे उतना ही अधिक पाओगे। — होरेस

मनुष्य जिस बातको चाहता है उसे प्राप्त कर सकता है और वह भी उसी तरहसे जिस तरह कि वह चाहता है, बशर्ते कि वह अपनी शक्ति और पूरे दिलसे उसको चाहता हो। — तिरुवल्लुवर

हे भगवन्, किसीको देनेसे ही हमे मिलता है, मरनेमे ही हम अमरपद पा सकते है। — सन्त फ्रान्सिस (आसीसी)

जो कुछ प्राप्त करना हो उसे तू तलवारसे नहीं, मुसकानसे प्राप्त कर। — शेक्सपीयर

बालक बखानता है, जवान कोशिश करता है, और मर्द प्राप्त करता है। — अज्ञात

साधारणत, जिसे पानेके लिए हम अत्यधिक चिन्तातुर नहीं होते उसे हम अवश्यमेव और अति शीघ्र प्राप्त कर लेते है। — रूसो

प्रायश्चित्त

पाप करके प्रायश्चित्त करना कीचडमे पैर डालकर धोनेके समान है। — अज्ञात

वैसा फिर न करना सबसे सच्चा प्रायश्चित्त है। — ल्यूथर

प्रायश्चित्तकी तीन सीढियाँ है—आत्मग्लानि, दूसरी बार पाप न करनेका निश्चय और आत्मशुद्धि। — जुन्नेद

प्रारम्भ

ख़ुद अपने दरवाज़ेसे कूडा-कचडा झाड फेंक, सारा नगर साफ हो जायगा। — चीनी कहावत

प्रार्थना

प्रार्थनाका अर्थ अमुक शब्दोका दोहराना नही है। प्रार्थनाका अर्थ है दैविकताकी अनुभूति और प्राप्ति। — स्वामी रामतीर्थ

शान्तिमे सोचो, बोलो, करो, मानो कि तुम प्रार्थनामे हो। सचमुच प्रार्थना यही है। — फैनेलन

सब्र सबसे बडी प्रार्थना है। — बुद्ध

प्रार्थना है एक देखनेवाली और खुशीमे मस्त रहनेवाली आत्माका आत्म-निवेदन। — एमर्सन

किसी मनुष्य अथवा वस्तुको लक्ष्य कर प्रार्थना हो सकती है। उसका परिणाम भी हो सकता है। किन्तु इस प्रकार लक्ष्य न करके की गयी प्रार्थनासे आत्मा और ससारके लिए अधिक कल्याणकर होनेकी सम्भावना है। वह हृदयका विषय है। मुँहसे प्रार्थना आदिकी क्रियाएँ हृदयको जाग्रत करनेके लिए है। व्यापक शक्ति जो बाहर है वही अन्दर है और उतनी ही व्यापक है। उसे शरीरका अन्तराय नही, अन्तराय हम उत्पन्न करते

हैं। प्रार्थनाके योगसे वह अन्तराय दूर हो जाता है प्रार्थना अनासक्त होनी चाहिए। — गान्धी

साधु लोग नम्रतापूर्वक जो प्रार्थना करते हैं, उसे ईश्वर कभी भूलता ही नही। — विहाउद्दीन जुहैर

मेरे अन्तस्तलकी अन्तिम गहराइयोसे प्रभुजी, मेरी आपसे यह याचना है कि पूरे जोरसे खड्ग घुसेडकर मेरी तमाम क्षीणता छेद डालो। — टैगोर

प्रार्थनाका उद्देश्य मनुष्यको पूर्ण मनुष्य बना देना और हृदयको पवित्र कर देना है। मैले हृदयसे प्रार्थना करना व्यर्थ है। कमसे कम प्रार्थनाके समय तो हमे हृदयको साफ रखना चाहिए। — गान्धी

प्रार्थनामे मनुष्यको अत्यन्त आनन्द मिलता है। — गान्धी

सज्जनसे की हुई प्रार्थना कब सफल नही होती ? — कालिदास

प्रार्थनामे साकार मूर्तिका मैंने निषेध नही किया है, हाँ, निराकारको ऊँचा स्थान दिया है मेरी दृष्टिसे निराकार अधिक अच्छा है। — गान्धी

अगर तुम समुद्रमे गिर जाओ और तैर न सकते हो, तो तुम प्रार्थनाओ और पन्थोके बावजूद डूबोगे। — अज्ञात

अगर तू उद्देश्योकी पूर्तिके लिए सन्तोष धारण करके प्रार्थना करता है तो हताश न हो, एक-न-एक दिन तू सफलता प्राप्त कर लेगा।

— मुहम्मद बिन बशीर

प्रार्थना माने ईश्वरसे सम्भाषण करना और अन्तरात्माकी शुद्धिके लिए प्रकाश प्राप्त करना। ताकि ईश्वरकी सहायतासे हम अपनी कमजोरियोपर विजय प्राप्त कर सकें। — गान्धी

प्रार्थनामे वाणी और हृदयको मिला दे, एक उँगलीसे गाँठ नही खुलती।

— मनसुख

जो बिना प्रार्थना किये सोता है हर दिनकी दो रात बनाता है। — हरबर्ट

हे प्रभो, मेरी प्रार्थना है कि मै अन्दरसे सुन्दर बनूँ। — सुकरात

हृदय जितना बोलता है ईश्वर उससे अधिक कुछ नही सुनता, और अगर हृदय गूँगा हो तो ईश्वर जरूर बहरा रहेगा। — ब्रुक्स

हमे अपनी प्रार्थनाओसे सामान्य मगलकामना करनी चाहिए, क्योकि ईश्वर ही अच्छी तरह जानता है कि हमारे लिए क्या हितकर है। — सुकरात

क्या प्रार्थनाओका सचमुच कुछ असर है? हाँ, जब मन और वाणी एक होकर कोई चीज माँगते है, तो उस प्रार्थनाका जवाब मिलता है।

— रामकृष्ण परमहस

अगर कोई स्तवन और प्रार्थना करता हुआ ईश्वरकी तरफ एक बालिश्त भी चले तो ईश्वर उससे मिलनेके लिए बीस मील चलकर आयेगा।

— आर्नोल्ड

शब्द जितने कम हो प्रार्थना उतनी ही उत्तम होती है। — ल्यूथर

प्रार्थना तुम्हारी महाशक्तिके ख़ज़ानेकी कुजी है। तर्क तुम्हे कतरा बनाता है मगर विश्वास समुद्र। विश्वास और प्रार्थनासे क्या नही प्राप्त हो सकता? — अज्ञात

प्रार्थना हमारे अधिक अच्छे, अधिक शुद्ध होनेकी आतुरताको सूचित करती है। — गान्धी

ज्ञानके लिए और सत्यके प्रकाशके लिए परमेश्वरसे अवश्य याचना करनी चाहिए, मगर किसी भी विनाशी पदार्थके लिए प्रार्थना न करनेकी दक्षता प्राप्त करनी चाहिए। — विवेकानन्द

मैं अपना कोई काम बिना प्रार्थना किये नही करता। — गान्धी

जिन्होने सीधा प्रभुसे माँगा, उनकी माँग कभी रायगाँ नही गयी।

— अज्ञात

प्रार्थना उस हाथको चलाती है जो दुनियाका सचालन करता है ।

— अज्ञात

प्रार्थनाका तात्पर्य यह है कि अपने सम्पूर्ण बलको काममे लाकर प्रभुसे माँगना—'ज्यादा बल दे' ।

— विनोबा

तुम माँगते हो, और तुम्हे नही मिलता, क्योकि तुम गलत चीज माँगते हो ।

— बाइबिल

मेरी प्रार्थना होगी—दूसरोके लिए ।

— अज्ञात

हम अपनी तरफसे अज्ञानी, अकसर अपने लिए हानिकर वस्तुओकी प्रार्थना करते हैं, जिनमे सम्यक् ज्ञानी शक्तियाँ हमारे कल्याणार्थ हमे वचित रखती है, इस प्रकार हम अपनी प्रार्थनाओको खोकर लाभान्वित होते है ।

— शेक्सपीयर

व्यक्तिगत प्रार्थनासे मै देवकी मदद प्राप्त करता हूँ, सामुदायिक प्रार्थनासे सन्तोकी ।

— विनोबा

देव, मुझे भुक्ति नही, मुक्ति नही—भक्ति दे । सिद्धि नही, समाधि नही—सेवा दे ।

— विनोबा

अपने सब कामोके पहले ईश्वरकी प्रार्थना कर, ताकि वे निर्विघ्न समाप्त हो ।

— जैनोफ़ोन

प्रार्थना धर्मका स्तम्भ और स्वर्गकी कुजी है ।

— मुहम्मद

वह न होने दे जो मै चाहता हूँ, बल्कि वह जो कि ठीक है । — अज्ञात

लोग जब ईश्वरसे प्रार्थना करते है तो अकसर यह माँगते है कि दो और दो मिलाकर चार न हो ।

— रूसी कहावत

प्रिय

प्रिय क्या है ? करना और न कहना । अप्रिय क्या है ? कहना और न करना ।

— जालीनूस

प्रियजन

कुछ किये बिना ही प्रियजन अपने ससर्गके आनन्द-मात्रसे दु:खको भगा देते हैं। सचमुच, जिसके कोई प्रियजन हैं उसके पास बेशक़ीमती खजाना है।

— अज्ञात

प्रियवादी

प्रियवादीके लिए कौन पराया है? — आर्य-सूक्ति

प्रीति

प्रीतिपात्र होना बेशक है तो कर्त्तव्य, मगर उसे किसी सद्गुणकी क्षति उठाकर नही करना चाहिए। जो हमेशा प्रियंकर होनेकी कोशिश करता है, वह अपनी इनसानियतकी कुर्बानी देकर ही वैसा बननेमें कभी-कभी सफल हो सकता है। — सिम्स

कोई रहस्यपूर्ण आन्तरिक कारण पदार्थोको परस्पर मिलाता है, प्रीति बाहरी बातोपर निर्भर नही होती। — अज्ञात

सुर नर मुनि सबकी यह रीती।
स्वारथ लागि करै सब प्रीती॥ — रामायण

बिना सचाईके प्रतीति नही, और बिना प्रतीतिके प्रीति नही। — अज्ञात

प्रीति सदा सज्जनोके ही साथ करनी चाहिए। — अज्ञात

प्रेम

घृणा राक्षसोकी सम्पत्ति है, क्षमा मनुष्यत्वका चिह्न है, परन्तु प्रेम देवताओका स्वभाव है। — भर्तृहरि

प्रेम आँखोसे नही, बल्कि हृदयसे देखता है; और इसीलिए प्रेमके देवताको अन्धा बताया गया है। — शेक्सपीयर

प्रेम स्वर्गका रास्ता है। — टालस्टाय

प्रेम मनुष्यत्वका नाम है। — बुद्ध

प्रेम ससारकी ज्योति है। — ईसा

प्रेम पापियोको भी सुधार देता है। — कबीर

प्रेम-प्रेम कहते सब कोई है, प्रेमको पहचानता कोई नही है। जिस प्रेमसे प्रभु मिले वही प्रेम कहलाता है। — कबीर

अपने-आपको सबसे अन्तमें प्रेम कर। — शेक्सपीयर

सब कुछ प्रेमकी खातिर, और बदलेके लिए कुछ नही। — स्पेंसर

मेरी आज्ञा है कि तुम एक-दूसरेके साथ प्रेम करो। — कन्फ्यूशियस

दण्ड देनेका अधिकार सिर्फ उनको है जो कि प्रेम करते हैं। — रवीन्द्रनाथ टैगोर

प्रभुके मार्गमे प्राण तक देनेकी तैयारी न हो तो उसके प्रति प्रेम है ऐसा मानना ही नही चाहिए। — जुन्नेद

एक परमेश्वरके सिवा व्यर्थ नाना देवताओंकी पूजा करना अपने प्रेमको व्यभिचारी बनाकर शुद्ध भावनाका नाश करना है। — सन्त तुकडोजी

अपने पडोसीसे प्रेम करो, परन्तु बाडको न तोड फेंको। — जर्मन कहावत

आपसमे लेने-देनेसे जो प्रेम पैदा होता है वह प्रेम उस लेने-देनेकी समाप्ति-के साथ ही समाप्त हो जाता है। बिना किसी स्वार्थकी गन्धके जो प्रेम होता है, वही सच्चा प्रेम है। — जुन्नेद

प्रेममे हम सब समान रूपसे मूर्ख है। — गेटे

प्रेमको सीमा कहाँतक है? प्रेम-पात्र यदि असीम और अमाप हो तो फिर प्रेमकी सीमा कैसी? — अज्ञात

प्रेम जीवनका प्राण है! जिसमें प्रेम नही वह सिर्फ माससे घिरी हुई हड्डियोका ढेर है। — तिरुवल्लुवर

बाहरी सौन्दर्य किस कामका जब कि प्रेम, जोकि आत्माका भूषण है, हृदयमें न हो ? – तिरुवल्लुवर

प्रेमसे हृदय स्निग्ध हो उठता है और उस स्नेहशीलतासे ही मित्रतारूपी बहुमूल्य रत्न पैदा होता है। – तिरुवल्लुवर

प्रेमकी जबान आँखोंमें है। – पिलचुर

जिस प्रेमको प्रकट न किया जा सके वह प्रेम सबसे पवित्र है। – कार्लाइल

दूसरोंसे प्रेम करना यह स्वयं अपने साथ प्रेम करनेके बराबर है। – एमर्सन

इश्क अक्लकी बिनाको उखाड डालता है। इश्ककी आग महबूबके सिवाय बाकी सबको भस्म कर डालती है। – हदीस

द्वेषके लिए कोई कारण बिना कोई द्वेष नहीं करता, अतः अपनेको किसीने द्वेषका कारण दिया हो तो भी उससे द्वेष न कर उससे प्रेम करना चाहिए। उसपर रहम कर उसकी सेवा करना यही अहिंसा है। प्रेमी मनुष्यपर प्रेम करनेमें अहिंसा नहीं, वह तो व्यवहार है। अहिंसाको दान कहा जा सकता है। प्रेमके बदले प्रेम करना—यह फर्ज चुकानेकी तरह है। – गान्धी

जिस प्रेमका तुम दम भरते हो, अगर वह सच्चा होता तो तुम पानीपर भी चलनेका साहस करते। – विहाउद्दीन जुहैर

जब प्रेम पतला होता है तो दोष गाढे हो जाते हैं। – कहावत

शुद्ध प्रेममे शरीर-स्पर्श करनेकी आवश्यकता नही होती किन्तु उसका अर्थ यह नही है कि स्पर्श मात्र अपवित्र होता है। – गान्धी

परमात्मा, मुझे ऐसी आँख दे जोकि संसारके सब पदार्थोंको प्रेमकी दृष्टिसे देखे। – वेद

हमेशा प्रेमपात्र बने रहनेके लिए आदमीको हमेशा मनमोहक बना रहना चाहिए। – लेडी मौंटेग्यू

प्रेमको भौतिक सहवासकी आवश्यकता ही न होनी चाहिए। और हो तो वह प्रेम क्षणिक ही कहना चाहिए। शुद्ध प्रेमकी कसौटी तो दूसरेके वियोगमें—दूसरेकी मृत्युके उपरान्त होती है। — गान्धी

व्यक्ति-प्रेममात्र तिरस्करणीय नही है, वह विश्व-प्रेमका, प्रभु-प्रेमका विरोधी न होना चाहिए। 'बा'के विषयमें मुझे प्रेम है किन्तु वह प्रभु-प्रेमके गर्भमें है। मैं विषयी था, तब वह प्रभु-प्रेमका विरोधी था अतः त्याज्य था। — गान्धी

कोई आदमी इस भुलावेमें न रहे कि उसे कोई प्यार करता है, जब कि वह किसीसे प्यार नही करता। — एपिक्टेटस

'प्रेम सब कुछ जीतता है' यह अमर वाक्य हृदयमें जमने दे। कोई भी आवे प्रसन्न रहना ही अपना धर्म है। — गान्धी

प्रेम और धुआँ छिपाये नही जा सकते। — फ्रासीसी कहावत

जो दूसरोको ऊपरसे प्यार करता है किन्तु भीतर ही भीतर उनसे द्वेष रखता है वह ईश्वरका कोप-भाजन बनता है। — फजल अयाज

प्रेम कमानकी तरह है जोकि, अत्यधिक ताने जानेपर टूट जाती है। — इटालियन कहावत

प्रेमकी अग्नि, यदि एक बार बुझ जाय तो फिर, बडी मुश्किलसे जलती है। — कहावत

साराका सारा प्रेम एक ही तरफ नही होना चाहिए। — कहावत

प्रेम परिश्रमको हलका और दु:खको मधुर बना देता है। — कहावत

भलोंसे प्रेम करो और बुरोको क्षमा कर दो। — कहावत

प्रेम वक्तको गुजार देता है, और वक्त प्रेमको गुजार देता है। — फ्रासीसी कहावत

प्रेम स्वर्ग है, और स्वर्ग प्रेम है। — स्कॉट

वह प्रेम प्रेम नही जो परिवर्तनके साथ परिवर्तित होता रहे। — शेक्सपीयर

प्रेम झोपडोको सुनहरा महल बना देता है। — होल्टी

जो प्रेम फलाशारहित है वही सच्चा प्रेम है। – विवेकानन्द

जब दरिद्रता दरवाजेसे दाखिल होती है, प्रेम खिड़कीसे भाग छूटता है।
– कहावत

जीवन एक फूल है, प्रेम उसका मधु। – विक्टर ह्यूगो

ऊँटपर बैठकर धक्कोसे नही बचा जा सकता, यही बात लौकिक प्रेमकी है। – स्वामी रामतीर्थ

प्रेम वह सुनहरी जँजीर है जिससे समाज परस्पर बँधा हुआ है। – गेटे

हम इस दुनियामें जीते तब है जब कि उसमे प्रेम करते है। – टैगोर

प्रेमके दो लक्षण हैं, पहला बाहरी दुनियाको भूल जाना, और दूसरा, अपने शरीर तकको भूल जाना। – रामकृष्ण परमहस

जो हम दूसरोके लिए कर सकते हैं, शक्तिका परिचायक है, जो हम दूसरोके लिए सहन कर सकते है प्रेमका परिचायक है। – वैस्टकॉट

गुप्त या खुले स्वतन्त्र प्रेममे मेरा विश्वास नही है। उन्मुक्त प्रेमको मैं कुत्तोका प्रेम समझता हूँ। और गुप्त प्रेममें तो इसके अलावा कायरता भी है। – गान्धी

दैविक प्रेमके समुद्रमे गहरा गोता लगा डरो मत। यह अमरताका समुद्र है। – रामकृष्ण परमहंस

दुनियावालोका प्रेम मतलबका है, ईश्वरका प्रेम नि स्वार्थ।
– विवेकानन्द

मैं जानता हूँ कि मेरे अन्दर बहुत-से प्रेम हैं। पर प्रेमकी तो सीमा ही नही होती। मैं यह भी जानता हूँ कि मेरा प्रेम असीम नहीं है। मैं साँपके साथ कहाँ खेल सकता हूँ? जो अहिंसामूर्ति हो उसके सामने साँप भी ठण्डा हो जाता है। मुझे इसपर पूरा-पूरा विश्वास है। – गान्धी

माँसे स्त्रीपर, स्त्रीसे पुत्रपर—यह प्रेमकी अधोगति है। माँसे सन्तोपर, सन्तोसे ईश्वरपर—यह प्रेमकी ऊर्ध्वगति है। — विनोबा

सफलताका मार्ग बुद्धिसे ही नही प्रेमसे भी सूझता है। — अज्ञात

व्यक्तिगत प्रेम = दुर्बलता। — स्वामी रामतीर्थ

प्रेमके अतिरेकसे सत्यमे तीखापन आ सकता है, कटुता नही। तीखापन व्याकुलताका, अधीरताका और द्वेषका चिह्न है। — अज्ञात

जबतक तेरे पास थोडी-बहुत सम्पत्ति है, तबतक 'प्रेम-प्रेम' कहकर अनेक लोग तेरे इर्द-गिर्द इकट्ठे हो जाते है, थैली खाली होते ही मौसी तक पास खडी नही होती। मगर ईश्वर तेरे पास हर जगह और हर समय रहता है, वह तुझे भले-बुरे वक्त भी नही छोडता, उसीका प्रेम निरपेक्ष है, उसका प्रेम तुझे अधोगतिमे नही जाने देगा। — विवेकानन्द

प्रत्येक चतुर मनुष्य जो मजनूँके साथ बैठना है लैलाके सौन्दर्यको छोडकर और कुछ बात न कहेगा। — अज्ञात

बहन और भाईके प्रेममे पवित्रता है, पति और पत्नीके प्रेममे मादकता। पवित्रता शान्ति दिलाती है और मादकता व्याकुल कर देती है। — हरिभाऊ उपाध्याय

सेवा तो वह है जिससे चित्त सदैव प्रसन्न रहे। मित्रता और प्रेम तो वह है कि ससर्गकी उत्सुकता रहे और ससर्गके बाद प्रफुल्लता। — हरिभाऊ उपाध्याय

विरक्तोके क्रोधमे भी जो प्रेम देखता है और आसक्तोके प्रेममे भी जो क्रोध देखता है, वही देखता है। — विनोबा

प्रेम भरपूर जिन्दगी है जैसे कि मयसे लबरेज पैमाना। — टैगोर

मूसाका पहला सिद्धान्त है, 'प्रेमके सिवा तू किसी परमात्माको न मानना।' — अज्ञात

पारस्परिक प्रेम हमारी तमाम खुशियोका सरताज है। — मिल्टन

प्रेम प्रत्येक बातमें विश्वास करता है, आशा रखकर प्रत्येक बात सहता है, किन्तु प्रेम कभी असफल नही होता। — कोरिंथियन

ईश्वरसे, बिना बिचौलिये या परदेके, प्रेम करनेका साहस करो। — एमर्सन

कोई आदमी, जो कि दौलतका प्रेमी है, या विलासिताका प्रेमी है, या वाहवाहीका प्रेमी है, साथ ही मनुष्योका प्रेमी नही हो सकता।
— एपिक्टेटस

शुद्ध प्रेम देहका नही, आत्माका ही सम्भव है। देहका प्रेम विषय ही है।
— गान्धी

मैं तुम्हे एक नया आदेश देता हूँ कि तुम एक-दूसरेसे प्रेम करो।
— बाइबिल

वासनामय प्रेम मनुष्यको ईश्वरसे प्रेम करनेसे रोक देता है। — अज्ञात

शक्तिने दुनियासे कहा, 'तू मेरी है', दुनियाने उसे अपने तख्तपर कैदी बनाकर रखा। प्रेमने दुनियासे कहा, 'मै तेरा हूँ', दुनियाने उसे अपने घरकी आज़ादी दे दी। — टैगोर

प्रेमसे असम्भव सम्भव हो जाता है। — एमर्सन

काम और प्रेमका जिसने अन्तर समझ लिया वह मुक्त हो गया।
— विनोबा

प्रभु प्रेमको अन्तिम अवस्था सच्चिदानन्दका स्वरूप है। — अरविन्द घोष

बच्चोपर सब लोग प्रेम क्यो करते है? क्योकि उनको इनकी जरूरत नहीं है। — स्वामी रामतीर्थ

प्रेम सबसे कर, विश्वास थोड़ोका कर, नुक़सान किसीको मत पहुँचा।
— शेक्सपीयर

जीवनकी सबसे बड़ी ख़ुशी प्रेम है। — टैम्पिल

प्रेम ही एक ऐसी चीज है जो कि निष्काम और स्वतन्त्र रह सकती है।
— अरविन्द घोष

शुद्ध प्रेमके लिए दुनियामें कोई बात असम्भव नहीं। — गान्धी

प्रेम नहीं है तो दोष ही दोष दीखते हैं। — अज्ञात

प्रेमकी भाषा सबकी समझमें आती है। — स्वामी रामतीर्थ

जिस घटमे प्रेम नहीं है उसे श्मशान समझ, बिना प्राणके साँस लेनेवाली लुहारकी धौंकनी। — कबीर

प्रेमरस पीना चाहे, शान और मान रखना चाहे, एक म्यानमें दो तलवारें नहीं समातीं। — कबीर

जल दूधसे मिलकर दूधके भाव बिकता है। देखिए, प्रेमकी यह कैसी अच्छी रीति है। लेकिन अगर प्रेममें कपट आ पड़े तो मिले हुए हृदय ऐसे फट जाते है जैसे खटाई पड़नेसे दूध और पानी अलग-अलग हो जाते है। — रामायण

दुनियामें चिरकाल टिकनेवाली चीज प्रेम ही है, द्वेष नहीं, सौजन्य ही एक टिकाऊ चीज है, और आखिर यही शुभ फलदायी होगी।
— विवेकानन्द

प्रेमके होठोंसे निकले हुए सत्यके शब्द कितने मधुर होते हैं। — बोटी

अगर तुम चाहते हो कि लोग तुमसे प्रेम करें तो तुम प्रेम करो और प्रेम किये जाने लायक बनो। — फ्रैंकलिन

प्रेम-पात्र

धनवान् होना अच्छा है, बलवान् होना अच्छा है, लेकिन बहुत-से मित्रोंका प्रेम-पात्र होना और भी अच्छा है। — यूरिपिडीज़

प्रेमिका

मुझको दुर्बलताका वस्त्र पहनानेवाली, तुझको कुशलताका वस्त्र मुबारिक़ रहे। — बिहाउद्दीन जुहैर

प्रेमी

जब मैं प्यासले कष्टमें होता हूँ, उस समय भी अगर तुम्हारी याद आ जाती है, तो शीतल जल तक पहुँचना भूल जाता हूँ। — इब्न मातूक

रामबुलावा भेजिया कबिरा दीन्हा रोय।
जो सुख प्रेमी सग में सो बैकुण्ठ न होय।। — कबीर

प्रेमी सब वस्तुओंको अपने अनुकूल ही समझता है। — कालिदास

सारी मानव-जाति प्रेमीको प्रेम करती है। — एमर्सन

प्रेरणा

कामसे कामको प्रेरणा मिलती है और प्रमादसे प्रमादको। — हट

■

फ

फ़र्क़

किनारा नदीसे कहता है—'मैं तुम्हारी लहरोंको नहीं रख सकता। अपने पदचिह्नोंको मुझे अपने हृदयमें रखने दो।" — टैगोर

फ़र्ज़

तुम्हें काम करने याना अपना फ़र्ज़ अदा करनेका ही अख़्तियार है। नतीजेपर तुम्हारा काबू नहीं है। इसलिए अपने कामोंके नतीजेकी ओर दिल मत लगाओ। अपना फ़र्ज़ पूरा करो। लगाव या मोहको छोड़कर कामयाबी और नाकामयाबीमें एक बराबर रहकर हर काम करो। इस एक बराबर रहनेका नाम ही योग है। — गीता

मेरे भाई अगर मुझे हानि पहुँचाते है तो मै उनको लाभ पहुँचाता हूँ और चाहे वे मेरी प्रतिष्ठाको भग करें, तथापि मैं उनका मान करता हूँ। वे पीठ-पीछे मेरी बुराई करें, मगर मैं उनकी बुराई नही करता और अगर्चे वे मेरी दुर्गतिके अभिलाषी हो, तो भी मै उनकी सुगतिकी ही लालसा रखता हूँ। – अल-मुकन्नआ-उल-किन्दी

अध्यात्म यानी रूहानियतमे दिलको लगाये हुए, आशा और ममतासे ऊपर उठकर, आदमी 'ईश्वरके लिए' अपने सब फर्ज़ोंको पूरा करे।
– गीता

फल

'ऐ फल, तू मुझसे कितनी दूर है', 'मै तेरे हृदयमें छिपा हूँ, फूल।'
– टैगोर

फल तुझे पहले ही मिल चुका है। अब तो कर्म करना बाकी रह गया है, फिर फल कैसे माँगता है ? – विनोबा

जो कर्म अभिमानसे किये जाते है उनका फल नही है, जो त्यागकी भावनासे किया जाता है उसका महाफल है। – अज्ञात

काय फलका जनक है। – दीनामुलक

अपना रखा हुआ क़दम ठीक होगा तो आज या कल उसका फल होगा ही। – गान्धी

फल-प्राप्ति

अभ्यास तीव्र या मध्यम जैसा ही होगा उसीके अनुसार फल-प्राप्ति जल्दी अथवा देरसे होगी। – विवेकानन्द

फलाशा

सच्ची सफलता और सच्चा सुख उसीको मिलता है जिसको प्रतिफलकी आशा नही है। – विवेकानन्द

निश्चय करो कि दिनकी कोई घटना तुम्हें अप्रसन्न नहीं कर पायेगी। अपने कामको इस अनुपम और पवित्र निर्णयसे शुरू करो कि उसके साथ न मिलने पायेगी महत्त्वाकाक्षा, न लाभकी आसक्ति, न सुखकी अभिलाषा; और उसके फलकी कोई चिन्ता तुम्हे स्पर्श न करेगी और न असफल होनेपर कोई अधीरता या दुःख। — रस्किन

फ़ायदा

नाजायज फायदेकी उम्मीद नुकसानकी शुरुआत है। — डेमोक्रिटस

इस दुनियासे कोई फायदा उठानेपर परलोकमे उससे सौगुना ज्यादा नुकसान उठाना पड़ेगा। — फज़ल अयाज़

फ़िज़ूल

नीतिके बिना राज्य, धर्मके बिना धन, हरिसमर्पणके बिना सत्कर्म, विवेकके बिना विद्या फ़िज़ूल है। — रामायण

फ़िलॉस्फ़र

सिरसे ही नही, बल्कि हृदय और दृढ निश्चयसे सच्चा फिलॉस्फर पूरा बनता है। — शैफ्ट्सबरी

फ़िलॉस्फ़ी

जो देवत्वमें फिलॉस्फी ढूँढता है, वह ज़िन्दोमे मुरदे ढूँढता है, जो फिलॉस्फीमे देवत्व ढूँढता है, वह मुर्दोमे ज़िन्दे ढूँढता है। — वैनिंग

सारी फिलॉस्फी दो लफ्ज़ोमे है —परिश्रम और परहेज़।

— एपिक्टेटस

तमाम फिलॉस्फीकी उच्चता आत्माको जानना है; और इस ज्ञानका अन्त परमात्माको जानना है। आत्माको जान ताकि तू परमात्माको जान सके; और परमात्माको जान ताकि तू उससे प्रेम कर सके और उसके समान हो सके। पहलेसे तू सम्यग्ज्ञानमें प्रवेश पाता है और दूसरेसे उसमे परिपूर्णता। — क्वार्ल्स

एक सदीकी फिलॉस्फी अगलीको 'साधारण समझ' होती है ।
— वार्डबीचर

फ़ुरसत
फ़ुरसतकी जिन्दगी और काहिलीकी ज़िन्दगी दो चीजें हैं । — फ्रैंकलिन
तुम्हे अपनी दिनचर्या ऐसी बना लेनी चाहिए कि एक क्षणकी भी फ़ुरसत न मिले । — गान्धी

फूल
खिलता हुआ तुच्छातितुच्छ फूल वह विचार दे सकता है जो कि आँसुओंकी पहुँचसे ज्यादा गहराईपर है । — वर्ड्सवर्थ

फ़ैसला
सफल होनेके लिए तुरन्त फ़ैसला कर डालनेकी शक्तिका होना आवश्यक है । — अज्ञात
जनाब, ख़ुद ख़ुदा भी आदमीपर उसकी उम्र ख़त्म होने तक फ़ैसला नहीं देता । — डॉक्टर जॉन्सन

■

ब

बकवाद
मेरे विचारोंकी दृढ़ताने मुझे बकवाद करनेसे बचाया, और प्राकृतिक आभूषणोंकी अनुपस्थितिमें श्रेष्ठताके गहनोंने मुझे सुशोभित कर दिया ।
— अबू इस्माइल तुग़राई

बग़ावत
अत्याचारियोंके खिलाफ़ बग़ावत ईश्वरकी फ़रमाँ-बरदारी है । — फ्रैंकलिन

बचपन

वह करोड़ों जो मेरे पास हैं और वह तमाम जो मैं कर्ज ला सकूँ सब दे डालूँ, सिर्फ़ अगर मैं फिरसे बालक हो सकूँ। — कारनेगी

बचपनके समयकी चर्चा छोड़; क्योंकि उस समयका तारा अब टूट चुका है। — इब्न-उल-वर्दी

बच्चे

पुरुष वटवृक्ष है, स्त्रियाँ अंगूरलताएँ हैं, बच्चे फूल हैं। — इंगरसोल

बड़प्पन

सच्चा बड़प्पन स्थानसे कभी नहीं मिलता, और न वह खिताबोंके वापस ले लिये जानेपर कभी खो ही जाता है। — मैसिंजर

आलस्य, स्त्री-सेवा, अस्वस्थता, जन्म-भूमिसे प्रेम, सन्तोष और भय—ये छह बड़प्पनका नाश करनेवाले हैं। — नीति

बड़प्पन हमेशा ही दूसरोंकी कमजोरियोंपर परदा डालना चाहता है, मगर ओछापन दूसरोंकी ऐबजोईके सिवा और कुछ करना ही नहीं जानता। — तिरुवल्लुवर

बड़बड़

हम सारे दिन कितनी बड़बड़ करते हैं, यह ध्यान देकर थोड़े दिन देखें तब हमें मालूम होगा कि हम अपनी शक्तिका कितना व्यर्थ व्यय करते हैं। धनुषसे छूटा हुआ बाण जैसे वापस नहीं आता, उसी तरह एक बार फ़िजूल गयी हुई शक्ति फिर प्राप्त नहीं होती। — विवेकानन्द

बदनामी

बदनामीसे छूटनेका सबसे शर्तिया और फ़ौरी इलाज अपनेको सुधार लेना है। — डिमॉस्थनीज

बदनामी गृद्धोंको तो माफ़ कर देती है, मगर कबूतरोंको बुरा-भला कहती है। — जुवेनल

जब अमीर पाक है तो वह कटु विद्वेषपर, घोर बदनामीपर, विजय प्राप्त कर लेता है, लेकिन अगर उसमें ज़रा सा भी धब्बा हुआ तो अपशब्द कानोंमें हथौड़ोकी तरह लगते हैं। — अलेग्जेण्डर पुश्किन

बदला

बदला स्कूली छोकरोकी बकवास है, समझदार राजनीतिज्ञोकी नहीं। — एनन

मेरा हृदय विशाल है, इसलिए मैं ऐसा नहीं हूँ कि बदला लेनेके विचारसे गाली-गलौज करूँ। — एक कवि

वह जो बदला लेनेकी सोचता है अपने ही ज़ख्मोको हरा रखता है, जो कि वरना भरकर अच्छे हो गये होते। — बेकन

बदला लेते वक्त इनसान महज़ उसी नीची सतहपर है जिसपर उसका दुश्मन है, लेकिन उसे दरगुज़र करनेमें वह उससे उच्चतर है, क्योंकि क्षमा करना शाहाना कार्य है। दोषसे बचकर निकलना इनसानकी शान है। — अज्ञात

क्या किसीने तेरे प्रति अपराध किया है? वीरतापूर्वक उसका बदला ले— उसे नगण्य गिन, और काम शुरू हो गया, उसे क्षमा कर दे, और वह पूरा हो गया। वह अपनेसे नीचे है जो किसी ईज़ासे ऊपर नहीं है। — क्वार्ल्स

बन-ठन

हर आदमीमें उतनी ही बन-ठन होती है जितनी कि समझकी उसमें कमी होती है। — पोप

बनाव-चुनाव

सारा बनाव-चुनाव ग़रीबीकी अमीर दिखनेके लिए निरर्थक और उपहासात्मक कोशिश है। — लेवेटर

बनावट

हम उन गुणोंके कारण जो हममें हैं कभी इतने हास्यास्पद नहीं बनते, जितने उन गुणोंके कारण जिनके धारी होनेका हम ढोंग करते हैं।

— ला रोशे

बन्दा

उस रहमान (दयालु ईश्वर) के सच्चे बन्दे वे हैं जो आजिज़ी (दीनता) के साथ झुककर धरतीपर चलते हैं, और जब जाहिल लोग उनसे उलटी-सीधी बात कहते हैं तो वे जवाब देते हैं। 'सलाम' — क़ुरान

बन्धन

प्रिय वस्तुओंसे शोक उत्पन्न होता है और प्रियसे ही भय। जो प्रिय वस्तुओंके बन्धनसे मुक्त है उसे न शोक है, न भय। — बुद्ध

वे काम ही आदमीको बन्धनमें डालते हैं जो 'यज्ञ' के तौरपर नहीं यानी दूसरोंकी सेवा या दूसरोंके फ़ायदेके लिए नहीं बल्कि अपनी ख़ुदगरज़ीके लिए किये जायें। — गीता

जिसका मन उसके वशमें है जो दुईसे ऊपर (द्वन्द्वातीत) है, जो किसीसे डाह नहीं करता (विमत्सर), जो हर काम कुर्बानी (यज्ञ) के तौरपर यानी दूसरोंके भलेके लिए और ईश्वरके लिए करता है, वह अपने कामोंसे बन्धनमें नहीं फँसता। — गीता

बन्धनमें कौन है? विषयी। विमुक्ति क्या है? विषयोंका त्याग।

— शंकराचार्य

बन्धु

हर देशमें बन्धु मिल जाते हैं। — रामायण

बरकत

कर्त्तव्यपालन सबसे बड़ी बरकत है। — अज्ञात

स्वास्थ्य सबसे अच्छा वरदान है, सन्तोष सबसे बढिया धन है, सच्चा मित्र सबसे बडा आत्मीय है; निर्वाण उच्चतम आनन्द है। — बुद्ध

बरताव

बरताव वह आईना है जिसमें हर-एक अपना प्रतिबिम्ब दिखलाता है। — गेटे

हमेशा ऐसे बरताव करो मानो कुछ नही हुआ, परवाह नहीं कुछ भी हो गया हो। — आर्नोल्ड बैनेट

बडे लोगोके सामने कानाफूसी न करो और न किसी दूसरेके साथ हँसो या मुसकराओ। — तिरुवल्लुवर

जो कोई राजाओके साथ रहना चाहता है उसको चाहिए कि आगके सामने बैठकर तापनेवाले आदमीकी तरह व्यवहार करे। उसको न तो अति समीप जाना चाहिए न अति दूर। — तिरुवल्लुवर

बल

बल तो निर्भरतामे है, शरीरमे मास बढ जानेमे नही। — गान्धी

बल शक्ति नही है, कुछ लेखकोमें मासपेशियाँ अधिक होती हैं, प्रतिभा कम। — जोबर्ट

क्षत्रियका बल तेजमे है, ब्राह्मणका क्षमामें। — अज्ञात

बलवा

श्रीमन्त लोग जब गरीबोके लिए कुछ करते है, तब धर्म या दान कहलाता है परन्तु जब गरीब लोग श्रीमन्तोके लिए कुछ करते है तो वह अराजकता या बलवा कहलाता है। — पॉलशिरर

बला

अगर कोई बला सिरपर आन पडे और आत्मा उससे पीडित न हो, तो वह बला सुगमताके साथ टल जाती है। — यहिया-बिन-क्याद

बहादुर

बहादुर आदमी जिन दिनों अपने जिस्मपर गहरे घाव नहीं खाता है, वह समझता है कि वे दिन व्यर्थ नष्ट हो गये । – तिरुवल्लुवर

मैं पानीके भीषण प्रवाहको तरह अत्यन्त भयंकर अवसरोंपर भी आगे ही बढता हूँ । मानो मेरे लिए इस जानके अलावा कोई और जान भी है जिसके कारण मैं इसकी कुछ परवाह नहीं करता, या जैसे मुझे इस जानके साथ दुश्मनी है । – मुतनब्बी

बहाना

बहाना झूठसे भी बदतर और भयकरतर चीज है, क्योंकि बहाना सुरक्षित झूठ है । – पोप

बहुभोजी

जैसे जिन घरोंमे सामग्री बहुत भरी रहती है उनमें चूहे भरे हो सकते है, उसी तरह जो लोग बहुत खाते हैं वे रोगोंसे भरे होते है । – डायोजिनीज

उनका चौका उनका मन्दिर है, रसोइया उनका पुरोहित, पत्तल उनकी बलिवेदी और उनका पेट उनका परमात्मा है । – बक

बहुमत

कोई आदमी जो सचाईके हकमें है, जिसकी तरफ ईश्वर है, वह बहुमतमें है चाहे वह अकेला ही हो । – बीचर

ईश्वर जिसके साथ है वह बहुमतमें है । – फ्रेड्रिक डगलस

बहुमत क्या है ? बहुमत वाहियात चीज़ है । समझदारी हमेशा अल्पमतके ही साथ रही है । – शिलर

बाड़ा

मैं किसी बाडेका नहीं हूँ और न किसी बाडेमें रहना ही चाहता हूँ ।
– श्रीमद्राजचन्द्र

बाडेमे कल्याण नही है। अज्ञानीका बाडा होता है। — अज्ञात

बातचीत

बातचीतकी एक महान् कला खामोशी है। — हैजलिट

आप सब विषयोपर बातचीत कीजिए सिवा एकके, यानी, अपनी बीमारियाँ। — अज्ञात

बातचीत होनी ही चाहिए अपशब्दरहित, खुशगवार, प्रदर्शनरहित, बुद्धिमत्तापूर्ण, असभ्यतारहित, आज्ञादाना, अहम्मन्यतारहित, विद्वत्तापूर्ण, असत्यरहित नूतन। — शेक्सपीयर

मनुष्योंसे तो जितनी कम हो सके बात करो, ज्यादा बात तो करो उस ईश्वरसे। — हयहया

बातून

बातून अच्छे कर्मी नही होते, इत्मीनान रखो? — शेक्सपीयर

वह भलामानस जिसे अपनी ही गुफ्तगू सुननेका शौक है, एक मिनिटमे इतना बोल जायेगा जितना वह एक महीनेमें भी सुनना गवारा न करेगा। — शेक्सपीयर

जो कभी नही सोचते वे हमेशा बोलते है। — प्रायर

बादशाह

बादशाह अपनी स्थितिके गुलाम है, वे अपने दिलके कहेपर चलनेकी हिम्मत नही कर सकते। — शिलर

बाधा

अदृश्य नियतिके विधानसे हमारी सबसे बडी बाधा ही हमारा सबसे बडा योग बन जाती है। — अरविन्द घोष

आपत्तियोकी एक सजी सेनाको अपने खिलाफ खडा देखकर भी जिसका मन बैठ नही जाता, बाधाओको उसके पास आनेमें खुद बाधा होती है। — तिरुवल्लुवर

बाल

महा लम्बे बाल और अति छोटा दिमाग । – स्पेनिश कहावत

बाल-विधवा

मेरा यह दृढ़ मत होता जाता है कि दुनियामें बाल-विधवा-जैसी कोई प्रकृति-विरुद्ध वस्तु होनी ही न चाहिए । – गान्धी

बाल-विधवाओका अस्तित्व हिन्दू धर्मके ऊपर एक कलक है । – गान्धी

बीती

सूरजके चूक जानेपर अगर तुम आँसू बहाते हो तो सितारोको भी चूक जाते हो । – टैगोर

बीमारी

बीमारी कुदरतका बदला है जिसे वह अपने नियमोंके भंग किये जानेके कारण लेती है । – सिमन्स

बीमारी मात्र मनुष्यके लिए शर्मकी बात होनी चाहिए । बीमारी किसी भी दोषका सूचक है । जिसका तन और मन सर्वथा स्वस्थ है, उसे बीमारी होनी ही नही चाहिए । – गान्धी

बुद्धि

जिसका बुद्धिरूपी सारथी चतुर हो और मनरूपी लगाम जिसके ताबेमें हो, वह ससारको पार करके ईश्वरके परमपद तक पहुँचता है ।

– कठोपनिषद्

समझदार बुद्धिका काम है कि हर-एक बातमें झूठको सत्यसे निकालकर अलहदा कर दे, फिर उस बातका कहनेवाला कोई भी क्यो न हो ।

– तिरुवल्लुवर

अगर हृदयमें धर्म नही है, तो बुद्धिका विकास महज सभ्य बर्बरता और छिपी हुई हैवानियत है । – बुनसैन

जिसकी इन्द्रियाँ और मन सब तरहसे विषयोंसे रुके हुए है उसीकी बुद्धि स्थिर हो सकती है। — गीता

जिसके पास बुद्धि है उसके पास सब-कुछ है, मगर मूर्खके पास सब-कुछ होनेपर भी कुछ नही है। — तिरुवल्लुवर

अगर किसीकी नजर शाश्वतपर लगी है तो उसकी बुद्धि बढेगी। — एमर्सन

बुद्धिका पहला लक्षण है कामका आरम्भ न करो, और अगर काम शुरू कर दिया है तो उसे पूरा करके छोडो। — विनोबा

बुद्धिजीवी

श्रमजीवीसे बुद्धिजीवी क्यो बडा है? क्या इसलिए कि वह उनकी मेहनतसे अपना फ़ायदा करना जानता है? तो क्या बडा उन्हे कहना चाहिए जो सीधे लोगोको बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं? — अज्ञात

बुद्धिमान्

बुद्धिमान् वह है जो शुरू किये हुए कामको पूरा करके दिखाये। — अज्ञात

थोडा पढना अधिक सोचना, कम बोलना, अधिक सुनना—यही बुद्धिमान् बननेका उपाय है। — टैगोर

इन तीनको बुद्धिमान् जानना—जिसने ससारका त्याग कर दिया है, जो मौत आनेके पहले सब तैयारियाँ किये बैठा है, और जिसने पहले ही से ईश्वरकी प्रसन्नता प्राप्त कर ली है। — हयहया

बुद्धिमान् पुरुष सारी दुनियाके साथ मिलनसारीमे पेश आता है और उसका मिजाज हमेशा एक-सा रहता है। — तिरुवल्लुवर

बुद्धिवाद

कोरे बुद्धिवादसे कोई रसोत्पत्ति होनी सम्भव नही। हम कितना ही गला सुखायें फिर भी हमको उससे अनुभवकी प्राप्ति नही होती। — विवेकानन्द

बुरा

गाडीका सबसे खराब पहिया सबसे ज्यादा आवाज़ करता है। – फ्रैंकलिन

हम खुद अपना बुरा किये बगैर किसीका बुरा नही कर सकते।
– देसमहिस

किसीने कभी किसीका बुरा नही किया जिसने कि साथ ही अपना और भी बुरा न कर लिया हो। – होम

दूसरेने हमारा बुरा किया और हमको बुरा लगा, तो दोनो एक ही दर्जेके हैं। – शीलनाथ

बोलनेवाले बुरा बोलना कब छोडेंगे?—सुननेवाले बुरा सुनना कब छोड़ेंगे?
– हेअर

दुनिया जिसे बुरा कहती है अगर तुम उससे बचे हुए हो तो फिर तुम्हे न जटा रखनेकी जरूरत है न सिर मुडानेकी। – तिरुवल्लुवर

बुराई

बुराईके बदले भलाई करो, बुराई दब जायेगी, बुराईके बदले बुराई करोगे तो बुराई लौटकर आयेगी। – अरबी कहावत

बुराईसे बुराई पैदा होती हैं, इसलिए आगसे भी बढकर बुराईसे डरना चाहिए। – तिरुवल्लुवर

बुराई देखनेसे अन्धा होना अच्छा। – नैतिक सूत्र

भूलसे भी दूसरेके सर्वनाशका विचार न करो, क्योकि न्याय उसके विनाश-की युक्ति सोचता है, जो दूसरेके साथ बुराई करना चाहता है।
– तिरुवल्लुवर

बुराई बुरा करनेमे है, न कि उसको स्वीकार करनेमे। – अज्ञात

जो आदमी बुराईकी आशंका करनेका आदी है वह अकसर अपने पड़ोसीमे वही देखता है जो वह स्वयं अपने अन्दर देखता है। पवित्रके लिए सब चीजें पवित्र हैं, उसी तरह नापाकके लिए सब चीजें नापाक। – हेअर

अगर तेरी बुराई की जाये, और वह सच हो, तो अपनेको सुधार ले, और अगर वह झूठ हो, तो उसपर हँस दे। – एपिक्टेटस

जो चीज़ मुझे हर वक्त ध्यानमे रखनी है वह यह है कि मुझे उस गलतीके सामने झुकना नही है जिसे मै बुरा समझता हूँ। – थोरो

बेईमानी

सिर्फ एक चीज है जिससे तुम्हे डरना है। अपने प्रति, और इसलिए परमात्माके प्रति, बेईमान होना। अगर तुम वह काम नही करोगे, जिसे तुम सही समझते हो, और वह बात नही कहोगे, जिसे तुम सत्य मानते हो, तो निस्सन्देह तुम कमज़ोर हो, तुम कायर हो, तुमने परमात्माका साथ छोड दिया है। – किंग्सले

वह आदमी जो किसी समस्याके दोनो पहलुओपर गौर नही करता बेईमान है। – लिंकन

बेड़ियाँ

पद और धन सुनहरी बेड़ियाँ है, पर है वे बेडियाँ ही। – रफिनी

कोई आदमी अपनी बेडियोसे प्रेम नही करता, चाहे वे सोनेकी ही बनी हो। – अँगरेजी कहावत

बेवकूफ़

हर शख़्स तीन जगह बेवकूफ दिखाई देता है, एक आईनेके सामने, दूसरे औरतके सामने, तीसरे बच्चेके सामने। – अज्ञात

कोई बेवकूफ अपने कोटपर सोनेके बेल-बूटे लगवा सकता है, लेकिन फिर भी वह बेवकूफका ही कोट है। – रिवेरल

जब बेवकूफको गुस्सा आता है तो वह अपना मुँह खोल देता है और आँखें बन्द कर देता है। – अज्ञात

बेवक़ूफ़ी

सबसे हसीन बेवकूफ़ी ज्ञानको अत्यन्त बारीक कातना है। – फ्रैंकलिन

बेहूदगी

हम बहुत-सी बेहूदगीको पाकीजगी समझे बैठे है, महज इसलिए कि 'बडे आदमियो'ने उसकी इजाजत दे रखी थी। – अज्ञात

बोध

पूर्ण बोधके चार भाग हैं, विवेकशीलता, न्यायप्रियता, वीरता और सच्चरित्रता। – प्लेटो

बोलना

बुद्धिमान् तो पसोपेशमे रहता है कि कहाँ बोलना शुरू करे, पर मूर्ख कभी नही जानता कि कहाँ खत्म करे। उसकी जीभ जगली जानवरकी तरह है कि जहाँ पगहा तुडाया कि फिर रुकना नही जानता। – अज्ञात

पशु न बोलनेसे कष्ट उठाता है और मनुष्य बोलनेसे। – लुकमान

जिस तरह घनी पत्तियोवाले पेडमे फल कम लगते है, उसी तरह बहुत बोलनेवालेमे बुद्धि कम पायी जाती है। – अज्ञात

पहले सोचना, फिर बोलना, पहले बुनियाद फिर दीवार। – सादी

बोली

बोली मनका चित्र है, लेखनी मनकी जीभ। – बेकन

वशीकी ध्वनि और सितारका स्वर मीठा है—ऐसा वे ही लोग कहते हैं, जिन्होने अपने बच्चोकी तुतलाती हुई बोली नही सुनी है। – तिरुवल्लुवर

ब्रह्म

घट वग़ैरहसे भी ब्रह्म अधिक स्पष्ट होनेसे और स्वप्रकाश होनेसे ब्रह्मज्ञानीके चित्तका निरोध आसानीसे हो जाता है। – अज्ञात

ब्रह्मस्वरूपकी अवस्था स्वतन्त्र है, स्वसत्ता-स्फूर्तिमे दूसरेकी अपेक्षा नहीं। – अज्ञात

'प्रियं ब्रह्म'। ईश्वर प्रेममय है। ऐसा श्रुतिका वचन है। भक्तिमार्गका बीजमन्त्र यही है। — विनोबा

'अहं ब्रह्माऽस्मि'मे 'तत्त्वमसि'का निषेध नही है। — विनोबा

'अहं ब्रह्माऽस्मि'को अनुभूतिसे इच्छा नष्ट हो जाती है। उपयोग ही रह जाता है। — स्वामी रामतीर्थ

बुद्धिके द्वारा जो ब्रह्म समझता है वह ब्रह्म जानता ही नही। ब्रह्मज्ञान हृदयमे होता है। ब्रह्मज्ञान माने प्रवृत्ति मात्रका त्याग, ऐसा बिलकुल नही। बाहरसे ज्ञानी और अज्ञानी समान ही होगे। किन्तु दोनोकी प्रवृत्तियोंके हेतु उत्तर-दक्षिणके समान विरुद्ध होंगे। रामनाम ब्रह्मज्ञानका विरोधी नही है। — गान्धी

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य ही जीवन है, वीर्यहानि ही मृत्यु है। — शिवसहिता

ब्रह्मचर्य-पालन है तो मुश्किल मगर मुश्किलोको जीतनेके लिए ही तो हम पैदा हुए है। आरोग्य प्राप्त करना हो तो इस मुश्किलको जीतना ही होगा। — गान्धी

ब्रह्मचर्यसे स्मृति स्थिर और सग्राहक बनती है। बुद्धि तेजस्विनी और फलवती बनती है, सकल्प-शक्ति बलवती बनती है, और उसके चारित्रमे ऐसा रणकार आ जाता है जो स्वेच्छाचारीके स्वप्नमे भी नही आ सकता। — गान्धी

जिसने स्वादको नही जीता वह विषयको नही जीत सकता। — गान्धी

दु:खका मूल नाश करनेके लिए ब्रह्मचर्यका व्रत-पालन अत्यन्त आवश्यक है। — बुद्ध

ईश्वरकी सेवाकी ख़ातिर जिसे ब्रह्मचारी होना है उसे तो जीवनकी सुख-सहूलियतें तजनी ही होगी, और कठोर तपश्चर्यामे ही उसे रस लेना पड़ेगा। वह भले ही ससारमे रहे, मगर संसारका होकर नही रहेगा।

उसका आहार, उसका व्यवहार, उसके कार्यका समय, उसके आनन्द, उसका साहित्य, उसकी जीवनके प्रति दृष्टि संसारियोकी दृष्टिसे भिन्न ही रहेगी। – गान्धी

आधुनिक विचार ब्रह्मचर्यको अधर्म समझता है, अत कृत्रिम उपायोंसे सन्तति-निरोध कर विषय-सेवनके धर्मका पालन करना चाहता है। इसके विरुद्ध मेरी आत्मा विद्रोह करती है। विषयासक्ति ससारमें रहेगी ही किन्तु जगत्‌की प्रतिष्ठा ब्रह्मचर्यपर है और रहेगी। – गान्धी

मुझे ब्रह्मज्ञान हुआ है, ऐसा कहनेवालेको उसके न होनेकी पूरी सम्भावना है। वह मूक ज्ञान है, स्वय प्रकाश है, सूर्यको अपना प्रकाश मुँहसे नही बताना पडता। वह है, यह हमे दिखाई देता है। यही बात ब्रह्मज्ञानके बारेमे भी है। – गान्धी

■

भ

भक्त

सच्चे प्रभु-प्रेमीके दो लक्षण है, स्तुति-निन्दामे समभाव रखना और धर्मके पालन और अनुष्ठानमे कोई लौकिक कामना न रखना। – जुन्नुन

जो हर हालतमे सन्तुष्ट, पाक, आलस्य-रहित, 'मेरे-तेरे' से ऊपर और दु खसे परे है, जो नतीजेकी परवाह न कर हमेशा अपने फर्जको पूरा करनेमे लगा रहता है, वह भक्त ईश्वरको प्यारा है। – गीता

जो आदमी दोस्त और दुश्मन दोनोको एक निगाहसे देखता है; जो मान और अपमान दोनोंमें एक बराबर रहता है; जो सरदी-गरमी, सुख-दु खमें एक-सा है; जिसे मोह नहीं है, जिसके लिए बदनामी और नेकनामी बराबर

है, जो फिजूल नही बोलता, जो हर हालतमे राजी रहता है, जो किसी घरको अपना घर नही मानता, जिसका दिल अडिग है, वह भक्त ईश्वरका प्यारा है। – गीता

जो कोई परमेश्वरके अनन्य भक्त है मै उनके चरणोका सेवक हूँ, जातिसे चाहे वे ईसाई हो, हिन्दू हो या मुसलमान हो, समान है। – विवेकानन्द

अग्निके लिए जगल तोडकर रास्ता तैयार नही करना पडता, वही अपना रास्ता देख लेती है। भक्तको परिस्थिति कभी प्रतिकूल नही है।

– विनोबा

भक्तकी चतुराई क्या है? ससारियोके ससर्गसे अपनेको जहाँतक बने बचाये रखना। – अज्ञात

जिससे दुनियाके किसी आदमीको किसी तरहका डर नही और न जिसे किसीसे किसी तरहका डर है, जो खुशी, रज और डरसे ऊपर उठ गया है, वह ईश्वरको प्यारा है। – गीता

जो न आनन्दसे फूलता है और न दु खोसे दु खी होता है, जिसे न किसी चीजके जानेका रज और न पानेकी खुशी, जिसने अपने लिए अच्छे और बुरे दोनो तरहके नतीजोका त्याग कर दिया, वह भक्त ईश्वरको प्यारा है। – गीता

भक्ति

धन्य है वह मनुष्य, जो आदि-पुरुषके पादारविन्दमे रत रहता है, जो न किसीसे प्रेम करता है न घृणा। उसे कभी कोई दु ख नही होता।

– तिरुवल्लुवर

ईश्वरके प्रति वृत्ति रखनेसे तुम्हारी उन्नति ही होगी, अवनति होनी तो कभी सम्भव ही नही। – अबु उस्मान

ईश्वरके साथ जिसकी दोस्ती हुई, उसे दुनियाकी सम्पत्तिके साथ तो दुश्मनी हुई ही समझ लेनी चाहिए। – हयहया

एक दिन मैं अपने मनके पीछे पडा हुआ था। दूसरे दिन सवेरे ही मुझे सुनाई दिया—'बायजीद, मुझे छोडकर तू दूसरी चीजके पीछे क्यो पडा हुआ है ? मनसे तुझे क्या सरोकार है ?' – बायजीद

जैसे पेडकी जडको सींचनेसे उसकी सब डालियाँ और पत्ते तृप्त हो जाते है, उसी तरह एक मात्र परम पुरुषकी भक्तिसे सब देवी-देवता सन्तुष्ट हो जाते है। – महानिर्वाणतन्त्र

जो आदमी सच्ची लगनके साथ ईश्वरकी भक्ति करता है, वह सब गुणो यानी हदोसे पार होकर ईश्वर ही मे लीन यानी फ़ना हो जाता है।

– गीता

जो ईश्वरके सिवा न किसीसे डरता है, न किसीकी आशा रखता है, जिसे अपने सुख-सन्तोषकी अपेक्षा प्रभुका सुख-सन्तोष अधिक प्रिय है, उसीका ईश्वरके साथ मेल है। – अबुउस्मान

यदि तू ईश्वरके प्रेममे पागल होता तो वजू नही करता, ज्ञानी होता तो दूसरेकी स्त्रीपर नजर नही डालता और जो ईश्वर-दर्शी होता तो ईश्वरको छोडकर तेरी नजर दूसरी ओर नही दौडती। – अज्ञात

लौकिक भोगोसे विमुखता, ईश्वरकी आज्ञाका पालन और ईश्वरेच्छासे जो कुछ हो जाये उसमे प्रसन्नता मानना, सच्ची प्रभु-भक्तिके लक्षण है।

– अबु मुर्त्तज़

सहनशीलता और सत्यपरायणताके सयोग बिना प्रभुप्रेम पूर्णताको प्राप्त नही होता। – जुन्नुन

भजन

साधु-सन्तोकी भाषाके पीछे जो कल्पना होती है, वह देखनी चाहिए। वे साकार ईश्वरका चित्र खीचते हैं किन्तु भजन निराकारका करते हैं।

– गान्धी

भय

भयको टालो मत, सामने आने दो। उसका पेट चीरकर निकल जानेका इरादा रखो। – हरिभाऊ उपाध्याय

भय मनके लिए वही करता है जो लकवा शरीरके लिए करता है, वह हमें शक्तिहीन बना देता है। – अज्ञात

भीरुको भयसे जितनी पीडा होती है, उतनी सच्चे साहसीको मरणसे भी नही होती। – सर फिलिप सिडनी

आध्यात्मिक क्षेत्रमे भयको स्थान नही। जो निर्भीक न हो, इधर कदम रखे ही नही। – प्रज्ञाचक्षु प० सुखलालजी

इस ससारमे एक ईश्वरका भय दूसरे सब भयोसे मुक्त करता है। – जुन्नुन

भय मात्र हमारी कल्पनाकी सृष्टि है। धन, परिवार और शरीरमे से ममत्वका निवारण कर देनेके बाद भय कहाँ रह जाता है। – गान्धी

ईश्वरसे डरकर जो काम किया जाता है वह सुधरता है, और जो काम बिना उसके डरके किया जाता है वह बिगडता है। – जुन्नुन

रोगके डरसे आदमी खाना तो बन्द कर देता है, पर दण्ड और मरणके भयसे वह पाप करना नही रोकता, कैसा आश्चर्य ! – हयह्या

जो ईश्वरसे डरता है, उससे दुनिया भी डरती है, और जो प्रभुसे नही डरता, उससे दुनिया भी नही डरती। – फ़ज़ल अयाज़

दमकते हृदय और स्वच्छ अन्तरगके लिए दुनियामे डरकी कोई बात नही है। – हैसन

भय खतरेको टालनेके बजाय उसे बुला लेता है। – अज्ञात

घृणाके बाद, भय सबसे ज्यादा घातक भावना है। – अज्ञात

भयावह

अगर तू बहुतोके लिए भयावह है तो तुझे बहुतोसे सावधान भी रहना पडेगा। – ऑसंजस

भरोसा

दूसरा सब भरोसा निकम्मा है, एक ईश्वरपर ही विश्वास रखो। – गान्धी

भर्त्सना

तीसरेकी मौजूदगीमें किसीको लानत-मलामत न दो। – हॉल

भला

जो भलाई करनेमे अति लीन रहता है उसे भला बननेका समय नही मिलता। – टैगोर

पूर्ण रूपसे भले आदमी दो है, एक तो वह जो मर गया, और दूसरा वह जो अभी पैदा नही हुआ। – चीनी कहावत

भलाई

दूसरोको हानि पहुँचाकर अपनी भलाईकी कभी आशा न करो। – अज्ञात

भलाई करनेका ऐश्वर्य हर व्यक्तिगत सुखोपभोगसे बढकर है। – गे०

अन्य किसी मार्गकी अपेक्षा नेक बनकर हम अधिक भलाई कर सकते है। – रोलेण्ड हिल

आदमी सारी दुनियाकी कीमतपर अपनी भलाई चाहता है। – अज्ञात

जो दूसरोकी भलाई करना चाहता है, उसने अपना भला तो कर भी लिया। – कन्फ़्यूशियस

भलाई करना ही इनसानकी जिन्दगीका एकमात्र शर्तिया सुखद काम है। – सर फ़िलिप सिडनी

भलाई चाहना पशुता है, भलाई करना मानवता है, भला होना दिव्यता है। – मार्टिनो

तुमने कोई भलाई की, और उससे तुम्हारे पडोसीका भला हो गया। अब तुम्हें इतने मूर्ख बननेकी क्या जरूरत है कि तुम इसके भी आगे देखो और नामवरी तथा प्रत्युपकारके लिए मुँह फाडे रहो? – आरिलियस

सबसे अच्छी बात वह करता है जो अल्लाहकी ओर लोगोको बुलाता है और स्वय नेक काम करता है और फिर कहता है कि मैं मुसलमान हूँ। बुराईको भलाईसे दूर करो और वह जिसे तुमसे शत्रुता थी तुम्हारा दिली दोस्त हो जायेगा। – हज़रत मुहम्मद

जो दूसरोका भला करता है उसका भला मालिक आप करता है। – धम्मपद

अगर तुम कोई अच्छा काम करनेवाले हो, तो उसे अभी करो, अगर तुम कोई नीच काम करनेवाले हो तो कल तक ठहरो। – अज्ञात

भले आदमीके जीवनसे ही भलाई होती रहती है। – बलवर

भलाई करनेके ऐश्वर्यको जानो। – गोल्डस्मिथ

हर व्यक्ति उस तमाम भलाईका ज़िम्मेदार है जो उसकी योग्यताके क्षेत्रके अन्दर है, पर उसमे अधिकके लिए नही, और कोई नही कह सकता किसका दायरा सबसे बडा है। – हैमिल्टन

मनुष्य किसी बातमे देवोसे इतना ज्यादा नही मिलते-जुलते जितने कि लोगोकी भलाई करनेमे। – सिसरो

जो दूसरोकी भलाई करता है, अपनी भी भलाई करता है, भावी फलके रूपमे नही, बल्कि उसी वक्त, क्योकि नेकी करनेका भान, स्वयमेव विपुल पुरस्कार है। – सैनेका

भले लोग ही सुखी है, भले लोग ही महान् है। – एम० इज़ेकील

ओ दिल, कोशिश तो कर! भला बनना कितना आसान है और भला दिखना कितना बोझील। – रुकर्ट

भवितव्यता

भवितव्यता जिस बातको नही चाहती उसे तुम अत्यन्त चेष्टा करनेपर भी नही रख सकते, और जो चीजें तुम्हारी हैं—तुम्हारे भाग्यमे बदी है—उन्हें तुम फेंक भी दो फिर भी वे तुम्हारे पाससे नही जायेंगी।

– तिरुवल्लुवर

भाई

सच्चा भाई वह है जिसको तू अपनी मददके लिए बुलावे तो वह खुशीसे आवे—चाहे जगमें खूनकी धारें ही क्यो न बहती हो।

– कुराद-बिन-औबाद

कोई आदमी अपने भाईको रौंदकर जगत्-पिता तक नहीं पहुँचता।

– अज्ञात

भाग्य

बुरा समय सिद्धान्तका परीक्षाकाल है—इसके बिना आदमी मुश्किलसे जान पाता है कि वह ईमानदार है या नही। – फील्डिंग

अभागोकी ओर देखो, तुम उन्हे बुद्धिहीन पाओगे। – यग

आजका जो पुरुषार्थ है वही कलका भाग्य है। – पालशिरर

जो तेरे भाग्यमें नही वह तुझे हरगिज न मिलेगा, और जो तेरे भाग्यमे है, वह तुझे जहाँ तू होगा वही मिल जायेगा। – सादी

जितना भाग्यमें लिखा है उतना हर जगह बिना उद्योग और परिश्रमके भी मिल जायेगा और जो भाग्यमें नही लिखा है, वह कुबेरकी खुशामद और चाकरीसे भी नही मिलेगा। – अज्ञात

ईश्वरसे डरना भाग्यशाली बननेका लक्षण है। पाप करते रहकर भी ईश्वरकी दयाकी आशा रखना दुर्भाग्यकी निशानी है। – अबु उस्मान

दो बातें असम्भव हैं, भाग्यमे जितना लिखा है उससे अधिक खाना, और नियत समयसे पहले मरना। – गुलिस्ताँ

महान् उद्देश्यसे शासित मनुष्यको भाग्य नही रोक सकता। – अज्ञात

भार

स्वेच्छापूर्वक अगीकार किया हुआ भार, भार नही है।

– इटालियन कहावत

भारत-माता

आज हमारी जननी जन्मभूमि भारतमाँ महाभारतकी द्रौपदीकी-सी हालतमें है, उसे हमारे ही भाइयोंने बाजीपर लगा दिया है, वह आपसे अपनी सुरक्षाकी आशा कर रही है। — गान्धी

भावना

अगर विचार रूप है तो भावना रंग। — एमर्सन

ऐसा कोई कीमिया नही जो सीसेके भावोसे सोनेका चारित्र पैदा कर दे। — एच० स्पेन्सर

जिस मनुष्यको भावनाओंका उफान आता है वह 'हिस्टिरिकल' है। — गान्धी

भावना बच्चो और स्त्रियोकी चीज है। — नेपोलियन

वाणी-विलाससे विचार अधिक गहराईपर है, विचारसे भावना अधिक गहराईपर है। — फ्रेंच

भाषण

दुनियामे चलो-फिरो तो नेकी और सच्चाईसे रहो और जब बोलो तो धीमी आवाजसे बोलो, सचमुच गधेकी तरह रेंकना अल्लाहको सबसे ज्यादा नापसन्द है। — कुरान

जो अपनेको शान्त रखना नही जानता, कभी अच्छा नही बोल सकता। — प्लुटार्क

केवल भाषणसे तू श्रेष्ठ नही बन जायेगा, बडबड करनेसे कोई सत्पुरुष नही हो जाता। — रामायण

अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी तकरीर प्रभावक हो तो उसको संक्षिप्त करो, क्योंकि अलफाज़ सूरजकी किरणोंकी तरह हैं, जितनी ज्यादा एकत्र होगी उतनी ही तेज़ होगी। — सूदे

भाषा

समझमें न आनेवाली भाषा, बिना रोशनीकी लालटेन है। — अज्ञात

भाषा हमको इसलिए दी गयी थी कि हम एक-दूसरेसे खुशगवार बातें कह सकें। – बोवी

भिक्षु

भिक्षु वही है जो संयत है, सन्तुष्ट है, एकान्तसेवी है और अपनेमें मस्त है। – बुद्ध

भूल

भूल करना मनुष्यका स्वभाव है, की हुई भूलको मान लेना और इस तरह आचरण रखना कि जिससे वह भूल फिर न होने पावे—मरदानगी है। – गान्धी

सबसे बडी भूल कोई कोशिश न करना है। – अज्ञात

भेद

नौकरसे अपना भेद कहना उसे सेवकसे स्वामी बना लेना है। – अरस्तू

अपनी आँखो, होठो और कानो सबको बन्द कर ले फिर अगर तुझे अल्लाहका भेद दिखाई न दे तो हमपर हँसना। – मौलाना रूमी

जो आदमी दूसरेके गुप्त भेदको तुझपर प्रकट कर दे, जहाँतक बने उसे अपना भेद न दे, क्योकि जो कुछ वह दूसरेके भेदके साथ कर रहा है, वही तेरे भेदके साथ भी करेगा। – हज़रत अली

वह भेद जिसे तुम गुप्त रखना चाहते हो, किसीसे भी न कहो, चाहे वह तुम्हारा परम विश्वासी ही क्यो न हो। गुप्त बातको जितनी अच्छी तरह आप स्वय छिपा सकते है, दूसरा न छिपा सकेगा। – गुलिस्ताँ

जिसने इतना भी लखा दिया कि उसके पास कोई भेद है तो उसने आधा भेद तो खोल दिया है बाक़ी आधा जल्द खुल जायेगा। – लुक़मान

भेंट

भेंटमें मिली हुई चीज़से ख़रीदी हुई सस्ती है। – अज्ञात

देनेवालेका हृदय भेंट की हुई चीजको प्यारी और कीमती बना देता है ।
– ल्यूथर

फूल और फल हमेशा माकूल नजराने हैं । – एमर्सन

भोग

हमने भोग नही भोगे, भोगोने ही हमे भोग लिया, हमने तप नही किया, हम ही तप गये, हमने काल नही गुजारा, कालने ही हमे खत्म कर दिया, हमारी तृष्णा जीर्ण नही हुई, हम ही जीर्ण हो गये । – भर्तृहरि

भोग करनेसे भोगकी इच्छा नही बुझती बल्कि ऐसी भडकती है जैसे घी पडनेसे आग । – मनु

इन्द्रियाँ भोग नही माँगती, भोगसे तृप्त होती है, मगर माँगनेवाला, चितानेवाला, यह मन है । – शीलनाथ

भोगविलास

भोग-विलाससे आदमी नियमसे स्वार्थी और कठोर-हृदय हो जाता है ।
– जाफरी

भोजन

एक बार हलका आहार करनेवाला महात्मा है, दो बार सँभलकर खानेवाला बुद्धिमान् है और इससे अधिक बेअटकल खानेवाला मूर्ख और पशु समान है । – धम्मपद

पशु चराईसे लौटनेका समय जानता है पर मूर्ख अपने पेटका परिमाण नही जानता । – सौमण्ड

जबतक तुम्हारा खाना हजम न हो जाये और खूब तेज भूख न लगने लगे तबतक ठहरे रहो और उसके बाद शान्तिसे वह खाना खाओ जो तुम्हारी प्रकृतिके अनुकूल है । – तिरुवल्लुवर

थोडा खानेवालेका थोडा मर्दन होता है और बहुत खानेवालेका बहुत ।
– अज्ञात

जिसने तुम्हें यहाँ भेजा है, उसने तुम्हारे भोजनका प्रबन्ध पहलेसे कर रखा है। — अज्ञात

देखो, जो आदमी बेवकूफी करके अपनी जठराग्निसे परे ठूँस-ठूँसकर खाना खाता है, उसकी बीमारियोकी कोई सीमा नही रहेगी। — तिरुवल्लुवर

नफीस कोटसे उत्तम भोजन अच्छा। — बर्गडियन कहावत

भूखसे कुछ कम खानेसे शरीरमे फुर्ती बनी रहती है, काम करनेको जी चाहता है और आदमी नीरोग रहता है, अघाकर खानेसे आलस और भारीपन पैदा होता है जिससे पड रहनेकी इच्छा होती है और दयाशीलता-मे कमी आ जाती है। भूखसे ज्यादा खानेकी आदतसे आदमी बिलकुल निकम्मा हो जाता है, इससे रोग पैदा होते है, उम्र घटती है और परमार्थ मलियामेट हो जाता है। — धम्मपद

भ्रष्ट

जो बडी-बडी शक्तियाँ प्राप्त करता है, बहुत सम्भव है वह मिथ्याभिमानसे और झूठी शानसे फूल उठे, और निश्चय ही वह अपने परमात्मपदको एकदम भूल जाता है। — रामकृष्ण परमहस

भ्रष्ट वचन और भ्रष्ट-विचार भ्रष्ट आत्माके परिचायक है। — अज्ञात

■

म

मकान

आदमीको मरनेके बाद उसी मकानमें रहना होगा जिसको कि उसने अपनी मृत्युसे पहले बनाया है। — हजरत अली

हर जीव अपना मकान बनाता है, लेकिन बादमें वह मकान उस जीवकी हदबन्दी कर लेता है। — एमर्सन

मक्कार

वह कापुरुष जो तपस्वीकी-सी तेजस्वी आकृति बनाये फिरता है, उस गधे-के समान है जो शेरकी खाल पहने हुए घास चरता है। — तिरुवल्लुवर

स्वयं उसके ही शरीरके पचतत्त्व मन-ही-मन उसपर हँसते है, जब कि वे मक्कारकी चालबाजी और ऐयारीको देखते है। — तिरुवल्लुवर

मक्कारी

देखो, जो आदमी अपने दिलसे सचमुच तो किसी चीज़को छोडता नही मगर बाहर त्यागका आडम्बर रचता है और लोगोको ठगता है, उससे बढकर कठोर-हृदय दुनियामें और कोई नही है। — तिरुवल्लुवर

मज़दूरी

लोग कभी-कभी पूछते है—'हर व्यक्तिके लिए मज़दूरी लाज़िमी क्यों होनी चाहिए?' मै पूछता हूँ, 'हर-एकके लिए खाना जरूरी क्यो होना चाहिए?' पूछा जाता है कि 'ज्ञानी मजदूरीका काम क्यो करें? व्याख्यान क्यों न दें?' मै पूछता हूँ कि 'ज्ञानी भोजन क्यो करें? केवल ज्ञानामृतसे तृप्त क्यो न रहे? उसे खाने, पीने, सोनेकी क्या ज़रूरत है?' — विनोबा

मजबूरी

जिसमें तुम्हारा कोई चारा नहीं उसके लिए अफसोस करना बन्द कर दो। — शेक्सपीयर

मज़हब

ग़रीबोको क़ाबूमे रखनेके लिए मज़हबको एक अच्छा साधन माना जाता रहा है। — जे० बी० बरी

मजहबका झगडा और मजहबका पालन शायद ही साथ-साथ चलते हों।
– यंग

मजा

हम एक क्षणिक और उच्छृंखल मजेकी खातिर देवोंके सिंहासन बेंच डालते है।
– एमर्सन

मजाक़

कडवी मजाक दोस्तीका ज़हर है। – कहावत

हँसी-ठट्ठेकी आदत मत डाल, क्योकि इससे हानि होती है, और हँसी-ठट्ठा न करनेसे लोगोका मान बढता है। – इब्न-दहान

हँसी-ठट्ठा न छोड दे, क्योकि बहुत-से हँसी-ठट्ठा करनेवाले तेरी ओर ऐसी आपदाएँ ला खडी करेंगे जिनको तू दूर नही कर सकेगा।
– हज़रत अली

मज़ाक अपने बराबरवालोसे करो। – डेनिश कहावत

मजाक मित्रको अकसर खो देती है और दुश्मनको कभी नही पाती।
– सिमन्स

जो मज़ाक करता है वह दुश्मनी मोल लेता है। – फ्रैंकलिन

मतवाला

उभरती हुई जवानीमे चटक-मटककर चलनेवाले, बता, क्या कभी कोई मतवाला भी नियत स्थानपर पहुँचा है ? – अबुल-फतहिल-बुस्ती

मद

जवानी, सुन्दरता और ऐश्वर्य इनमें-से हर-एकमे मनुष्यको मतवाला बना देनेकी शक्ति है। – कालिदास

मदद

वे मजदूरको ग़रीबीमे मदद करनेके लिए उत्सुक हैं, गरीबीसे बाहर निकालनेके लिए नहीं। – एच० एम० हिण्डमन

कोई इतना अमीर नही कि उसे दूसरेकी मददकी जरूरत न हो, कोई इतना गरीब नही है कि दूसरोका किसी-न-किसी तरह सहायक न हो सके, विश्वासपूर्वक दूसरोसे सहायता लेने, और अनुकम्पापूर्वक दूसरोको सहायता देनेका तो हमारा स्वभाव ही बन जाना चाहिए। – पोप लियो १८ वाँ

मदान्ध

अज्ञको समझाना आसान है, विशेषज्ञको समझाना तो और भी आसान है। लेकिन जो जरा-सा ज्ञान पाकर मदान्ध हो गया है, उसे समझानेकी ताकत ब्रह्मामे भी नही है। – भर्तृहरि

मदिरा

अगर तू मनुष्य है तो मदिराको त्याग। भला पागलपनकी हालतमे कोई मनुष्य बुद्धिमानीके साथ उद्योग कर सकता है? – इब्न-उल-वर्दी

आसमानका गोलार्द्ध मेरा प्याला है, और चमकती हुई रोशनी मेरी शराब। – स्वामी रामतीर्थ

मन

यह एक सनातन रहस्य है कि मनुष्यको बनानेवाला मन है। – अज्ञात

जिस तरह टूटे छप्परमे बारिश घुस जाती है उसी तरह गाफिल मनमे तृष्णा दाखिल हो जाती है। – अज्ञात

जबतक मन अस्थिर और चचल है तबतक किसीको अच्छा गुरु और साधु लोगोकी सगति मिल जानेपर भी कोई लाभ नही होता।
– रामकृष्ण परमहस

उत्तम मन शरीरको उत्तम बनाता है। – अज्ञात

मन ही मनुष्योके बन्धन और मोक्षका कारण है। जिसने अपनी देह और धनधाममे आपा ठाना वह बँधुआ है, जिसने इनको मिथ्या समझ लिया वही मोक्षको प्राप्त हुआ। – सर्वोपनिषद्

आदमीका मन इस तरह बना हुआ है कि वह शक्तिका प्रतिरोध करता है और कोमलतासे झुक जाता है। —सेल्सका सन्त फ्रान्सिस

हर मन अपना ही एक नया कम्पास, एक नया उत्तर, एक नया रुख रखता है। —एमर्सन

मनको हर्ष और उल्लासमय बनाओ, इससे हजार हानियोंसे बचोगे और दीर्घ जीवन पाओगे। —शेक्सपीयर

जो बरकतें सुचालित मनसे प्राप्त होती है वे न माँसे मिलती है न बापसे, न रिश्तेदारोसे। —अज्ञात

मन पाँच तरहके होते है—१ मुर्दार मन जैसे नास्तिकोका, २ रोगी मन जैसे पापियोका, ३ अचेत मन जैसे पेट-भरोका, ४ औंधा मन जैसे कडा ब्याज खानेवालोका, ५ चगा मन जैसे सज्जनोका।

—पारस भाग

मनुष्यका मन पूर्वजन्मके सम्बन्धको सहज ही जान लेता है। —कालिदास

हर-एक नया मन एक नया वर्गीकरण है। —एमर्सन

दुर्बल मन खुर्दबीनको तरह तुच्छ चीजोको तूल देता है, मगर महान् वस्तुओको ग्रहण नही कर सकता। —चैस्टरफील्ड

मन अभी नही रुकता है तो फिर कभी नही रुकेगा। —शीलनाथ

मनको शान्त और पवित्र-विचारपूर्ण रखो तो तुम्हारा कोई विरोध नही कर सकता, यह नियम है। —स्वामी रामतीर्थ

जैसे कच्ची छतमे पानी भरता है वैसे ही अविवेकी मनमे कामनाएँ धँसती हैं। —धम्मपद

हम मनको ठीक तरह नही इस्तेमाल कर सकते जब कि शरीर भोजनसे ठसाठस भरा हो। —सिसरो

अभ्यास और वैराग्यसे मन आसानीसे बसमें आ जाता है। —गीता

मिथ्यात्वकी ओर खिंचनेवाले मनको सत्य वस्तुओमे रस नही आता ।
— होरेस

उस मनुष्यको देखो जिसने विद्या और बुद्धि प्राप्त कर ली है, जिसका मन शान्त और पूरी तरह वशमे है, धार्मिकता और नेकी उसका दर्शन करनेके लिए उसके घरमे आती है । — तिरुवल्लुवर

अपना मन पवित्र रखो, धर्मका तमाम सार बस एक इसी उपदेशमे समाया हुआ है बाकी सब बातें शब्दाडम्बर-मात्र है । — तिरुवल्लुवर

देखो, मन हमेशा दिलसे धोखा खाता रहता है । — रोशे

मनुष्यका मन ही समूचा मनुष्य है । — नीतिवाक्य

मानव-मनकी एक अतीव अद्भुत दुर्बलता यह है कि वह जो कुछ पसन्द करता है उसे देखनेके लिए अपनेको मना लेनेकी क्षमता रखता है ।
— रस्किन

अपने मनको बुरी बातोसे बचा और उसे ऐसी बातोके लिए उत्तेजित कर, जिनसे उसकी शोभा बढे । ऐसी दशामे तेरा जीवन आनन्दमय होगा और लोग तेरी प्रशसा करेंगे । — हजरतअली

अपने मन लाडले बच्चोकी तरह है । लाडले बच्चे जैसे हमेशा अतृप्त रहते है, उसी तरह हमारे मन हमेशा अतृप्त रहते है । इसलिए मनका लाड कम करके उसे दबाकर रखना चाहिए । — विवेकानन्द

मन सब कुछ है, जो कुछ हम सोचते है हो जाते है । — बुद्ध

पूरे जागे हुए मनका यही अर्थ है कि ईश्वरके सिवा दूसरी किसी चीज़पर वह चले ही नही । जो मन उस परवरदिगारकी खिदमतमे लीन हो सकता है, फिर दूसरे किसीकी क्या जरूरत ? — रबिया

धर्म-द्रोहीका मन मुरदा, पापीका मन रोगी, लोभी व स्वार्थीका मन आलसी और भजन-साधनमे तत्पर व्यक्तिका मन स्वस्थ होता है ।
— हातिम ह्रासम

जो इस मन सरीखा ही चचल होगा और इससे आठों पहर लडेगा, वही इसे मिटावेगा। — शीलनाथ

मनके रोगी होनेके ये चार लक्षण हैं— १ उपासनासे आनन्दित न होना, २ ईश्वरसे डरकर न चलना, ३ ज्ञान प्राप्त करनेके मतलबसे किसी चीज़को न देखना और ४ ज्ञानकी बात सुनकर भी उसके मर्मको न समझना। — जुन्नुन

मनन

शुद्ध अन्त करणमे ही सत्य स्फुरित होता है। स्वार्थ व सुख छोडनेसे ही अन्त करण शुद्ध बनता है। — हरिभाऊ उपाध्याय

बिना मनन किये पढना, बिना पचाये खानेके समान है। — बर्क

मनस्वी

ज़मीनपर सोना पडे या पलगपर सोना मिल जाये, शाक-भाजी खानी पडे या स्वादिष्ट भोजन मिल जाये, फटा-पुराना कपडा मिले या दिव्य वस्त्र मिले, मनस्वी लोग कार्य सफल करनेके लिए न दु खको गिनते हैं न सुखको। — नीति

मालतीके फूलकी तरह मनस्वियोकी दो ही गतियाँ होती हैं या तो सब लोगोके सिरपर विराजना या वनमे ही मुरझा जाना। — भर्तृहरि

मनःस्थिति

अपनी प्रशसामे जबतक रुचि है तबतक अपनी निन्दासे भी उद्वेग हुए बिना न रहेगा। अपनी सफलतामे जबतक रुचि है तबतक असफलता दु खदायी हुए बिना न रहेगी। — हरिभाऊ उपाध्याय

मना

किसीको धोखा नही देना चाहिए, किसीकी रोज़ी नहीं छुडानी चाहिए; किसीका बुरा नहीं सोचना चाहिए। — अज्ञात

अपने रिश्तेदारोसे झगडना नही चाहिए, बलीका मुकाबला नही करना चाहिए, स्त्री, छोटो, बडो और बेवकूफोसे बहस नही करनी चाहिए।
— अज्ञात

बुद्धिमान्‌को ऐसा काम नही करना चाहिए जो निष्फल हो, जिससे बहुत क्लेश हो, जिसमें सफलता सन्दिग्ध हो, या जिससे दुश्मनी पैदा हो।
— अज्ञात

मनुष्य

मनुष्यकी परिभाषा 'पैदायशी सिपाही' की जा सकती है। — कार्लाइल

जो मनुष्य होना चाहता है, वह अवश्य ही किसी मत-विशेषमे दीक्षित नही होगा। यदि एक अकेला मनुष्य अपने अन्त करणपर अदम्यरूपसे दृढ रहकर उसके अनुसार कार्य करे, तो यह विशाल जगत् उस मनुष्यके चरणोपर आ जायेगा। — एमर्सन

मनुष्य समतासे श्रमण होता है, ब्रह्मचर्यसे ब्राह्मण होता है, ज्ञानसे मुनि होता है, तपसे तपस्वी होता है। — भ० महावीर

इस विचारने मेरे हृदयको बहुत दुखाया कि मनुष्यने मनुष्यका क्या बना डाला है। — वर्ड्सवर्थ

मनुष्य पशु नही है। बहुत-से पशु-जन्मोके अन्तमे वह मनुष्य बना है। पशुता और पुरुषार्थमे इतना भेद है जितना जड और चेतनमे है। — गान्धी

ससारमे तीन तरहके मनुष्य होते है—नीच, मध्यम और उत्तम। नीच मनुष्य, विघ्नके भयसे काम शुरू ही नही करते, मध्यम मनुष्य काम शुरू तो कर देते है, किन्तु विघ्न आते ही उसे बीचमे ही छोड देते है, परन्तु उत्तम मनुष्य जिस कामको आरम्भ कर देते है उसे विघ्नपर विघ्न आनेपर भी पूरा ही करके छोडते है। — भर्तृहरि

मनुष्य-मात्र ईश्वरका प्रतिनिधि है। — गान्धी

जितना ही मै मनुष्योको जानता जाता हूँ, उतना ही मैं कुत्तोकी प्रशसा करता हूँ। – एक अँगरेज

साँप और मनुष्यमे क्या फर्क ? देखनेमे साँप पेटके बल चलता है, मनुष्य पैरोपर खडा होकर चलता है। लेकिन यह दिखावा है। जो मनुष्य मनसे पेटके बल चलता है, उसका क्या ? – गान्धी

हम मनुष्य नहीं है। जिसको पहले मनुष्य बननेकी धुन सवार हो गयी वही सर्वोत्कृष्ट प्राणी है। – टैगोर

मनुष्यता

मनुष्यता बडी है परन्तु मनुष्य छोटा है। – बोर्न

हमारा मनुष्यत्व एक दरिद्र वस्तु होता यदि उसमे वह देवत्व भी न होता जो हमारे अन्दर उभरता रहता है। – बेकन

जिस मनुष्यको अपने मनुष्यत्वका मान है, वह ईश्वरके सिवा और किसीसे नही डरता। – गान्धी

जीवनमे भगवान्को अभिव्यक्त करना ही मनुष्यका मनुष्यत्व है।
– अरविन्द घोष

मनोबल

मनोबल ही सुख सर्वस्व है, यही जीवन है, और यही अमरता है, मनोदौर्बल्य ही रोग है, दुःख है और मौत है। – विवेकानन्द

मनोभाव

देखो, जो आदमी जबानसे कहनेके पहले ही दिलकी बात जान लेता है वह सारे ससारके लिए भूषणस्वरूप है। – तिरुवल्लुवर

मनोरंजन

जो अपनी सच्ची हालतका विचार किये बिना ही राग-रगमे मस्त हो रहे है, यदि वे सब अपनी असली हालतको पहचान जायें तो फिर एक पल भी ये यो व्यर्थ न जाने देंगे। – हुसेन बसराई

अधिकाश लोगोंको प्रतिभावानोके उत्कृष्टतम साहित्य और कला-कृतियोकी अपेक्षा रीछका नाच, चौराहेकी हत्या या सभ्य व्यभिचारका विवरण ही अधिक मनोरजक लगता है। — एनन

पढनेसे सस्ता कोई मनोरजन नही, न कोई खुशी इतनी चिरस्थायी है। — लेडी मौण्टेगू

कोई मनोरजन जो हमारे हृदयको ईश्वरसे हटाता है, पाप है, और अगर त्याग न दिया गया तो वह आत्महत्या कर डालेगा। — रिचर्ड फुलर

ममत्व

एक तो तू ममत्वकी बाधाको दूर कर दे, और दूसरे हस्तीके मैदानको पार कर जा। — शब्सतरी

मरण

मरना ही शरीरधारियोकी प्रकृति है, और जीवित रहना ही विकृति है। घडी-भर भी साँस लेना गनीमत समझना चाहिए। — कालिदास

मरना तो सबको है, मगर मरनेसे डरना काम कायरका है। — तुकाराम

मर्यादा

कभी-कभी मै द्रव्यहीन हो जाता हूँ, यहाँतक कि मेरी हीनता बहुत बढ जाती है। परन्तु अपनी मर्यादाको स्थिर रखते ही मै फिर अमीर हो जाता हूँ। — इब्न-अब्दुल-इल-असदी

महत्ता

महत्ता सदा ही विनयशील होती है और दिखावा पसन्द नहीं करती मगर क्षुद्रता सारे संसारमें अपने गुणोका ढिंढोरा पीटती फिरती है। — तिरुवल्लुवर

महत्त्वाकांक्षा

महत्त्वाकांक्षासे सावधान रह, स्वर्ग अहंकारसे नहीं, नम्रतासे मिलता है। — मिल्टिन्

हम प्रेमसे महत्त्वाकांक्षाकी ओर अक्सर चल पड़ते हैं लेकिन कोई महत्त्वाकांक्षासे प्रेमके पास लौटकर कभी नहीं आ पाता। — अज्ञात

महत्त्वाकांक्षाका एक पैर नरकमें रहता है, भले ही वह अपनी उँगलियोंको स्वर्ग छूनेके लिए बढ़ाती रहे। — लिली

अहंकारी शैतान, दुनियाका सबसे बुरा दुश्मन महत्त्वाकांक्षी।
— ब्लूम फ़ील्ड

ऊपरसे जो निःस्वार्थ प्रयास दीख पड़ता है बहुधा उसकी भी प्रेरक शक्ति महत्त्वाकांक्षा और स्पर्द्धा ही होती है। — सी० जे० होम्स

जिसके लिए दुनिया नाकाफी थी उसके लिए अब एक कब्र काफी हो गयी। — सिकन्दर महान्के विषयमें

महत्त्वाकांक्षा वह पाप है जिसने फरिश्तोंको भी पतित कर दिया।
— शेक्सपीयर

सेवा-पन्थ छोड़कर तू महत्त्वाकांक्षाके फेरमें क्यों पड़ गया? तेरे किस पापने अमृतका कलश तेरे हाथसे छीनकर यह शराबका प्याला दे दिया?
— हरिभाऊ उपाध्याय

महात्मा

ईश्वरकी प्रार्थनासे पवित्र हृदयको, जो उसी स्थितिमें, उस प्रभुके चरणोंमें अर्पित कर देता है, अपनी दूसरी सब सँभाल भी उस प्रभुपर ही छोड़ देता है और खुद उसके ध्यान-भजनमें रत रहता है, वही सच्चा महात्मा है। — रबिया

जो मनुष्य अपने छोटेसे छोटे दोष या पापको बड़ा भयंकर समझता है वह साधु, महात्मा हो जाता है। — अज्ञात

महान्

जो महान् रूपसे नेक नही है वह महान् नहीं है। — शेक्सपीयर

अरे, मुझे मासूम रहने दे, औरोको महान् बना। — कैरोलीन

वे ही सचमुच महान् है जो सचमुच भले है। — अज्ञात

महत्तरके लिए महान्, महान् नही है। — सर-फिलिप-सिडनी

सबसे महान् आदमी वह है जो दृढतम निश्चयके साथ सत्यका अनुसरण करता है। — सेनेका

बहुत-से विचारोवाला नही एक निश्चयवाला महान् बनता है। — कॉटवस

वास्तविक महान् व्यक्तिके तीन चिह्न है—उदारतापूर्ण योजना, मानवता-पूर्ण अमल, साधारण सफलता। — बिस्मार्क

कोई चीज वास्तवमे महान् नही हो सकती जो कि सत्यमय नही है। — जॉन्सन

जिसे तुम्हारा अन्त करण महान् समझे वह महान् है। आत्माका फैसला हमेशा सही होता है। — एमर्सन

अभीतक ऐसा कोई वास्तवमे महान् आदमी नही हुआ जो साथ-ही-साथ वास्तविक पुण्यात्मा न रहा हो। — फ्रैंकलिन

सबसे महान् व्यक्ति वह है जो अटल प्रतिज्ञाके साथ सत्यका अनुसरण करता है, जो अन्दर और बाहरके सभी प्रलोभनोका प्रतिरोध करता है, जो भारीसे भारी बोझोको खुशीसे सहन करता है, सत्य, नेकी और ईश्वरपर जिसकी निर्भरता सर्वथा अडिग है। — चैनिंग

महान् है वह जिसने अपने शत्रुओको परास्त कर दिया, परन्तु महत्तर है वह जिसने उन्हे अपना बना लिया। — स्यूम

महान्से प्रेम करना स्वय लगभग महान् होना है। — नीकर

महान् पुरुष वे है जो देखते है कि किसी भी भौतिक शक्तिसे आध्यात्मिक शक्ति बढ़कर है, कि विचार दुनियापर शासन करते है। — एमर्सन

आज तक कभी कोई आदमी नकल करके महान् नहीं बना ।
– जॉनसन

अगर कोई महत्ताकी तलाश करता है तो उसे चाहिए कि महत्ताको तो भूल जाये और सत्यकी माँग करे, वह दोनो पा जायेगा । – होरेसमन

महापुरुषका यह लक्षण है कि वह तुच्छ बातोको तुच्छ मानकर चलता है और महत्त्वपूर्णको महत्त्वपूर्ण । – लैंसिंग

महापुरुषकी महत्ता इसीमे है कि वह हरगिज-हरगिज निराश न हो ।
– थॉमसन

सितारोको इस बातकी चिन्ता नही कि हम जुगनू-जैसे दीखते है ।
– अज्ञात

किसीको डिग्रियो (उपाधियो) से उसकी महत्ताका अनुमान न लगा । ऊँटका अनुमान उसकी नकेलसे न कर । – अज्ञात

सद्‌गुण ही महत्ताका ठोस आधार है । – जॉनसन

महापुरुष

विपत्कालमे धैर्य, ऐश्वर्यमे क्षमा, सभामे वचन-चातुरी, सग्राममे पराक्रम, सुयशमें अभिरुचि और शास्त्रोमे व्यसन—ये गुण महापुरुषोमें स्वभावसे ही होते हैं । – भर्तृहरि

महान् व्यक्ति बाज़ोकी तरह होते हैं, वे अपना घोसला किसी ऊँचे एकान्त स्थानमें बनाते हैं । – शोपेनहोर

महापुरुष इंच-इच योद्धा होता है, वह चट्टानकी तरह कठोर और शेरकी तरह निर्भीक होता है । – अज्ञात

महारिपु

आलस, अज्ञान और अश्रद्धा ये तीन 'महारिपु' हैं । – विनोबा

महिमा

रामचन्द्रजीके लाखो-करोडोकी लागतसे बने मन्दिरपर अगर अभागे कौए बीट कर दें तो क्या मन्दिरकी महिमा कम हो जाती है ?

– तुलसीदास

मन्दिर

आजकलके पूजा-घरोपर बडा तरस खाना चाहिए। उनमें परिग्रहके सिवा कुछ भी नही रहा। – एमर्सन

माता

पूजाके योग्य सबसे प्रथम देवता माता है। पुत्रोको चाहिए कि माताकी टहल सेवा तन-मन-धनसे करें। उसे सब तरहसे प्रसन्न करें। उसका अपमान कभी न करें। – स्वामी दयानन्द

माता पृथ्वीसे भी बडी है। – अज्ञात

ईश्वर हर जगह मौजूद नही हो सकता था, इसलिए उसने माताएँ बनायी।

– ज्यूइश कहावत

मातृप्रेम

ईश्वरीय प्रेमको छोडकर दूसरा कोई प्रेम मातृप्रेमसे श्रेष्ठ नही है।

– विवेकानन्द

मान

मान बडाई, यमपुर जाई। – शीलनाथ

बिना मान अमृत पिलाना मुझे नही सुहाता। मान-सहित विष पिला दे तो मर जाना भी अच्छा। – रहीम

तिरस्कारमय अमृतसे मानयुक्त इन्द्रायनका प्याला अच्छा। – अन्तरा

मान-मर्यादा प्राप्त कर, चाहे वह नरकमे ही क्यो न मिले, और अपमानको त्याग चाहे वह दायमी स्वर्गमे ही क्यो न हो। – मुतनब्बी

मान-सहित मरना, अपमान-सहित जीनेसे भला है। – अज्ञात

'मान घटै नितके घर आये'। — अज्ञात

शेर भूखा भले मर जाये, पर कुत्तेका जूठा हरगिज न खायेगा। — सादी

नाम और मानके पीछे दुनिया तबाह है। — अज्ञात

मानवता

मनुष्य-स्वभाव, अपने विकसित रूपमें लाजिमी तौरसे मानवतापूर्ण है, प्रेमके बिना वह मानवताहीन है, समझदारी बिना मानवताहीन, अनुशासन बिना मानवताहीन। — रस्किन

माप

कोई मनुष्य भले ही इतना लम्बा हो कि आकाश छू ले या सृष्टिको मुट्ठीमें ले ले, लेकिन उसका माप आत्मा और हृदयमें ही होना चाहिए। — वाट्स

माया

जीव परतन्त्र है, ईश्वर स्वतन्त्र है। जीव बहुत है, ईश्वर एक है। यद्यपि यह दो प्रकारका भेद मायाकृत है, फिर भी वह भगवान्की कृपाके बिना करोडो उपाय करनेपर भी नही जाता। — रामायण

मायाके दो भेद हैं—अविद्या और विद्या। — रामायण

मायाके पाशसे छूटनेका प्रयत्न करते समय भी कोमलता और सेवाभाव हमें न छोडना चाहिए। — गान्धी

जितनी इन्द्रियगम्य चीज़ें है, जहाँतक सोची जा सकें, सब माया हैं। — रामायण

मायाचार

मायाचार ही एकमात्र अक्षम्य दुर्गुण है। मायाचारीका पश्चात्ताप भी मायाचार है। — विलियम हैज़लिट

लपटोवाली आग मुझे अपनी चमकसे चेतावनी देकर दूर रखती है। मुझे राखमें छिपे बुझते हुए अंगारोसे बचाना। — टैगोर

जो सोचता और कुछ है और कहता कुछ और है, मेरा दिल उससे ऐसी घृणा करता है जैसी नरककुण्डसे । – पोप

मार्ग

जबतक अन्त करणमे आत्मविश्वास पक्का है और परमेश्वरपर भरोसा है तबतक तेरा मार्ग सरल ही है । – विवेकानन्द

दो बिन्दु निश्चित हुए कि सुरेखा 'निश्चित' तैयार होती है । जीव और शिव ये दो बिन्दु कायम किये कि परमार्थ-मार्ग तैयार हुआ । – विनोबा

देख, तू बुद्धि-द्वारा दरशाये मार्गपर कायम रहना । – एमर्सन

मार्गदर्शन

अचूक मार्ग दिखानेके लिए मनुष्यका अन्त करण पूर्ण निर्दोष और दुष्कर्म करनेमे असमर्थ होना चाहिए । – गान्धी

मालिकी

मालिकी उनकी होनी चाहिए जो सदुपयोग कर सकते हो, न कि उनकी जो जोडते और छिपाते है । – एमर्सन

मासूम

मुझे भरोसा है अपनी मासूमियतका, और इसीलिए मै दिलेर और दृढ-प्रतिज्ञ हूँ । – शेक्सपीयर

माँ

क्या ही अच्छा होता कि मै तेरे बदलेमे मृत्युकी भेंट होती ।
– एक माँ अपने बेटेकी मौतपर

माँ फिर भी माँ है, जीती हुई पवित्रतम वस्तु । – एस० टी० कॉलेरिज

माँके पैरोके नीचे जन्नत है–जेरे-कदमेवाल्दा फिरदौसे-बरी हैं ।
– अज्ञात

माँ अपने लडकेकी तारीफ दूसरोकी जबानी सुनकर उसके जन्मदिनसे भी ज्यादा खुश होती है। – अज्ञात

जब उसके लडकेने शिकायत की कि उसकी तलवार छोटी है तो उसकी स्पार्टन माँ बोली—'इसमे एक कदम जोड दे।' – अज्ञात

माँ होनेसे मनुष्य सनाथ होता है, उसके न होनेपर अनाथ हो जाता है। – महाभारत

फ्रान्सकी माताएँ अच्छी हो, उसे सपूत मिल ही जायेंगे। – नैपोलियन

मै जो कुछ हूँ, या कुछ होनेकी आशा रखता हूँ, उसका कारण मेरी देवी माँ है। – लिंकन

जिस वक्त मनुष्यको माँका वियोग होता है तभी वह वृद्ध होता है, तभी वह दु खी होता है और तभी उसे सारी दुनिया शून्य लगती है। – अज्ञात

मांसाहार

जानदारोंको मारने और खानेसे परहेज करना सैकडो यज्ञोसे बढ-कर है। – तिरुवल्लुवर

अगर दुनिया खानेके लिए मास न चाहे, तो उसे बेचनेवाला कोई आदमी ही नही रहेगा। – तिरुवल्लुवर

अहिंसा ही दया है और हिंसा ही निर्दयता, मगर मास खाना एकदम पाप है। – तिरुवल्लुवर

अगर आदमी दूसरे प्राणियोकी पीडा और यन्त्रणाको एक बार समझ सके, तो फिर वह कभी मास खानेकी इच्छा न करे। – तिरुवल्लुवर

जो लोग माया और मूढताके फन्देसे निकल गये है वे मास नही खाते। – तिरुवल्लुवर

भला उसके दिलमें तरस कैसे आयेगा, जो अपना मास बढानेकी खातिर दूसरोका मास खाता है? – तिरुवल्लुवर

अपने पेटोको पशुओंकी कब्र मत बनाओ। — अली

मांसाहारी

मांसाहारी मनुष्य प्रत्यक्ष ही राक्षस है। — अज्ञात

जो आदमी मास चखता है, उसका दिल हथियारबन्द आदमीके दिलकी तरह नेकीकी ओर रागिव नही होता। — तिरुवल्लुवर

जो दूसरेके माससे अपने मासको बढानेकी इच्छा करता है उसमे ज्यादा नीच और क्रूर कोई नही है। — महाभारत

मिजाज

स्वय उस मनुष्यने कोई अत्यन्त आनन्दी मिजाज नही पाया जो उन लीचड आदमियोंको सहन नही कर सकता जिनसे दुनिया भरी पडी है। — ब्रूयर

मित्र

सच्चा मित्र वह है जो मुँहपर चाहे कडवी कहे पर पीछे सदैव बडाई करे। — हरिभाऊ उपाध्याय

सच्चा मित्र वह है जो दर्पणकी तरह तुम्हारे दोषोको तुम्हे दरशावे। जो तुम्हारे अवगुणोको गुण बतावे वह तो खुशामदी है। — गजाली

आदमीको चाहिए कि अपना मित्र आप बने, बाहरी मित्रकी खोजमे न भटके। — जैन सूत्र

मित्र दुर्लभ है, इसकी माकूल वजह यह है कि इनसान तक मुश्किलमे मिलते हैं। — जोसेफरो

मित्रका, हँसी-मज़ाकमे भी, जी नही दुखाना चाहिए। — साइरस

जो छिद्रान्वेषण किया करता है और मित्रता टूट जानेके भयसे सावधानीके साथ बरतता है, वह मित्र नही है। — बुद्ध

जो तेरा वास्तविक मित्र है, वह तेरी जरूरतके वक्त तुझे मदद देगा। — शेक्सपीयर

तुझे बन्धु मित्र चाहिए तो ईश्वर काफी है, सगी चाहिए तो विधाता काफी है, मान-प्रतिष्ठा चाहिए तो दुनिया काफी है, सान्त्वना चाहिए तो धर्म-पुस्तक काफी है, उपदेश चाहिए तो मौतकी याद काफी है, और अगर मेरा यह कहना गले नही उतरता हो तो फिर तेरे लिए नरक काफी है।

— हातिम हासम

जो सामने तो मीठी-मीठी बातें करता है लेकिन पीठ-पीछे बुरा सोचता है और दिलमें कुटिलता रखता है, जिसका चित्त साँपकी गतिके समान है ऐसे कुमित्रको छोडनेमे ही भलाई है। — रामायण

मित्र खूब दूर रहना चाहते है। वे एक-दूसरेसे मिलनेकी अपेक्षा अलग रहना पसन्द करते है। — थोरो

जो तुम्हे बुराईसे बचाता है, नेक राहपर चलाता है, और जो मुसीबतके वक्त तुम्हारा साथ देता है, बस वही मित्र है। — तिरुवल्लुवर

अपने मित्रको अपने लिए, या अपनेको अपने मित्रके लिए, सस्ता न बना डाल। — कहावत

मित्रोके बिना कोई भी जीना पसन्द नही करेगा, चाहे उसके पास बाकी सब अच्छी चीजें क्यो न हो। — अरस्तू

प्रकृति पशुओ तकको अपने मित्र पहचाननेकी समझ देती है।

— कॉर्नील

पुराने सच्चे दोस्तमे बढकर कोई दर्पण नही है। — स्पेनिश कहावत

दुश्चरित्र आदमीसे न दोस्ती करो न जान-पहचान। गरम कोयला जलाता है, ठण्डा हाथ काले करता है। — हितोपदेश

मित्र दु:खमे राहत है, कठिनाईमे पथ-प्रदर्शक है, जीवनकी खुशी है, ज़मीनका खज़ाना है, मनुष्याकार नेक फरिश्ता है। — जोसेफ हॉल

जिसे दोष-विहीन मित्रकी तलाश है वह मित्र-विहीन रहेगा।

— तुर्की कहावत

दुनियामे सब स्वार्थके मित्र हैं, परमार्थ तो उनके सपनेमे भी नहीं हैं ।
— रामायण

आपत्तिमें भी एक गुण है—वह एक पैमाना है, जिससे तुम अपने मित्रोको नाप सकते हो । — तिरुवल्लुवर

सौ रिश्तेदारोसे एक सच्चा दोस्त हमेशा अच्छा । — इटालियन कहावत

जो स्वयं अपना दोस्त है वह दुनियाका दोस्त है । — सेनेका

जबतक तेरे पास सम्पत्ति है तबतक खल मित्र तेरे प्रति बडी उदारता प्रकट करेगा । पर निर्धनताके समय वह तेरे निमित्त कजूस हो जायेगा ।
— हजरतअली

नीचोको जबतक कुछ मिलता-जुलता रहता है, तबतक वे मित्र बने रहते है, और जब तू उनको कुछ न देगा, तब उनका विष तेरे लिए घातक बन जायेगा । — हजरत अली

जब किसी विवेकीने ससारकी परीक्षा की तो उसे ज्ञात हुआ कि ससारमे मित्रके रूपमे कैसे-कैसे शत्रु है । — अबू निवास

आत्यन्तिक मित्र देवोकी तरह दुर्लभ हैं, शायद दुर्लभतर ।
— जे० एस० मिल

जीवनकी आधी मिठास मित्रमे है । — कहावत

जिस समय तेरे मित्र तुझसे अलग हो, उस समय तेरी आँखें न भर आयी, तो प्रेमका जो तू दम भरता है, बिलकुल मिथ्या है ।
— मुहज्जिबउद्दीन याकूत

जो लोग तुमसे अधिक योग्यतावाले है वे यदि तुम्हारे मित्र बन गये है, तो तुमने ऐसी शक्ति प्राप्त कर ली है जिसके सामने तुम्हारी अन्य सब शक्तियाँ तुच्छ है । — तिरुवल्लुवर

बहुत ज्यादा आनेसे या बहुत कम आनेसे दोस्त छूट जाते हैं । — कहावत

जैसे दोस्त हम चाहते हैं, ख्वाब और कहानियाँ है । — एमर्सन

मित्रता

'मैं तुझसे डरता हूँ।' 'भई, क्यो ?' 'क्योंकि तू 'स्कीमी' है, तुझसे सदा चौकन्ना रहना पडता है।' मित्रता और इतना चौकन्नापन एक साथ नही रह सकते। – अज्ञात

विशाल-हृदय ही सच्चे मित्र हो सकते है, बुजदिल और कमीने कभी नही जान सकते कि सच्ची मित्रताके क्या मानी हैं। – चार्ल्स किंग्सले

जिससे मित्रता न रही वह कभी सन्मित्र था भी नही। – अँगरेजी कहावत

असमान मित्रताएँ हमेशा घृणामे समाप्त होती है। – ओ० गोल्डस्मिथ

नीति कहती है कि दोस्ती या दुश्मनी बराबरवालोसे करे। – रामायण

वे दोस्तियाँ जहाँ दिल नही मिलते बारूदसे भी बदतर है, बडी बुलन्द आवाजसे टूटती है। – स्वामी रामतीर्थ

मित्रता दो तत्त्वोसे बनी है एक सचाई है, और दूसरा कोमलता। – एमर्सन

मित्रताका सार है पूर्ण उदारता और विश्वास। – एमर्सन

सच्चा प्रेम दुर्लभ है, सच्ची मित्रता और भी दुर्लभ है। – ला फौण्टेन

जब हम देवोसे मित्रता स्थापित कर लेते हैं तभी हम मनुष्योमे मित्रताका सचार कर पाते है। – थोरो

परस्पर सात बातें होनेसे या सात कदम साथ चलनेसे ही सज्जनोमे मित्रता हो जाती है। – कालिदास

जीवनमें मित्रतासे बढकर सुख नही। – जान्सन

यदि मित्रता मुझे दृष्टिविहीन कर दे, यदि वह मेरे दिनको अन्धकारपूर्ण बना दे, तो मुझे वह लवलेश नहीं चाहिए। – थोरो

बिला शक इनसानका फायदा इसीमें है कि वह बेवकूफोसे दोस्ती न करे।
— तिरुवल्लुवर

योग्य पुरुषोकी मित्रता दिव्य ग्रन्थोके स्वाध्यायके समान है, जितनी ही उनके साथ तुम्हारी घनिष्ठता होती जायेगी, उतनी ही अधिक खूबियाँ तुम्हे उनके अन्दर दिखाई देती जायेंगी। — तिरुवल्लुवर

जो लोग मुसीबतके वक्त धोखा दे जाते हैं, उनकी मित्रताकी याद मौतके वक्त भी दिलमे जलन पैदा करेगी। — तिरुवल्लुवर

योग्य पुरुषोकी मित्रता बढती हुई चन्द्रकलाके समान है, मगर बेवकूफोकी दोस्ती घटते हुए चाँदके समान है। — तिरुवल्लुवर

पाक-साफ लोगोके साथ बडे शौकसे दोस्ती करो, मगर जो तुम्हारे अयोग्य है उनका साथ छोड दो, इसके लिए चाहे तुम्हे कुछ भेंट भी देनी पडे।
— तिरुवल्लुवर

नीचोकी मित्रतासे बच, क्योकि वह शुद्धभाव रखकर मित्रता नही करते, बल्कि बनावटसे काम लेते है। — हजरतअली

मित्रता दो शरीरोमे एक मन है। — अरस्तू

बेवकूफसे दोस्ती करना रीछको गले लगाना है। — अफगान कहावत

मित्रता ऐसा पौधा है जिसे अकसर पानी देते रहना चाहिए।
— जर्मन कहावत

जान लो कि छोटे-छोटे उपहारोसे मित्रता ताजी रहती है। — मन्तेको

जो दोस्तियाँ बराबरीकी नही होती हमेशा नफरतमे खत्म होती है।
— गोल्डस्मिथ

हँसी-दिल्लगी करनेवाली गोष्ठीका नाम मित्रता नही है, मित्रता तो वास्तवमे वह प्रेम है जो हृदयको आह्लादित करता है। — तिरुवल्लुवर

मित्रताका दरबार कहाँ लगता है ? बस वहीपर कि जहाँ दो दिलोंके बीच अनन्य प्रेम और पूर्ण एकता है और जहाँ दोनों मिलकर हर-एक तरहसे एक-दूसरेको उच्च और उन्नत बनानेकी चेष्टा करें । – तिरुवल्लुवर

मौन या उपेक्षासे बहुत-सी मित्रताएँ समाप्त हो जाती है । – कहावत

मित्र-रहित

कगाल है मित्र-रहित दुनियाका मालिक । – यग

मिथ्याचारी

जो मूढ आदमी इन्द्रियोको कर्म करनेसे रोके, लेकिन मनसे इन्द्रियोके विषयोका स्मरण करता रहे, वह मिथ्याचारी कहलाता है । – गीता

मिलन

हम जैसे है तैसोसे ही मिलते है । – एमर्सन

अपने मित्रसे कभी-कभी मिला कर ताकि प्रेम बना रहे । जो मित्र बहुत आता-जाता रहता है उसको अवश्य दु खी होना पडता है ।
– इब्न-उल-वर्दी

मिलाप

बहुतोका मिलाप और थोडोके साथ अति समागम ये दोनो समान दु खदायक है । – श्रीमद्राजचन्द्र

मिल्कियत

जो आवश्यकतासे अधिक मिल्कियत एकत्र करता है वह चोरी करता है और चोरीका धन कच्चा पारा है। वह पच नही सकता । अन्तमे वह चोर-की मिल्कियत न रहेगी—ऐसा विश्वास रख अपने अहिंसक उपाय हमें करते ही जाना चाहिए । – गान्धी

मुकदमेबाज़ी

मुकदमेबाज़ी करना बिल्लीकी खातिर गाय खोना है। – चीनी कहावत

मुकदमाबाज़ीमें कुछ भी निश्चित नहीं है, सिवा ख़र्चेके। – बटलर

ज्यादा मुकदमेबाजीसे बचो, उससे तुम्हारे अन्तरगपर कुप्रभाव पडता है, स्वास्थ्यको हानि पहुंचती है, और मिल्कियत बरबाद होती है। – ब्रुयर

मुक्ति

मैं कब मुक्त होऊँगा ? जब 'मैं' ख़त्म हो जायेगा।

– स्वामी रामतीर्थ

मुक्तिके लिए जोर नहीं लगाना पडता, वह तो अत्यन्त सरल प्राकृतिक विकास है। – महात्मा भगवानदीन

शरीरको सक्रिय सघर्षमे रखना और मनको विश्रान्ति और प्रेममय रखना, इसीके मानी है यही इसी जन्ममे पाप और दु खसे मुक्ति।

– स्वामी रामतीर्थ

मै कब मुक्त होऊँगा ? जब 'मैं' न रहेगा। 'मैं' और 'मेरा' अज्ञान है 'तू' और 'तेरा' ज्ञान है। – रामकृष्ण परमहस

इच्छा-रहितता ही मुक्ति है, और सासारिक वस्तुओकी कामना ही बन्धन है।

– योगवासिष्ठ

जो अपनी आत्माके अन्दर ही सुख-आनन्द और रोशनी पाता है वही परमेश्वरमे लीन होकर मुक्ति प्राप्त करता है। – गीता

जो आदमी आखिर तक ऊपरी रूढियो यानी रीति-रिवाजो और कर्म-काण्डमे फँसा रहता है, वह मरनेके बाद अन्धेरे रास्तेसे जाकर स्वर्ग और नरकके चक्करमें पडता है, और जो इन सब चीजोसे ऊपर उठकर सब जानदारोको एक निगाहसे देखता हुआ दुनियाकी बेलौस, बेलगाव

(निष्काम) और बेगरज (नि स्वार्थ) सेवामे लगा हुआ शरीर छोडता है वह रोशनीके रास्तेसे चलकर मुक्तिकी तरफ कदम बढाता है ।

– गीता रहस्य

जो आदमी राग और द्वेष, मुहब्बत और नफरत, से हटकर, दुईसे ऊपर उठकर, सब तरहके पापोसे बचता हुआ, नेक काम करता हुआ, सिर्फ एक परमेश्वरकी पूजा करता है वही हकीकतको जान सकता है और वही निजात हासिल कर सकता है । – गीता

मुक्ति (निजात) के लिए किसी रीति-रिवाजकी जरूरत नही, जरूरत अपने दिलसे मोह, डर और गुस्सेको निकालकर उसे एक परमेश्वरकी तरफ लगानेकी है । – गीता

अगर हम उस उच्चतर और गम्भीरतर चेतनामे जाना चाहे जो भगवान्‌को जानती और उनके अन्दर ज्ञानपूर्वक निवास करती है, तो हमे निम्न-प्रकृतिकी शक्तियोंसे मुक्त होना होगा और भागवत शक्तिकी उस क्रियाके प्रति अपनेको उद्घाटित करना होगा जो हमारी चेतनाको दिव्य प्रकृतिकी चेतनामें रूपान्तरित कर देगी । – अरविन्द घोष

अनासक्तिकी पराकाष्ठा गीताकी मुक्ति है । – गान्धी

अनासक्ति कैसे बढे ? सुख और दु ख, दोस्त और दुश्मन, हमारा और दूसरोका—सब समान समझनेसे अनासक्ति बढती है। इसलिए अनासक्तिका दूसरा नाम समभाव है । – गान्धी

भक्त कवि नरसैयो कहते है ''हरिना जन तो मुक्ति न मॉगे, मॉगे जन्मो जनम अवतार रे ।'' इस दृष्टिसे देखें तो 'मुक्ति' कुछ और ही रूप ले लेती है । – गान्धी

जिन लोगोके दिलोसे मोह, गुस्सा और डर बिलकुल जाते रहे, जिन्होंने एक परमेश्वरका सहारा लिया और उसीमे अपना मन लगाया, उन्हे सच्चा ज्ञान मिलता है और आखिरमे वे उसी परमेश्वरमे लय (फना) हो जाते हैं । – गीता

यदि कोई मनुष्य अपनी समस्त वासनाओंको सर्वथा त्याग दे तो वह मुक्तिको जिस रास्तेसे आनेकी आज्ञा देता है उसी रास्तेसे आकर उससे मिलती है। — तिरुवल्लुवर

जो गुणातीत हो जाता है वही इस दुनियासे निजात पाता है। — गीता

तुम एक साथ इन्द्रियोके दास और ब्रह्माण्डके स्वामी नही हो सकते। — स्वामी रामतीर्थ

अगर तुम मुझे मक्त करना चाहते हो तो तुमको मुक्त होना चाहिए। — एमर्सन

वे ही लोग मुक्त है जिन्होने अपनी इच्छाओंको जीत लिया है, बाकी सब देखनेमे स्वतन्त्र मालूम पडते है मगर वास्तवमे बन्धनमे जकडे हुए है। — तिरुवल्लुवर

दूसरेकी गुलामी न चाहिए तो अपनी गुलामी—आत्म-सयमन—करनेकी तत्परता चाहिए। — स्वामी रामतीर्थ

अपने परमात्मस्वरूपमे लीन रहो तो तुम मुक्त हो, अपने मालिक और दुनियाके शासक हो। — स्वामी रामतीर्थ

मुक्ति हमेशा ज्ञानसे मिलती है। आज-कलके ड्यूटीके पाबन्द, स्वार्थकी खातिर दौड-धूप करनेवाले सभ्य गुलामको कर्मकाण्ड पाप और दु खसे नही बचा सकता। — स्वामी रामतीर्थ

जितना कष्ट यह जीव ससारी चीजोको पानेमे उठाता है उसका कुछ अश भी आत्मोद्धारमे उठाता तो कभीका मुक्त हो गया होता। — जैनाचार्य

त्यागके रास्ते चलनेसे 'अमरपुर' आता है। — स्वामी रामतीर्थ

मुखिया

मुखिया मुखके समान होना चाहिए—खाने-पीनेको एक मगर सब अगोका विवेकसहित पालन-पोषण करनेवाला। — रामायण

मुमुक्षु

पानीमें नाव रहे मगर नावमें पानी न रहे, मुमुक्षु दुनियामें रहे मगर दुनिया उसमें न रहे । – रामकृष्ण परमहंस

मुसाफिर

ज्ञानीने हमें मुसाफिर कहा है । बात सच्ची है । हम यहाँ तो चन्द रोजके लिए हैं । बादमें 'मरते' नहीं 'अपने घर जाते' हैं । कैसा अच्छा और सच्चा खयाल ! – गान्धी

मुसकान

जो चेहरा मुसकरा नहीं सकता अच्छा नहीं है । – मार्शल

देखो, जो लोग मुसकरा नहीं सकते, उन्हें इस विशाल लम्बे-चौडे ससारमें, दिनके समय भी, अन्धकारके सिवा और कुछ दिखाई न देगा ।
– तिरुवल्लुवर

मुसकानें प्रेमकी भाषा है । – हेअर

मूँजी

कुदरतमें ऐसी कोई चीज नहीं है जो ईश्वरसे इतनी दूर हो, या उसके ऐसी हद दर्जे प्रतिकूल हो, जैसा कि लोभी और मक्खीचूस मूँजी । – बैरो

मूँजी आदमीके लिए 'उसके पास धन है'—यह न कहकर 'वह धनके पास है' कहना ज्यादा ठीक होगा । – अज्ञात

मूढ

दरिद्र महामना आदमीको पण्डित लोग मूढ कहते हैं । – विदुर

मूढ आदमीसे जमीन और आसमान फिजूल लडते है । – शिलर

मूर्ख

मूर्खको नसीहत देना गुम्बदपर अखरोट फेंकना है । – फारसी

अटल नियम बना लो कि मूर्खका विरोध नहीं करना, क्योंकि यदि मूर्ख

तुम्हारा मुकाबला करने खडा हो गया तो तुम्हारा समूचा सम्यक्ज्ञान तुम्हें बचा नहीं पायेगा । – आर० एम० मिलने

मूर्ख लोग सहसा कोई काम कर बैठते है और फिर पीछे पछताते है । – रामायण

जहाँ मूर्खोकी, अज्ञानियोकी संख्या अधिक है वहाँ धूर्त, धोखेबाज भूखो नही मरते । – एक अँगरेज लेखक

मूर्खोका खान्दान कदीमी है । – फ्रैंकलिन

मूर्ख कौन है ? बकवादी । मूर्खको चाहिए कि सभामे मुँह न खोले और बुद्धिमान् सिर्फ सवालका जवाब देनेके लिए । बहुत सुनना और थोडा बोलना यही बुद्धिमान्का लक्षण है । – बुजरचिमिहर

जिन भारोको मनुष्य सहन कर सकता है, उनमे मूर्खकी बातको सुनना और सहना सबसे कठिन है । – स्पेन्सर

मूर्खोसे न मिलो । क्योकि अगर तुम समझदार हो तो गधे दिखोगे और अगर मूर्ख हो तो और भी ज्यादा मूर्ख दिखोगे । – सादी

पत्थर भले ही पिघल जाये, मूर्खका हृदय नही पिघलेगा ।
– तमिल कहावत

कोई बेवकूफ ऐसा नही हुआ जो अपनी जबान बन्द रख सका हो ।
– सोलन

मूर्खको जो काम करनेको मना करोगे, वह उस कामको जरूर करेगा ।
– अज्ञात

मूर्ख बोये या लगाये नहीं जाते, वे अपने-आप उगते है ।
– रूसी कहावत

दुर्गम पर्वतो और भयानक जगलोमे हिंस्र पशुओके साथ घूमना अच्छा, पर मूर्खोका सम्पर्क इन्द्रभवनमे भी अच्छा नही । – भर्तृहरि

सबका इलाज है, पर मूर्खका इलाज नहीं । – भर्तृहरि

जो अपने अमृतमय उपदेशसे दुष्टको सन्मार्गपर लाना चाहता है वह सिरसके नाजुक फूलकी पखडीसे हीरेको छेदना चाहता है, या एक बूँद शहदसे खारे समुद्रको मीठा करना चाहता है। — भर्तृहरि

जो परले सिरेके मूर्ख है वे ही सदा दूसरोंकी मूर्खताकी बातोंपर ठट्ठे उडाया करते हैं। — गोल्डस्मिथ

जो मनुष्य पढा-लिखा न होनेपर भी घमण्डी हो, दरिद्र होकर भी ऊँची-ऊँची वासनाओंके भोगनेकी इच्छा करे और बुरे कामोंसे धन पैदा करना चाहे, वह मूर्ख है। — महाभारत

अपनेको गधा बना डाला तो हर आदमीका बोझा अपनी पीठपर पायेगा। — डेनिस कहावत

मै मूर्खसे हमेशा डरता हूँ, कोई कैसे मान सकता है कि वह दुष्ट भी नही है। — हैजलिट

मूर्ख लोग जो कुछ पढते है, उससे अपना अहित करते है, और जो कुछ वे लिखते है, उससे दूसरोका अहित करते हैं। — रस्किन

चतुराईकी उतनी जरूरत कभी नही होती जितनी कि उस वक्त जब कि कोई किसी मूर्खसे बहस कर रहा हो। — चीनी कहावत

मूर्खको सिखाना, मुरदेको जिन्दा करनेके समान है। — रूसी कहावत

जवान सोचते हैं कि बूढे मूर्ख है, बूढे जानते है कि जवान मूर्ख हैं। — चैपमैन

जो अपनी मूर्खतासे भी कुछ न सीख सके वह निपट मूर्ख होना चाहिए। — हेअर

वह बेवकूफ है जो सारी दुनियाको और उसके बापको सन्तुष्ट करनेकी कोशिश करता है। — फोण्टेन

मूर्ख अपनेको ज्ञानी समझता है। — कहावत

एक आदमी खूब पढा-लिखा और चतुर है और दूसरोका गुरु है, मगर फिर भी वह इन्द्रिय-लिप्साका दास बना रहता है—उससे बढकर मूर्ख और कोई नहीं है। — तिरुवल्लुवर

मूर्खोंको और जो चाहो तुम सिखा सकते हो, मगर सन्मार्गपर चलना वे नही सीख सकते । – तिरुवल्लुवर

मूर्खको खामोश कर देना बदतहजीबी है, मगर उसे अपनी हिमाकतपर कायम रहने देना क्रूरता है । – फ्रैंकलिन

बेवकूफ छह बातोसे पहचाना जाता है—बिला वजह गुस्सा, बेफायदा बोलना, बिना उन्नतिके परिवर्तन, बेमतलब पूछना, अजनबीपर विश्वास करना, और दोस्तोको दुश्मन समझना । – अरबी कहावत

जो हमेशा दूसरोकी सलाहपर चलता है वह बेवकूफ है । – अज्ञात

मूर्ख, दु खावस्थाको प्राप्त होनेपर देवोको दोष देने लगता है मगर अपनी गलतियोको देखनेकी कोशिश नही करता । – अज्ञात

चाहे बादल अमृत बरसावे मगर बेंत नही फूलता-फलता, चाहे ब्रह्माके समान गुरु मिल जाये मगर मूर्खका हृदय नही चेतता । – रामायण

सूअरोको मोतियोमे, गधोको गुलकन्दसे, अन्धोको चिरागसे और बहरोंको सगीतमे क्या फायदा ? मूर्खको उपदेश देनेमे क्या फायदा ?

– अज्ञात

जो अनिच्छनीयकी इच्छा करता है, इच्छनीयको त्यागता है और बलवानोसे दुश्मनी मोल लेता है वह बेवकूफ है । – अज्ञात

मूर्खता

मैं मानती हूँ कि अपनी वृत्तियोके अनुसार चलनेमे इतनी मूर्खताएँ नही होती, जितनी दुनियाकी लिहाज रखकर चलनेमे । – लेडी मेरी मोण्टेग्यू

जैसे कुत्ता अपने वमनपर लौटकर आता है, उसी प्रकार मूर्ख अपनी मूर्खतापर लौटकर आता है । – कहावत

क्या तुम जानना चाहते हो कि मूर्खता किसे कहते है ? जो चीज लाभदायक है उसको फेंक देना और हानिकर पदार्थको पकड रखना बस, यही मूर्खता है । – तिरुवल्लुवर

सबसे अधिक असाध्य रोग मूर्खता है । — पोर्च्युगीज कहावत

मृतक

शराबी, कामी, कजूस, मूर्ख, अत्यन्त दरिद्री, बदनाम, बहुत बूढा, सदा रोगी, सतत क्रोधी, ईश-विमुख, श्रुति-सन्त-विरोधी, तन-पोषक, निन्दक और पापी—ये चौदह प्राणी जीते हुए भी मुरदेके समान हैं।

— रामायण

मृत्यु

मृत्युमे आनक नही होता । मृत्यु तो एक प्रसन्नतापूर्ण निद्रा है, जिसके पीछे जागरणका आगमन होता है । — गान्धी

मृत्यु तो मित्र है । क्षणभगुर शरीरके लिए मोह कैसा ? चीनी मिट्टीके बरतनोसे भी हम कमजोर है । मृत्युका भय अपने दिलसे निकाल देना चाहिए और देहके रहते हुए उसे सेवामें घिस डालना चाहिए ।

— गान्धी

मृत्युदण्ड

दुष्टोंको मृत्युदण्ड देना अनाजके खेतसे घासको बाहर निकालनेके समान है।

— तिरुवल्लुवर

मृदु भाषण

हृदयसे निकली हुई मधुर वाणी और ममतामयी स्निग्ध दृष्टिके अन्दर ही धर्मका निवासस्थान है । — तिरुवल्लुवर

मेरा

मेरे कौन ? सब मेरे हैं मै सबका हूँ । — विनोबा

मेहनत

मेहनत वह सुनहरी चाभी है जो खुश-किस्मतीके फाटक खोल देती है ।

— नीतिवाक्य

कड़ी मेहनतसे तन्दुरुस्ती नही बिगडती पर घबराहट, झझट, चिन्ता, असन्तोषसे उसकी बहुत हानि होती है और निराशा तो आदमीको तोड ही डालती है। – आवरबरी

मेहनती

कामचोर शेरसे मेहनती कुत्ता अच्छा है। – अज्ञात

मेहमान

मेहमानको अपने मेजबानकी हैसियतके मुताबिक बरतना चाहिए। – अज्ञात

मेहमानदारी

जब घरमें मेहमान हो तब चाहे अमृत ही क्यो न हो, अकेले नही पीना चाहिए। – तिरुवल्लुवर

घर आये हुए अतिथिका आदर-सत्कार करनेमे जो कभी नही चूकता, उसपर कभी कोई आपत्ति नहीं आती। – तिरुवल्लुवर

बुद्धिमान् लोग इतनी मेहनत करके गृहस्थी किस लिए बनाते हैं ? अतिथिको भोजन देने और यात्रीकी सहायता करनेके लिए। – तिरुवल्लुवर

देखो, जो आदमी योग्य अतिथिका प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है, लक्ष्मीको उसके घरमे निवास करनेसे खुशी होती है। – तिरुवल्लुवर

अनीचाका फूल सूँघनेसे मुरझा जाता है, मगर अतिथिका दिल तोडनेके लिए एक निगाह ही काफी है। – तिरुवल्लुवर

अतिथि-सत्कारमे कसर करना दरिद्रताकी दरिद्रता है। – पारस भाग

गृहस्थका धर्म है कि घरपर शत्रु भी आवे तो उसका आदर-सत्कार करे, जैसे पेड अपने काटनेवालेको भी छाया देता है। अतिथि-सत्कारमें चूकनेवाला पतित होता है। – मनु

मेहरबानी

उदार बन, खुशमिजाज बन, क्षमावान् बन, जिस तरह कि कुदरतकी मेहरबानियाँ तुझपर बरसी हैं, तू औरोंपर बरसा। – सादी

किसी आदमीको उसके प्रति की गयी मेहरबानीकी याद दिलाना और उसका जिक्र करना गाली देनेके समान है। – डिमॉस्थनीज

चिड़िया सोचती है कि मछलीको उठाकर हवामें ले आना दयाका काम है। – टैगोर

मैत्री

जैसे बिन्दुका समुदाय समुद्र है, इसी तरह हम मैत्री करके मैत्रीका सागर बन सकते हैं। और जगत्‌में सब एक-दूसरोंमें मित्र-भावसे रहें तो जगत्‌का रूप बदल जाये। – गान्धी

मैं

अगर मैं अपने लिए नहीं हूँ तो मेरे लिए कौन होगा? और अगर मैं सिर्फ अपने लिए हूँ, तो मैं हूँ ही किसलिए? – अज्ञात

ईश्वर मुझे मुझीसे बचाये। – अज्ञात

मैं कौन हूँ? ईश्वरका दिया खानेवाला और शैतानका हुक्म बजानेवाला! – मलिक दिनार

मोनोडायट

'मोनोडायट' (एक समयमें एक ही चीज खाना) में लाभ है ही। – गान्धी

मोह

जो महामोह मद पिये हैं उनके कहेपर ध्यान नहीं देना चाहिए। – रामायण

चेतना-सरीखे चेतन होकर जड़का मोह रखना किंवा जड़वत् होना इसे क्या कहा जाये? – विनोबा

जिस तरह पानीसे निकलकर जमीनपर आ पड़नेपर मछली तड़फड़ाती है उसी तरह यह जीव राग, द्वेष और मोहके फन्देमें पड़ा तड़पता है। – बुद्ध

मोहकी जंजीर सिवा वैराग्यके किसी चीजसे नही तोडी जा सकती।
– अज्ञात

संसारमें मोह-बुद्धि तभीतक रहती है जबतक अविचार है। – अज्ञात

लोभ-मोहके दूर होते ही पुनर्जन्म बन्द हो जाता है। जो लोग इन बन्धनोको नही काटते वे भ्रमजालमे फँसे रहते हैं। – तिरुवल्लुवर

जीवन-रक्षाका मोह साहसीको उच्च पदोकी प्राप्तिसे वचित रखता है।
– अबू इस्माइल तुगराई

मोक्ष

ज्ञान, भक्ति और कर्मके मिलनेसे आत्मा परमात्मपद प्राप्त करता है।
– अरविन्द घोष

जो मोक्षमार्ग बतलाया गया है वह तो चाहे जिस जाति या वेषमे प्राप्त किया जा सकता है। जो उसका साधन करेगा उसे ही मोक्ष प्राप्त होगा।
– श्रीमद्‌राजचन्द्र

मार्ग यह है कि सबसे अनासक्त होकर एक चीजमे आसक्ति रखे, फिर उससे भी अनासक्त हो जाये तो मोक्ष ही है। – उड़िया बाबा

जो परमेश्वरको सब जगह रमा हुआ देखकर किसी दूसरेको दु ख देकर अपने हाथसे अपनी हिंसा नही करता वही परमगतिको पाता है। – गीता

मोक्ष या निजात सिर्फ उन्हीको मिल सकती है और उन्हींके पाप धुल सकते हैं जिनकी दुविधा मिट गयी हैं, जिन्होने अपनो खुशीको जीत लिया है, और जो हमेशा सबकी भलाईके कामोमे लगे रहते हैं। – गीता

हर-एकको अपना मोक्ष आप बनाना होता है। उसे अपनी राह भी आप बनानी होती है। – जैनेन्द्रकुमार

जो सब कामनाओको छोड़कर नि स्पृह, निर्मम और निरहकार होकर विचरता है, वही शान्ति पाता है। – गीता

जो बात मुझे करनी है वह तो है—आत्मदर्शन, ईश्वरका साक्षात्कार, मोक्ष। मेरे जीवनकी प्रत्येक क्रिया इसी दृष्टिसे होती है। मै जो कुछ भी लिखता हूँ, वह भी इसी उद्देश्यसे, और राजनीतिक क्षेत्रमे जो घूमा सो भी इसी बातको सामने रखकर। – गान्धी

सब इन्द्रियोके दरवाजोको बन्द करके मनको अपने अन्दर रोककर ही आदमी ईश्वरमे लौ लगाये हुए 'परमगति पा सकता है। – गीता

वही आदमी ईश्वर तक पहुँच सकता है जो किसी भी प्राणीसे वैर या दुश्मनी न रखता हो। – गीता

मौका

हर दिन, हर हफ्ता, हर महीना, हर साल तुमको ईश्वर-द्वारा दिया गया एक नया मौका है। – अज्ञात

मौज

जो हर काममे मालिककी मौज निहारता है वह निष्कर्म हो गया और वही सच्चा भक्त है। – राधास्वामी

मौत

मौत कभी-कभी उस आदमीको जिन्दा छोड देती है, जो उससे नहीं डरता, और उसको मार डालती है जो उससे डरता है। – मुतनब्बी

हम शत्रुओको मारनेके लिए उत्तम-उत्तम तलवारें और बडे-बडे भाले तैयार करते है। मगर मौत बिना लडे ही हमारा सफाया कर देती है। – मुतनब्बी

ससारमे हमसे पहले जो लोग पैदा किये गये थे, अगर वे जीवित रहते तो हम पृथ्वीपर आनेसे रोक दिये जाते। – मुतनब्बी

मौतसे डरकर जीनेकी बजाय उसके मुँहमे कूदकर मरना कही अच्छा है। – अज्ञात

मरणका जिन्दगीसे वैसा ही सम्बन्ध है जैसे कि जन्मका। टहलना कदमके उठानेमे उतना ही है जितना कदमके रखनेमे। – टैगोर

मौतसे डरना बुजदिलोका काम है क्योकि असली जिन्दगी तो मौत ही है। – सुकरात

मौतकी मुहर जिन्दगीके सिक्केको कीमत बख्शती है, ताकि हम जिन्दगीसे वह खरीद सके जो कि सचमुच कीमती है। – टैगोर

जो मौतसे डरता है, वह जीता नही है। – कहावत

जो मौतसे नही डरता वह जो करना चाहे सो कर सकता है। – दयाराम

मौत नही है। जो ऐसी दिखाई देती है परिवर्तन है। यह चन्दरोज़ा जिन्दगी उस दिव्य जीवनका बाहरी भाग है, जिसके दरवाज़ेको हम मौत कहते है। – लौगफेलो

मौन

मेरे मौनसे तू क्यो परेशान है? क्या तू जबानकी ही बोली समझता है। – अज्ञात

मौन सब कामोका साधन है। – अज्ञात

वास्तवमे चाहे कोई आदमी अविवेकी, अज्ञानी और निर्बुद्धि ही क्यो न हो, पर चुप रहनेसे वह अच्छा ही अनुमान किया जाता है। – हज़रत अली

प्रतिदिन मौनका महत्त्व मै देखता हूँ। सबके लिए अच्छा है, लेकिन जो कामोमे डूबा रहता है उसके लिए तो मौन सुवर्ण है। – गान्धी

खामोशीके दरख्तपर शान्तिका फल लगता है। – अरबी कहावत

स्त्रियोको मौन उनका यथोचित लावण्य प्रदान करता है। – सोफ़ोक्लिस

जो ज्यादा क़ाबू पाते है या ज्यादा काम करते हैं, वे कमसे कम बोलते है। दोनो साथ मिलते ही नही। देखो, कुदरत सबसे ज्यादा काम करती है, सोती नही, लेकिन मूक है। — गान्धी

प्रतिक्षण अनुभव लेता हूँ कि मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहिए तो कमसे कम बोलो। एक शब्दसे चले तो दो नही। — गान्धी

मुझे तू अपने मौनके केन्द्रमे ले चल और मेरे हृदयको गीतोसे भर दे। — टैगोर

भयसे उत्पन्न मौन पशुता, व सयमसे उत्पन्न मौन साधुता है। — हरिभाऊ उपाध्याय

आओ, हम खामोश रहे ताकि फरिश्तोकी कानाफूसियाँ सुन सकें। — एमर्सन

वाचालता चाँदी है, मौन सोना, वाचालता मनुष्योचित है, मौन देवोचित। — जर्मन कहावत

जहाँ कौवे कोलाहल कर रहे हो वहाँ कोयलका कूजन क्या शोभा दे? जहाँ खलजन परस्पर वाद-विवाद कर रहे हो वहाँ सज्जनके मौन रहनेमे ही सार है। — अज्ञात

ओह! आत्मा चुप रहती, ताकि परमात्मा बोल सकता। — फेनेलन

कोयलने अच्छा किया कि वह बादलोके आनेपर खामोश रही। जहाँ मेंढक टर्राते हो वहाँ मौन ही शोभा देता है। — अज्ञात

मौन नीदकी तरह है, वह विवेकको ताज़ा करता है। — बेकन

पशु तुमसे बोलना नही सीख सकते, तुम उनसे चुप रहना सीख सकते हो। — अज्ञात

गायनसे भी ज्यादा सगीतमय है मौन। — क्रिश्चिना

हमारे पवित्रतम विचारोका मन्दिर मौन है। — श्रीमती हेल

बेहतर है कि आप खामोश रहे और मूर्ख समझे जायें, बनिस्बत इसके कि आप अपना मुँह खोलकर तद्विषयक सारा भरम मिटा दें ।

– अब्राहम लिंकन

एक चुप और सौ सुख । – कहावत

मौलिकता

धोबी बिला धुले हुए कपडोके ढेर अपने घरमे रखता है, मगर वे उसके नही है । ज्यो ही कपडे धुल जाते है उसका कमरा खाली हो जाता है । वे लोग जिनके अपने मौलिक विचार नही है धोबीकी तरह है । अपने विचारोमें धोबी न बनो । – रामकृष्ण परमहस

मौलिकता अपनेपनमे कायम रहना है, और सही-सही वह कहना जो हम है और देखते है । – एमर्सन

■

य

यश

कुछ लोगोको यश मिल जाता है, लेकिन उसके पात्र दूसरे होते है ।

– लैसिग

हजार वर्षका यश एक दिनके चरित्रपर निर्भर रह सकता है ।

– चीनी कहावत

यशकी चमक अन्तिम वस्तु है जिसे ज्ञानी छोडता है । – टेसिटस

मैंने शिखरको पार कर देखा है मगर यशकी बेरग और वीरान ऊँचाईमे कोई शरण न मिली । प्रकाश फीका पडनेसे पहले, मेरे रहबर, मुझे शान्तिकी घाटीमे ले चल, जहाँ जिन्दगीकी फसल सुनहरी ज्ञानमे सुफलित होती है । – टैगोर

यशस्वी होनेका सबसे छोटा रास्ता अन्तरात्माके अनुसार चलना है।
– होम

खुशकिस्मत है वह जिसका यश हकीकतको पार नही कर जाता। – टैगोर

यज्ञ

असली यज्ञ वह 'ज्ञान' है जिसे एक बार हासिल करनेके बाद आदमी धोखेमे नही पड सकता। वह ज्ञान यही है कि आदमी तमाम जानदारोको अपने अन्दर और सबको ईश्वरके अन्दर और सबके अन्दर ईश्वरको देखे।
– गीता

तू जो कुछ करे, जो कुछ खाये, जो यज्ञ (कुरबानी) करे, जो तप करे, सब ईश्वरके लिए ही कर। – गीता

दुनियाके शुरूमे ईश्वरने यज्ञ यानी कुरबानीके साथ सब जानदारोको बनाकर उनसे यह कह दिया कि तुम सब इस यज्ञ (यानी एक-दूसरेकी भलाईके कामो) से ही फूलो-फलो और ये एक-दूसरेकी भलाईके काम ही तुम्हे सब अच्छी-अच्छी चीजोके देनेवाले साबित हो। – गीता

याचक

तिनका हलकी चीज़ है, तिनकेसे हलकी रुई, और रुईसे हलका याचक।
– अज्ञात

याचना

याचना की कि धिक्कृत हुए। – स्वामी रामतीर्थ

सज्जनसे निष्फल याचना भी अच्छी, नीचसे सफल याचना भी अच्छी नही। – कालिदास

'न' करनेवालेकी जान उस वक्त कहाँ जाकर छिप जाती है जब कि वह 'नही' कहता है? भिखारीकी जान तो झिडकीकी आवाज़ सुनते ही तनसे निकल जाती है। – तिरुवल्लुवर

तुम चाहे गायके लिए पानी ही माँगो, फिर भी जबानके लिए याचना-सूचक शब्दोको उच्चारण करनेसे बढकर अपमानजनक बात और कोई नही । — तिरुवल्लुवर

यात्रा

पानी एक जगह ठहरे रहनेसे बदबूदार हो जाता है, और दूजका चन्द्रमा यात्राके कारण पूर्णचन्द्र बन जाता है । — इब्न-उल-वर्दी

जिस स्थानमे तू सफर करते हुए ठहरेगा, उसी स्थानमे कुटुम्बियोके बदले कुटुम्बी और पडोसियोके बदले पडोसी मिल जायेंगे । — अज्ञात

याद

आप याद रखें और गमगीन हो इससे लाख दर्जे बेहतर यह है कि आप भूल जायें और मुसकराये । — अज्ञात

किसी राजाने एक भक्तसे पूछा कि 'तुम्हे कभी मै याद आता हूँ ।' जवाब मिला, 'हाँ, जब मैं ईश्वरको भूल जाता हूँ ।' — सादी

यादगार

अगर मैने कोई काम स्मरणीय किया है, वह काम मेरी यादगार होगा ।— अगर नही किया, तो कोई यादगार मेरी स्मृतिको नही बनाये रख सकती । — एजसिलास

युद्ध

अपनी आत्माके साथ युद्ध करना चाहिए । बाहरी शत्रुओसे युद्ध करनेसे क्या लाभ ? आत्माके द्वारा ही आत्माको जीतनेवाला पूर्ण सुखी होता है । — भ० महावीर

युद्ध बर्बर लोगोका धन्धा है । — नैपोलियन

सग्रामके दिन अगर कोई कायर तुझे इस डरसे रोके कि समरसेवियोके घमासानमे शायद तू पिस न जाये तो उसकी बातको तू मत मान, और उसकी बातकी ज़रा भी परवा न करते हुए घमासान युद्धके समयमें भी अगली ही क़तारकी ओर बढ । — अन्तरा

युवक

युवकको साधुशील, अध्यवसायी, आशावान्, दृढनिश्चयी और बलिष्ठ होना चाहिए। ऐसे तरुणको यह तमाम पृथ्वी द्रव्यमय हो जाती है।

– अज्ञात

योग

जो कुछ अन्तराय बनकर आये उसे बिदा कर देना होगा—योगकी यह एक प्रधान शर्त है। – अरविन्द घोष

योग उसीके दुःखोको मिटा सकता है जो अपने आहार और विहारमे, यानी खाने-पीने और रहन-सहनमे, न कोई ज्यादती करता है और न बिलकुल कमी, जो ठीक बीचके रास्तेपर चलता है, जो अपने सब फर्जोंको पूरा करने और कामोको करनेमे एक बीचका रास्ता पकडता है, ठीक सोता भी है और ठीक जागता भी है। – गीता

'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध'—यह पातजल योग दर्शनका पहला सूत्र है। योग चित्त-वृत्तिका निरोध है, यानी हमारे दिलमे उठती तरगोपर अकुश रखना, उसे दबा देना, यह योग हुआ। – गान्धी

ज्ञानसे दिखनेवाले सत्यका साधन करनेको ही योग कहते है।

– अरविन्द घोष

जिसके घरमे साध्वी व प्रियवादिनी स्त्री नही उसको वनमे चला जाना चाहिए, क्योकि उसके लिए जैसा वन वैसा घर। – अज्ञात

शीघ्र लेखन यह लेखनमे 'कर्म', शुद्ध लेखन है 'ज्ञान,' और सुन्दर लेखन है 'भक्ति'। तीनोका मेल साधना यह लेखनका 'योग' है यह दृष्टान्त सर्वजीवनमे लागू किया जाये। – विनोबा

योगी

जो आदमी अपनी ही तरह सबको एक बराबर देखता है और सबके सुख और दुःखको अपना ही सुख और दुःख समझता है वही सबसे बडा योगी है। – गीता

जो साधनाके हथियारसे दुनियाकी सारी कामनाओंका नाश कर देता है, जिसकी सारी आकांक्षाएँ एक प्रभु-प्रेममें अदृश्य हो जाती हैं, ईश्वर जिसे चाहता है उसीसे जो प्रेम करता है, और जिस प्रकार ईश्वर रखना चाहता है उसी प्रकार जो रहता है, उसीको सच्चा योगी और पुरुषार्थी समझो।
— बायजीद

योग्यता

तुम्हारा सोता हुआ मन जाग जाये, इतनी योग्यता भी क्या अभीतक तुममें नहीं आयी? — कुरान

योद्धा

रणवीर उस समय भी मौतसे भयभीत नहीं होते जब कि घमासान युद्धकी चक्की लोगोंको पीस डालती है। — अबुल-उल-गौल-उत्त-तहबी

जो मार्गका लुटेरा है वह योद्धा नहीं कहला सकता, बल्कि योद्धा वह है जिसके हृदयमें ईश्वरका भय हो। — इब्न-उल-वर्दी

■

र

रजामन्दी

शान्त और रजामन्द बैलपर दूना बोझा लादा जाता है। — कन्नड कहावत

रहस्य

सिर्फ एक परमेश्वर ही में मनको लगाओ, उसीकी भक्ति करो, उसीके लिए सब काम करो, उसीके सामने सिरको झुकाओ और सब 'धर्मों' को छोड़कर सिर्फ एक परमेश्वरका सहारा लो। मुक्ति हासिल करनेका यही एक तरीका है। — गीता

हकीकतका राज वही आदमी समझ सकता है जो किसीसे डाह न रखता हो। – गीता

कोई दिमागदाँ आज तक कतई यह न बतला सका कि 'यह सब क्यों है?' – एमर्सन

जब तुम बाहरी चीजोंकी ओर देखोगे और उन्हे पाना और रखना चाहोगे, वे तुम्हारी पकडमें नही आयेंगी, दूर भागेंगी मगर जिस वक्त तुम उनसे मुँह फेर लोगे और ज्योतिस्वरूप अपनी अन्तरात्माके रूबरू होगे, उसी क्षण अनुकूल दिशाएँ तुम्हे तलाश करने लगेंगी—यही नियम है। – स्वामी रामतीर्थ

ईश्वर अपने रहस्य कायरोसे नही खुलवाता। – एमर्सन

मूर्खको रहस्य बता दो, वह छतपर चढकर उसकी उद्घोषणा करेगा। – हिन्दुस्तानी कहावत

जगत्पराङ्मुख रहनेवाले सच्चिदानन्दके शान्त स्वरूपका अनुभव लेना ईश्वरका ऐश्वर्य नही है। उसके शान्त स्वरूपके साथ ही उसके क्रियात्मक रूपका अर्थात् जीव और जगत्का भी आनन्द लेना चाहिए। इस प्रकार सर्वांगीण आनन्द लेना ही जीवका रहस्य है। – अरविन्द घोष

अगर तुम अपने रहस्यको किसी दुश्मनसे छिपाये रखना चाहते हो, तो किसी मित्र तकसे उसका जिक्र न करो। – फ्रैंकलिन

तुम मुझसे आध्यात्मिक रहस्यकी बात जानना चाहते हो तो मैं ईश्वर और उसके बन्दोको अपनी ही तरह प्रेम करनेके अलावा कोई रहस्य नही जानता। – सन्त फ्रान्सिस

रहस्यके प्रकट हो जानेपर कोई शोक न करो, और फूलकी तरह आनन्दसे हमेशा खिले रहो। इस बहुरूपिणी दुनियामे पद और प्रतिष्ठा, मान और मर्यादा सभी कुछ मिटनेवाले हैं। – हाफ़िज़

रहस्य यह है कि जबतक मन पूर्णत शान्त नहीं हो जाता तबतक योग

नही सध सकता, ईश-साक्षात्कारका तेरा मार्ग चाहे कोई-सा हो। योगी मनको वशमें रखता है, मनके वश नही होता। – रामकृष्ण परमहस

रहनी

वेद पढे सो पुत्र हमारा, कथन करे सो नाती।
राह चले सो गुरू हमारा, हम रहनीके साथी॥

– एक कवि

रहबर

कामिल रहबरकी पहचान यह है कि जब वह दिखाई दे तो खुदा याद आ जाये। – मुहम्मद

रक्षा

जब ईश्वर नही बचाना चाहता, तब न धन बचायेगा, न माता-पिता, न बडा डॉक्टर। – गान्धी

राग-द्वेष

आदमीकी इन्द्रियाँ कुछ चीज़ोकी तरफ तो चाहमे लपकती है और कुछ चीजोसे भागती है, उनके इस चाहने और भागनेमे नही आना चाहिए, यह चाह और नफरत ही आदमीका दुश्मन है। – गीता

ससाररूपी गाडीके राग और द्वेष दो बैल है। – श्रीमद्राजचन्द्र

राग-रंग

राग-रगकी जिन्दगी बलिष्ठसे बलिष्ठ मनको भी अन्तमे नाकारा बना देती है। – बलवर

पश्चात्तापके बीज जवानीके राग-रग-द्वारा बोये जाते है, लेकिन उनकी फसल बुढापेमे दु खभोग-द्वारा काटी जाती है। – कोल्टन

राग-रंगकी, या प्रधानत राग-रगकी जिन्दगी हमेशा एक तुच्छ और मूल्यहीन जिन्दगी होती है, न जीने लायक, अपने दौरानमें हमेशा असन्तोषजनक, अन्तमें हमेशा दु खद। – थ्योडोर पार्कर

राजदण्ड

जो राजदण्ड धारण करता है उसकी प्रार्थना भी हाथमें तलवार लिये हुए डाकूके इन शब्दोंके समान है—'खडे रहो और जो कुछ है उसे रख दो।'
– तिरुवल्लुवर

राजदण्ड ही ब्रह्मविद्या और धर्मका मुख्य संरक्षक है। – तिरुवल्लुवर

फ्रेड्रिक महान्के राजदण्डके पास बाँसुरी भी रखी रहती थी।
– जीन पॉल

राजनीति

मेरी देश-भक्ति अनन्त शान्ति तथा मुक्तिकी ओर मेरी यात्राका एक पडाव मात्र है। मेरे लिए धर्मसे रहित राजनीतिकी कोई सत्ता नही। राजनीति धर्मकी सेविका है। – गान्धी

लोग कहते है कि मै धर्मपरायण मनुष्य हूँ। मगर राजनीतिमे फँस पडा हूँ। सच बात यह है कि राजनीति ही मेरा क्षेत्र है और उसमें रहकर मैं धर्मपरायण होनेका प्रयत्न कर रहा हूँ। – गान्धी

सारी मानवजातिके साथ आत्मीयता कायम किये बगैर मेरी धर्मभावना सन्तुष्ट नही हो सकती और यह तभी सम्भव है जब कि मैं राजनीतिक मामलोंमे भाग लूँ। क्योकि आजकी दुनियामे मनुष्योकी प्रवृत्ति एक और अविभाज्य है। उसमे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शुद्ध धार्मिक ऐसे जुदा-जुदा भाग नही किये जा सकते। – गान्धी

राजनीतिज्ञ

राजनीतिज्ञ पारेकी तरह है। अगर तुम उसपर उँगली रखनेकी कोशिश करो, तो उसके नीचे कुछ नही मिलता। – ऑस्टिन

राजा

देखो, जो राजा अपनी प्रजाको सताता और उनपर जुल्म करता है, वह हत्यारेसे भी बदतर है। – तिरुवल्लुवर

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी ॥

— रामायण

राजा माने तुष्ट । — स्वामी रामतीर्थ

राजा एक-एकसे बडा है, लेकिन सबके सगठनसे छोटा है । — ब्रेक्टन

जो प्रजाको दु ख देकर अपना प्रयोजन साधे वह राजा नही डाकू है ।

— ऋषि दयानन्द

राज्य-कोष

राज्यका कोष गरीबोका टुकडा है, शैतान मण्डलीका भक्ष्य नही है ।

— अज्ञात

राम

चित्तकी अशान्तिमे जो रामनामका आश्रय लेता है वह जीत जाता है ।

— गान्धी

व्याधि अनेक है, वैद्य अनेक है, उपचार भी अनेक है । अगर व्याधिको एक ही देखें और उसको मिटानेहारा वैद्य एक राम ही है ऐसा समझें, तो बहुत-सी झझटोसे हम बच जायें । — गान्धी

रामनाम

जो केवल ओठोसे रामनाम बडबडाता है वह ओठोको सुखाता है और समयकी हत्या करता है । — गान्धी

विकारी विचारसे बचनेका एक अमोघ उपाय रामनाम है । नाम कण्ठसे ही नही, किन्तु हृदयसे निकलना चाहिए । — गान्धी

राय

'दूसरे तुम्हारे विषयमे क्या सोचते है' इसकी अपेक्षा 'अपने बारेमे तुम्हारा ख़याल' बहुत ज्यादा महत्त्वकी चीज है । — सेनेका

हर नयी राय, शुरूमें, ठीक एकके अल्प मतमें होती है। – कार्लाइल

किसी भी मनुष्यके विषयमें उसकी मृत्युके पूर्व कोई राय निश्चित मत करो। – सोलन

छोटी-छोटी बातें अनजाने रूपसे हमें शुरूमे ही किसीके अनुकूल या प्रतिकूल बना देती है। – शोपेनहोर

जिसकी अपनी कोई राय नही, वल्कि दूसरोकी राय और रुचिपर निर्भर रहता है, गुलाम है। – क्लॉपस्टॉक

यदि मैं अपने वारेमे दूसरेकी राय जाननेको उत्सुक रहता हूँ तो इसके माने यह है कि अपने बारेमे मेरी कोई राय नही है।

– हरिभाऊ उपाध्याय

रास्ता

सीधा रास्ता जैसा सरल है वैसा ही कठिन है। ऐसा न होता तो सब सीधा रास्ता ही लेते। – गान्धी

आदमीको शक्ति और आनन्द इसमे हैं कि वह पता लगाये कि ईश्वर किस रास्ते जा रहा है और उसी रास्ते चला चले। – बीचर

रिज़्क

ऐ आकाशकी चिडिया, उस रिज़्कसे मौत अच्छी है जिस रिज़्कके लिए तुझे नीचा उडना पडे। – इकबाल

रिवाज

मूर्खके लिए रिवाज तर्कका काम देता है। – रौचेस्टर

ज़ालिम रिवाज विचारकताको गुलाम बना डालती है।

– इटालियन कहावत

रिवाज अक़्लमन्दोकी ताऊन और बेवक़ूफोकी आराध्य देवी होती है।

– अज्ञात

रिवाज बेवकूफोंका कानून है । – वैनब्रग

किसी रिवाजके इतने कट्टर पक्षपाती न बनो कि सत्यका बलिदान करके उसे पूजने लगो । – जिमरमन

रिश्ता

दुनियासे तुम्हारा रिश्ता ऐसा हो जाये जैसा ईश्वरका दुनियासे है ।
– स्वामी रामतीर्थ

रिश्तेदार

जरा यह तो बता कि तूने मामा और चाचाका रिश्ता किससे कायम कर रखा है ? और उनसे दु ख और चिन्ताके अलावा तुझे क्या मिलता है ?
– शब्सतरी

रुचि

हर मनुष्यकी रुचि दूसरेसे भिन्न होती है । – कालिदास

रोग

शारीरिक रोग, जिसे हम बजाय खुद एक मुकम्मिल चीज समझते है, आखिरश, आत्माकी किसी बीमारीका लक्षणमात्र हो सकता है । – हार्थोर्न

यदि कोई योगी बाहरके शक्ति-जगत्से अपनेको अलग करके एकान्तमे रहे तो वह अभी-अभी सब प्रकारके रोगोसे मुक्त हो सकता है ।
– अरविन्द घोष

रोटी

कुत्ता तुम्हारे लिए नही, रोटीके लिए दुम हिलाता है ।
– पोर्च्युगीज़ कहावत

जो अपनी रोटी दूसरोके साथ बाँटकर खाता है, उसको भूखकी बीमारी कभी स्पर्श नहीं करती । – तिरुवल्लुवर

यदि तुम्हें रोटीकी चिन्ता सताती रहती है, तो या तो तुम अयोग्य हो, या स्वार्थान्ध या नास्तिक । – हरिभाऊ उपाध्याय

वही ईश्वर, जिसकी तू सेवा करता है, तेरी जरूरतें पूरी करेगा। उसने तुझे इस दुनियामें भेजनेसे पहले तेरे भरण-पोषणका इन्तजाम कर दिया है। – रामकृष्ण परमहंस

लोगोके मन रोटीपर जितने लगे है उतने यदि रोटी देनेवालेपर लगे होते तो वे फरिश्तोसे भी बढ जाते। – अज्ञात

ईश्वर सच्चे सेवकोको हमेशा रोटी देता है, और पिछले पचास बरससे मेरा यह अनुभव है। – गान्धी

रोब

जिसने अपनी इच्छाको जीत लिया है और जो अपने कर्तव्यसे विचलित नही होता, उसकी आकृति पहाडसे भी बढकर रोबदाबवाली होती है। – तिरुवल्लुवर

■

ल

लखपती

हँसनेवाले लखपती दुर्लभ है। – कारनेगी

लगन

लगनसे ज्ञान मिलता है, लगनके अभावमे ज्ञान खो जाता है, पाने और खानेके इस दुहरे रास्तेके जानकारको चाहिए कि अपनेको ऐसा रखे कि ज्ञान बढता जाये। – बुद्ध

एक लाजवाब लेखकने क्या खूब कहा है कि लगन अपनेसे उलटी दिशामे आदमीको उसी प्रकार नही दौडा सकती जिस तरह तेज नदी अपनी ही धाराके खिलाफ नावको नही ले जा सकती। – फील्डिंग

जो आदमी शरीर तकको परवाह किये बिना बुद्धिपूर्वक अपने कामकी धुनमें लगा रहता है, उसके लिए कुछ भी दुष्कर नही है। – नीति

कोई बात करने सरीखी लगी तो वह ठेठ अन्त करणकी तलीसे उमडनी चाहिए; और अगर ऐसा हुआ तो कामकी स्फूर्ति सहज निर्माण होती है, सच्चे प्रेमके उभाडका जोर ऐसा विलक्षण होता है कि अशक्य लगनेवाली बात भी सहज-ही-सहज हो जाती है। – विवेकानन्द

लचक

मै टूट जाऊँगा, मगर मुडूँगा नही। – अज्ञात

मै बेंतकी तरह लचकदार हूँ और हर ओर मोडा जा सकता हूँ। पर बेंतके समान ही मेरा टूटना कठिन है। – इब्न-उल-वर्दी

लघुता

अगर कोई आदमी अपनेको कीडा बना ले, तो पददलित होनेपर उसे शिकायत नही करनी चाहिए। – केण्ट

लज्जा

जो लोगोके आगे लज्जित और ईश्वरके सामने निर्लज्ज है उसकी बातें शायद ही सच हो। – अबु उस्मान

लायक लोगोका लजाना उन कामोके लिए होता है कि जो उनके अयोग्य होते है, इसलिए वह सुन्दरी स्त्रियोके शरमानेसे बिलकुल भिन्न है। – तिरुवल्लुवर

जिन लोगोकी आँखोका पानी गिर गया है वे मुरदा है। कठपुतलियोकी तरह उनमे भी सिर्फ नुमायशी ज़िन्दगी होती है। – तिरुवल्लुवर

स्त्रीका सबसे कीमती जेवर लज्जा है। – कोल्टन

लड़ाई

लडाईको न तो मोल लो न उसमे जी चुराओ। – कहावत

अगर मै अपने भाइयोसे लडूँ तो निस्सन्देह मै उस आदमीकी तरह हूँ जो मृगतृष्णामे पडकर अपनी मशकका पानी गिरा दे । – उदैल-बिन-इल-फरख

लक्ष्मी

अहकार और दु खसे बढकर वैभवके लिए घातक बाधाएँ दूसरा कोई नही है । – गोल्डस्मिथ

अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी सम्पत्ति कम न हो तो तुम दूसरेके धन-वैभवको ग्रसनेकी कामना मत करो । – तिरुवल्लुवर

जो बुद्धिमान् मनुष्य न्यायकी बातको समझता है और दूसरेकी चीजोको लेना नही चाहता, लक्ष्मी उसकी श्रेष्ठताको जानती है और उसे ढूँढती हुई उसके घर आ जाती है । – तिरवल्लुवर

उत्साही, निरालसी, कुशल, निर्व्यसन, शूरवीर, कृतज्ञ और मित्रतामे दृढ रहनेवालेके पास लक्ष्मी स्वय बसनेके लिए आती है । – नीति

लक्ष्मी अकसर दरवाजा खटखटाती है, मगर मूर्ख उसे अन्दर नही बुलाता । – डेनिस कहावत

लक्ष्मी मुसकराते हुए दरवाजेपर आती है । – जापानी कहावत

लक्ष्मी साहसीको वरती है । – अज्ञात

जो माँगता नही है, लक्ष्मी उसकी दासी हो जाती है । – अज्ञात

लक्ष्मी अनेको पापोसे पैदा होती है । यह आनेपर अभिमान, मदहोशी और मूढता पैदा करती है । – अज्ञात

मैले कपडे पहननेवालोको, गन्दे दाँतवालोंको, अधिक भोजन करनेवालोको, निष्ठुर बोलनेवालोको, और सूर्योदयके बाद सोनेवालोको लक्ष्मी छोड देती है, चाहे वह विष्णु ही क्यो न हों । – अज्ञात

लक्ष्य

बस आत्म-समर्पण और आत्मोत्सर्ग ही मानव सस्कृतिका चरम लक्ष्य है ।

– अज्ञात

अपने लक्ष्यको न भूलो, वरना जो कुछ मिल जायेगा उसीमे सन्तोष मानने लगोगे । – बर्नार्ड शा

लाइलाज

दरिद्रताके साथ आलस्य भी हो, तो वह रोग लाइलाज है ।

– इस्माईल-इब्न-अबीबकर

लाचारी

जिस शक्तिने हमे उत्पन्न किया है, उसमे अपनेको अलग समझनेकी मूर्खतासे ही लाचारीकी प्रतीति होती है । – लिटन

हिंसाके मुकाबलेमे लाचारीका भाव आना अहिंसा नही कायरता है ।

– गान्धी

लाभ

सकल्प कर लेना चाहिए कि असत्य और अहिंसाके द्वारा कितना भी लाभ हो, हमारे लिए वह त्याज्य है। क्योकि वह लाभ लाभ नही, किन्तु हानिरूप ही होगा । – गान्धी

उन कामोसे सदा अलग रहो जिनसे न तो यश मिलता है न लाभ होता है । – तिरुवल्लुवर

अशुभ लाभकी आशा हानिका श्रीगणेश है । – डेमोक्रिटस

लालच

दूरदर्शिताहीन लालच नाशका कारण होता है, मगर महत्त्व, जो कहता है, 'मै नही चाहता', सर्व-विजयी होता है । – तिरुवल्लुवर

देखो, जो आदमी लालचमे फँसा हुआ है और उससे निकलना नही चाहता, उसे दुःख आकर घेर लेगा और फिर मुक्त न करेगा । – तिरुवल्लुवर

लालची

गरीब कुछ, भोगी बहुत-सी, लालची तमाम चीजें चाहता है। — कौली

लालची आदमी किसीके लिए भला नही है, लेकिन वह सबसे बुरा अपने लिए है। — अज्ञात

लुटेरा

एक आदमी है जिसे लोग आग्रहके साथ चाहते है, एक आदमी है जो दूसरोके सिर लदना चाहता है, पहला सेवा-भावी है, दूसरा शोषक है।
— हरिभाऊ उपाध्याय

लेखक

सोचो अधिक, बोलो थोडा, लिखो उससे भी कम। — फ्रान्सीसी कहावत

लेखक शाही पुरोहित है, मगर नाश जाये उसका जो अपने नापाक हाथोको वेदीपर यह दावा करते हुए लगाता है कि वह मानव जातिके कल्याणका उत्कट अभिलाषी है, मगर सीधा करना चाहता है अपना ही उल्लू।
— होरेस ग्रीली

जो अपने लिए लिखता है, वह शाश्वत जनताके लिए लिखता है।
— एमर्सन

साफ लेखक, साफ चश्मेकी तरह, इतना गहरा नही दिखता जितना कि वह है, गँदला गम्भीरतम दिखता है। — लेण्डर

वह लेखक सबसे अच्छा लिखता है जो अपने पाठकोका सबसे कम समय लेकर उन्हे सबसे ज्यादा ज्ञान देता है। — सिडनी स्मिथ

'मूर्ख', मेरी क़लमने मुझसे कहा, "अपने दिलमे देख और लिख।"
— सिडनी

लेखन

वक्त आयेगा जब कि उदारता और नम्रतासे कहे हुए तीन शब्दोको, घृणित तीक्ष्णतासे लिखे हुए तीन हजार ग्रन्थोकी अपेक्षा, कही अधिक कल्याण-कारक पारितोषिक मिलेगा। – हक्स्‍ले

किताब लिखनेकी बजाय यह कही सुखद और लाभप्रद है कि आदमी क्रान्तिके तजुर्बेसे फायदा उठाये। – अज्ञात

लेखन-कार्य धर्मकी तरह है। हर शख्स जिसे प्रेरणा मिले अपनी मुक्ति-को ही राह खुद बनाये। – जॉर्ज होरेस लोरीमर

ऐसी कोई चीज न लिखो जिससे तुम्हे महान् खुशी न हो, भावना सुगमतापूर्वक लेखकसे पाठक तक चली जाती है। – जोबर्ट

लेखनी

मैंने अपनी ज़बान या लेखनीको कभी विषमे नही डुबोया। – क्रेबिलन

लेन-देन

मित्रोमे लेन-देनको मित्रताकी कतरनी समझो। – सादी

परस्पर विनिमय यानी 'देना-लेना' सारी दुनियाका नियम है।
– विवेकानन्द

पूरा मरद वह है जो देता है मगर लेता नही, आधा मरद वह है जो लेता है और देता है, नामरद वह है जो लेता है मगर देता नही। – अज्ञात

लोक-प्रिय

जो 'लोकप्रिय' है वह खुदका धनी ह। पर जो लोकप्रिय' बनता है उसकी दुर्दशा हो होती है। – स्वामी रामतीर्थ

लोकप्रियता

लोकप्रियतासे बचा रह, इसमे बहुत-से फन्दे है, मगर कोई सच्चा नही है। – पैन

मै वह नही चुनूँगा जिसे बहुत-से लोग चाहते है, क्योकि मै साधारण जीवोके साथ कूदना और बर्बर समूहमे शामिल होना नही चाहता ।

– शेक्सपीयर

लोकभय

घरमे आग लगी हुई है, 'लोग क्या कहेगे' इसलिए बुझाता नही है, उसको भी 'लोग क्या कहेगे ।'

– विनोबा

लोकलाज

तुम लोक-लाजके पीछे अपना हित गँवा रहे हो । – अज्ञात

जहाँ आत्माको ऊपर ले जानेका अवसर हो वहाँ लोक-लाज नही मानी गयी । – अज्ञात

लोकाचार

सत्यकी शोधमे जो लोकाचार अडचन डाले उसे तोड डालना चाहिए ।

– गान्धी

लोग

लोगोसे काम लेनेके लिए मखमलके म्यानमे तेज दिमाग होना चाहिए ।

– जार्ज ईलियट

कुछ लोग ऐसे है जो खुश रह सकते है मगर ज्ञानी नही, और कुछ ऐसे है जो ज्ञानी रह सकते है (या जो सोचते है कि वे ज्ञानी रह सकते हैं) मगर खुश नही । – डिकेन्स

लोग अमूमन् ऐसे आदमीका सत्कार करते है जो आत्मप्रशसा करता है, जो दुष्ट और धृष्ट है, जो चौतरफ दौडधूप करता है और सबपर शासन छाँटता है । – अज्ञात

लोग बातें ऐसी करते है मानो वे ईश्वरमे विश्वास करते हैं, लेकिन जीते इस तरह है मानो उनके खयालसे ईश्वर है ही नही । – एस्ट्रेंज

दुनिया चार किस्मके लोगोमे विभाजित की जा सकती है,—पढनेवाले, लिखनेवाले, सोचनेवाले और लोमडियोके पीछे भागनेवाले। – शेन्स्टन

लोग पुण्यके फलकी इच्छा करते है, पुण्यकी नही, पापके फलकी इच्छा नही करते, मगर पाप जान-बूझकर करने जाते है। – अज्ञात

लोभ

महान् शास्त्रज्ञ, बहुश्रुत, सशयोको छेदनेवाला पण्डित भी लोभके वश होकर दु खी होता है। – नीति

जिस तरह वृक्ष काट दिये जानेपर भी, अगर उसकी जडें सुरक्षित और मज़बूत हो, फिर उगने लगता है, उसी तरह जबतक लोभको जडसे नही उखाड फेंका जाता, दु ख बार-बार आते रहते है। – अज्ञात

अगर तू लोभ और लालचसे दूर रहेगा, तो तेरी मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण होगी और गुप्त रीतिसे तुझे ईश्वरीय सहायता मिल जायेगी।

– सलाह-उद्दीन-सफदी

लोभसे क्रोध और क्रोधसे द्रोह उत्पन्न होता है। और विचक्षण शास्त्रज्ञ भी द्रोहसे नरकको प्राप्त होता है। – हितोपदेश

लोभ पापका मूल है, स्वादका चटखारा रोगका मूल है। स्नेह दु खका मूल है। इन तीनोका त्याग कर देनेवाला सुखी होता है। – अज्ञात

लोभकी तृष्णा मानव जातिपर इस क़दर हावी हो गयी है कि बजाय इसके कि दौलत उनके कब्ज़ेमे हो यह प्रतीत होता है कि दौलतने उनपर कब्ज़ा कर रखा है। – प्लिनी

दिलसे लोभ निकाल दे तो गलेसे जजीरें निकल जायें।

– जाविदान-ए-खिरद

बुढापेमे लोभ मूढतापूर्ण है सफरके अन्तमे तोशा बाँधनेसे फ़ायदा?

– सिसरो

अगर तुम लोभको हटाना चाहते हो तो तुम्हे उसकी माँ अय्याशीको हटाना चाहिए। – सिसरो

लोभ उन्ही लोगोमे अधिक पाया जाता है जिनमे शायद ही कोई सद्गुण होता हो। यह वह घास है जो ऊसर जमीनमे उगती है। – ह्यूजीज

दोषोमे सबसे बडा दोष लोभ, अर्थात् जहाँ चाहिए वहाँ खर्च न करना है। – अज्ञात

लोभसे बुद्धि नष्ट होती है, बुद्धि नष्ट होनेसे लज्जा नष्ट होती है, लज्जा नष्ट होनेसे धर्म नष्ट होता है और धर्म नष्ट होनेसे धन नष्ट होता है।

– अज्ञात

■

व

वक्त

एक मिनिट देरके बजाय तीन घण्टे पहले पहुँचना अच्छा। – शेक्सपीयर

जिन्दगी कितनी ही छोटी हो, वक्तकी बरबादीसे और भी छोटी बना दी जाती है। – जॉन्सन

वक्ता

बिना किसी महान् उद्देश्यसे सरशार हुए न कभी कोई वक्ता हुआ, न होगा, न हो सकता है। – ट्राइन

वक्ता बननेके लिए दो बातें ज़रूरी है अच्छी सामग्री और अच्छा ढंग। – जे० फ्लेमिंग

विरोधीको उत्तर देते समय विचारोको तरतीब दो, शब्दोको नही ।
– कोल्टन

वक्ता अपनी गहराईकी कमीको लम्बाईसे पूरी करते है । – मोण्टेस्को

जो भाषणपटु तो नही है, मगर जिसका अन्त किसी खास विश्वाससे सरशार है, वक्ता है । – एमर्सन

जो शूर नही है, वह सच्चा वक्ता नही हो सकता । – एमर्सन

जो वक्ताके शब्दोकी ध्वनिकी अपेक्षा उस वक्ताका ही अधिक गौरसे निरीक्षण करता है, उसे शायद ही कभी निराशा मिलती हो । – लैवेटर

वक्ता वह नही जो कि सुन्दर बोलनेवाला हो बल्कि वह जिसका अन्तरग किसी विश्वाससे सरशार हो । एमर्सन

वक्तृता

तुम ऐसी वक्तृता दो कि जिसे दूसरी कोई वक्तृता चुप न कर सके ।
– तिरुवल्लुवर

देखो, जो लोग अपने ज्ञानको समझाकर दूसरोको नही बता सकते वे उस फूलकी तरह है जो खिलता है मगर सुगन्ध नही देता । – तिरुवल्लुवर

ऐ शब्दोका मूल्य जाननेवाले पवित्र पुरुषो, पहले अपने श्रोताओकी मानसिक स्थितिको समझ लो, फिर उपस्थित जन-समूहकी अवस्थाके अनुसार अपनी वक्तृता आरम्भ करो । – तिरुवल्लुवर

रणक्षेत्रमे खडे होकर बहादुरीके साथ मौतका सामना करनेवाले लोग तो बहुत है, मगर ऐसे लोग बहुत ही थोडे है जो बिना काँपे हुए जनताके सामने रगमचपर खडे हो सकें । – तिरुवल्लुवर

देखो, जो वक्तृता मित्रोको और भी घनिष्ठताके सूत्रमे बाँधती है और दुश्मनोको अपनी तरफ आकर्षित करती है, बस वही यथार्थ वक्तृता है । – तिरुवल्लुवर

सच्चा वक्तृत्व इसमें ही है कि जितना जरूरी है उतना कहा जाये, ज्यादा कुछ नही। – रोशे

जो वक्तृत्व बनावटी है, या अति श्रमजन्य है, या महज नक़ली है, अपने साथ एक हीन दीनता लिये रहता है, दूसरी दृष्टियोसे चाहे फिर वह लाजवाब ही क्यो न हो। – बेकन

वचन

शुद्ध हृदयमे निकला हुआ वचन कभी निष्फल नही होता। – गान्धी

वचनोकी कढी और वचनोके भात इन दोनोसे कौन तृप्त हुआ है। – तुकाराम

जो मनुष्य अपने वचनोपर दृढ रहता है उसके बारेमे मुझे सन्देह नही रहता। – गान्धी

जिसने मित्रका कार्य सम्पन्न करनेका वचन दिया है वह उसके समाप्त होने तक ढीला नही पडता। – कालिदास

सेवा-भावी विनम्र वचन मित्र बनाता है और बहुत-से लाभ पहुँचाता है। – तिरुवल्लुवर

हँसी-मजाकमे भी कडवे वचन आदमीके दिलमे चुभ जाते है, इसलिए शरीफ लोग अपने दुश्मनोके साथ भी बदइख्लाकीसे पेश नही आते। – तिरुवल्लुवर

जहाँ वचन भ्रष्ट है, मन भी भ्रष्ट है। – अज्ञात

सज्जनोका साधारण बातमे कहा हुआ वचन पत्थरपर लिखे अक्षर सरीखा होता है, और हलकट आदमीका कसम खाकर दिया हुआ वचन भी पानी-पर खीची लकीर-सा होता है। – अज्ञात

वज़न

तुझे तोला गया है, और कम पाया गया है। – अज्ञात

वज्रमूर्ख

वह वज्रमूर्ख होना चाहिए जो अपनी मूर्खतासे भी कुछ नही सीख सकता।
— हेअर

वन्दनीय

जो सदा प्रसन्न रहते है, जिनके हृदयमे दया है, जबानमे अमृत है और जो परोपकार-परायण है, वे किसके वन्दनीय नही है? — नीति

वफादार

उन्हे वफादार न समझ जो तेरे तमाम लफ्जो और कामोकी तारीफ करें, बल्कि उन्हे जो कृपा कर तेरे अपराधोपर झिडकें। — सुकरात

वर्तन

वर्तन वह दर्पण है जिसमे हर कोई अपनी शक्ल दिखाता है। — गेटे

वर्तन ही ईश्वरत्व है। — स्वामी रामतीर्थ

ऐसे जियो कि मरनेपर मुसलमान तुम्हारी लाशको आबे-जमजमसे धोयें और हिन्दू गगा तटपर जलायें। — अज्ञात

वर्तमान

यदि हम अपने विचारो और इच्छाओकी जाँच करें तो हम उन्हे भूत और भविष्यमे ओतप्रोत पायेंगे। — पास्कल

भविष्यके लिए सबसे अच्छा इन्तजाम वर्तमानका यथाशक्य सदुपयोग है।
— ह्वाईटिंग

भूतका अफसोस न करो, भविष्यकी फिक्र न करो, अक्लमन्द लोग वर्तमान-मे कार्यरत रहते हैं। — अज्ञात

भूत और भविष्य सबसे अच्छा लगता है, वर्तमान सबसे बुरा।
— शेक्सपीयर

वशीकरण

मुँहमें निवाला भर देनेपर कौन-सा नीच आदमी वशमें नहीं हो जाता ? आटेका लेप कर देनेमे मृदंग मीठी आवाज करता है। – भर्तृहरि

दया, मित्रता, दान और मधुर वाणीसे बढकर वशीकरण नही है।
– शुक्राचार्य

वस्त्र

इस नारियलमे गूदा नही, इस आदमीकी आत्मा इसके कपडोमे है।
– शेक्सपीयर

अगर कोई आदमी कई तरहके कपडोसे ढका हुआ हो, मगर परहेजगारीके वस्त्रोको धारण न किये हो, तो वास्तवमें वह नग्न ही है।
– सलाह्-उद्दीन-सफदी

वंचना

आत्मवंचना आदमीको फुला देगी, मगर उठायेगी नही। – रस्किन

बुजदिल अपनेको सावधान बताता है, कजूस किफायतशार।
– एस साइरस

वाक-पटुता

वाक्-शक्ति निस्सन्देह एक नियामत है। यह अन्य नियामतोंका अंश नही बल्कि स्वयमेव एक निराली नियामत है। – तिरुवल्लुवर

वाचाल

जिन्हे कहना कमसे कम होता है वह बोलते ज्यादासे ज्यादा है।
– प्रायर

वाचालता

जिसको बोलते चले जानेकी बीमारी एक बार गिरफ्त कर लेती है, वह कभी शान्त नही बैठ सकता। नही, बजाय इसके कि वह न बोले, वह भाडेपर आदमी लायेगा कि वे उसे सुनें। – अज्ञात

वाणी

जो वाणी सत्यको सँभालती है उस वाणीको सत्य सँभालता है। – विनोबा

वाणी मनकी परिचायिका है। – सेनेका

श्रुति-प्रिय शब्दोकी मधुरताका अनुभव कर लेनेके बाद भी मनुष्य क्रूर शब्दोका व्यवहार करना क्यो नही छोडता ? – तिरुवल्लुवर

वे शब्द जो कि सहृदयतासे पूर्ण और क्षुद्रतासे रहित होते है, इहलोक और परलोक दोनो जगह लाभ पहुँचाते है। – तिरुवल्लुवर

देखो, जो ऐसी वाणी बोलता है कि जो सबके हृदयको आह्लादित कर दे, उसके पास दु खोको बढानेवाली दरिद्रता कभी न आयेगी। – तिरुवल्लुवर

वाणीसे निकले हुए एक असयत शब्दको एक रथ और चार घोडे भी वापस नही ला सकते। – चीनी-कहावत

वाणीसे आदमीकी औकात और बुद्धिका पता लग जाता है।

– अरबी कहावत

गरमीको ठण्डा करनेमे एक नम्र शब्द एक बाल्टी पानीसे ज्यादा काम करता है। – कहावत

वाद-विवाद

बुद्धिमान्से, मूर्खसे, मित्रसे, गुरुसे, व अपने प्रियजनोंसे वाद-विवाद नही करना चाहिए। – नीति

किसी भी बातपर वाद-विवाद बढा कि मनका सन्तुलन नष्ट हुआ।

– विवेकानन्द

वाद-विवादमें हठ और गरमी मूर्खताके पक्के प्रमाण हैं। – मॉण्टेन

वाल्दैन

ईश्वरके बाद, तेरे वाल्दैन। – पैन

अपने बच्चोको पढाओ तब माँ-बापकी कद्र होगी कि तुम्हें कितनी मेहनत और खर्चसे पढाया। – हितोपदेश

वाहवाही

जब लाखो आदमी तुम्हारी वाहवाही करें तो गम्भीर होकर पूछो—'तुमसे क्या अपराध बन गया', और जब निन्दा करें तो—'क्या भलाई।' – कोल्टन

वासना

उस आदमीसे बढकर रास्तेसे भटका हुआ और कौन है जो अपनी ख्वाहिश (वासना) के पीछे चलता है? – कुरान

वासनाओके रहते सपनेमे भी सुख नही मिल सकता। बिना भगवान्के भजनके वासनाएँ नही मिट सकती। – रामायण

निस्सन्देह मुझे अपने लोगोके लिए जिस बातका सबसे अधिक डर है, वह है विषय-वासना और महत्त्वाकाक्षा। विषय-वासना मनुष्यको सत्यसे हटा देती है और महत्त्वाकाक्षामे पडकर मनुष्य परलोकको भूल जाता है। – हजरत मुहम्मद

विकार

विकारोकी वृद्धि अथवा तृप्तिमे ही जगत्का कल्याण है, ऐसी कल्पना करना महादोषमय है विकार रोके नही जा सकते अथवा उन्हे रोकनेमे नुकसान है, यह कथन ही अत्यन्त अहितकर है। – गान्धी

विकारी विचार भी बीमारीकी निशानी है। इसलिए हम सब विकारी विचारसे बचते रहें। – गान्धी

विकार आगकी तरह है—वह मनुष्यको घासकी तरह जलाता है ।
— गान्धी

विकास

तुम मोमबत्ती क्यो बने हुए हो जब कि तुम सूर्य बन सकते हो ? — अज्ञात

इस ससारके उद्यानमे किसी एकान्त सघन झुरमुटके मध्य एक पौधेका पुष्प बनूँ, खिलूँ और वही मुरझा जाऊँ । — अज्ञात

विघ्न

क्षुद्र लोग विघ्नके डरसे काम शुरू ही नही करते मध्यम लोग विघ्न आनेपर बीचमे ही छोड देते है, लेकिन उत्तम लोग विघ्न आनेपर भी शुरू किया हुआ काम नही छोडते । — नीति

विचार

बिना विचारके सीखना मेहनत बरबाद करना है, बिना सीखे हुए विचार करना खतरनाक है । — कन्फ्यूशियस

तुम जैसे विचारोकी दुनियामे विचरते हो उसमे तुम कभी-न-कभी अपने जीवनको मूर्त्तिमान् देखोगे । — अज्ञात

जो सोचता है कि मैं जीव हूँ, वह सचमुच जीव ही रहता है, जो अपनेको ब्रह्म मानता है वह सचमुच ब्रह्म हो जाता है—जो जैसा सोचता है वैसा बन जाता है । — रामकृष्ण परमहस

किसीके खयालोका हमने ग्रास तो किया, पर पचा न सके, बुद्धिसे उनका ग्रहण कर लिया पर उन्हे हृदयस्थ नही किया—उनपर अमल नहीं किया, तो वह एक प्रकारका अजीर्ण ही है, बुद्धिका विलास है । विचारोका अजीर्ण भोजनके अजीर्णसे कहीं बुरा है । भोजनके अजीर्णके लिए तो दवा है, पर विचारोका अजीर्ण आत्माको बिगाड देता है । — गान्धी

विचार चाहे पुराना हो और बहुत बार पेश किया जा चुका हो, लेकिन आखिरकार वह उसका है जो उसे बेहतरीन तरीक़ेसे पेश करे।

– लॉवेल

आदमी किसी विचारकी खातिर जान दे देंगे, परन्तु उसका विश्लेषण न करेंगे। – जे० ब्राउन

मनुष्य अपनी परिस्थितियोको प्रत्यक्षत नही चुन सकता, लेकिन वह अपने विचारोको चुन सकता है, और इस तरह परोक्ष रूपसे किन्तु लाजिमी तौरपर, अपनी परिस्थितियोका निर्माण कर सकता है।

– जेम्स ऐलन

विचार-शून्यता हमारे जमानेकी प्रधान सार्वजनिक आपत्ति है।

– रस्किन

छटाँक-भर वैज्ञानिक-विचार मन-भर अज्ञानपूर्ण उत्साहसे बढकर है।

– हेवर्ड

महान् विचार, जब वे कार्यरूपमे परिणत हो जाते हैं, तब महान् कृतियाँ बन जाते है। – हैजलिट्

अन्तरात्मा या भावनाके विषयमे पहले विचार सर्वोत्तम है, समझदारीके मामलेमे, अन्तिम विचार सर्वोत्तम हैं। – रॉबर्ट हॉल

विचारसे अधिक ठोस चीज ब्रह्माण्डमें नही है। – एमर्सन

अपने विचारोको अपने जेलखाने न बनाओ। – शेक्सपीयर

भौतिक शक्तिसे आध्यात्मिक बढकर है, विचार दुनियापर शासन करते हैं।

– एमर्सन

उधार लिये हुए विचार, उधार लिये हुए पैसेकी तरह, उधार लेनेवालेके सिर्फ कगलेपनके परिचायक हैं। – लेडी ब्लैसिंग्टन

जो मनमें है वही हाथ भी आयेगा—इन्तजार कीजिए। – अज्ञात

विचार कतअन् पेटपर निर्भर है, ताहम जिनके बेहतरीन पेट हैं बेहतरीन विचारक नही है। – वोल्टेर

जो जैसा अपने दिलमें सोचता है, वैसा ही है। — बाइबिल

महान् विचार एक बडी बरकत है, जिसके लिए पहले ईश्वरको धन्यवाद देना चाहिए। फिर उसको जिसने उसको पहले कहा, और तब कुछ कम लेकिन फिर भी काफी मात्रामे, उस शख्सको जिसने सबसे पहले उसे हमें सुनाया। — बोवी

विचारमें अपार शक्ति होती है। एक स्त्री ३३ वर्षकी उम्र तक भी १९ वर्षकी-सी युवती बनी रही, चिन्तातुर रहनेमे एक आदमीके रात-भरमें सारे स्याह बाल सफेद हो गये। — अज्ञात

'रेलगाडीकी पटरियाँ न बनायी गयी होती तो स्वर्ग कैसे जाया जाता' ऐसी लोगोकी विचारसरणी है। — स्वामी रामतीर्थ

हममे-से कोई यह नही जानते कि सुन्दर विचारोसे अपने लिए कैसे-कैसे परिस्तान बना सकते हैं, जिनपर समूची बदबख्तीका लेश भी प्रभाव नही पड सकता क्योकि किशोरावस्थामे किसीको यह भेद बतलाया गया। — रस्किन

वह देवताओसे दोयम है जिसका प्रेरक विचार है न कि कषाय।

— क्लॉडियन

जो नीच विचारोमे लीन है वह नरकमे गर्क है जो ऊँचे आनन्ददायक विचारोमे लीन है वह स्वर्ग-सुखका यही, इसी क्षण, उपभोग कर रहा है। स्वर्ग और नरक कालान्तर और स्थानान्तरमे भी हो तो हो, पर नकद स्वर्ग', और 'नकद नरक' भी हैं जिनका निर्माण तत्क्षण विचारो-द्वारा होता रहता है। — अज्ञात

क्या खूब कहा है कि अपने विचारोसे हमारे जीवन बने है, रोगीले विचारोसे हम स्वस्थ नही रह सकते, दु खमय विचारोसे जीवन आनन्द-मय नही हो सकता। — बुन्देसन

किसी युगकी महत्तर घटनाएँ उसके सर्वोत्तम विचार है। विचार अमल-में आकर रहता है। — बॉइस

विचार है वे साधन जो सभ्यताको उठाते हैं। वे क्रान्तियाँ पैदा करते हैं। बहुत-से बमोंकी अपेक्षा एक विचारमें ज्यादा डायनामाइट है।
— बिशप विन्सेण्ट

विचार भाग्यका दूसरा नाम है। — स्वामी रामतीर्थ

अगर किसी आदमीके मनमें बुरे विचार हैं, तो उसपर दु:ख इसी तरह आता है जैसे बैलके पीछे पहिया, अगर कोई पवित्र विचारोंमें लीन रहता है तो उसके पीछे आनन्द ठीक उसी प्रकार आता है जैसे उसका साया। — अज्ञात

आदमी अच्छा करे कि अपनी जेबमें कागज, पेन्सिल रखे, और वक्तके विचारोंको तुरन्त लिख डाले। जो अनायास आते हैं वे अकसर सबसे ज्यादा कीमती होते हैं। उन्हें सँभालकर रखना चाहिए, क्योंकि वे बार-बार नहीं आते। — बेकन

मनुष्यमें जैसे विचार उत्पन्न होते हैं, वैसे ही वह काम कर सकता है।
— अरविन्द घोष

कर्म सरल है, विचार कठिन है। — गेटे

अच्छे विचारोंपर यदि अमल न किया जाये तो वे अच्छे स्वप्नोंसे बढ़कर नहीं हैं। — एमर्सन

विचारक

जिसे उचित-अनुचितका विचार है, वही वास्तवमें जीवित है, पर जो योग्य-अयोग्यका ख़याल नहीं रखता उसकी गिनती मुरदोंमें की जायेगी।
— तिरुवल्लुवर

सम्यक्-दर्शी निस्सन्देह दुर्लभ है, परन्तु सम्यक्-विचारक उससे भी अधिक दुर्लभ है। — एच० टी० बक्ले

जब ईश्वर किसी विचारकको इस जमीनपर छोड़ दे तो सावधान रहो। उस वक्त तमाम चीजें ख़तरेमें हैं। — एमर्सन

महान् विचारक शायद ही झगडालू होता हो। वह दूसरोंकी युक्तियोंका जवाब खुदको दिखनेवाले सत्यको कहकर देता है। — मार्च

यदि तुम विचारक नहीं तो फिर तुम इनसान ही क्यों हो? — कॉलेरिज

बुद्धिमान्को चाहिए कि किसी कामको करनेसे पहले उसके नतीजेपर विचार कर ले। जल्दबाजीमें किये गये कामका नतीजा मरते वक्त तक हृदयको तीरकी तरह छेदता रहता है। — अज्ञात

विचारकता कभी सार्वजनिक नहीं हो सकती। कथायें और भावनाएँ भले ही हो जायें। विचारकता चन्द बुद्धिशालियोंकी निजी सम्पत्ति बनी रहेगी। — गेटे

कुछ लोग पहले कर गुजरते है, सोचते बादमें है और फिर हमेशा पछताया करते है। — सैकर

जो प्रभुके सिवा दूसरी चीजोंका अनुसरण करता है, उसे विचारहीन ही कहना चाहिए, कारण मनुष्य अपनी विचारशक्तिका पूरा उपयोग किये बिना ही अपने आसपास जो-जो अनित्य पदार्थ देखता है उनकी ओर दौडता है। — बायजीद

विचित्र

मुझसे लोग कहते है कि तुम कुछ विरक्त-से मालूम होते हो, पर सच तो यह है कि अपमानयुक्त स्थानसे पीछे रहनेके कारण ही मैं लोगोंकी नजरमें कुछ विचित्र-सा लगता हूँ। — एक कवि

विजय

जो दूसरोंको जीतता है वह मजबूत है, जो स्वयंको जीतता है वह शक्तिमान्। — लाओत्जे

जो बलसे पराजित करता है वह अपने शत्रुको सिर्फ आधा जीतता है। — मिल्टन

सबसे शानदार विजय है अपनेपर विजय प्राप्त करना और सबसे जलील और शर्मनाक बात है अपनेसे परास्त हो जाना। — प्लेटो

अपने ऊपर विजय पाना सारे ससारपर विजय पानेकी अपेक्षा ज्यादा महत्वकी चीज़ है। — डॉ० रमन

इससे ज्यादा शानदार विजय किसी आदमीपर नही पायी जा सकती कि अगर ईजा पहले उसने पहुँचायी थी तो कृपालुता पहले हम दिखायें। — टिलिट्सन

विद्या

विद्याका फल उत्तम शील और सदाचार है। — अज्ञात

क्या मै विद्याका पौधा लगानेके लिए तो असीम कष्ट उठाऊँ और फिर उससे अपमानका फल चुनूँ ? इससे तो मूढताकी ही अधीनतामे रहना बडी गूढ विद्वत्ता है। — एक कवि

तू आलस त्याग कर और विद्या प्राप्त कर, क्योकि हर तरहके गुण बहुत ही दूर रहते है। — इब्न-उल-वर्दी

शत्रुओकी नाक विद्याकी वृद्धिसे कट जायेगी, पर विद्याकी शोभा आचरण ठीक रहनेसे ही होगी। — इब्न-उल-वर्दी

मैने विद्याकी सेवामे इसलिए जान नही खपायी कि जो मिल जाये उसीका दास बन जाऊँ। — एक कवि

जो सीखता है मगर अपनी विद्याका उपयोग नही करता, वह किताबोसे लदा लद्दू जानवर है। — सादी

विद्वानोने विद्याके सुन्दर स्वरूपको लालचसे कुरूप कर दिया। — एक कवि

विद्या मनुष्यके लिए एक दोष-त्रुटि-हीन अविनाशी निधि है। उसके सामने दूसरी तरहकी दौलत कुछ भी नही है। — तिरुवल्लुवर

अगर जरा-से लालचके स्थानमे मै विद्याको सीढी बनाकर पहुँचा करूँ, तो वास्तवमे विद्याके दायित्वकी मैने शर्त ही नहीं की। — एक कवि

विद्वत्ता

संसारके महान् व्यक्ति अकसर बडे विद्वान् नही रहते, और न बडे विद्वान् महान् व्यक्ति हुए है । — होम्स

विद्वत्ताका अभिमान सबसे बडा अज्ञान है । — जेरेमी टेलर

विद्वान्

यदि विद्वान् लोग विद्याको अपमानसे सुरक्षित रखते तो विद्या भी उन्हे अपमानसे सुरक्षित रखती, और विद्वान् लोग यदि लोगोके हृदयोमे विद्याका सिक्का बैठाते, तो विद्या भी विद्वानोका सिक्का जमा देती ।

— एक कवि

एक दिनमे हजार बार शोककी ओर, सौ बार भयकी ओर मूर्ख पुरुष जाता है । विद्वान्के लिए शोक और भय कुछ नही । — महाभारत

विद्वान् देखता है कि जो विद्या उसे आनन्द देती है, वह ससारको भी आनन्दप्रद होती है और इसीलिए वह विद्याको और भी अधिक चाहता है । — तिरुवल्लुवर

जो मूर्खोंके सामने विद्वान् दिखना चाहते है, वे विद्वानोको मूर्ख दिखेंगे ।

— क्विक्ट

विद्वान् आदमी ज्ञानके हौज है, स्रोत नही । — नार्थकोट

विद्वान् वे है जो अपने ज्ञानपर अमल करते है । — मुहम्मद

विद्वान् ही विद्वान्के परिश्रमकी कद्र कर सकते है । बाँझ औरत प्रसव-वेदना क्या जाने ? — अज्ञात

विनय

धर्मका मूल विनय है, उसका परम रस-फल मोक्ष है, विनयके द्वारा ही मनुष्य बडी जल्दी शास्त्रज्ञान तथा कीर्ति प्राप्त करता है और अन्तमे निःश्रेयस मोक्ष भी । — भ० महावीर

विनाश

टालमटूल, विस्मृति, सुस्ती और निद्रा—ये चार उन लोगोंके खुशी मनानेके बजडे है कि जिनके भाग्यमें नष्ट होना बदा है। – तिरुवल्लुवर

विनाशकाल

जब विनाश नजदीक होता है, बुद्धि कलुषित हो जाती है और नीति-सरीखी दिखनेवाली अनीति दिलमे अड्डा जमा लेती है। – महाभारत

विनोद

तुम गौरव और सम्मानके साथ रहो। खिलवाड और विनोद दरबारियोके लिए छोड दो। – अज्ञात

विपत्ति

जब विपत्ति आनेवाली होती है तब लोग दुष्टोकी रायपर चलने लगते है, जब मौत नजदीक होती है तब अपथ्य भोजन स्वादिष्ट लगता है।

– अज्ञात

जो फूल सूरज-मुख रहता है वह बादल-भरे दिनोमे भी वैसा ही रहता है।

– लेटन

इस जगली दुनियामे, सबसे प्रिय और सबसे अच्छे लोगोको ही सबसे ज्यादा विपत्ति, कष्ट और परेशानी सहनी पडती है। – क्रेब

सम्पत्ति महान् शिक्षिका है, विपत्ति उससे भी बडी। प्राप्ति मनको मृदुल थपकियाँ देती है, अप्राप्ति उसे तालीम देती है और मजबूत बनाती है।

– हैज़लिट

विपत्ति वह हीरक रज है जिससे ईश्वर अपने रत्नोकी पालिश करता है।

– लेटन

सम्पत्ति और विपत्ति महा-पुरुषोपर ही आती हैं। वृद्धि और क्षय चन्द्रमाका ही होता है, तारोका नही। – अज्ञात

जब हम विपत्तिसे बचनेके लिए पापमय उपाय करते हैं तो अकसर इसी कारण वह हमपर आ ही पडती है। – वाल

विपत्ति सत्यका पहला रास्ता है। – बायरन

विभूति

समुद्र अपने रत्नोका क्या करता है ? विन्ध्याचल अपने हाथियोका क्या करता है ? मलयाचल अपने चन्दनका क्या करता है ? सज्जनोकी विभूति परोपकारके लिए होती है। – अज्ञात

जबतक किसी विभूतिके लिए प्रयत्न करते हो तबतक अपनेको सत्यपथसे भटका हुआ समझो। – हरिभाऊ उपाध्याय

विभूति माने ईश्वरका 'चिन्त्यभाव', वह अनुकरणीय होगा ही ऐसा नही है। – विनोबा

विभ्रान्त

निज दोषोसे आवृत मनको सुन्दर वस्तु भी विपरीत दिखती है। पीलिया रोगवालेको शशि-शुभ्र शख भी पीला दिखता है। – अज्ञात

पित्तज्वरवालेको शक्कर भी कडवी लगती है। – अज्ञात

वियोग

'तमाम प्रिय वस्तुओ और प्रियजनोसे एक दिन वियोग होनेकी है' इस बातका स्मरण रखनेसे मनुष्य प्रिय वस्तु अथवा प्रिय जनके अर्थ पापाचरण करनेमे प्रवृत्त नही होता। – बुद्ध

मेरी प्रियाका कथन है कि मेरा दूर रहना तेरे लिए अधिक आनन्ददायक है, क्योकि सूरज दूर न होता तो उसकी ज्योति तुझको जला देती। – खतीरी बर्राक

प्रेमियोके वियोगको छोडकर ससारकी सारी आपदाएँ मुझको तो आसान ही मालूम हुई है। – एक कवि

विरह
यद्यपि कहा जाता है कि विरहमे प्रेम कुम्हला जाता है, तथापि वस्तुत वियोगमें प्रेमका प्रयोग न होनेसे वह सचित होकर राशीभूत हो जाता है ।
– कालिदास

विरोध
कोई सत्य दूसरे सत्यका विरोधी नही हो सकता । – ह्यूकर

मनुष्यको तमाम विरोधके सामनेसे अपनेको ले जाना होगा, मानो उसको, स्वयको छोडकर सब क्षणिक और निस्सार है । – एमर्सन

'तुम मेरे विरोधी हो या मेरे मतके ?' 'मतके' । तो फिर मेरे मतका खण्डन करो, मेरी निन्दा करके तुम सजावार क्यो बन रहे हो ?
– अज्ञात

यदि अपने किसी रिश्तेदारकी बुरी बातका मै विरोध नही करता हूँ तो या तो मै उसका हितैषी नही हूँ या डरपोक हूँ । – अज्ञात

बिलम्ब
जो फौरन् किये जानेवाले कामको देरसे करता है वह बेवकूफ है ।
– अज्ञात

विलास
विलासमे ह्रासके बीज है, क्योकि उससे प्रचोदक शक्ति नष्ट होती है ।
– स्वामी रामतीर्थ

विवशता
युद्धक्षेत्रकी अपेक्षा चरागाह सौ बार अच्छा है पर घोडेकी लगाम घोडेके हाथमे नही है । – अज्ञात

विवाह
मोक्ष पानेके लिए शरीरके बन्धन टूटना आवश्यक है । शरीरके बन्धनको

तोडनेवाली प्रत्येक वस्तु पथ्य है, शेष सब अपथ्य। विवाह बन्धनको तोडनेके बजाय उसे और अधिक जकड देता है। केवल एक ब्रह्मचर्य ही मनुष्यके बन्धनको मर्यादित करके उसे ईश्वरार्पित जीवन बितानेके लिए शक्ति प्रदान करता है। – गान्धी

आज हम जिसे विवाह कहते है वह विवाह नही, उसका आडम्बर है। जिसे हम भोग कहते है वह भ्रष्टाचार है। – गान्धी

व्यभिचार भी व्यभिचारित हो गया है एक चीजसे, वह है—विवाह। – नीट्शे

विवाहित

पशुजीवनमे दूसरी बात हो सकती है लेकिन मनुष्यके विवाहित जीवनका यह नियम होना चाहिए कि कोई भी पति-पत्नी बिना आवश्यकताके प्रजोत्पत्ति न करें और बिना प्रजोत्पादनके हेतुके सम्भोग न करें। – गान्धी

विवेक

आत्माके लिए विवेक वैसा ही है जैसे शरीरके लिए स्वास्थ्य। – रोची

विवेक, मै तेरे मृदुल शासनको 'स्वस्ति' कहती हूँ, और हमेशा, हमेशा कहनेमे चलूँगी। – श्रीमती बार्बोल्ड

हस दूध निकाल लेता है और उसमे मिले हुए पानीको छोड देता है। – कालिदास

विवेक-भ्रष्टोका सौ-सौ तरहसे पतन होता है। – भर्तृहरि

आदमीमे लक्ष्मी और विवेक शायद ही कभी साथ-साथ मिलते हो। – लिवी

नेकी और बदीकी पहचानके बगैर इनसानकी जिन्दगी बडी उलझी हुई रहती है। – सिसरो

कोई भी बात हो उसमे सत्यको झूठसे अलग कर देना ही विवेकका काम है। – तिरुवल्लुवर

क्रोध और दुर्भाव, ईर्ष्या और प्रतिशोध विवेकको वक्र कर देते है।
– टिलटसन

बुद्धि और भावनाका समन्वय माने 'विवेक । – विनोबा

विवेककी शान जीते जी ऐसे काम करनेमे है जिनकी मरते वक्त ख्वाहिश रहे। – जेरेमी टेलर

सच्चा विवेक इसमें है कि हम सर्वोत्तम जानने लायकको जानें, और सर्वोत्तम करने लायकको करें। – हम्फरी

उच्च विवेक उच्च आनन्द है। – यग

भावुकता एक क्षणिक वग है तूफान है, बाढ है विवेक सतत समान प्रवाह है। – अज्ञात

यद्यपि विवेक मनको स्वच्छन्दरूपसे नही विचरने देता है किन्तु उसे बुराई-से बचाकर सन्मार्गमे लगा देनेवाला भी वही है। – अज्ञात

विवेक न सोना है, न चाँदी, न शोहरत, न दौलत न तन्दुरुस्ती, न ताकत, न खूबसूरती। – प्लुटार्क

शाश्वतका विचार ही विवेक है। – स्वामी रामतीर्थ

बुद्धि परीक्षण करने बैठती है परन्तु विवेक निरीक्षणसे ही राजी रहती है।
– पालशिरर

विवेकका पहला काम मिथ्यात्वको पहचानना है, दूसरा सत्यको जानना।
– अज्ञात

जो विवेकसे काम लेता है वह ईश्वर-विषयक ज्ञानसे काम लेता है।
– एपिक्टेटस

विवेकी

निश्चय ही सबसे बडे विद्वान् सबसे बडे विवेकी नहीं होते। – रैनियर

आजाद कौन है ? विवेकी जो अपनेको बसमें रख सकता है। — होरेस

विवेककी तलाश करता है तो तू विवेकी है यह कल्पना करता है कि तू उसे पा गया, तो तू बेवकूफ है। रब्बी

जल्दीसे विवेकी बन। चालीस बरसकी उम्रमें भी जो बेवकूफ है, वह सचमुच बेवकूफ है। — मौण्टेन

विश्राम

तीव्र काम विश्राम है। हर सच्चा काम विश्राम है। — स्वामी रामतीर्थ

विश्राम ? क्या विश्राम करनेके लिए तमाम 'अनन्त' नही पडा हुआ है ?
— अज्ञात

उद्योगका परिवर्तन ही विश्राम है इसमे बहुत सत्य है। — गान्धी

विश्व

विश्व रामका शरीर है। — स्वामी रामतीर्थ

विश्वास

मनुष्य अविश्वासीका विश्वास न करे और विश्वासीका भी बहुत विश्वास न करे क्योकि विश्वाससे उत्पन्न हुआ भय मूल सहित नष्ट कर देता है।
— नीति

जब तुम ईश्वरके प्यारे बन जाओगे, तभी वह तुम्हें सम्पूर्ण सन्तोष देगा। उसका विश्वास छोडकर सशयमे न पडना। — जुन्नुन

विश्वासके तीन लक्षण हैं—सब चीजोमें ईश्वरको देखना, सारे काम ईश्वरकी ओर नजर रखकर ही करना और हर-एक हालतमे हाथ पसारना तो उस सर्वशक्तिमान्के आगे ही। — जुन्नुन

किसीका भी विश्वास न करनेवाले दुर्बल मनुष्य भी बलवानोके फन्देमे नहीं फँसते, किन्तु विश्वास करनेवाले बलवान् पुरुष भी दुर्बलोके फन्देमे फँसकर मारे जाते है। — नीति

जो तुमपर विश्वास करता है उसे ठगनेमें कोई चालाकी नही है। क्या गोदमे सोये हुए बालककी जान लेनेमें कोई शूरवीरता है? — अज्ञात

मेरी खाक भी कीमत नही होगी अगर मैं सारे काम बिना निजी मान्यता-के महज़ किसी दूसरेके कहनेपर करता जाऊँ। — गान्धी

विश्वास ज्ञानकी अभीप्सणता है। — डब्ल्यू आदम

फलके पहले फूल, सदाचारके पहले विश्वास। — व्हेटली

अपने निर्वाहके लिए जो चिन्ता अथवा प्रपंच नही करता वही सच्चा विश्वासी है। — जुन्नेद

यदि बुद्धिमान् अपनी आयु-वृद्धि और सुखकी इच्छा करता हो, तो बृहस्प-तिका भी विश्वास न करे। — नीति

जो एक बार विश्वासघात कर चुका हो उसका विश्वास न करो। — शेक्सपीयर

अगर तुम आज़मानेसे पहले भरोसा करोगे, तो तुम्हे मरनेसे पहले पछताना पडेगा। — कहावत

प्रेम सबसे करो, विश्वास थोडोंका करो। — शेक्सपीयर

सावधान! उन लोगोका विश्वास देख-भालकर करना जिनके आगे-पीछे कोई नही है, क्योकि उन लोगोके दिल ममताहीन और लज्जारहित होगे। — तिरुवल्लुवर

अनजाने आदमीपर विश्वास करना और जाने हुए योग्य पुरुषपर सन्देह करना—ये दोनो ही बातें एक समान अनन्त आपत्तियोका कारण होती हैं। — तिरुवल्लुवर

देखो, जो आदमी परीक्षा किये बिना ही किसीका विश्वास करता है वह अपनी सन्ततिके लिए अनेक आपत्तियोंका बीज बो रहा है। — तिरुवल्लुवर

दूसरेको मारनेके लिए ढालो और तलवारोकी जरूरत होती है, मगर खुद-को मारनेके लिए एक पिन ही काफी है, इसी तरह दूसरेको सिखानेके लिए बहुत-से शास्त्रों और विज्ञानोके अध्ययनकी आवश्यकता होती है, मगर आत्म-प्रकाशके लिए एक ही सिद्धान्त-सूत्रमें दृढ विश्वासका होना काफी है। – रामकृष्ण परमहस

अपने विश्वासका शिकार बनकर मर जाना प्रशसनीय है अपनी महत्त्वाकाक्षाका धोखा खाकर मरना दु खद है। – लैमरटिन

बिना कृतिका विश्वास बिना पखकी चिड़ियाके समान है। – बोमेण्ट

विश्वास रखो, तुम्हारी प्रार्थनाका जवाब जरूर मिलेगा। – लौगफैलो

कम-उम्र और नाबालिग बच्चोके कच्चे दिमागोमे खास किस्मके विश्वास ठूँसना निकृष्टतम गर्भपात है। – बर्नार्ड शा

अपने ऊपर असीम विश्वास स्थापित करना और अकेले बैठकर अन्तरात्माकी ध्वनि सुनना वीर पुरुषोका ही काम है। – एमर्सन

विश्वास शक्ति है। – रॉबर्टसन

विश्वासका प्रधान अग सन्तोष है। – जॉर्ज मैक्डोनल्ड

सारी विद्वत्तापूर्ण चुनाचुनी एक 'विश्वास' शब्दके आगे खण्डहर हो जाती है। – नैपोलियन

अगर तुम विश्वासमे महान् नही हो तो किसी चीजमे महान् नही हो सकते। – जैकोबी

अगर मुझसे पूछते हो तो मनुष्यका विश्वास ऐसा स्वाभाविक और स्वतन्त्र हो जैसी कि हवा। यही कारण है कि मैं तमाम सघो और परिपाटियोंके खिलाफ हूँ। वे मनुष्योके विश्वासोको एक अमुक प्रकारके साँचेमे ढाल देना चाहते है, और कोई चीज़ जो बाहरसे लादी जाती है मनुष्यके मन और आत्माके विकासकी दुश्मन है। – जे० कृष्णमूर्ति

देवपर विश्वास माने जगपर विश्वास माने, आत्मापर विश्वास माने सत्यपर विश्वास। – विनोबा

विश्वास-रहितताके कारण हम बहुत-से दैवी ज्ञानमे वञ्चित रहते हैं ।
– हैरेक्लिटस

जो सोचता है 'मै जीव हूँ'—वह जीव है और जो सोचता है 'मैं शिव हूँ'—वह शिव है । – अज्ञात

विश्वास जीवन है सशय मौत है । – रामकृष्ण परमहस

विश्वासघात

जो तुमपर विश्वास करते हैं उन्हे ठगनेमे क्या बहादुरी है ? – अज्ञात

दगासे दुश्मनके हवाले कर देनेवाला या भेद खोल देनेवाला हत्यारा होता है । – फ्रेंच कहावत

विश्वासपात्र

अगर तुम किसी मूर्खको अपना विश्वासपात्र सलाहकार बनाना चाहते हो, सिर्फ इसलिए कि तुम उसे प्यार करते हो, तो याद रखो कि वह तुम्हें अनन्त मूर्खताओमे ला पटकेगा । – तिरुवल्लुवर

विषयी

विषयीका शरीर मृतक आत्माका जनाजा है । – बोवी

वे लोग बडे अभागे हैं जो भगवान्को छोडकर विषयानुरागी हो जाते हैं ।
– रामायण

विषयके समान कोई नशा नही है । यह मुनियोंके भी मनको क्षण-भरमें मोही बना देता है । – रामायण

जिस तरह दलदलमे फँसता हुआ हाथी उठी हुई जमीनको देखता है मगर किनारे नही लगता, उसी तरह विषयी लोग सन्तोके मार्गपर नही चलते ।
– अज्ञात

विस्मृति

एक शरीफ विस्मृति है—वह जो कि ईजाओको याद नही रखती ।
– सिमन्स

'मैं भूल गया' यह कभी मान्य बहाना नहीं है। — डॉक्टर हॉल

विज्ञ

जिस प्रकार जीभ चखते ही स्वाद पहचान लेती है, उसी प्रकार विज्ञ पुरुष मुहूर्तमात्रमें ज्ञानियोंसे धर्म और ज्ञान पा लेता है। — बुद्ध

विज्ञान

जो शख्स यह सोचता है कि विज्ञान और धर्ममें कोई वास्तविक विरोध है उसे या तो विज्ञानका बहुत कम ज्ञान है या वह धर्मसे बहुत अनजान है। — प्रोफेसर हैनरी

विज्ञान चीजोंके इस सिरेमें मशगूल है उस सिरेमें नहीं। — पार्कहर्स्ट

वीतराग

जिसका राग दूर हो गया है उसके लिए घर ही तपोवन है। — अज्ञात

वीतरागता

सत्य ज्ञान पानेके लिए वीतरागता निहायत जरूरी है। वीतरागता जितनी अधिक होगी, ज्ञान उतना ही अधिक पूर्ण होगा। जहाँ वीतरागताका अन्त है वहाँ सत्य ज्ञानका भी अन्त है। — सत्यभक्त

वीर

वीर पुरुषके ऊपर भाला चलाया जाये और उसकी आँख जरा भी झपक जाये, तो क्या यह उसके लिए शर्मकी बात नहीं है? — तिरुवल्लुवर

उत्कृष्ट हृदय हमेशा वीर होते हैं। — स्टर्न

वीर पुरुष लाखोंमें एक। — अज्ञात

बुजदिल अपनी मौतसे पहले बहुत बार मरते हैं, वीर पुरुष मृत्युका आस्वादन सिर्फ एक बार करते हैं। — शेक्सपीयर

वीर पुरुष दुर्भाव नही जानता, शान्तिकालमे वह युद्धकी क्षत्रियोको भूल जाता है, और अपने घोरतम शत्रुका मैत्रीभावसे आलिंगन करता है।

— कूपर

कुछको वीर समझ लिया गया, क्योंकि वे डरके मारे भाग न सके।

— अज्ञात

वीरता

लोमडीकी तरह भाग जानेकी अपेक्षा शेरकी तरह लड ! शेरके हाथमे तलवार है क्या ?

— अज्ञात

अहिंसा और कायरता परस्पर विरोधी शब्द है। अहिंसा सर्वश्रेष्ठ सद्गुण है, कायरता बुरीसे बुरी बुराई है। अहिंसाका मूल प्रेममे है, कायरताका घृणामे। अहिंसक सदा कष्ट-सहिष्णु होता है, कायर सदा पीडा पहुँचाता है। सम्पूर्ण अहिंसा उच्चतम वीरता है।

— गान्धी

अगर कोई आदमी बहुत-से बच्चे पैदा करे और उनका पालन-पोषण करे, इसमे उसकी कोई तारीफ नही है, इसमे सच्चा पराक्रम नही है, क्योंकि कुत्तियाँ और बिल्लियाँ भी बच्चे पैदा करती और उनकी परवरिश करती है। सच्ची वीरता अपना धर्मपालन करनेमे है, ऐसी वीरता अर्जुनने दिखायी थी।

— रामकृष्ण परमहस

सच्ची वीरता अर्जुनमे थी, वह जिसे अपना कर्तव्य या करने लायक काम समझता था, उसे अवश्यमेव करता था।

— रामकृष्ण परमहस

वीरता खुदको फिरसे सँभाल लेनेमे है।

— एमर्सन

वीरतामे हमेशा सुरक्षा है।

— एमर्सन

वीरता क्या है ? निर्भय और बेधडक होकर अपनेको बडेसे बडे कष्ट और खतरेका सामना करनेके लिए तैयार रखना।

— हरिभाऊ उपाध्याय

वीरांगना

जो स्त्री मरनेके लिए तैयार है उसे कौन दुष्ट एक शब्द भी बोल सकता

है। उसकी आँखोमे ही इतना तेज होगा कि सामने खडा हुआ व्यभिचारी पुरुष जहाँका तहाँ ढेर हो जायेगा। — गान्धी

वृत्ति

प्रवृत्ति और निवृत्ति ये दो वृत्तियाँ सब जीवोमें होती हैं। सयममे प्रवृत्ति रखो, और असयममें निवृत्ति। — 'साधक सहचरी'

वृत्तियोका क्षय करना ही सब शास्त्रोका सार है। हर-एक पदार्थकी तुच्छताका विचार कर वृत्तिको बाहर जाते हुए रोकना चाहिए और उसका क्षय करना चाहिए। — अज्ञात

अपनी वृत्तिकी गुलामीसे बढकर कोई दूसरी गुलामी आज तक नही देखी। मनुष्य स्वय अपना शत्रु है और वह चाहे तो अपना मित्र भी बन सकता है। — गान्धी

वृद्धि

जो बढना बन्द कर देता है घटना शुरू हो जाता है। — एमील

वेतन

वेतन-शून्य पदोसे चोरोकी सृष्टि होती है। — जर्मन कहावत

वेद

जो ज्ञानी आदमी हकीकतको जान गया है, उसके लिए तमाम वेद वैसे ही बेकार हैं जैसे उस जगह जहाँ पानी-ही-पानी भरा हो, एक छोटा-सा कुँआ। — गीता

वैद्य

सयम और परिश्रम आदमीके दो वैद्य है। — रूसो

व्यायाम, सयम, ताजी हवा और जरूरी आराम सर्वोत्तम वैद्य है। — अज्ञात

वैधव्य

बलपूर्वक पालन कराया गया वैधव्य पाप है। — गान्धी

वैभव

सासारिक वैभव जो चाहता है उससे वह दूर भागता है, और जो नही चाहता उसके पीछे पीछे रहता है। – स्वामी रामतीर्थ

यदि तू सत्यका ही उपासक है तो दुनियाकी वैभव-विभूतियाँ तेरे सामने अपने-आप आती चली जायेंगी, किन्तु तू उन्हे मुसकराकर अस्वीकार करता चला जायेगा। – हरिभाऊ उपाध्याय

धर्मका भूषण वैराग्य है, वैभव नही। – गान्धी

वैर

जब भगवान् निज मुखसे कहते है कि वे सब प्राणियोमे विहार करते है तो हम किसमे वैर करें ? – गान्धी

हिरन, मछली और सज्जन क्रमश तिनके, जल और सन्तोषपर अपना जीवन निर्वाह करते है पर शिकारी, मछुवा और दुष्ट लोग अकारण ही इनस वैर-भाव रखते है। – भर्तृहरि

वैराग्य

वैराग्यकी पहली अवस्थामे ईश्वरपर विश्वास उत्पन्न होता है, दूसरी अवस्थामे सहनशीलता बढती है, और तीसरी, अन्तिम अवस्थामे ईश्वरके प्रति प्रेम प्रकट होता है। – हातिमहासम

वैराग्य ईश्वर-प्राप्तिका गूढ उपाय है उसके तो गुप्त रखनेमे ही कल्याण है जो अपना वैराग्य प्रकट करते हैं उनका वैराग्य उनसे दूर भाग जाता है। – शाहशुजा

वैराग्यकी विवेकमुक्तता ही वैराग्यकी दृढता है। – विनोबा

श्मशान, दु ख और गरीबीमे किसको विरक्ति नही होती ? मगर सच्चा वैराग्य वह है जो अन्दरसे स्फुरित होता है और परम कल्याण तक ले जाता है। – अज्ञात

वैषयिकता

अगर वैषयिकतामे सुख होता, तो आदमियोसे जानवर ज्यादा सुखी होते, लेकिन इनसानका आनन्द आत्मामे रहता है, गोश्तमे नही । – सैनेका

वोट

वोटोको तौलना चाहिए, गिनना नही । – शिलर

ईमानदार आदमीकी वोट सारे ब्रह्माण्डकी दौलतसे भी नही खरीदी जा सकती । – ग्रिगरी

व्यक्ति

बाहरकी हर चीज़ व्यक्तिसे कहती है कि वह कुछ नही है, अन्दरकी हर चीज़ उसे प्रेरित करती है कि वह सब कुछ है । –दोदन

समाज, राष्ट्र, बल्कि हर चीजसे व्यक्तिवैशिष्ट्य बढकर है ।
– स्वामी रामतीर्थ

जो बात एक व्यक्तिपर लागू पडती है वही बात सारे राष्ट्रपर भी लागू पडनी चाहिए । – विवेकानन्द

व्यक्तित्व

जो व्यक्तित्वको कुचले वह अत्याचारी है, उसका नाम चाहे जो कुछ रख लिया जाये । – जे० एस० मिल

हर मनुष्य इसलिए है कि उसका अपना चारित्र हो, अद्वितीय बने, और वह करे जो कोई और नही कर सकता । – चैनिग

जो कुछ तुम हो तुम वही सिखाओगे, जानकर नही बल्कि अनजाने । कुछ न कहो । जो कुछ तुम हो तुमपर हर वक्त सवार है, और ऐसा गरज रहा है कि उसके खिलाफ तुम जो कुछ कहते हो उसे मै नही सुन सकता ।
– एमर्सन

व्यभिचार

किसी स्त्रीके सतीत्वको भग करनेसे पहले मर जाना बहुत ही उत्तम कार्य है। — गान्धी

जो पर-स्त्रीको कुदृष्टिसे देखता है वह मानसिक व्यभिचार करता है। — ईसा

जब आदमी जिनाकारी (व्यभिचार) करता है, ईमान उसे छोड जाता है। — मुहम्मद

व्यभिचारीको इन चार चीजोसे कभी छुटकारा नही मिलता—घृणा, पाप, भय और कलक। — तिरुवल्लुवर

ज़िना (व्यभिचार) करनेवाले मरद या औरत हर-एकको सौ कोडोकी सजा देनी चाहिए, इस बातमे उनपर रहम खाकर अल्लाहके हुक्मको नही तोडना चाहिए। — कुरान

व्यर्थ

रोगी शरीरके लिए सुखभोग व्यर्थ है, हरिभक्तिके बिना जप योग व्यर्थ है। — रामायण

व्यवस्था

जब मनमे गहरी अव्यवस्था होती है, हम बाहरी व्यवस्था नही रखते। — शेक्सपीयर

व्यवहार

आध्यात्मिक व्यवहार माने स्वाभाविक व्यवहार माने शुद्ध व्यवहार माने नीतियुक्त व्यवहार। — विनोबा

दुनियाको वैसी लेकर चलो जैसी वह है न कि जैसी वह होनी चाहिए। — जर्मन कहावत

जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। दुष्टके साथ दुष्टता और सज्जनके साथ सज्जनता दिखलानी चाहिए। — विदुर

सद्व्यवहार प्रभावक होता है क्योंकि वह वास्तविक शक्तिका परिचायक है।
— एमसन

आत्म-निर्भरता सद्व्यवहारका आधार है। — एमर्सन

ज़रा सोचो, तुम्हारा सुख कितना ज्यादा इस बातपर निर्भर है कि और लोग तुमसे कैसे पेश आते हैं! इस बातको घुमाकर देखो, और याद रखो कि उसी तरह तुम भी अपने वर्तनसे लोगोंको सुखी या दुखी बना रहे हो।
— जॉर्ज मैरियम

यह भी एक बुद्धिमानीका काम है कि मनुष्य लोक-रीतिके अनुसार व्यवहार करें। — तिरुवल्लुवर

व्याख्यान

ऐ अपनी वक्तृतासे विद्वानोंको प्रसन्न करनेकी इच्छा रखनेवाले लोगो, देखो, कभी भूलकर भी मूर्खोंके सामने व्याख्यान न देना। — तिरुवल्लुवर

व्यापार

'सस्तेसे सस्ता ख़रीदना और महँगेसे महंगा बेचना' इस नियमके बराबर मनुष्यके लिए कलंकरूप दूसरी कोई बात नहीं है। — गान्धी

व्यापारी

मायाचारियों (छलियों)के बाद, शैतानके सबसे बड़े फरेबखुर्दा लोग वे हैं जो व्यापारके कष्टों और निराशाओंमें चिन्तातुर हस्ती बसर करते हैं, और दुखी और नीच होकर जीते हैं सिर्फ इसलिए कि वे धनी कहलाकर शानसे मर सकें—वे बिना मज़दूरी पाये शैतानकी खिदमत करते रहते हैं, और धनवान् होकर मरनेकी खोखली हिमाकतके लिए अपनी तन्दुरुस्ती, सुख और ईमानदारीको कुर्बान करते हैं। — कोल्टन

व्यायाम

व्यायामसे शरीर हलका होता है, काम करनेकी ताकत बढ़ती है, मन स्थिर

होता है, कष्ट सह सकनेकी शक्ति आती है, सब दोषोका नाश होता है, जठरानल तेज होता है। – अज्ञात

व्रत

व्रत बन्धन नही, स्वतन्त्रताका द्वार है। – गाँव

व्रती

व्रती जब अखण्ड व्रत धारण कर लेता है तब वह अपनी दोनो आँखोके सामने अपनी प्रतिज्ञाको रख लेता है और तेज तलवारकी तरह कर्मक्षेत्रमे प्रविष्ट हो जाता है। – सआद-बिन-नाशिब

■

श

शक्ति

पशुबल कभी आदमीको नही समझा सकता, वह उसे महज ढोंगी बना देता है। – फेनेलन

प्रत्येक बुद्धिमान्, जो कार्यशक्ति-विहीन है, असफल रहेगा। – चैम्फर्ट

शक्ति शारीरिक क्षमतासे नही उत्पन्न होती, वह अजेय सकल्प (या इच्छासे) उत्पन्न होती है। – गान्धी

यह दुनिया शक्तिशालीकी है। – एमर्सन

'जहाँ धर्म वहाँ जय', यह बिलकुल सत्य है मगर धर्मके पीछे शक्ति चाहिए नही तो अधर्मका ही अभ्युत्थान होता है। – अरविन्द घोष

शक्तिका एक स्रोत यह है कि हम इन्तज़ार करना, साथ ही परिश्रम करना सीखें। – अज्ञात

शक्ति कभी उपहासास्पद नही है। – नैपोलियन

शक्ति प्रसन्नताके साथ रहती है। — एमर्सन

शक्तिका कण-कण, कर्त्तव्यपालन है। — जॉन फॉस्टर

इनसानकी कार्य-शक्तियोका माप नही हुआ, न हम गुजरी हुई घटनाओसे फैसला कर सकते है कि वह क्या कर सकता है, इतने कमकी आजमाइश हुई है। — थोरो

तेरा शुक्र है कि मै शक्तिके पहियोमे-से नही हूँ, बल्कि मै उन सचेतन प्राणियोके साथ हूँ जो उससे कुचले जाते है। — टैगोर

दुनियामे सबसे शक्तिमान् मनुष्य वह है जो सबसे ज्यादा अकेला खडा हुआ है। — इब्सन

आत्माका आनन्द उसकी शक्तिका परिचायक है। — एमर्सन

जो शक्ति अपनी शरारतकी शेखी बघारती है उसपर गिरती हुई पीली पत्तियाँ और गुज़रते हुए बादल हँसते हैं। — टैगोर

ज्ञान ही शक्ति है। — विवेकानन्द

मनुष्योकी निर्जीवता ही शक्ति-मदमत्तोकी उद्धतताको आमन्त्रित करती है। — एमर्सन

शक्ति बिना शिव शव-तुल्य है। — अज्ञात

अपनी खुदकी शक्तिपर हम विश्वास कर रहे हो, तो शायद हम सफल न होगे। किन्तु ईश्वरकी शक्तिपर विश्वास करें तो घने अन्धेरेमे भी प्रकाश दिखाई देगा। — गान्धी

शक्ति युक्ति नही है। — जॉन ब्राइट

शत्रु

अगर हम अपने शत्रुओकी गुप्त आत्म-कहानियाँ पढें, तो हमे प्रत्येकके जीवनमे इतना दुःख और शोक-भरा मिलेगा कि फिर हमारे मनमे उनके लिए ज़रा भी शत्रुभाव नही रहेगा। — अज्ञात

हर्ष और शोक ये दोनो ही शत्रु है। — अज्ञात

इन तीन बातोको अपना परम शत्रु समझो—धनका लोभ, लोगोंसे मान पानेकी लालसा और लोक-प्रिय होनेकी आकाक्षा। – अबु उस्मान

आदमीका खुद अपनेसे बडा कोई दुश्मन नही है। – पेट्रार्क

शत्रुता

ज़िन्दगी छोटी है। मै उसे शत्रुता बसाये रखने या अपराधोको यादमे नही गुज़ारना चाहता। – ब्राउट

शब्द

नर्म लफ्ज सख्त दिलोको जीत लेते है। – अँगरेजी कहावत

कोई वक्ता या लेखक तबतक कदापि सफल नही होता जबतक वह अपने शब्दोको अपने विचारोसे छोटा बनाना न सीख ले। – एमर्सन

शब्द पत्तियोकी तरह है, और जब उनकी सर्वाधिक बहुलता होती है, तो उनके नीचे समझदारीका फल शायद ही कभी मिलता हो। – पोप

शरण

हे प्रभु, ये तन्द्रा-भरी आँखें और यह भूखा पेट तो बहुत ज़ुल्म करते हैं, इनसे छुटकारा पानेके लिए मै तेरी शरण आया हूँ। – आविस

इस जगत्मे अपने लिए मैने आश्रय-स्थान खोजा, पर वह कही भी न मिला। – बुद्ध

जिसने भगवान्की शरण ली है, उसके कदम नही डगमगाते।
– रामकृष्ण परमहस

अपने लिए स्वय दीपक बनो। अपनी ही शरण लो। आलोककी भाँति सत्यका आश्रय लो। – बुद्ध

शरणागति

उसीकी शरणमे सर्वभावसे जाओ—उसीकी कृपासे परम शान्ति मिलती और शाश्वत धाम प्राप्त होता है। – गीता

शराफत

वाहियात और गन्दे शब्द भूलकर भी शरीफ आदमीकी जबानसे नही निकलेंगे। — तिरुवल्लुवर

सच्ची शराफत भयरहित होती है। — शेक्सपीयर

शान्ति और प्रसन्नता शराफतकी अलामत है। — एमर्सन

शरीर

शरीर तेरा नही, तुझे सौंपी गयी ईश्वरकी वस्तु है। अत उसकी रक्षाके लिए तुझे अवश्य समय देना चाहिए। — गान्धी

ऐ शरीरके सेवक, तू कबतक इसकी सेवामे लगा रहेगा ? क्या तू उस चीजमे लाभ उठाना चाहता है जिसमे घाटा-ही-घाटा है ? — अबुल-फतह-बुस्ती

अरे, यह चमडी क्या ऐसी चीज है कि लोग अपनी इज्जत बेचकर भी इसे बचाये रखना चाहते है। — तिरुवल्लुवर

बुद्धिमान् लोग जानते है कि यह जिस्म तो मुसीबतोका निशाना है—तख्त-ए-मश्क है, इसलिए जब उनपर कोई आफत आ पडती है तो वे उसकी कुछ परवाह नही करते। — तिरुवल्लुवर

शरीर-रक्षण

मै शरीरके रक्षणका दातार नही, केवल भाव-उपदेशका दातार हूँ। — भगवान् महावीर

शरीर-सुख

शरीरको सुखी रखना, बस यही 'इतिकर्तव्यता है' ऐसा भ्रम किसीको उत्पन्न हो गया हो, तो समझना चाहिए कि वह मनुष्य पशुकोटिमें जानेके मार्गपर चल पडा है। पशु अकसर बीमार नही पडते, उनका स्वास्थ्य अकसर खराब नही होता, क्या इसलिए उन्हे उच्च कोटिके प्राणी कहा जायेगा ? — विवेकानन्द

शर्म

'इस वक्त मत शरमाओ' एक प्रसिद्ध इटैलियनने दुराचारके अड्डेसे निकलकर आते हुए अपने एक जवान रिश्तेदारसे मिलनेपर कहा, 'शरमानेका वक्त वह था जब तुम अन्दर गये थे।' – अज्ञात

शर्मिन्दा

आदमीको बदमाशियाँ करते देखकर मुझे कभी आश्चर्य नहीं होता, लेकिन उसे शर्मिन्दा न होते देख मुझे अकसर आश्चर्य होता है। – स्विफ्ट

शहीद

मृत्यु नहीं, मृत्युका कारण शहीद बनाता है। – नैपोलियन

शादी

अच्छी स्त्रीके साथ शादी ज़िन्दगीके तूफानमें बन्दरगाह है, बुरी स्त्रीके साथ, बन्दरगाहमें तूफान। – सैन

किसीने एक क्वांरे महात्मासे पूछा कि आप शादी क्यों नहीं कर लेते? बोले, एक भूत तो मेरा मन है, दूसरा मेरी स्त्रीका होगा। दो भूतोंकी सँभालका मुझमें बल नहीं। – अज्ञात

सुकरातसे जब एक नवयुवकने पूछा कि वह शादी करे या नहीं, तो उसने जवाब दिया, 'करोगे तो पछताओगे, न करोगे तो पछताओगे।' – प्लूटार्क

शादीके पहले अपनी आँखें खूब खुली रखो, शादीके बाद आधी बन्द। – फ्रैंकलिन

शादी ज़रूर करना। अच्छी पत्नी मिली तो सुखी होगे, और खराब तो तत्त्वज्ञानी। यह भी क्या खराब है? – सुकरात

शान

कोई जाति खुशहाल नही हो सकती जबतक वह यह न सीख ले कि खेत जोतनेमें उतनी ही शान है जितनी कि कविता लिखनेमें ।

— बुकर टी-वाशिंग्टन

सच्ची शान अपने ही ऊपर मौन-विजयसे उमडती है, और उसके बगैर विजेता अव्वल नम्बरके गुलामके अलावा कुछ भी नही है । — थॉम्पसन

सयम, आनन्दोपभोगका सुनहरा नियम है । — लैण्डन

हमारी सबसे बडी शान कभी न गिरनेमे नही है, बल्कि जब-जब हम गिरें हर बार उठनेमे है । — कन्फ्यूशियस

शाप

जो कोई तुम्हे कोसे तुम उसे कदापि न कोसो । याद रखो क्रोधीके शापसे आशीषका फल मिलता है । — रैदास

शाप आसमानकी ओर फेंके हुए पत्थरके समान है और बहुत करके वह लौटकर उसके सिरपर गिरता है, जिसने उसे फेंका था । — स्काट

शासक

मै यह हरगिज़ नही मान सकता कि ईश्वरने चन्द आदमियोको पहलेसे बूट पहनाकर खडा किया है और एड लगाकर सवारी गाँठनेके लिए दुनियामे भेजा है और करोडोको पहलेसे ज़ीन कसकर और लगाम चढाकर बोझा ढोनेके लिए । — रिचर्ड रम्बोल्ड

अगर जनता अपने शासकोके वास्तविक स्वार्थ और अन्यायको जान जाये, तो कोई गवर्नमेण्ट एक वर्ष भी न टिके—दुनियामें क्रान्ति मच जाये ।

— थ्योडोर पार्कर

शासन

दुनिया सिर्फ ज्ञान और शक्तिसे शासित है । — अज्ञात

जो अपने ऊपर शासन नही कर सकता, वह आज़ाद नही है ।
— पिथागोरस

जिन्होने शासन करनेका स्वाद चखा, उन्हें वह स्वादिष्ट लगा, पर इस मधुमें विष है । — इब्न-उल-वर्दी

मजहबी शासन निकृष्टतम अत्याचार है । — डीन इगे

इससे अधिक आश्चर्यकारक कुछ नही कि किस आसानीसे मुट्ठी-भर लोग लाखोपर शासन करते हैं ! — ह्यूम

शास्त्र

शास्त्रका काम उँगलीकी तरह ब्रह्म-चन्द्रको दिखाना है । — अज्ञात

शास्त्रका काम ईश्वरका केवल रास्ता बताना है । एक बार आपको रास्ता मालूम हो गया, फिर किताबोमे क्या फायदा है ? तब तो एकान्तमें ईश-लीन होकर आत्मविकास करनेका समय है । — रामकृष्ण परमहस

शास्त्रार्थ

शास्त्रार्थ एक अन्धा कुँआ है । जो उसमें गिरता है वह मरता है ।
— गुजराती भक्त कवि अखा

शान्ति

जो पूर्ण सद्गुणशील है उसे आन्तरिक अशान्ति नही होती ।
— कन्फ्यूशियस

मौनके वृक्षपर शान्तिका फल लगता है । — अरबी कहावत

जो जगत्की थोडी-सी चीज़ोंसे ही सन्तोष कर लेता है, वह सच्ची शान्ति पाता है । — जुन्नुन

ईश्वरसे एक हो जाना ही शान्त होना है । — ड्राइन

अगर तुम घरमें शान्ति चाहते हो, तो तुम्हें वह करना चाहिए जो गृहिणी चाहती है । — डेनिश कहावत

मनुष्यकी शान्तिकी कसौटी समाजमे ही हो सकती है, हिमालयकी टोचपर नही। – गान्धी

जो निर्जनतासे डरता है और लोगोके सगसे खुश होता है वह अपनी शान्ति खोता है। – फ़जल अयाज

पहले स्वय शान्त बन तभी औरोमे शान्तिका सचार कर सकता है। – थॉमस केम्पी

विपत्तिको सह लेनेमे अचरज नही, अचरज है वैसी हालतमे भी शान्त रहनेमे। – जुन्नुन

शान्ति उत्तम है। मगर उस अवसरपर शान्ति अच्छी नही जब कि अत्याचारके तौरपर तू धूपमे बिठाया जाये। – मुगर-बिन-सईद

जीवन और व्यवहारकी सादगीसे मनको शान्ति मिलती है। – अज्ञात

जो न तो लोगोको खुश करनेकी लालसा रखता है न उनके नाखुश होनेसे डरता है, बडी शान्तिका आनन्द लेता है। – केम्पिस

शान्त रहो, सौ वर्ष बाद यह सब एक हो जायेगा। – एमसन

शान्तको शान्ति शायद ही कभी न मिलती हो। – शिलर

यदि बुराई करके तू ईश्वरका गुनहगार बन चुका है तो लोक-समाजमे अपनेको निर्दोष सिद्ध करके तू आन्तरिक शान्ति कैसे पा सकता है?

– अज्ञात

पहले प्रेम, फिर त्याग, तब शान्ति। – अज्ञात

कहना बडा स्वादिष्ट होता है—दिन-भर कहता रहता है। वैसा ही सुननेका स्वाद होता है। जिसे न कुछ कहना है, न कुछ सुनना वही शान्ति पाता है। – शीलनाथ

अगर तुम्हे अपनेमे ही शान्ति नही मिलती तो बाहर उसकी तलाश व्यर्थ है। – रोशे

शान्ति सुखका सबसे सुन्दर रूप है। – चैनिंग

मेरी शान्ति और मेरे विनोदका रहस्य है मेरी ईश्वर यानी सत्यपर अचल श्रद्धा। मैं जानता हूँ कि मैं कुछ कर ही नहीं सकता हूँ। मुझमें ईश्वर है, वह मुझसे सब कुछ कराता है, तो मैं कैसे दुःखी हो सकता हूँ? यह भी जानता हूँ कि जो कुछ मुझसे कराता है, मेरे भलेके ही लिए है। इस ज्ञानसे भी मुझे खुश रहना चाहिए। — गान्धी

शान्ति ठीक वहाँसे शुरू होती है जहाँ महत्त्वाकांक्षाका अन्त हो। — यंग

जहाँ मन हिंसासे मुड़ता है वहाँ दुःख अवश्य ही शान्त हो जाता है। — बुद्ध

जहाँ वासना है, वहाँ शान्ति नहीं, जहाँ शान्ति है वहाँ वासना नहीं। — अज्ञात

तुझे शान्तिका आनन्द मिलेगा अगर तेरा दिल तुझे कोसे नहीं। — थॉमस

विश्वास और शान्तिका त्याग प्राणोत्सर्ग हो जानेपर भी न करो। — विवेकानन्द

आनन्द उछलता-कूदता जाता है शान्ति मुसकराती हुई चलती है। — हरिभाऊ उपाध्याय

मनकी शान्ति और आनन्दका सिर्फ़ एक उपाय है, और वह यह कि बाहरी चीज़ोंको अपनी न समझे, और सब कुछ परमात्माके हवाले कर दे। — एपिक्टेटस

शान्ततामें एक शाही शान है। — वाशिंग्टन इर्विंग

यहाँ शान्ति, सौम्यता और सत्संगति। — शेक्सपीयर

अगर शान्ति पाना चाहते हो तो लोक-प्रियतासे बचो। — अब्राहम लिंकन

वही मरज़ी रखना जो ईश्वरकी मरज़ी है, बस यही वह साइन्स है जो हमें विश्रान्ति देती है। — लौंगफैलो

दुनियाकी तमाम शान-शौकतसे बढ़कर है, आत्म-शान्ति-स्थिर और शान्त अन्तरात्मा । — शेक्सपीयर

शान्त खुशियाँ सबसे ज्यादा देर टिकती है । — बोवी

शिकायत

अपनी स्मरण-शक्तिकी हर कोई शिकायत करता है, अपनी निर्णायक बुद्धिकी कोई नही । — रोशे

मैंने शिकायतके पुरगम प्रलाप और बुज़दिलाना दुर्बल निश्चयसे हमेशा नफरत की है । — बर्न्स

कभी शिकायत न करो, कभी सफाई न दो । — डिसराइली

जब किसीको यह शिकायत करनेका भाव हो कि उसकी कितनी कम परवाह की जाती है, तो वह सोचे कि वह दूसरोकी आनन्दवृद्धिमे कितना योगदान देता है । — जॉनसन

शिव

योगीजन शिवको आत्मामे देखते है, मूर्तिमे नही । जो आत्मामें रहनेवाले शिवको छोडकर बाहरके शिवको पूजते है वे हाथमें रखे हुए लड्डूको छोडकर अपनी कोहनीको चाटते है । — शकराचार्य

शिक्षण

अन्तर्मुखता ही सच्चे शिक्षणकी शुरूआत है । — स्वामी रामतीर्थ

जानकारसे सीखो, जो खुद ही अपनेको सिखाता है उसने एक मूर्खको अपना शिक्षक बना रखा है । — फ्रैंकलिन

पक्के ज्ञानकी एकमात्र पहचान है सिखानेकी शक्ति । — अरस्तू

आदमीको ऐसा सिखाना कि वह आजाद रहकर अपना विकास कर सके, शायद यह सबसे बडी सेवा है जो एक आदमी दूसरेके प्रति कर सकता है । — बेंजामिन जोवेट

इस ससारमे एक ही शिक्षण लेनेकी जरूरत है, और वह है प्रेमका शिक्षण । — स्वामी रामतीर्थ

मूर्ख ज्ञानियोसे कुछ नही सीखते, लेकिन ज्ञानी मूर्खोंसे बहुत कुछ सीख लेते है।
– डच कहावत

शिक्षा

वास्तविक शिक्षाका आदर्श यह है कि हम अन्दरसे कितनी विद्या निकाल सकते हैं, यह नही कि बाहरसे कितनी अन्दर डाल चुके है।
– स्वामी रामतीर्थ

शिक्षाका चरित्र निर्माण एकमात्र नही तो महान उद्देश्य अवश्य है।
– ओशो

शिक्षाके मानी ये नही कि उन्हे वह सिखाया जाये जिसे वे नही जानते, उसके मानी है उन्हें ऐसा वर्तन करना सिखाना जैसा वर्तन कि वे नहीं करते।
– रस्किन

अगर आदमी सीखना चाहे तो उसकी हर-एक भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।
– गान्धी

उन विषयोका पढना जो हमारे जीवनमे कभी काम नही आते, शिक्षा नहीं है।
– स्वामी रामतीर्थ

शिक्षाका सही नियम या तरीका यह है कि सर्वोत्तम पात्रके प्रति सर्वाधिक परिश्रम करो। खराब ज़मीनपर कभी श्रम न गँवाओ, परन्तु अच्छी, या अच्छी होनेकी क्षमता रखनेवाली भूमिपर कोई कसर न रखो। – रस्किन

मुझे ज़्यादा पसन्द है कि लोग मुझे सीख देते हुए मुझपर हँसें, बनिस्बत इसके कि वे मुझे कुछ भी फ़ायदा पहुँचाये बगैर मेरी तारीफ करें। – गेटे

ज्ञानी विवेकसे सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभवसे, मूर्ख आवश्यकतासे और पशु वृत्तसे।
– सिसरो

हर आदमीके शिक्षणका सर्वोत्तम भाग वह है जो वह स्वय अपने लिए देता है।
– सर वाल्टर स्कॉट

शिक्षाका, असूलन्, पहला काम यह हो कि वह इच्छा-शक्तिको क्रिया-शीलताकी ओर प्रेरित करे। — जुकारी

शिक्षासे तात्पर्य है मनुष्य और बच्चोंके शरीर, मस्तिष्क तथा आत्माका सुन्दरतम रूप निखारना। — गान्धी

सच्ची शिक्षाके मानी हैं, ईश्वरकी आँखोंसे चीज़ोंको देखना सीखना। — स्वामी रामतीर्थ

तमाम शिक्षाका सबसे क़ीमती फल यह होना चाहिए कि तुम्हें जो काम जब करना चाहिए तब कर सको, ख्वाह तुम उसे पसन्द करते हो या न करते हो। — थॉमस हक्सले

आत्म-त्याग सिखानेवाली निकृष्टतम शिक्षा उस उत्कृष्टतम शिक्षासे बेहतर है जो सिवा उसके सब-कुछ सिखाती है। — स्टर्लिंग

दुनियाकी निन्दा-स्तुतिके भरोसे चलनेवालेकी मौत है, अपने हृदयपर हाथ रखकर चल। — अज्ञात

सच्ची शिक्षाका पूर्ण ध्येय यह है कि न केवल वह सचाईको बताये बल्कि उसपर अमल भी कराये। — मेरी बेकर ऐडी

सच्ची शिक्षाका समूचा उद्देश्य लोगोंको ठीक कार्योंमें रत कर देना ही नहीं, बल्कि उन्हें ठीक कार्योंमें रस लेने लायक बना देना है। — रस्किन

शिक्षाका विरोध हमेशा वे लोग करते हैं जो अत्याचार करके लाभ उठाया करते हैं। — अज्ञात

शील

शील मनुष्यका प्रधान गुण है। जिसमें यह गुण नष्ट हो गया उसका जीवन, धन, जन, सब फिज़ूल है। — अज्ञात

शील वह दौलत है जो प्रेमकी बहुलतासे आती है। — टैगोर

मनके कर्म मिटाने हैं? विचारसे वे बढ़ते हैं घटते नहीं? — शोलनाथ

विद्याका जेवर शील है । — अज्ञात

शुद्धता

सब शुद्धताओमे धनकी शुद्धता सर्वोत्तम है, क्योकि शुद्ध वही है जो धनको ईमानदारीसे कमाता है, वह नही, जो अपनेको मिट्टी और पानीसे शुद्ध करता है । — अज्ञात

शुद्धि

एक मनुष्य दूसरेको शुद्ध नही कर सकता, अपनी शुद्धि अपने ही किये होती है । — बुद्ध

मैं उसके लिए प्रेम रखता हूँ जिसका बाहर और भीतर अपने मित्रके लिए शुद्ध हो । — अहमद अरजानी

शुभ कार्य

तुम विजयके इतने नजदीक कभी नही हो जितने जब कि तुम किसी नेक काममें हार खा जाओ । — बीचर

एक शुभ कार्य ईश्वरकी तरफ एक क़दम है । — हॉलैण्ड

शूर

जिस तरह एक ही तेजस्वी सूर्य सारे जगत्को प्रकाशित करता है; उसी तरह एक ही शूरवीर सारी पृथ्वीको पाँव-तले दबाकर अपने वशमें कर लेता है । — भर्तृहरि

सच्चा शूर वह है जो दुनियाके प्रलोभनोके बीच रहता हुआ पूर्णता प्राप्त करता है । — रामकृष्ण परमहंस

शूर समरमे करके दिखाते हैं, कहकर नहीं । मगर कायर लोग मैदानमें दुश्मनको पाकर बकवाद करने लगते है । — रामायण

शैतान

मुझे उस शख़्सपर ताज्जुब आता है जो शैतानको दुश्मन जानता है और फिर उसका कहा मानता है । — अज्ञात

शैतानके सामने डट जाओ तो वह भाग खडा होगा । – अज्ञात

शैतानमें खुशगवार शक्ल अख्तियार करनेकी शक्ति है । – शेक्सपीयर

भाई, भूलो मत ! शैतान कभी नहीं सोता । – थॉमस कैम्पी

जिस समय दुईकी भावनाएँ जाग्रत होती है, तभी शैतान ठगने पाता है । – आविस

मानवजातिका वास्तविक शैतान इनसान हैं । – फारसी कहावत

शैली

शैली विचारोंकी पोशाक है – शोपेन होर

बोलने या लिखनेमें अच्छी शैलीकी एक अत्यन्त महत्त्वपूण शर्त है बेखबरी । – आर० एस ह्वाइट

शैलीके दो बडे दोष है—अस्पष्टता और कृत्रिमता । – मैकोले

सामान्यतया, शैली लेखकके मनका प्रतिबिम्ब होती है । यदि आपको प्रसादगुणयुक्त शैलीमें लिखना है, तो पहले स्वय आपका दिमाग़ रोशन हो, और अगर आप शानदार शैलीमें लिखना चाहते हैं, तो आपका चारित्र्य शानदार होना लाजिमी है । – गेटे

शोक

पुत्र मरे या पति मरे, उसका शोक मिथ्या है और अज्ञान है । – गान्धी

मेरी दृष्टिमें उस आनन्दमे अतीव शोक है, जिसके चले जानेका विश्वास आनन्द माननेवालेको है । – मुतनब्बी

शोभा

कानकी शोभा शास्त्र-श्रवणसे है, कुण्डलसे नही, हाथकी शोभा दानसे है, ककणसे नही, दयालु लोगोंके शरीरकी शोभा परोपकारसे है, चन्दनसे नही । – भर्तृहरि

शोषण

यह कहना कि हम अफरीकामें वहांके निवासियोका उद्धार करनेके लिए रहते हैं सरासर धूर्तता है। – एलन अपवर्ड

कैसी विभूति! कैसी लताफत! कैसी दौलत! परन्तु सब दूसरेकी मेहनतमें-से खीची हुई! – ई० कार्पेन्टर

शोहरत

जो मनुष्य मशहूर नही है वह सुखी है। बढ़िया कुरता और कम्बल नही पहनता तो अच्छा करता है। ऐसा आदमी ही चिडियाकी तरह ऊपर आकाशमे उड जाता है और इस संसारके उजाड-खण्डका उल्लू नहीं बनता। – शब्सतरी

मै मशहूर तो हूँ, मगर इस झूठी शोहरतसे मै शर्मिंदा हूँ। – शब्सतरी

खूनके समन्दर बहानेकी बनिस्बत एक आँसू पोछनेमे ज्यादा सच्ची शोहरत है। – बायरन

श्रद्धा

मनुष्य श्रद्धामय है। जिसकी जैसी श्रद्धा है, वैसा ही वह है। – गीता

नये क़रारमे यह वाक्य है 'तेरे दिलमे न चिन्ता रहे, न तू किसीका भय रखे।' यह वचन उसके लिए है जो परमात्माको मानता है। – गान्धी

श्रद्धाके मानी अन्ध-विश्वास नही है। किसी ग्रन्थमे कुछ लिखा हुआ या किसी आदमीका कुछ कहा हुआ अपने अनुभव बिना सच मानना श्रद्धा नही है। – विवेकानन्द

श्रद्धाका अर्थ है आत्म-विश्वास, और आत्म-विश्वासका अर्थ है ईश्वरपर विश्वास। – गान्धी

श्रद्धा वह चिडिया है जो प्रकाशका अनुभव कर लेती है और अँधेरे प्रभातमे गाने लगती है। – टैगोर

जिसकी आंखोंके सामने ईश्वर दिखता है वह ज्ञानी हो गया। परन्तु मेरी पीठ पीछे ईश्वर खडा हुआ है, इतनी श्रद्धा स्थिर हुई तो भी साधकके लिए काफी है। — विनोबा

जो जिसकी पूजा श्रद्धासे करना चाहता है परमेश्वर उसे उसीमें श्रद्धा देते है। जो फल उन लोगोंको प्राप्त होते है वे भी ईश्वर ही के ठहराये हुए हैं, लेकिन उन नासमझोंके ये फल नाश होनेवाले यानी फानी है। देवताओंकी पूजा ,करनेवाले देवताओंको पहुँचते है और एक परमेश्वरकी पूजा करनेवाले परमेश्वरको। — गीता

जो काम बिना श्रद्धा, बेदिलीस, किया जाये वह न इस दुनियामें किसी कामका है, न दूसरी दुनियामे। — गीता

श्रद्धासे मनुष्य क्या नही कर सकता ? सब कुछ कर सकता हैं। — गान्धी

श्रद्धालु मनुष्य पहलेसे तैयारी नही कर रखते। पहलेसे तैयारी करती है वह श्रद्धा नही, अथवा हो तो वह शिथिल श्रद्धा है। — गान्धी

मेरी श्रद्धा तो ज्ञानमयी और विवेकपूर्ण है। अन्ध श्रद्धा श्रद्धा ही नही। — गान्धी

श्रम

जो श्रमसे शरमाये वह हमेशाका गुलाम है। — अज्ञात

यह मूढ़ता है कि खाली कुँओमें डोल डालते रहे, खीचते रहें, और बिना कुछ पाये बूढे होते जायें। — कूपर

श्रम करनेमे ही मानवकी मानवता है। — विनोबा

श्रीमन्त

उदार आदमी देकर श्रीमन्त बनता है; कजूस सग्रह करके रक बनता है। — अज्ञात

प्राप्त वस्तुपर जो समाधानी है वह हमेशा श्रीमन्त है । – अज्ञात

श्रेष्ठ

सबसे श्रेष्ठ मनुष्य वह है, जो अपनी उन्नतिके लिए सबसे अधिक परिश्रम करता है । – सुकरात

सबको अपनी बुद्धि श्रेष्ठ मालूम होती है और अपने लडके सुन्दर मालूम होते है । – अज्ञात

जो इन्द्रियो और मनको नियममें रखकर अलिप्त रहकर कर्मेन्द्रियोसे काम करता है वह मनुष्य श्रेष्ठ है । – गीता

श्रेष्ठता

तू तलवारके फलसे अपना मतलब रख और उसके म्यानको छोड । मनुष्यकी श्रेष्ठताको ग्रहण कर न कि उसके वस्त्रोको । – इब्न-उल-वर्दी

■

स

सक्रियता

शुक्र है कि मै यह जाननेके लिए जीता रहा कि आनन्दका रहस्य अपनी शक्तियोको सक्रिय बनाये रखनेमें हैं । – आदम क्लार्क

सच्चरित्रता

सच्चरित्रताका महान् नियम, ईश्वरके बाद, समयका आदर करना है । – लैवेटर

सच्चा

देखो, जिस मनुष्यका हृदय झूठसे पाक है वह सबके दिलोपर हुकूमत करता है । – तिरुवल्लुवर

सच्चा भोजन वह है जो बच्चाको और बडोको खिलाकर खाया जाये। सच्चा प्रेम वह है जो गैरोके प्रति भी दरशाया जाये। सच्चा ज्ञान वह है जो पाप नही करता। सच्चा धर्म वह है जो दम्भ नही करता। – अज्ञात

सचाई

अगर तुम ईश्वरके प्रति सच्चे नही हो, तो तुम आदमीके प्रति कभी सच्चे नही हो सकते। – लॉर्ड चैथम

इस झूठमें भी सच्चाईकी खासियत है जिसके फलस्वरूप सरासर नेकी ही होती हो। – तिरुवल्लुवर

सच्चाई क्या है ? जिसस दूमरोको किसी तरहका जरा सा भी नुकसान न पहुँचे, उस बातको बोलना ही सचाई है। – तिरुवल्लुवर

अपने प्रति सच्च रहो और फिर दुनियामे किसी और चीजकी परवा न करो। – स्वामी रामतीर्थ

सज्जन

बुरा आदमी अपने मित्राके प्रति जितना मेहरबान होता है भला आदमी अपने शत्रुके प्रति उससे अधिक होता है। – बिशप हॉल

पेड तेज धूपको अपने सिरपर लेता है और सन्तप्तोको शीतल छाया देता है यही सज्जनोका भी स्वभाव होता है। – अज्ञात

जिनका चेहरा आनन्दस खिला हुआ है, जिनका हृदय दयासे भरा हुआ है, जिनकी वाणी अमृतकी तरह बहती है और जिनके कार्य परोपकारके लिए होते है, ऐसोका कौन सत्कार न करेगा। – अज्ञात

सज्जन यदि अत्यन्त कुपित भी हो गये हा तो भी उचित तरीकेसे मनाये जा सकते हैं, मगर नीच लोग नही। सोना सख्त है तो भी उसे पिघलाने-का तरीका है लेकिन घासके लिए नही है। – अज्ञात

सज्जन अपने स्वार्थकी अपेक्षा मित्रोके हितार्थ काम करते है। – अज्ञात

सज्जनोका स्वभाव ही है कि वे प्रिय बोलते है और अकृत्रिम स्नेह करते हैं। — अज्ञात

सज्जनता

तुम्हारे बल-प्रयोगको अपेक्षा तुम्हारी सज्जनता हमे सज्जनताकी ओर ले चलनेके लिए अधिक बलवती है। — शेक्सपीयर

सतीत्व-रक्षा

मेरा यह दृढ विश्वास है कि कोई भी स्त्री जो निडर है और जो दृढता-पूर्वक यह मानती है कि उसकी पवित्रता ही उसके सतीत्वकी सर्वोत्तम ढाल है उसका शील सर्वथा सुरक्षित है। ऐसी स्त्रीके तेजमात्रसे पशुपुरुष चौंधिया जायेगा और लाजसे गड जायेगा। — गान्धी

सत्कार

यदि तू किसी कुलीनका सत्कार करेगा तो उसका स्वामी बन जायेगा, और यदि किसी दुष्टका सत्कार करेगा तो वह तुझे दुःख देगा। — मुतनब्बी

सत्ता

शरीर-बलसे प्राप्त की हुई सत्ता मानवदेहकी तरह क्षणभगुर रहेगी, जब कि आत्म-बलसे प्राप्त-सत्ता आत्माकी तरह अजर और अमर रहेगी। — गान्धी

सत्पथ

हृदय सत्पथपर है तो न-कुछ जानकारीकी आवश्यकता है, और अगर वह कुमार्गपर है तो भारी विद्वत्तासे भी कुछ नहीं होना जाना। — स्पेल्डिंग

सत्पुरुष

जिनके तन, मन और वाणीमें पुण्यरूपी अमृत भरा है, जो अपने उपकारो-से तीनो लोकोको तृप्त करते है और जो दूसरेके परमाणु समान गुणोको

पर्वतके समान बढाकर अपने हृदयमें प्रसन्न होते हैं—ऐसे सत्पुरुष इस जगत्‌मे बिरले ही है। — भर्तृहरि

सत्पुरुष वह है जो दूसरोकी खातिर कष्ट उठाता है। — अज्ञात

सत्य

सत्य स्वय ही पूर्ण शक्तिमान है, और जब कड़े शब्दोके द्वारा उसकी पुष्टिका प्रयत्न किया जाता है तब वह अपमानित होता है। — गान्धी

सूर्यकी किरणोको और सत्यको किसी बाहरी स्पर्शसे बिगाडना असम्भव है। — जॉन मिल्टन

सत्य और प्रेम दुनियाकी सबसे अधिक शक्तिशाली चीज़ोमें-से है, और जब ये दोनो साथ हो तो उनका आसानीसे मुक़ाबला नही किया जा सकता। — कडवर्थ

स्वय सत्य भी अपनी साख खो बैठेगा, अगर ऐसे आदमी-द्वारा दिया गया जिसमें उसका अश भी नही है। — साउथ

मै प्रेसीडेण्ट होनेकी अपेक्षा सत्यपर कायम रहना अधिक पसन्द करूँगा। — हैनरी क्ले

सत्य केवल गम्भीर चिन्तन-द्वारा आत्माकी गहराइयोमे ही मिल सकता है। — अज्ञात

सत्यका सबसे बडा अभिनन्दन यह है कि हम उसपर चलें। — एमर्सन

सत्यकी हमेशा विजय ही है, ऐसी जिसकी सतत श्रद्धा है उसके शब्द-कोशम 'हार' शब्द ही नही है। — गान्धी

सत्य स्थिरतासे घिरा नही है, न अनुशासनसे परिबद्ध। काल भी सत्य ही है, काल जो बनने मिटनेका आधेय है। अतः स्थिरता सिद्धि नहीं, गति भी आवश्यक है। जीवन अस्तित्वसे अधिक कर्म है। — जैनेन्द्रकुमार

सत्य-प्रेमीके लिए शरीर, स्त्री, पुत्र, घर, धन, जमीन तिनकेके समान बतायी है। – रामायण

मनुष्य-जैसी उच्च योनिको पा लेनेसे भी कोई लाभ नहीं, अगर आत्माने सत्यका आस्वादन नहीं किया। – तिरुवल्लुवर

पृथ्वी सत्यके बलपर टिकी हुई है। 'असत्'–असत्य–के मानी हैं 'नहीं', 'सत्'—सत्य—अर्थात् 'है'। जहाँ असत् अर्थात् अस्तित्व ही नहीं है, उसकी सफलता कैसे हो सकती है? और जो सत् अर्थात् 'है' उसका नाश कौन कर सकता है? बस, इसीमें सत्याग्रहका तमाम शास्त्र समाया हुआ है। – गान्धी

जो सत्यको अपना पथप्रदर्शक बनाता है, और कर्त्तव्यको अपना ध्येय, वह ईश्वरकी कुदरतमें इत्मीनानके साथ विश्वास कर सकता है कि वह उसे सीधे रास्ते ले जायेगी। – पास्कल

सत्य गोपनीयतासे घृणा करता है। – गान्धी

हममें जितना धैर्य और ज्ञान होगा, सत्य उतना ही हमपर रोशन होगा। हमारे अनुरोधोसे सत्य हमपर कृपा कर प्रकट होता है, और प्रकट होकर, हमे गहनतर सत्योकी ओर ले जाता है। – रस्किन

सत्यका टेढ़ी पॉलिसीसे और दुनियावी मामलोंकी दुष्टतापूर्ण वक्रताओंसे मेल बैठना कठिन है, क्योंकि सत्य, प्रकाशकी तरह, सीधी रेखाओंमें ही चलता है। – कोल्टन

सत्यका रूप ऐसा है, और उसकी छवि ऐसी है कि दिखते ही मन मोह लेता है। – ड्राइडन

सन्देहमें सज्जनके अन्तःकरणकी प्रवृत्ति ही सत्यका निर्देश करती है। – कालिदास

सत्यकी खोज तो चाहे अपढ़ भी करें, बच्चे करें, बूढ़े करें, स्त्रियाँ करें, पुरुष करें। अक्षर-ज्ञान कई बार हिरण्यमय पात्रका काम करता है और सत्यका मुँह ढक देता है। – गान्धी

शेरका बच्चा शेरकी भयंकरता और हिंस्रतासे नही डरता, किलक-किलक-कर और उछल-उछलकर उसके गलेसे लिपटता है, उसी प्रकार सत्यका अनुयायी सत्यकी प्रचण्डतासे नही घबराता, उलटा उसके पास दौड-दौड-कर जाता है। — अज्ञात

मुझे जाना तो है बहुत दूर, रास्तेमें पर्वत-घाटियाँ अडी-खडी हैं। फिर भी यात्रा तो पूरी करनी ही चाहिए। और सत्यकी खोजमें असफलताको स्थान ही नही, इस ज्ञानसे मैं निश्चिन्त हूँ। — गान्धी

जिसका मन सत्यमे निमग्न है, वह पुरुष तपस्वीसे भी महान् और दानीसे भी श्रेष्ठ है। — तिरुवल्लुवर

वह पुरुष धन्य है, जिसने गम्भीर स्वाध्याय किया है और सत्यको पा लिया है वह ऐसे रास्ते चलेगा कि उसे इस दुनियामे फिर न आना पडेगा।
— तिरुवल्लुवर

सत्यसे बढकर धर्म नही है और झूठसे बढकर पाप नही है। — अज्ञात

सच्चा कार्य कभी निकम्मा नही होता, सच्चा वचन अन्तमें कभी अप्रिय नही होता। — गान्धी

सदा अप्रमादी और सावधान रहकर, असत्यको त्याग कर हितकारी सत्य वचन ही बोलना चाहिए। इस तरह सत्य बोलना बडा कठिन होता है।
— भगवान् महावीर

'सत्य ब्रूयात् प्रिय ब्रूयात्' यह केवल व्यवहार-वचन नही, सिद्धान्त है। 'प्रियम्' का अर्थ अहिंसक है। अहिंसक सत्य शुरूम कडवा, परन्तु परिणाममे अमृतमय मालूम होता है। यह अहिंसाकी अनिवार्य कसौटी है।
— गान्धी

सत्यके लिए सब कुछ कुरबान करे। हम हैं वैसे दीखना नही चाहते, बल्कि हैं उससे बेहतर दीखना चाहते हैं। कैसा अच्छा हो अगर हम नीच हैं तो नीच दीखें, अगर ऊँच होना चाहें तो ऊँच काम

करें, ऊँचा विचारें! ऐसा न हो सके तो भले नीच ही दीखें। किसी रोज सब ऊँचे जायेंगे। — गान्धी

हजार सम्भावनाएँ एक सत्यके बराबर नही हो जाती। — इटालियन कहावत

सत्यपर आरोप लगाया जा सकता है मगर उसे लज्जित नही किया जा सकता। — अज्ञात

जिसने सत्यको पा लिया उसके लिए स्वर्ग पृथ्वीसे भी अधिक समीप है। — तिरुवल्लुवर

मैने इस संसारमे बहुत-सी चीजें देखी है, मगर उनमे सत्यसे बढकर और कोई चीज नही है। — तिरुवल्लुवर

सत्य वस्तुको पानेमे गुजारा हुआ समय कभी बरबाद नही जाता, आखिरमें वह बचाया हुआ समय साबित होता है। — अज्ञात

सबकी कुजी सत्यकी आराधनामे है। सत्यकी उपासनासे सब चीजें मिलती है। — गान्धी

जो मनुष्य अपनी जिह्वाको कब्जेमें नहीं रख सकता उसमे सत्यका अधिष्ठान नही है। — गान्धी

मनुष्य जातिको 'सत्य' कोई नही सिखा सकता। सत्यकी अनुभूति स्वयं ही होती है। — जे० कृष्णमूर्ति

इस दुनियामे हमेशा हर चीज मनुष्यको निराश करती है – एकमात्र भगवान् ही उसे निराश नही करते। भगवान्की ओर मुडना ही जीवनका एकमात्र सत्य है। — अरविन्द घोष

आम राय सत्यका प्रमाण नही, क्योकि अधिकांश लोग अज्ञानी होते है। — क्लिफर्ड

जिसकी जिह्वा सत्य और हितकर वाणी बोलती है वही वास्तविक सत्यवक्ता है। — जुन्नुन

सत्य ईश्वरकी तलवार है, उसका प्रहार बिना असर किये नहीं रहता। — जुन्नुन

अगर तुम मेरे हाथोंपर चाँद और सूरजको भी लाकर रख दो, तो भी मैं सत्यके मार्गसे विचलित नहीं होऊँगा। — हजरत मुहम्मद

सिर्फ़ यह स्पष्ट रहे कि अन्तत सत्य है क्या, भले ही तुम उसे कर सको या न कर सको; और अगर तुमने कोशिश की तो हर दिन तुम उसे अधिकाधिक कर सकनेमें समर्थ होगे। — रस्किन

सत्य एक ही है दूसरा नहीं, सत्यके लिए बुद्धिमान् लोग विवाद नहीं करते। — बुद्ध

दुनियाकी सबसे आलीशान चीजोंमें-से एक है स्पष्ट सत्य। — बलवर

सत्य ही जय पाता है, असत्य नहीं। सत्यसे मोक्षमार्ग स्पष्ट दिखाई देता है, उस मार्गमें परमात्माकी इच्छा करनेवाले ऋषि जाते हैं और सत्यके परम आश्रय-स्थान, ब्रह्मको प्राप्त करके मोक्षानन्द भोगते हैं।
— मुण्डकोपनिषद्

जो हमें ठीक लगे वैसा कहना और वैसा ही करना, इसका नाम है सत्य।
— विवेकानन्द

असत्य तो फूसके ढेरकी तरह है। सत्यकी एक चिनगारी भी उसे भस्म कर देती है। — हरिभाऊ उपाध्याय

अगर हज़ार अश्वमेध यज्ञोंको सत्यके मुकाबले तराजूमें रखा जाये तो सत्यका पल्ला भारी निकलेगा। — अज्ञात

सत्य बहुमतकी कतई परवाह नहीं करता। एक युगका बहुमत दूसरे युगका आश्चर्य और शर्म हो सकता है। — अज्ञात

सत्यपर क़ायम रहनेसे जो आनन्द मिलता है, उसकी तुलना अन्य किसी प्रकारके आनन्दसे नहीं दी जा सकती। — अज्ञात

सत्यको पा लेना, दुनियाका मालिक बन जाना है। — स्वामी रामतीर्थ

बरतनका पानी चमकदार होता है, समुद्रका पानी काला-काला। लघु सत्यमें स्पष्ट शब्द होते हैं, महान् सत्यमें महान् मौन। — टैगोर

न तो अप्रिय सत्य बोलें, न प्रिय असत्य। – अज्ञात

सतत प्रियवादी पुरुष सुलभ हैं, परन्तु अप्रिय और हितकर सत्य बोलने और सुननेवाले दुर्लभ हैं। – रामायण

जिससे जीवनका अत्यन्त कल्याण हो वही सत्य है। – महाभारत

सत्यके प्रादुर्भावका सबसे पहला लक्षण है निर्भयता और दूसरा लक्षण है अहिंसकता। – हरिभाऊ उपाध्याय

सच बोलनेसे सबसे बडा फायदा यह है कि तुम्हे याद नही रखना पडता कि तुमने किससे कहाँ क्या कहा था। – अज्ञात

मुझे इस विश्वाससे कोई चीज हरगिज विचलित नही कर सकती कि हर आदमी सत्यका प्रेमी होता है। – एमर्सन

एकमात्र सत्यपर ही दृढ रहनेका स्वभाव जबतक नही बन जाता तबतक कहीं-न-कही कमजोरी, बुज़दिली, दब्बूपन, प्रकट हुए बिना न रहेगा। – अज्ञात

अनात्मामे आत्मा माननेवाले और नामरूपके बन्धनमे पडे हुए इन मूढ मनुष्योको तो देखो, वे समझते है कि 'यही सत्य है'। – बुद्ध

सत्य असत्यपर विजय प्राप्त करता है, प्रेम द्वेषको परास्त करता है; ईश्वर निरन्तर शैतानके दाँत खट्टे करता है। —गान्धी

लोकोपकारी जीवनके लिए ये तीन सूत्र हैं—सत्य, सयम और सेवा। – विनोबा

एक चीजको हमेशा नजरके सामने रखो—सत्यको; अगर तुमने यह किया, तो चाहे वह तुम्हें लोगोकी रायोसे अलग ले जाती मालूम पडे मगर लाजिमी तौरसे वह तुम्हें ईश्वरके सिंहासन तक पहुँचा देगी। – हॉरेस मैन

सत्यके तीन भाग हैं: पहला पूछना, जो कि उसका प्रेम है; दूसरा उसका ज्ञान, जो कि उपस्थिति है; और तीसरा विश्वास, जो कि उसका उपभोग है। – बेकन

तमाम पुण्यों और सद्गुणोंकी जड सत्य है। – रामायण

तमाम कमालका आधार सत्य है। – जान्सन

यह नहीं हो सकता कि तुम दुनियाके भी मजे लो और सत्यको भी पा लो। – स्वामी रामतीर्थ

सत्यपरायण

क्या जीवन जीने लायक है ? यह आपपर निर्भर है। सत्यपरायण रहिए, फिर जो कुछ आप करेंगे उसमें कमाल होगा। – ब्लेकी

तमाम सत्यपरायण लोग एक ही सेनाके सैनिक है और एक ही दुश्मनसे लडने खडे हैं—अन्धकार और मिथ्यात्वके साम्राज्यके खिलाफ। – कार्लाइल

विजय लाज़िमी नहीं है, लेकिन सत्यपरायण होना मेरे लिए लाजिमी है। सफलता लाज़िमी नहीं है, लेकिन जो रोशनी मुझे प्राप्त है उसपर अमल करना मेरे लिए लाजिमी है। – अ० लिंकन

सत्य-प्रेमी

सत्यप्रेमीके हृदयमें सत्यस्वरूप परमात्मा ऐसे सत्य प्रकट करता है जिनकी प्राप्ति दूसरोंके लिए दुर्लभ होती है। – जुन्नुन

वे सत्यके सर्वोत्तम प्रेमी हैं जो अपने प्रति ईमानदार है, और जिसका वे स्वप्न देखते हैं, उसे कर दिखानेका साहस करते हैं। – लॉवेल

सत्याग्रह

प्रत्येक मनुष्यके सम्मुख संकट निवारणके लिए दो बल हैं—एक शस्त्रबल और दूसरा आत्मबल किंवा सत्याग्रह। भारतवर्षकी सभ्यताका रक्षण केवल सत्याग्रह ही से हो सकता है। – गान्धी

सत्याग्रही

पूर्ण सत्याग्रही माने ईश्वरका पूर्ण अवतार। यह ससार ऐसा अवतार निर्माण करनेकी प्रयोगशाला ही है। – गान्धी

सत्संग

स्वर्ग और मोक्षका सुख भी लवमात्र सत्संगके सुखकी बराबरी नहीं कर सकता। — रामायण

जिस तरह पारस पत्थरके छूनेसे लोहा सोना हो जाता है उसी तरह सत्संगति पाकर दुष्ट आदमी भी सुधर जाता है। — रामायण

जो सांसारिक विषयों तथा विषयी लोगोंके संसगसे दूर रहता है और साधुजनोंका ही संग करता है, वही सच्चा प्रभु प्रेमी है, कारण, ईश्वर-परायण साधुजनोंसे प्रीति करना और ईश्वरसे प्रीति करना एक समान है। — जुन्नुन

सन्तमिलनके समान कोई सुख नहीं है। — रामायण

सत्संग बड़े भाग्यसे मिलता है। उससे बिना प्रयासके भवभ्रमण मिट जाता है। — रामायण

सदाचार

अगर आप मनोवाछित फल चाहते हैं, तो आप और गुणोमें कष्ट और हठसे वृथा परिश्रम न करके, केवल सत्क्रियारूपी भगवतीकी आराधना कीजिए। वह दुष्टोंको सज्जन, मूर्खोंको पण्डित, शत्रुओंको मित्र, गुप्त विषयोंको प्रकट और हलाहल विषको तत्काल अमृत कर सकती है। — भर्तृहरि

मैं तुम्हें बहिश्तका विश्वास दिलाता हूँ एक, जब बोलो सच, दूसरे, जब वादे करो तो उन्हें पूरा करो तीसरे, किसीकी अमानतमें खयानत न करो, चौथे, बदचलनीसे बचो, पाँचवें, आँखें सदा नीची रखो, और छठे, किसीपर अत्याचार न करो। — अज्ञात

सद्गुण

सद्गुण मेरे साथ बीमार नहीं पड़ते, और न वे मेरी क़ब्रमें ही दफन होंगे। — एमर्सन

पैसेके लिए सद्गुण न बेच। — नैतिक सूत्र

सद्गुणशील शाश्वत आनन्द पाता है । — खादी

सद्गुणशीलता शान्त और आनन्दमयी है । — कनफ्यूशियस

सद्गुणशीलता

सद्गुणशीलता निर्भीक होती है और नेकी कभी भयानक नहीं होती । — शेक्सपीयर

सद्गुरु

जिसका बरतन अत्यन्त पवित्र है, जो बिलकुल निरपेक्ष वृत्तिका है, जिसको मान या धनकी रवलेश आकाक्षा नहीं है, वही सद्गुरु है । — विवेकानन्द

सद्गृहस्थ

सद्गृहस्थ वही है जो अपने पडोसोकी स्त्रीके सौन्दर्य और लावण्यकी परवा नहीं करता । — तिरुवल्लुवर

सद्व्यवहार

सद्व्यवहार शीलताकी कसौटी यह है कि हम दुर्व्यवहारको खुशनुदीसे बरदाश्त कर सके । — वैण्डेल विल्की

विद्वान्‌की शोभा सद्व्यवहारसे है । — अज्ञात

सन्त

सन्त मोक्ष-मार्ग हैं और कामी भव पन्थ । — रामायण

नेता यह देखता है कि यह मेरे काम आयेगा या नहीं । सन्त यह देखता है कि यह दुःखी है या नहीं । — हरिभाऊ उपाध्याय

नेताकी एक पार्टी होती है, सन्त अकेला होता है । नेताका बल उसका दल होता है, सन्तका बल उसका निर्मल दिल होता है ।

— हरिभाऊ उपाध्याय

सन्त सौ युगोका शिक्षक होता है । — एमर्सन

सन्तपुरुष प्रत्यक्ष शिक्षा न देते हो तो भी उनकी सेवा करनी चाहिए । क्योंकि उनकी सहज वार्ता भी शास्त्र-तुल्य है । — भर्तृहरि

नेता यह देखता है कि इसने मेरी आज्ञाका पालन किया या नहीं, सन्त यह देखता है कि इसे मेरी बात जँची है या नहीं। – हरिभाऊ उपाध्याय

सन्त लोगोंकी आपत्तियोंको दूर करनेके लिए सन्तपुरुष ही समर्थ होते हैं, जैसे कि कीचडमें डूबते हुए हाथीको हाथी ही बाहर निकाल सकते हैं।
– अज्ञात

साधुओंका बडप्पन इसीमें है कि वे अपने साथ बुराई करनेवालोंके साथ भी भलाई ही करें। – रामायण

सन्तोष

अहंभावको छोडकर विपत्तिको भी सम्पत्ति मानना ही सच्चा सन्तोष है।
– जुन्नेद

अगर आजकी वृत्ति तुझपर कठिन हो, तो सन्तोष कर, आशा है कि समयका फेर कल तक जाता रहेगा। – हज़रतअली

जब सन्तोष धन आता है तो सब धन धूलके समान हो जाते हैं।
– तुलसीदास

भाग्यमें जितना धन लिखा है वह मरुस्थलमें भी मिल जायेगा, उससे ज्यादा सोनेके सुमेरु पर्वतपर भी नहीं मिल सकता। इसलिए वृथा दीन याचक न बनो। देखो, घडा समुद्र और कुएँसे समान ही जल ग्रहण करता है। – भर्तृहरि

यदि तुम ईश्वरके प्रीति-पात्र होना चाहते हो तो ईश्वर जिस स्थितिमें रखना चाहता है उसमें सन्तुष्ट होना सीखो। – हातिम हासम

सन्तोषके बिना किसीको शान्ति नहीं मिल सकती। – रामायण

जो कुछ हमारे पास हो उससे सन्तोष मानना ठीक है, लेकिन हम जो कुछ हैं उससे सन्तुष्ट हो रहना कभी नहीं। – मैकिनतोश

जब कि सब कामोंके रास्ते बन्द हो जाते हैं, उस वक़्त सन्तोष ही तमाम रास्तोंको बिला धाक अच्छी तरह खोल देता है। – मुहम्मद-बिन-बशीर

एक दिन मैंने प्रभुसे पूछा—"हे प्रभु, मैं सब अवस्थाओंमें तुझसे सन्तुष्ट हूँ। क्या तू भी मुझपर सन्तुष्ट है?" ईश्वरने कहा—"तू झूठा है। यदि तू मुझसे पूर्णतया सन्तुष्ट होता तो मेरे सन्तोषकी पूछताछ न करता।"

– अबुल-हुसेनअली

ज्ञानवान्‌को सुखी करनेके लिए न कुछ चीज़ोंकी जरूरत है, लेकिन मूर्खको किसीसे सन्तोष नहीं मिलता, और यही कारण है कि मनुष्य जातिके इतने सारे लोग दुःखी हैं। – रोशे

सन्तोष कुदरती दौलत है, ऐश्वर्य कृत्रिम गरीबी। – सुकरात

सच्चा सन्तोष इस बातपर निर्भर नहीं है कि हमारे पास क्या है, डायोजीनके लिए एक नाँद ही काफी बडी थी, लेकिन सिकन्दरके लिए एक दुनिया भी निहायत छोटी थी। – कोल्टन

ओ सन्तोष, मुझे ऐश्वर्यशाली बना दे, क्योंकि कोई ऐश्वर्य तुझसे बढ़कर नहीं है। – सादी

सन्तोष आदमीको शक्तिशाली बनाता है। – फारसी कहावत

सन्तोष आनन्द है, शेष सब दु:ख है। इसलिए सन्तुष्ट रह, सन्तोष तुझे तार देगा। – तुकाराम

सन्तुष्ट आदमी धनवान् है, चाहे वह भूखा और नंगा हो, परन्तु तृष्णावान् भिखारी है, चाहे वह सारी दुनियाका मालिक हो।

– जाविदान-ए-खिरद

इच्छाको ढील देनेसे बडा पाप नहीं; असन्तोषसे बडा दु:ख नहीं, प्राप्तिकी तृष्णासे भयकर आपदा नहीं। – ताओ-धर्मका उपदेश

सर्वोत्कृष्ट मनुष्य वह है जिसे सर्वोत्तम सन्तोष हो। – स्पेन्सर

सच्ची प्रसन्नता सन्तुष्ट मनसे उत्पन्न होती है, तो फिर मनका सन्तोष पानेका प्रयास करो। – चुंग चो

लोभ दु ख लाता है, सन्तोषमें आनन्द-ही-आनन्द है ।

— रामकृष्ण परमहंस

सन्देश

हर बच्चा इस सन्देशको लेकर आता है कि ईश्वर अभी मनुष्यसे निराश नही हुआ है । — टैगोर

सन्देह

जिसे सन्देह है, उसे कही ठिकाना नही । उसका नाश निश्चित है । वह रास्ते चलता हुआ भी नही चलता है, क्योकि वह जानता ही नही कि मै कहाँ हूँ । — गान्धी

सन्देह सच्ची दोस्तीका हलाहल है । — ऑगस्टाइन

सन्मार्ग

सन्मार्ग तो परमात्माको सतत प्रार्थनासे, अतिशय नम्रतासे, आत्मविलोचनसे, आत्म त्याग करनेको हमेशा तैयार रहनेसे मिलता है । इसकी साधनाके लिए ऊँचेसे ऊँचे प्रकारकी निर्भयता और साहसकी आवश्यकता है ? — गान्धी

सफलता

संसारमें लाखो ऐसे स्त्री-पुरुष है जो नित्य और निर्धारित मार्गपर न चल सकनेके कारण दु खी रहते है, और करोडो ऐसे हैं जो जीवन-भर कभी अपना मार्ग निर्धारित हो नही कर पाते । इन दोनो ही कोटियोके मनुष्य सफलतासे सदा कोसो दूर रहते हैं । — लिली ऐलेन

सफलता इसमे नही है कि भूलें कभी न हो, बल्कि इसमे कि एक ही भूल दुबारा न हो । —एच० डबल्यू० शा०

उस आदमीके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है जो इरादा कर सकता है और फिर उसपर अमल कर सकता है, सफलताका यही नियम है ।

— मीराबो

सफलताको खो दनेका निश्चित तरीका अवसरको खो देना है ।
— चेसिल्ड

अपने विचारोका द्रोही न बन, अपने प्रति ईमानदार रह, अपने विचारो-पर अमल कर, तू जरूर कामयाब होगा । सच्चे और सरल हृदयसे प्रार्थना कर, तेरी प्रार्थनाएँ जरूर सुनी जायेंगी । — रामकृष्ण परमहस

अपनी हस्तीको अपने काममें भुला दो । सफलता अवश्य मिलेगी । अन्यथा हो नही सकता । सफलता मिलनेसे पहले फलकी इच्छाको तुम्हारे काममे मर जाना चाहिए । — स्वामी रामतीर्थ

समानके पास समान चीज आती है । अपने अन्दर अभी यहीं ईश्वरका आनन्द भरा रखो तो सफलताका आनन्द तुम तक खिचकर आना ही चाहिए । — स्वामी रामतीर्थ

पहले परमात्माको याद करो, तब अपना काम शुरू करो । इत्मीनान रखो असफलताकी गुजाइश नही रहेगी । — दयाराम

सफलता वह सुन्दरी है जिसे बहुत-से लोग प्यारसे चाहते है, मगर वह आलिंगन उसीका करती है जो उत्साहके अतिरेकसे मुक्त रहकर दृढ़ता-पूर्वक प्रयत्नशील रहता है और शान्तिपूवक अध्यवसायमे जुटा रहता है ।
— भारवि

सफलताके योग्य बन, वह तेरी हो जायेगी । — नैतिक सूत्र

कुछ भी चाहो, अगर दिलाजानसे कोशिश करोगे तो जरूर कामयाब होगे । — फ़ारसी कहावत

साधारण बुद्धिवाला भी यदि असाधारण अध्यवसाय करे तो सब कुछ पा सकता है । — बक्सटन

सफलता मिलती है समझदारी और परिश्रमसे । यदि तुझे चढ़ना है तो दोनोको अपना । — माघ

निर्मल अन्तःकरण, कार्य-तत्परता और नम्रतासे सफलता मिलती है ।
— तोरूदत्त

सभा

जिस सभामें अधर्म धर्मको घायल कर दे, और अगर सभासद् उसके धावको न पूर दें तो निश्चय जानो कि उस सभामें सब सभासद् ही घायल पड़े हैं। — मनुस्मृति

मनुष्यको योग्य है कि सभामें प्रवेश न करे, यदि सभामें प्रवेश करे तो सत्य ही बोले। यदि सभामें बैठा हुआ भी असत्य बातको सुनकर मौन रहे अथवा सत्यके विरुद्ध बोले वह मनुष्य अति पापी है। — मनुस्मृति

सभ्यता

जो भद्रपुरुष समाजसे जितना ले उतना ही समाजको वापस कर दे, वह साधारण भद्र-पुरुष कहा जाता है। जो सभ्य-पुरुष समाजसे जितना ले उससे अधिक उसे लौटा दे, वह विशिष्ट भद्र-पुरुष है और जो शरीफ आदमी अपना समस्त जीवन समाजमें लगा दे और एवजमें समाजसे कुछ भी न चाहे, वह असाधारण सभ्य एवं भद्र-पुरुष कहलाता है लेकिन पश्चिमका सभ्य पुरुष (?) समाजसे लेता-ही-लेता है, देनेकी तो वह इच्छा ही नहीं करता। — जार्ज बर्नार्ड शा

समझ

मूर्खको समझ देना मुश्किल है। — कहावत

वह निकृष्ट समझ, जिससे आदमी बिना मतलब या असलियतको समझे एक ही काममें अन्धेकी तरह लिपटा रहता है, और उसे ही सब कुछ समझ लेता है, तामस समझ है। — गीता

समझदार

समझदार आदमीको चाहिए कि बिना किसी तरहके लगावके सबका भला चाहते हुए ही सब काम करे। — गीता

वे लोग समझवाले हैं जो परमेश्वरसे लौ लगाये हुए एक-दूसरेसे हमेशा उसका जिक्र करते हैं, आपसमें समझते-समझाते हैं और इस तरह एक-दूसरेके साथ मिलकर तसल्ली और आनन्द पाते हैं। – गीता

समझदार आदमीको चाहिए कि अपनी आत्माको शुद्ध करे और फिर सबके साथ अपने फर्जको पूरा करते हुए सबको आत्माके अन्दर परमात्माकी आराधना (पूजा) करे। – गीता

समझदार आदमी पहले ही से जान जाता है कि क्या होनेवाला है, मगर मूर्ख आगे आनेवाली बातको नहीं देख सकता। – तिरुवल्लुवर

समझदार आदमीको चाहिए कि जो कम-समझ लोग किसी भी 'रास्ते'-पर चलकर नेक कामोंमें लगे हुए हैं, उनकी समझको डाँवा-डोल न करे, बल्कि उन्हें उसी तरह नेक कामोंमें लगाये रखे। – गीता

समझदारी

बोलनेमें समझदारीसे काम लेना वाक्पटुतासे अच्छा है। – बेकन

जीवनमें ऐसे प्रसंग और वस्तु-स्थितियाँ आती हैं जब कि बुद्धिमत्ता इसीमें होती है कि अति बुद्धिमान् न बने। – शिलर

समता

सम होना माने अनन्त होना, विश्वमय हो जाना। – अरविन्द घोष

समग्र विश्वजीवनपर आत्माका प्रभुत्व स्थापन करनेकी पहली सीढ़ी समता है। – अरविन्द घोष

जब अन्तःकरणमें अक्षुब्ध शान्ति सदैव विराजमान रहे तब समझना कि समता प्राप्त हो गयी। – अरविन्द घोष

सम भाव ही समस्त कल्याणका पाया है। – विवेकानन्द

ईश्वरके भक्तोंमें एक सीमा तक ही समता होती है। पूर्ण समता जिसमें प्रकट होती है वह परमेश्वर है; किन्तु वह तो एक ही है। तब

पूर्णतम मनुष्यमें भी समता अपूर्ण होगी। अत मतभेद और विरोध होगा, उसमें दु ख माननेका कारण नही। जगत् विषमताका परिणाम है। अपना धर्म रोज समताका अंश प्राप्त करनेका होना चाहिए। ऐसा करनेसे विषमता असह्य मालूम होनेके बजाय सह्य और कुछ अंशोमे सुन्दर भी प्रतीत होगी। — गान्धी

समता ही परमेश्वर है। — गीता

समय

आम लोग वक़्तको महज़ गुज़ार देना चाहते हैं, मनस्वी उसका सदुपयोग करना। — शोपेन होर

मान लो कोई व्यक्ति रोज़ाना एक निश्चित समयपर सोता है, और अगर वह चालीस बरस तक सात बजेके बजाय पाँच बजे उठा करे, तो इससे उसको उम्रमे क़रीब दस बरसका गोया इज़ाफा हो जायेगा। — डॉडरिज

मेरा विश्वास करो जब कि मै कहता हूँ कि वक़्तकी किफायत भविष्यमे तुम्हे ऐसे प्रचुर लाभसे मुआवज़ा देगी जो तुम्हारे सबसे अधिक आशापूर्ण स्वप्नोसे भी अधिक होगा, और उसकी बरबादी वैसे ही तुम्हारी कालीसे काली कल्पनाओसे भी अधिक बौद्धिक और नैतिक पतनमे तुम्हें विलीन कर देगी। — ग्लेड्स्टन

जबतक समय अनुकूल नही है तबतक दुश्मनको कन्धेपर लिये सहना चाहिए, लेकिन जब मौका आवे तब उसे पत्थरपर घडेकी तरह फोड़ दे। — नीति

कोई ऐसी घडी नही बना सकता जो मेरे गुज़रे हुए घण्टोको फिरसे बजा दे। — डिकेन्स

समय, सत्यके सिवाय, हर चीज़को कुतर खाता है। — हक्सले

चिराग़ बुझ जानेपर तेल डालना, चोरके भाग जानेपर सावधान होना, जवानी बीत जानेपर स्त्री-सहवास, पानी बह जानेपर बाँध बाँधना ये सब व्यर्थ हैं: समयपर ही काम करना चाहिए। — अज्ञात

समयके अनुसार भागना भी विजय है। — अरबी कहावत

हजार बरस जो बीत गये और हजार बरस जो आनेवाले हैं; इन सबसे बढकर वह समय है जो तुम्हारे हाथमे है। — शिवली

काव्य और शास्त्रकी चर्चामे बुद्धिमान् मनुष्य समय गुजारते है, जब कि मूर्ख लोग व्यसनोमे, सोनेमे या लडनेमे अपना वक्त निकालते हैं। — अज्ञात

'जितना सुबहका है वह राम-प्रहर', और बाकीका क्या हराम प्रहर है ? भक्तको सब काल समान पवित्र होना चाहिए। — विनोबा

मैं अपने वक्तसे पाव घण्टे पहले हाजिर रहा हूँ और इसने मुझे आदमी बना दिया है। — नैल्सन

समाज

किसी समाजमे बिना किसी प्रश्नके मत बोल क्योकि ऐसा करना उचित नही है। — हजरतअली

समाज अपने पर्दाफाश करनेवालोको प्यार नही करती। — एमर्सन

लानत है उन सामाजिक बन्धनोपर जो हमें सजीव सत्यसे वंचित रखे। — टैनीसन

समाजवाद

समाजवादका सार यह है कि व्यक्तिगत स्पर्द्धाशील पूँजीको संयुक्त सामूहिक पूँजी बना देना। — शौफिल

समाजवादी

एक भी कौडी जबतक कोई रखेगा, तबतक वह समाजवादी नही है। — गान्धी

समाप्ति

जो थकानमे समाप्त होती है वह मौत है, लेकिन परिपूर्ण परिसमाप्ति अनन्तमे है। — टैगोर

समालोचक

ग्रन्थोंके गुण-दोष-निरीक्षक अकसर वे लोग होते हैं, जो कवि, इतिहास-लेखक या जीवनी लिखनेवाले होना चाहते थे, पर जब उन्होंने सब तरहसे अपनी क्षमताकी परीक्षा कर ली, उन्हें सफलता न हुई, तब वे परछिद्रान्वेषी बन गये। — कॉलरिज

चन्द लोगोको छोडकर, अधिकाश ममालोचक आलसी और दुष्ट होते हैं। जिस तरह चोर जब चोरी करनेमें सफल नहीं होता, तब चोर पकडनेवाला हो जाता है, उसी तरह जिसे ग्रन्थ लिखनेमें सफलता नहीं होती, वह परछिद्रान्वेषी बन जाता है। — शैली

जो ग्रन्थकारोकी धूल उडाते हैं, उनमे अधिकाश लोग मूर्ख और परगुणद्वेषी होते है। — शैली

समूह

विशाल जन-समूह निरे साधन है, अथवा रुकावटें या नक़लें हैं; महान् कार्य ऐसी सामूहिक हलचलपर निर्भर नही हुआ करते, क्योकि सर्वोत्तम और सर्वश्रेष्ठका भी जन-समूहपर कोई प्रभाव नही। — नीट्शे

सम्पत्ति

आपत्ति 'मनुष्य' बनाती है, और सम्पत्ति 'राक्षस'। — विक्टर ह्यूगो

तुम सम्पत्ति और पोज़ीशनके फेरमें क्यो पडते हो? बिना लूट-चोरी और छल-फरेबके दोमें-से एक भी चीज़ तुम्हारे हाथ नही लग सकती! — अज्ञात

उस आदमीकी सम्पत्ति जिसे लोग प्यार नही करते हैं, गाँवके बीचोबीच किसी विष-वृक्षके फलनेके समान है। — तिरुवल्लुवर

उत्तम पुरुषोकी सम्पत्तिका मुख्य प्रयोजन यही है कि औरोकी विपत्तिका नाश हो। — कालिदास

लोगोंको रुलाकर जो सम्पत्ति इकट्ठी की जाती है वह क्रन्दन-ध्वनिके साथ ही विदा हो जाती है, मगर जो धर्म द्वारा संचित की जाती है वह बीचमें क्षीण हो जानेपर भी अन्तमें खूब फलती-फूलती है। — तिरुवल्लुवर

अधर्मसे इकट्ठीकी हुई सम्पत्तिसे तो सदाचारी की दरिद्रता कहीं अच्छी है। — तिरुवल्लुवर

सम्बन्ध

सज्जनोके जोडे हुए सम्बन्धोका परिणाम कष्टदायक नहीं होता। — कालिदास

जन्मनेसे पहले किसीके साथ सम्बन्ध नही था, मरनेके बाद नही रहता, तो फिर बीचमें ही सच्चा सम्बन्ध किस तरह हो? — अज्ञात

हमारा दूसरे लोगोके साथ जो सम्बन्ध होता है, प्राय उसीसे हमारे सभी शोक और दु खोका जन्म होता है। — शोपेनहोर

सम्यक् आजीविका

मनुष्यको पेट देनेमे ईश्वरका हेतु है। प्रामाणिकतासे पेट भरना यह बात जब मनुष्य साध लेगा तब समाजके बहुत-से दु ख और पातक नष्ट हो जायेंगे। — विनोबा

सम्यक् चारित्र

जब कोई सही काम कर रहा हो तो उसे पता तक नही लगता कि वह क्या कर रहा है, लेकिन गलत कामका हमे हमेशा भान रहता है। — गेटे

सम्यक् ज्ञान

सम्यक्ज्ञान दरिद्रताकी भी आधी शक्तिको नष्ट कर देता है। — शा

जैसे धनमें आनन्द नही, वैसे ही विज्ञानमें सम्यक्ज्ञान नहीं। — बौफलर्स

सम्यक्ज्ञान महान् है। इसका मूल्य अनन्त है। इनसानने जो सर्वोच्च चीज प्राप्त की है वह सम्यक्ज्ञान है। – कार्लाइल

ज्ञानका स्थान दिमागमें है, सम्यक्ज्ञानका दिलमें। अगर हमारी भावना सही नही है तो हमारे निर्णय अवश्य ग़लत होंगे। – हैज़लिट

सम्यक्ज्ञान ही सब विज्ञानोंका विज्ञान है और अपना भी। – प्लेटो

ज्ञान प्रेमोत्पादक है, सम्यक्ज्ञान स्वयं प्रेम है। – हेअर

कोई मूर्ख ऐसा नही है जो सुखी हो, और कोई सम्यक् ज्ञानी ऐसा नहीं है जो सुखी न हो। – सिसरो

एक मात्र रत्न जो तुम श्मशानसे आगे अपने साथ ले जा सकते हो सम्यक्ज्ञान है। – लॅगफ़र्ड

सरकार

सबसे बढिया सरकार वह है जो कमसे कम शासन करती हो। – थोरो

सबसे अच्छी सरकार कौन-सी है? – जो हमें अपने ही ऊपर शासन करना सिखाती है। – गेटे

शासन-कार्यमें भाग लेनेसे इनकार करनेकी सज़ा यह मिलती है कि बदतर आदमियोंके शासनमें रहना पडता है। – एमर्सन

आजकल अधिकांश आत्मज्ञानी खामोश हैं, और भले लोग शक्ति-विहीन हैं, जब कि नासमझ लोग बुलक्कड बने हुए हैं हृदयहीन शासन कर रहे हैं। – रस्किन

सरलता

मनुष्योंमें ऐसे लोग भी हैं जो अपने सरल जीवनमें ही सन्तुष्ट हैं। उनकी सवारी उनके दोनों पैर हैं और उनका ओढ़ना बिछौना मिट्टी है। – मुतनब्बि

सीधे होने में चाहे तू बाणके समान हो हो, तो भी लोग यही कहेंगे कि वह सीधा है ही नहीं। – इस्माइल-इब्न-अबीबकर

सरलता (आर्जव, निष्कपटता) यही धर्म है, और कपट ही अधर्म है। सरल मनुष्य ही धर्मात्मा हो सकते हैं। – महाभारत

सरसता

सरस हृदय जन होत हैं, बहुधा मृदुल स्वभाव। – कालिदास

सर्वप्रियता

सर्वप्रिय होना स्त्रीका गुण है, प्रतापी होना पुरुषका। – सिसरो

सलाह

इनसानसे यह उम्मेद रखना कैसे मुमकिन है कि वह सलाह ले लेगा जब कि वह चेतावनी तकसे सावधान नहीं होता। – स्विफ़्ट

जो अच्छी सलाह देता है, एक हाथसे बनाता है, जो अच्छी सलाह और आदर्श पेश करता है, दोनोंसे बनाता है, लेकिन जो अच्छी चेतावनी देता है और बुरा आदर्श वह एक हाथसे बनाता है और दूसरेसे गिराता है। – बेकन

सहनशीलता

सन्त दूसरोंको दुःखसे बचानेके लिए कष्ट सहते हैं दुष्ट लोग दूसरोंको दुःखमें डालनेके लिए। – रामायण

जो पुरुष तेरे विरुद्ध झूठी साक्षी देते हैं, उनके लिए तू अपने मुँहसे एक शब्द भी मत निकाल। शायद इसीसे उनका उद्धार हो जाये।

– पालशिरर

सहानुभूति

उन पत्थरके पशुओंपर लानत है, जो दूसरेके दुःखको कोमलतासे अपनाकर द्रवीभूत नहीं हो जाते। – हिल

डूबनेवालेके प्रति सहानुभूतिका मतलब उसके साथ डूबना नहीं है बल्कि खुद तैरकर उसको बचानेका प्रयत्न करना। – विनोबा

सहायता

दूसरेके सहारे जीनेवाला हमेशा दु खी रहता है । — अज्ञात

जो सिर्फ ईश्वरका सहारा लेते हैं, वे मनुष्यका सहारा नही लेंगे, चाहे वे मरे हो चाहे जिन्दा । यदि तुमने इसे पचा लिया, तो तुम कभी शोक नही करोगे । — गान्धी

जब कि इनसान तमाम बाहरी सहारा अलग कर देता है और अकेला खडा होता है, तभी मैं देखता हूँ कि वह मजबूत है और बाजी ले जायेगा । — एमर्सन

संकल्प

जो आदमी इरादा कर सकता है उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है । — एमर्सन

सच्चीसे सच्ची और अच्छीसे अच्छी चतुराई दृढ सकल्प है । — नैपोलियन बोनापार्ट

संकीणता

संकीर्ण मनवाला आदमी अफरीकाके भैंसेकी तरह होता है, वह बस सीधा सामने देखता है, दायें-बायें कुछ नही । — एमन

संक्षिप्तता

जो लोग अपने मनकी बात थोडे-से चुने हुए शब्दोमें कहना नही जानते, वास्तवमें उन्हींको अधिक बोलनेकी लत होती है । — तिरुवल्लुवर

सक्षिप्तता, खुशगोईकी जान है । — शेक्सपीयर

सक्षिप्तता, भाषण-पटुताका महान् जादू है । — सिसरो

संगठन

जब दुष्ट लोग गुट बना लें, तो सज्जनोको भी सगठित हो जाना चाहिए, वर्ना, एक-एक करके, उन सबकी बलि चढ़ जायेगी । — बर्क

संगति

जिसका बाह्य जीवन उसके आन्तरिक जीवनके समान नहीं है, उसका संसर्ग मत करो। — जुन्नुन

किसका सग किया जाये ? जिसमें 'तू-मैं' का भाव न हो। — जुन्नुन

मिलने जुलनेकी भूख तीव्र होती है, मगर उसमें समझदारी और किफायत-से काम लेना चाहिए। — एमर्सन

चन्दन शीतल है। चन्दनसे चन्द्रमा अधिक शीतल है। चन्द्र और चन्दनसे भी साधु पुरुषोकी सगति अधिक शीतल होती है। — अज्ञात

हीन मनुष्यकी सगतिसे बुद्धि हीन हो जाती है, समान मनुष्यके सगसे समान और उत्तम मनुष्यके सगसे उत्तम। — अज्ञात

हम अपने सरीखोको सगतिसे कुछ नही पाते। हम एक दूसरेको तुच्छ बननेमें सहायक होते है। मैं हमेशा उन लोगोकी सगतिका अभिलाषी रहता हूँ जो मुझस श्रेष्ठतर है। — लैम्ब

मुझे बताइए आपके सगी साथी कौन हैं और मैं बता दूँगा कि आप कौन हैं। — गेटे

झूठेकी सगति करोगे तो ठगे जाओगे मूर्ख शुभेच्छु होनेपर भी अहितकर ही होगा, कृपण अपने स्वार्थके लिए दूसरेको अवश्य हानि पहुँचायेगा, नीच आपत्तिके समय दूसरेका नाश करेगा। — सादिक़

मूर्खोंकी सगतिमें ज्ञानी ऐसा है जैसे अन्धोके साथ कोई खूबसूरत लड़की। — सादी

जिसकी सगतिमें—फिर वह व्यक्ति हो, समाज हो या सस्था हो—अपूर्णता मालूम हो वहाँ पूर्णता लानेका प्रयत्न करना अपना धर्म है। गुणोंकी अपेक्षा दोष बढते हो तो उसका त्याग-असहयोग-धर्म है। यह शाश्वत सिद्धान्त है। — गान्धी

मूर्खोंकी संगतिमे रहनेवाला अवश्य बरबाद होगा। — कहावत

गरम लोहेपर पडनेसे जलकी बूँदका नाम भी नही रहता, वही कमलके पत्तेपर पडनेसे मोती-सी हो जाती है, और वही स्वाती नक्षत्रमें सीपमे पडनेसे मोती हो जाती है। अधम, मध्यम और उत्तम गुण प्राय ससर्गसे ही होते है। — भर्तृहरि

नीच लोगोकी सगतिसे मनुष्यकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, मध्यम लोगोकी संगतिसे वे मध्यम होते है और उत्तम लोगोके सहवाससे उत्तम होते हैं। — महाभारत

सगति, बदमाशोकी सगतिने मेरा नाश कर डाला है। — शेक्सपीयर

संगीत

सगीत पैगम्बरोकी कला है, यही वह कला है जो कि आत्माकी अशान्तियोको शान्त करती है। — ल्यूथर

भावावेशमे हृदय सगीतसे उत्तेजित होता है, ईश्वरको खोजनेके लिए व्याकुल बनता है। जो ईश्वरभावकी वृद्धिके लिए सगीत सुनता है, उसे तो उससे लाभ ही होता है। परन्तु जो सगीत इन्द्रियोकी तृप्तिके लिए सुना जाता है उससे तो ईश्वर-विरोधी भाव और विषय-प्रेम ही की वृद्धि होती है। — जुन्नुन

समस्त कलाओमे सगीतका कषायोपर अधिकतम प्रभाव पडता है। — नैपोलियन

संचय

दो शख्स फिजूल तकलीफ उठाते हैं, और बेमतलब मशक्कत करते है। एक तो वह जो धन सचय करता है परन्तु उसे भोगता नही; दूसरा वह जो ज्ञानार्जन करता है किन्तु तदनुसार आचरण नही करता। — सादी

संन्यास

'सर्वं खल्विद ब्रह्म' ऐसा अनुभव होना वेदान्तकी नज़रमें त्याग और सन्यास है ।
— स्वामी रामतीर्थ

बिना वैराग्यके सन्यास ले लेनेवाला मज़ाककी चीज़ हो जाता है ।
— रामायण

इस तरहके 'सन्यास' से जिसमे अपने दुनियावी फर्जको छोड दिया जावे आदमी सिद्धि यानी कमालको नही पहुँच सकता ।
— गीता

सन्यास दिलकी एक हालतका नाम है, किसी ऊपरी नियम या लिवास वग़ैरहका नही ।
— गीता

अपने सब कामोके अन्दरसे खुदगरज़ी निकाल देनेको ही समझदार आदमी असली 'सन्यास' कहते है, और सब कामोके फलका त्याग यानी अच्छे-बुरे नतीजेकी परवाह न करना ही सच्चा 'त्याग' है ।
— गीता

'सन्यास लेना' इसका कुछ भी अर्थ नही है कारण कि सन्यासके माने ही है 'न लेना'
— विनोबा

संन्यासी

जो आदमी नतीजेकी परवाह न कर जिसे अपना फर्ज़ समझता है उसे पूरा करता है, वही सन्यासी है, और वही योगी है ।
— गीता

सन्यासी कौन हो सकता है ? वह जो इस बातका कतई खयाल किये बगैर कि कल क्या खाऊँगा, क्या पहनूँगा, दुनियाको कतई छोड देता है ।
— रामकृष्ण परमहस

संभाषण

जैसे कि बरतन आवाज़से जाना जाता है कि फूटा हुआ है या नही, उसी तरह आदमी अपनी बातोसे साबित कर देते है कि वे अक्लमन्द हैं या बेवकूफ ।
— डिमॉस्थनीज़

बातचीतका पहला अग है सत्य, दूसरा समझदारी, तीसरा खुशमिजाजी, और चौथा हाज़िर-जवाबी । – टैम्पिल

वह सगीत जो अधिकतम गहराई तक पहुँचता है, और तमाम बुराइयोको दूर करता है हार्दिक सम्भाषण है । – एमर्सन

किसीके बोलनेके प्रवाहमे बोल उठनेसे बढकर बदतहज़ीबी नही हो सकती । – लौके

बातचीत होते ही विद्वानोमे परस्पर एक प्रकारका सम्बन्ध हो जाता है । – कालिदास

संयम

जब मनुष्य अपनी इन्द्रियोको वश कर लेता है, तभी उसकी बुद्धि स्थिर होती है । – महाभारत

सयमहीन स्त्री या पुरुषको गया-बीता समझिए । – गान्धी

जो अपने मुँह और ज़बानपर काबू रखता है वह अपनी आत्माको क्लेशोसे बचा लेता है । – बाइबिल

जो अपने ऊपर शासन नही करेगा, वह हमेशा दूसरोका गुलाम रहेगा । – गेटे

सौन्दर्य शोभा पाता है शीलसे और शील शोभा पाता है सयमसे । – कवि नान्हालाल

संशय

सशयात्मा नाशको प्राप्त होते है । – अज्ञात

जो निष्पाप है, जो स्वार्थ-रहित है, वह सशयी नही हो सकता । – अज्ञात

संसर्ग

महाजनोके ससर्गसे किसकी उन्नति नही होती ? कमलके पत्तेपर ठहरी हुई पानीकी बूंद मोतीकी सुन्दरता पाती है । – अज्ञात

ससार

ससार क्या ? जो ईश्वरसे तुम्हे परे रखे । — जुन्नुन

अचेत आदमीके लिए ससार खेल-तमाशेकी जगह है, परन्तु विचारवान्के लिए लडाईका खेत है जहाँ जीवन पर्यन्त मन और इन्द्रियोसे जूझना पडता है । — सहजो

ससार महापुरुषोकी प्रयोगशाला है । — हरिभाऊ उपाध्याय

संसारके सुख क्षण-भगुर है । कोई सुखी नही कहा जा सकता जो सुखी न मरे । — सोलन

ससारका ससर्ग दिलको या तो तोडता है, या उसे कठोर बनाता है । — चैम्फर्ट

संस्कृति

दौलतमन्द पैसा देकर काम करा सकता है, आत्म-सस्कृति नही खरीद सकता । — स्माइल्स

सस्कृति ही सुखकी शत्रु है । वही सबसे अधिक सुखी है जो कुछ भी पढा-लिखा नही है । — महात्मा टाल्सटाय

आशिक सस्कृति बनाव-चुनावकी तरफ दौडती है, परिपूर्ण सस्कृति सादगी-की ओर । — बोवी

बडीसे बडी बातको सरलसे सरल तरीकेसे कहना उच्च संस्कृतिका प्रमाण है । — एमर्सन

साइन्स

जो यह कहते है कि साइन्स और धर्मका विरोध है वे या तो साइन्ससे वह कहलवाते है जो उसने कभी नही कहा या धर्मसे वह कहलवाते है जो उसने कभी नही सिखाया । — पोप

साक्षात्कार

जीवनमात्रकी शुद्धतम सेवा ही साक्षात्कार है । — गान्धी

जिसे आत्माका साक्षात्कार हो गया है, उसके लिए सारी दुनिया नन्दनवन है, सब वृक्ष कल्पवृक्ष है, सब जल गंगाजल है। उसकी क्रिया पवित्र रहती है, उसकी वाणीमे तत्त्वोंका सार रहता है। उसके लिए सारी पृथ्वी काशी है और उसकी सारी चेष्टा परमात्मामय है। — अज्ञात

वास्तविक साक्षात्कारमे एक ईश्वरमे ही स्थिति होनेके कारण अहभाव और ममताका नाश होता है। वैसी हालतमे तुम अपने शरीर और जीवको नही देख पाओगे। — जुन्नेद

साथी

धीरज, धर्म, मित्र और नारी इन चारोकी परीक्षा आपत्तिकालमे हो जाती है। — रामायण

ईश्वर ही हमारा निरन्तर साथी है। — गान्धी

सादगी

सादगीमे एक शाही शान है जो कि बुद्धि-वैचित्र्यसे बहुत ऊँची है। — पोप

सूरज प्रकाशकी सादा पोशाकमे है। बादल तडक-भडकसे सुशोभित है। — टैगोर

सत्य, शक्ति, सौन्दर्य, रहते है सादगीमे। — टैगोर

सादगी कुदरतका पहला कदम है, और कलाका आखिरी। — बेली

स्त्रियोमे सादगी मनोमुग्धकारी लावण्य है, उतनी ही दुर्लभ जितनी कि वह आकर्षक है। — डी फ़िनो

मेरे भाइयो, अहकारी और शक्तिशालीके सामने अपनी सादगीकी सफेद पोशाक पहनकर खडे होनेमे शर्माओ मत। — टैगोर

चारित्रमे, इख्लाक़में, शैलीमे, सब चीज़ोमें, बेहतरीन कमाल है—सादगी। — लौंगफैलो

साधक

'प्रभुके लिए मेरा उत्साह इतना बढ गया है कि उससे मेरा मन बिलकुल ब्याकुल हो गया है'—ऐसा जो कह सके उसीको सच्चा साधक कहा जा सकता है। — अरविन्द घोष

साधन

जिस अनुपातमे साधनका अनुष्ठान होगा ठीक उसी अनुपातम ध्यय प्राप्ति होगी। यह नियम निरपवाद है। — गान्धी

लोग एक हाथीके द्वारा दूसरेको फँसाते है उसी तरह एक कामको दूसरे कामके सम्पादनका जरिया बना लेना चाहिए। — तिरुवल्लुवर

अगर एक दरवाजा वन्द हो गया है तो दूसरा खुल जायेगा। — कहावत

साधना

पुरुषको जाग्रत करके पुरुषोत्तम करना यही सब साधनका हेतु है। — अरविन्द घोष

इन चार बातोका पालन करोगे तो तुमसे शुद्ध साधना हो सकेगी। १ भूख-से कम खाना, २ लोकप्रतिष्ठाका त्याग, ३ निर्धनताका स्वीकार, ४ ईश्वरकी इच्छामे सन्तोष। — अज्ञात

बिना साधना ईश्वर नही मिल सकता। — रामकृष्ण परमहस

साधु

साधु कुवेषमे भी हो तो भी सन्मान पाता है। — रामायण

साधु पुरुषका यह लक्षण है कि वह जिस किसीसे भी मिलता है बाहरसे ही मिलता है। भीतरसे तो वह सदा ईश्वरसे मिलता रहता है। — अज्ञात

हर पहाडमे माणिक नही, हर हाथीमे मोती नही, हर वनमे चन्दन नही, सब जगह साधु नहीं। — अज्ञात

अगर कोई आर्त्त अधिकारी मिल जाये तो साधु लोग उससे गूढतत्त्व भी नही छिपाते । – रामायण

जगमे सारी मानव-जातिके लिए प्रेम-भाव व परमसहिष्णुता पैदा होना ही साधुताकी सच्ची कसौटी है । – विवेकानन्द

शैतान काँप उठता है जब वह दुर्बलसे दुर्बल साधुको भी अपने जानुओके बल बैठा देखता है । – अज्ञात

साधु पुरुषसे किसीका अहित नही होता । – रामायण

सच्चा साधु वह है जो समस्त ससारसे सीखता है । – पूर्वी कहावत

साधु-जीवन

साधु-जीवनसे ही आत्म-शान्तिकी प्राप्ति सम्भव है । यही इहलोक और परलोक, दोनोका, साधन है । साधु-जीवनका अर्थ है सत्य और अहिंसामय जीवन, सयमपूर्ण जीवन । भोग कभी धर्म नही बन सकता । धर्मकी जड तो त्यागमें ही है । – गान्धी

साधुता

ऐ भाई, अपन भाईको कलेजेसे लगा, जहा साधुता है वही ईश्वरकी शान्ति है । – ह्विटियर

हमारी साधुता बडी कमजोर और अपूर्ण होनी चाहिए अगर उसने मौतका डर नही जीता । – फैनेलन

भोगोपभोगोके त्यागमे आनन्द मिलने लगना साधुताका लक्षण है ।
– शाहशुजा

दुनियामे दो चीजें है जो एक-दूसरेसे बिलकुल नही मिलती । धन-सम्पत्ति एक चीज है और साधुता-पवित्रता बिलकुल दूसरी चीज । – तिरुवल्लुवर

साधु-शीलता

वह भला है जो दूसरोकी भलाई करता है । अगर वह उस भलाईके एवज कष्टमे पड जाता है तो वह और भी भला है; अगर वह उन्हीके हाथों

कष्ट पाता है जिनकी उसने भलाई की थी, तो वह नेकीकी उस ऊँचाईपर पहुँच गया जहाँ कष्टोकी वृद्धि ही उसकी और अधिक श्रीवृद्धि कर सकती है, अगर उसे प्राणोत्सर्ग करना पडे, तो उसकी साधुशीलता पराकाष्ठाको पहुँच गयी—वहाँ तो वीरताकी परिपूर्णता हो गयी । – ब्रुयेअर

साफ-दिल

साफ-दिल किसी इलज़ामसे नही डरता । – अज्ञात

खुशमिज़ाज और दिलके साफ आदमीका काम कभी नही रुकता ।
– अज्ञात

खुशकिस्मत है व जिनका दिल साफ है, क्योकि उन्हे परमात्माके दर्शन जरूर होगे । – ईसा

सामयिक

सुचारु होनेके लिए हमारे शब्दो और कार्योंको सामयिक होना चाहिए ।
– एमर्सन

सामंजस्य

कोई भी अपने सिवा किसीके साथ पूर्ण सामजस्य स्थापित नही कर सकता । – शोपेनहोर

साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद बेकारो, सौदागरो और व्यापारिक सफीरोका मज़हब है, और उनकी उद्देश्यपूर्तिके साधन है ईटन और हेरोमे अर्ध-शिक्षित उत्साही छोकरे । – जी० आर० एस० टेलर

सावधान

कुछ जीव है जिनसे सावधान रहना चाहिए । वे है धनवान् आदमी, कुत्ता, साँड और शराबी । – रामकृष्ण परमहस

सावधानी
ज़िन्दगीका हर कदम दिखलाता है कि कितनी अहतियातकी ज़रूरत है। – गेटे

साहस
क्या ठीक है ?—यह देख लेना और फिर उसे न करना, साहसके अभाव का द्योतक है। – कन्फ्यूशियस

शारीरिक साहस जो तमाम खतरेको तुच्छ मानता है, आदमीको एक तरह-से वीर बनाता है, और नैतिक साहस, जो तमाम रायज़नीको तुच्छ गिनता है, आदमीको दूसरी तरहसे वीर बनाता है। लेकिन महान् पुरुष होनेके लिए दोनो लाजिमी है। – कोल्टन

अपना भार दूसरेपर न लादना और बिना सकोच दान करना बडी दिलेरी-का काम है। – जुन्नेद

साहस गया कि आदमीकी आधी समझदारी उसके साथ गयी। – एमसन

साहसी
वही सच्चा साहसी ह जो कभी निराश नही होता। – कन्फ्यूशियस

साहसी बनो, साहसी बनो और सवत्र साहसी बनो। – स्पेन्सर

साहित्य
साहित्यका पतन राष्ट्रके पतनका द्योतक है। – गेटे

साहित्य वह है जिसे चरस खीचता हुआ किसान भी समझ सके और साक्षर भी समझ सके। – गान्धी

सिद्ध
देह सबद्धता—बद्ध देहव्यतिरिक्तता—बद्ध, देहातीतता—शुद्ध, देहरहि-तता—सिद्ध। – विनोबा

सिद्धान्त

सिद्धान्त जीवनका ढाँचा है, सत्यका ककाल, जो पवित्र जीवनके सजीव सौन्दयसे सुडौल और सुसज्जित किया जाना चाहिए। — गॉर्डन

जोशके क्षण बडी कोशिश की जा सकती है, लेकिन लगातार छोटे प्रयास केवल सिद्धान्तके कारण होत हैं। — अज्ञात

पवित्र सिद्धान्त हमेशा पवित्र लाभोंमे प्रतिफलित होते है। — एमर्सन

मनुष्य जैसा होता है वैसे ही सिद्धान्त उसे प्रिय होते हैं, चोर, व्यभिचारी और कुचक्रीकी क्या कोई 'फिलॉसफी' नही होती? — हरिभाऊ उपाध्याय

सिद्धि

यदि कोई सद्‌गुणशीलताकी ओर प्रतिदिन शक्तिपूवक बढता जाता है तो वह अवश्य सिद्धि प्राप्त करता है। — कन्फ्यूशियस

सिपाही

सैनिकका अन्तिम और शाश्वत कतव्य दुष्टोको दण्ड दना और काहिलोको काम करनेपर विवश करना है। दूसरे देशोसे अपने देशकी रक्षा करना, जो कि आजकल उसका फर्ज है, शीघ्र समाप्त हो जायेगा। — रस्किन

जोखिमका डर छोड देना आवश्यक है किन्तु जो अकारण सकटकी ओर दौडता है वह सिपाही नही मूख है। सच्चा सिपाहीपन ईश्वर जैसे रखे वैसे रहनेमें है। — गान्धी

सिफ़ारिश

पडोसीकी सिफारिशसे स्वर्गमे जाना नरकमे जानेके बराबर है। — सादी

सीख

हर शख़्स जिससे मै मिलता हूँ, किसी-न-किसी बातमें मुझसे बढ़कर है। वही, मै उससे सीखता हूँ। — एमर्सन

मैंने बातूनसे मौन सीखा है, असहिष्णुसे सहिष्णुता, और दयाहीनसे दयालुता सीखी है। — खलील जिब्रान

सुख

जो किसीका बुरा नही चाहता और सबको समदृष्टिसे देखता है, उसे हर तरफ सुख-ही-सुख मिलता है। — नीति

इन्द्रियसुख और स्वर्ग-सुख उस सुखका सोलहवाँ भाग भी नही है जो इच्छाओंके नाश करनेसे मिलता है। — नीति

सुखमय जीवन स्वार्थमय जीवन है। दूसरोको किसी-न-किसी प्रकारका दु:ख पहुँचाये बिना सासारिक सुख नही प्राप्त हो सकता।

— हरिभाऊ उपाध्याय

गुरुके बिना ज्ञान नहीं होता, ज्ञानके बिना वैराग्य नही होता वेद-पुराण गाते हैं कि हरि भक्तिके बिना सुख नही मिल सकता। — रामायण

सन्तोष ही सर्वोत्तम सुख है। — अज्ञात

जीनेकी इच्छा ही सब दु:खोकी जननी है। मरनेकी तैयारी ही सब सुखोकी जननी है। — स्वामी रामतीर्थ

आधी दुनियाका खयाल है कि सुख, पाने और रखने और दूसरोकी सेवा लेनेमें है। परन्तु सुख है देने और दूसरोकी सेवा करनेमे।

— हेनरी ड्रमण्ड

काम सरीखी व्याधि नही है, मोह सरीखा कोई दुश्मन नही है, क्रोध सरीखी आग नही है, और ज्ञान सरीखा सुख नही है। — अज्ञात

जो अकिंचन है, शान्त-दान्त-समचित्त है, सदा सन्तुष्ट-मन है उसके लिए सब दिशाएँ सुखमय हैं। — अज्ञात

सब जग सुखी रहे ऐसी इच्छा दृढ करनेसे हम खुद सुखी होते हैं।

— विवेकानन्द

सुख-सन्तोष बाहरकी चीजोसे नहीं अन्दरके गुणोंसे मिलता है।

— अज्ञात

क्षणिक सुखको ज्ञानियोने दु ख ही बतलाया है। जो सुख अकृत्रिम है, अनादि है, अनन्त है वही सुख है।

— अज्ञात

जीवन जितना ही स्वाभाविक व समतोल होगा उतना ही सुख मिलेगा।

— हरिभाऊ उपाध्याय

यह एक महान् सत्य है आश्चर्यजनक और अकाट्य, कि हमारा सुख— भौतिक, आध्यात्मिक और शाश्वत—एक बातमे है, और वह यह कि हम परमात्माको आत्मसमपण कर दें, और अपनेको उसके, हमसे और हमारे अन्दर कुछ भी करनेके लिए, हवाले कर दें।

— श्रीमती गियोन

सुखका रास्ता नि स्वाथता और शुभ कामनाओमें-से है।

— अज्ञात

सुखका आधार पुण्य है और लाजिमी तौरसे उसकी बुनियाद सचाई होनी चाहिए।

— कॉलिरिज

तुम्हारे सुख दु खका रहस्य यह है कि या तो तुम यह सोच रहे हो कि और लोग तुम्हारे लिए क्या करें। या यह कि तुम औरोके लिए क्या कर सकते हो ?

— विलियम किंग

अधिकतम आदमियोका अधिकतम सुख नैतिकतामें है।

— प्रीस्टले

नदीका यह किनारा नि श्वास ले-लेकर कहता है 'सामनेके किनारेपर ही तमाम सुख है मुझे इतमीनान है'। नदीके सामनेका किनारा गहरी आहे भर-भरकर कहता है 'जगत्मे जितना सुख है वह तमाम पहले ही किनारे-पर है।'

— टैगोर

जिस दिन मैं ईश्वरका कोई अपराध नही करता वही दिन मेरे लिए सुखका दिन है।

— हातिम हासम

किसीको केवल सुख अथवा एकमात्र दु ख नही मिलता—दु ख और सुख रथके पहियेकी भाँति कभी ऊपर और कभी नीचे रहा करते हैं। — कालिदास

सिर्फ धर्म-जनित सुख ही सच्चा सुख है, बाकी तो सब पीडा और लज्जा-मात्र है। — तिरुवल्लुवर

सुख परिग्रहके बाहुल्यसे नही, हृदयकी विशालतासे बढता है। — रस्किन

हृदय कब सुखी होता है? जब हृदयमें प्रभु वास करते है। — जुन्नेद

सुख क्या है? प्रवासमे न रहना। — भर्तृहरि

वही सबसे सुखी है, चाहे वह राजा हो या किसान, जो अपने घरमें शान्ति पाता है। — गेटे

सच्चा सुख बाहरसे नही मिलता, अन्तरसे ही मिलता है। — गान्धी

जो सुख शुरूमे जहरकी तरह और आखिर अमृतकी तरह है, जिससे आत्मा और बुद्धिको शान्ति मिलती है वह सुख सात्त्विक है। इन्द्रियोंका सुख जो शुरूमें अमृतकी तरह और आखिरमे जहरकी तरह है, राजस सुख है। जो सुख शुरूसे आखिर तक आत्माको सिर्फ मोह, नीद, आलस्य और सुस्तीमे डाले रखता है, वह तामस सुख है। — गीता

यहाँ भी मनुष्यको सुख मिल सकता है, अगर वह सबसे बडी आपत्ति, इच्छा, का ध्वस कर डाले। — तिरुवल्लुवर

जिसे हम सही और शुभ मानें वही करनेमे हमारा सुख है, हमारी शान्ति है, न कि जो दूसरे कहे या करें उसे करनेमें। — गान्धी

सुख-दु:ख

जितनी पराधीनता उतना दु ख और जितनी स्वतन्त्रता उतना सुख। सुख-दु खके ये ही सक्षिप्त लक्षण हैं। — मनु

सुखी

सुखी वह है जिसकी वासनाएँ छूट गयी है। — हितोपदेश

यदि जीवनमे सुखी होना चाहते हो तो हमेशा भलाई करो ।

– कवि दलपतराम

सुखी वह नही है जिसे दूसरे सुखी समझें, बल्कि वह जो स्वयको सुखी समझता है । – स्पेनिश कहावत

बेवकूफोमे अलग रहनेसे आदमी सचमुच सुखी रहता है । – बुद्ध

धन धान्य लेने-देनेमे, विद्या सग्रह करनेमें, आहार-व्यवहारमे जो मनुष्य शर्म नही रखता वह सुखी होता है । – अज्ञात

ससारमे सुखी कौन ? दूसरे सब पदार्थोंसे जिसने ईश्वरको पहचान लिया है वह । – जुन्नुन

जो बिना मानसिक अशान्तिके किसी सच्चे सिद्धान्तपर चलता है उसे सुखी कहा जा सकता है । – ऐस्ट्रेंज

जो पूरी तरह स्वावलम्बी है वह सबसे ज्यादा सुखी है । – अज्ञात

वह कैसा सुखी है जो दूसरेकी मरज़ीका गुलाम नही है ! जिसका कवच उसकी ईमानदारी है और सरल सत्य जिसका सर्वोच्च कौशल है !

– सर हेनरी वॉटन

दुनियामे वही आदमी सुखी है जिसे खानेके लिए आधी रोटी मिलती है, और बैठनेके लिए थोडी-सी जगह, जो न किसीका चाकर है, न किसीका स्वामी । उससे कह दो, कि मगन रहे, उसका ससार सबसे अच्छा है ।

– शब्सतरी

बहुत-सी जगहोमे, लोगोसे मिलकर मैने पाया है कि सबसे सुखी लोग वे है जो दूसरोके लिए सबसे ज्यादा करते हैं, सबसे दु खी वे है जो कमसे कम करते है । – बुकर टी० वाशिंगटन

वह सुखी है जिसकी परिस्थितियाँ उसके मिज़ाजके अनुकूल है, लेकिन वह और भी लाजवाब है जो अपने मिज़ाजको हर परिस्थितियोके अनुकूल बना सकता है । – ह्यूम

सुधार

हालातको यूँ ही छोड दिया जाये तो वे दुरुस्त नहीं होते । — हक्सले

दुनियाको सुधारनेका एक ही प्रभावशाली तरीका है, और वह यह कि अपनसे शुरू करो । — अज्ञात

जो अपना सुधार कर लेता है वह एक दर्जन बक्की, अशक्त देशभक्तोकी अपेक्षा जनताका अधिक सुधार करता है । — लैवेटर

जो कुछ तुम दूसरेमे नापसन्द करते हो, उसे अपनेमें न रहने दो ।
— स्पैंट

समानपर सिर्फ समान ही असर करता है, इसलिए तर्कसे नही, नमूना पेश करके सुधारो, भावनाके पास भावनासे जाओ, प्रेमके सिवा और किसी प्रकार प्रेम पैदा करनेकी आशा न रखो । जो तुम दूसरोंको बनते देखना चाहते हो, वैसे स्वय बन जाओ । — एमली

जिसने अपना सुधार किया उसने दूसरोके सुधारनेमे बहुत कुछ किया, दुनिया क्यो नही सुधरी इसका एक कारण यह है कि हर कोई चाहता है कि शुरुआत दूसरे करें, और यह कभी नही सोचता कि वह स्वयं ही क्यो न करे । — आदम्स

कोई बाहरी सुधार आदमीको स्पर्श नहीं कर सकते, न उसमें परिवर्तन ला सकते हैं । सुधार तो अपने अन्दर मनका व्यक्तिगत परिवर्तन है ।
— अज्ञात

सुधार्य

अगर तू यह जानना चाहे कि जिस कामको तू करना चाहता है वह न्याययुक्त है या नहीं, तो अपनी लगनको उसे दैविक आशीर्वादके लिए पेश करने दे, अगर वह न्याययुक्त होगा, तो अपनी प्रार्थनासे तुझे अपना दिल प्रोत्साहित होता मालूम होगा, अगर अन्यायपूर्ण होगा, तो तेरा

दिल तरो प्रार्थनाको हतोत्साह करता मालूम देगा। वह काम करने लायक नही है जो या तो बरकत माँगनसे शरमाये, या सफल होनेपर शुक्र अदा करनका साहस न कर सके। — क्वार्ल्स

सुन्दर

स्वभावत सुन्दरको बाहरी गहनाकी जरूरत नही होती। — अज्ञात

मैं तुझसे प्राथना करता हूँ, कि हे प्रभो, मेरा अन्तरग सुन्दर हो।

— सुकरात

वास्तविक सौन्दय वही है जा क्षण-क्षण नवीन लगे। — अज्ञात

ओ! उस मधुर आभूषणसे जिसे सत्य देता है सुन्दरता कितनी अधिक सुन्दर दिखती है! — शेक्सपीयर

एक भारतीय दार्शनिकसे यह पूछे जानेपर कि, उसकी रायमें विश्वमे सबसे सुन्दर दो चीजें कौन-सी हैं, उसने जवाब दिया। हमारे सिरोके ऊपर सितारोका आकाश, और हमारे दिलोके अन्दर कर्त्तव्यकी भावना।

— बासेट

सुन्दरता

सुन्दरताको बाहरी जेवरको जरूरत नहीं, बल्कि जब अनाभूषित है तभी सर्वाधिक आभूषित है। — थॉमसन

सुन्दरता वही है जहाँ सत्य है, जहाँ शिव है। — अज्ञात

अच्छा स्वभाव हमेशा सुन्दरताके अभावको पूरा कर देगा लेकिन सुन्दरता अच्छे स्वभावके अभावकी पूर्ति नही कर सकती। — एडीसन

ईश्वर नेकीपर सुन्दरताकी छाप लगाता है, हर प्राकृतिक काम सुन्दर है। वीरताका हर काम नायाब है, और वह उस जगहको और पास खड़े हुए लोगोको चमका देता है। — एमर्सन

सुन्दर चीजोको इच्छा बिलकुल स्वाभाविक है। इतनी ही बात है कि इसका कोई मापदण्ड नहीं है कि सुन्दर किसे कहा जाये। इसलिए मेरा

यह खयाल बन गया है कि यह इच्छा पूरी करने लायक नहीं है। बाहरी चीजोंकी लोलुपता रखनेके बजाय हम भीतरी सुन्दरताको देखना चाहिए। अगर हमें यह आ जाये तो सौन्दर्यका विशाल क्षेत्र हमारे सामने खुल जाता है। फिर उसपर अधिकार जमानकी इच्छा मिट जाती है।

– गान्धी

लायक लोगाके आचरणकी सुन्दरता ही उनकी वास्तविक सुन्दरता है। शारीरिक सुन्दरता उनकी सुन्दरताम किसी तरहकी अभिवृद्धि नहीं करती।

– तिरुवल्लुवर

जो स्वय सुन्दर है उसका सौन्दर्य किस वस्तुसे नही बढ जाता ?

– कालिदास

सुन्दरताकी तलाशमे चाहे हम सारी दुनियाका चक्कर लगा आयें, अगर वह हमारे अन्दर नही है तो कही न मिलेगी। – एमर्सन

हिमालय सुन्दर है लेकिन उसकी सुन्दरता-विषयक मेरी कल्पना उससे भी सुन्दर है। इसका कारण क्या ? आत्माकी सुन्दरताकी बराबरी जड वस्तुकी सुन्दरता कैसे कर सकती है। – विनोबा

सुभाषित

देवभाषा मधुर है, काव्य मधुरतर है, सुभाषित मधुरतम। – अज्ञात

हर सुभाषित मधुमक्षिकाकी तरह होना चाहिए। जिसमें डक हो, शहद हो, और जिसका छोटा-सा शरीर हो। – मार्ट

जीवनको देखनेकी शक्ति दुर्लभ है उससे सबक लेना दुर्लभतर है, और उस सबकको एक नुकीले वाक्यमें घनीभूत कर देना दुर्लभतम है।

– जान मोर्ले

प्राचीन ज्ञानियोंने अपना अधिकांश आध्यात्मिक ज्ञान सुभाषितोंकी हलकी नौकाओं-द्वारा काल-धारामें प्रवाहित कर दिया है। – व्हिपिल

सृजन

आत्माको कोई चीज इतनी पवित्र, इतनी धार्मिक नहीं बनाती, जितनी कि किसी परिपूर्ण वस्तुके सृजनकी कोशिश। क्योंकि परमात्मा परिपूर्ण है, और जो कोई परिपूर्णताके लिए प्रयास करता है वह ऐसी वस्तुके लिए प्रयास करता है जो परमात्मस्वरूप है। — अज्ञात

सेवक

सुधारकका—सेवकका—धीरजके बिना क्षणमात्र भी नही चल सकता, यह याद रखो। अपनी दीवारपर लिख रखो। उसका यन्त्र बनाकर गलेमें पहनो। — गान्धी

स्वामीकी आज्ञा सुनकर जो उत्तर देता है ऐसे सेवकको देखकर लज्जा भी लज्जित हो जाती है। — रामायण

मन और शरीर तुम्हारी आत्माकी आज्ञाओंके निहायत वफादार सेवक होने चाहिए। — अज्ञात

सेवक वह है जो अपना दूसरोंको देता रहता है। जो दूसरोंका छीन लेना चाहता है वह तो लुटेरा है। — हरिभाऊ उपाध्याय

सेवा

अखण्ड नामस्मरण माने अजपा जाप माने स्वरूपावस्थान माने निरन्तर सेवा। — विनोबा

उत्तम बुद्धि रखनेकी अपेक्षा प्यासेको ठण्डे पानीका गिलास देनेका स्वभाव कहीं श्रेष्ठतर है। शैतान कुशाग्र बुद्धि है लेकिन ईश्वरका रूप उसके पास नहीं। — हॉवेल्स

जग मेरी प्रत्यक्ष सेवा करता है और मैं जगकी सेवाका सिर्फ नाम लेता हूँ। — विनोबा

लौकिक लोगोंकी सेवा नौकर-चाकर करते हैं, और अलौकिक लोगोंकी सेवा साधु, वैरागी और महान् पुरुष करते हैं। — हबहबा

किसीका दिल उसकी सेवा करके अपने हाथोंमे ले यही सबसे बड़ा हज्ज है। हजारों काबोंसे एक दिल बढकर है। — एक सूफी

चर्खेमें धर्म और अर्थ दोनो ही बराबर सँभाले जाते है। आश्रमका अस्तित्व केवल देश-सेवाके लिए ही नही, देश-सेवाके द्वारा विश्व-सेवा साधनेके लिए है और विश्व-सेवा-द्वारा मोक्ष प्राप्त करनेके लिए, ईश्वरका दर्शन करनेके लिए है। — गान्धी

महान सेवा यह है कि हम किसी जरूरतमन्दकी इस तरह मदद करें कि वह अपनी मदद खुद कर सके। — अज्ञात

सेवा-धर्म

सेवा धर्मका पालन किये बिना मैं अहिंसा धर्मका पालन नही कर सकता और अहिंसा धर्मका पालन किये बिना मै सत्यकी खोज नही कर सकता और सत्यके बिना धर्म नही। सत्य ही राम है नारायण है, ईश्वर है, खुदा है, अल्लाह है, 'गॉड' है। — गान्धी

सैकिण्ड

प्रत्येक सैकिण्ड मोती, हीरे, जवाहिरातसे जटित एक अद्भुत आभूषण है। — अज्ञात

सोच

विचार करते-करते अपनेको दीवाना न बना डालो, बल्कि जहाँ हो अपने काममें लगे रहो। — एमर्सन

सोना

क्या कोई ऐसा दुर्गम स्थान भी है जहाँ सोनेसे लदा गधा न घुस सकता हो? — मक़दूनियाँका बादशाह

सोनेकी चाभी हर दरवाजेको खोल देती है। — कहावत

चिड़ियाके पंखोको सोनेसे मढ़ दो बस वह फिर कभी आसमानमें नही उड़ सकेगी। — टैगोर

वह रहा तेरा सोना, लोगोंकी आत्माओके लिए जहरसे भी बदतर चीज।
— शेक्सपीयर

सोसाइटी

जिसे सोसाइटी कहते हैं वह विनाश है, अवसर और शक्तिकी बरबादी, रोग और असफलताकी ओर ले जानेवाली। — अज्ञात

सोसाइटी, हर जगह, अपने प्रत्येक मेम्बरकी मनुष्यताके खिलाफ षड्यन्त्र है। — एमर्सन

जन सोसाइटी मनोरंजन चाहती है, शिक्षण नही। — एमर्सन

नौजवान, तुम अपनेको सोसाइटी और अध्ययन दोनोके हवाले नही कर सकते। — अज्ञात

सौजन्य

सौजन्यका कोई बाहरी लक्षण ऐसा नहीं है जो किसी गहरी नैतिक भित्ति-पर न टिका हो। — गेटे

सौदा

बहुत-सी बातें है जिनमे एक फायदेमे रहता है और दूसरा नुकसानमें, लेकिन अगर किसी सौदेमें यह जरूरी हो कि लाभ सिर्फ एक ही पक्षको होगा तो वह वस्तु ईश्वरकी नहीं है। — मैकडोनल्ड

आदमी ही एक ऐसा जानवर है जो सौदे करता है, दूसरा कोई जानवर यह नही करता,—कोई कुत्ता अपनी हड्डीको दूसरेसे नही बदलता।
— आदम स्मिथ

सौन्दर्य

होठो और आँखोको सौन्दर्य नहीं कहते, बल्कि सबकी सम्मिलित शक्ति और पूर्ण परिणामको। — पोप

सौन्दर्य एक एकान्त बादशाहत है। — कार्नीड्स

ओ सौन्दर्य, अपनेको प्रेममें पा, दर्पणकी चापलूसीमें नहीं। — टैगोर

सर्वोत्तम सौन्दर्य ईश्वरमें है। — विंकिलमैन

अगर सौन्दर्यके साथ सद्गुण है तो वह दिलका स्वर्ग है, अगर उसके साथ दुर्गुण हो तो वह आत्माका जहन्नुम है—वह ज्ञानीकी होली और मूर्खकी भट्टी है। — क्वार्ल्स

सौन्दर्य आत्मदेवकी भाषा है। — स्वामी रामतीर्थ

दुनियामे सबसे स्वाभाविक सौन्दर्य ईमानदारी और नैतिक सचाई है।
— शैफ्ट्सबरी

सौन्दर्यका आदर्श सादगी और शान्ति है। — गेटे

गधेको गधा सुन्दर लगता है और सूअरको सूअर। — कहावत

सौभाग्य

वह बड़ा सौभाग्यशाली है जो अपनी इच्छाओ और शक्तियोंके बीचकी खाईकी चौडाईको जल्दी जान लेता है। — गेटे

सौभाग्य हमेशा परिश्रमके साथ दिखाई देता है। — गोल्डस्मिथ

स्त्री

काममे दासी, सम्भोगमे वेश्या, भोजन कराते समय जननी और विपद्में बुद्धि देनेवाली ही स्त्री है। ऐसी स्त्री ससारमे दुर्लभ है। — अज्ञात

स्त्री पतिको मारती नही है, लेकिन स्त्रीका मिजाज पतिपर हुकूमत करता है। — रूसी कहावत

यह एक राय थी किस साधु पुरुषकी, मै नही जानता, कि दुनियामें केवल एक अच्छी स्त्री है, और उसकी सलाह थी कि हर विवाहित आदमीको सोचना चाहिए कि उसकी पत्नी ही वह है। — अज्ञात

स्थान

मजबूत पहियोवाला रथ समुद्रके ऊपर नही दौडता, और न जहाज खुश्क जमीनपर तैरता है। — तिरुवल्लुवर

मगर पानीके अन्दर सर्वशक्तिशाली है, किन्तु बाहर निकलनेपर वह दुश्मनोंके हाथका खिलौना है। — तिरुवल्लुवर

स्थितप्रज्ञ

जो स्थितप्रज्ञ अथवा होशियार है वह किसीका बुरा नही चाहेगा, और अन्तकालमें भी अपने दुश्मनके भलेके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करेगा।

— गान्धी

कछुआ जैसे अपने अगोको कवचमे सिकोड लेता है, उसी तरह जो अपनी इन्द्रियोको विषयोमे-से खीचकर आत्माकी ढालके नीचे कर लेता है वह स्थितप्रज्ञ है। — गीता

स्नेह

जो मनुष्य ईश्वरको छोडकर दूसरेसे स्नेह करता है वह क्या कभी सुखी हो सकता है? — आविस

जिसका जिसपर सत्य स्नेह है वह उसे जरूर मिलेगा, इसमें कुछ भी सन्देह नही है। — रामायण

स्पृहा

स्पृहा तीन प्रकारकी होती है—भोगने, बोलने और देखनेकी। भोग भोगते समय ध्यान रखना कि ईश्वर देख रहा है, बोलते समय ध्यान रखना कि सत्यका विनाश न हो, और देखते समय ध्यान रखना कि साधुता दूषित न हो जाये। — हातिम हासम

स्याही

स्याहीकी एक बूँद दस लाख आदमियोको विचारमग्न कर सकती है।

— बायरन

स्वच्छता

जो सचमुच भीतरसे स्वच्छ है वह बाहरसे अस्वच्छ हो ही नही सकता।

— गान्धी

स्वच्छता देखकर पवित्रताका अन्दाजा लगाना जिल्द देखकर किताबपर राय देनेके समान है। — विनोबा

स्वतन्त्र

जबतक ईश्वरकी मरजी हमारा नियम है, हम एक किस्मके महज शरीफ गुलाम हैं जब उसकी मरजी हमारी मरजी हो जाती है, हम स्वतन्त्र हैं।
— मैक्डोनल्ड

'किसीसे कुछ भी नही लेना' ऐसा निश्चय जिसके चित्तमे आ गया हो वही मनुष्य सचमुच स्वतन्त्र है। — विवेकानन्द

स्वतन्त्रता

स्वतन्त्रता शक्तिके ही साथ रहती है। — शिलर

स्वतन्त्रता राष्ट्रोका शाश्वत यौवन है। — फौय

स्वागत ! स्वतन्त्रते, स्वागत ! जिन्दगी और आत्माकी अमरताके बाद ईश्वरकी सर्वोत्तम देन। — थॉम्सन

स्वतन्त्रता देवीके उपासक तोतेको पिजडेमे नही रखा जा सकता।
— विनोबा

स्वधर्म

हर आदमीका जो 'स्वभावनियत' (स्वभावसे तय) काम है वही उसका 'स्वधर्म' है। उसके खिलाफ उसे किसी दूसरे काम या धर्मकी तरफ नही जाना चाहिए। — गीता

मै जो करता हूँ उसे सबको करना ही चाहिए अथवा सब उसे कर सकते है, यह समझना महादोष है। जो बोझा भीम उठा सकता है वह मै उठाने लगा तो उसी क्षण मुझे 'राम' कहना पडेगा। — गान्धी

अपने-अपने स्वभावके मुताबिक काम (स्वभावनियत कर्म) सच्चे दिलसे और ईश्वरके लिए (ईश्वरार्पण) करता हुआ हर आदमी अपने ही रास्तेसे सिद्धि या कमाल हासिल कर सकता है। यही हर आदमीका 'स्वधर्म' है। — गीता

स्वभाव

जिसका मक्खीका-सा स्वभाव है वह 'कीचड' और 'शक्कर' दोनोंपर जाकर बैठता है। — शीलनाथ

हर आदमी खुद अपने 'स्वभाव'को देखकर वह काम करे जो उसके स्वभावके मुताबिक हो, यानी जिसकी तरफ उसमे काबिलियत हो।

— गीता

स्वर्ग

बोलना नही बल्कि चलना हमको स्वर्ग पहुँचायेगा। — हैनरी

स्वर्गकी अच्छी तरह कद्र कर सकनेके लिए आदमीके लिए अच्छा है कि वह करीब पन्द्रह मिनिट नरकमे रह ले। — चार्लेटन

मरनेके बाद स्वर्गमे रहनेके लिए हमे मरनेसे पहले स्वर्गमे रहना होगा।

— ह्वाईटिंग

हम पृथ्वीसे तो परिचित है पर अपने अन्दरके स्वर्गसे बिलकुल अपरिचित है। — गान्धी

नौ आस्मानोमे आठ स्वर्ग है ? नवाँ कहाँ है ? इनसानके सीनेमे।

— अज्ञात

स्वराज्य

हिंसासे राज्य मिलेगा, पर स्वराज्य मिलेगा अहिंसासे। — विनोबा

सच्चा स्वराज्य तो अपने मनपर राज्य है। उसकी कुंजी सत्याग्रह, आत्मबल अथवा दयाबल है। इस बलको काममे लानेके लिए सर्वथा स्वदेशी बननेकी जरूरत है। — गान्धी

स्वरूप

जिसने अपने वास्तविक स्वरूपको जान लिया उसने ईश्वरको जान लिया।

— अज्ञात

स्वाद
मेरा तो अनुभव यह है कि जिसने स्वादको नही जीता वह विषयको नही जीत सकता । – गान्धी

स्वामित्व
सब आदमी दूसराके मालिक बनना चाहते है अपना स्वामी कोई नही । – गेटे

मै भी मालिक तुम भी मालिक तो फिर गधोको कौन चलायगा । – अरबी कहावत

स्वार्थ
कोई दुर्गुण या अपराध ऐसा नही है जो खुद पसन्दीसे पैदा न होता हो । – अज्ञात

स्वार्थमे सद्गुण ऐसे खो जाते है जैसे समद्रमे नदियाँ । – रोश

तमाम प्राकृतिक और नैतिक पापोका मूल और स्रोत स्वार्थ है । – एमर्सन

स्वावलम्बन
क्या व्यक्ति और क्या राष्ट्र हर एकको अपने पैरोपर खडा रहना सीखना चाहिए । – विवेकानन्द

अपने पैरोपर खडा हुआ किसान अपने घुटनोपर झुके हुए जेण्टिलमैनसे ऊंचा है । – डॉ० फ्रैंकलिन

खुद ही अपनी परीक्षा कर अपनेको अपने-आप उठा । इस प्रकार तू विचारशील हो अपनी रक्षा स्वयं करता हुआ दुनियामे सुखपूर्वक विहार करेगा । – बुद्ध

जो पूर्णत स्वावलम्बी है वह सबसे ज्यादा सुखी है । – अज्ञात

जो काम परवश हो उनसे यत्नपूर्वक दूर रहे लेकिन जो आत्मवश हो उनमे यत्नपूर्वक लगा रहे । –अज्ञात

ह

हक़

अर्थ कहता है, 'हकका रक्षण करना कर्त्तव्य है।' धर्म कहता है, 'कर्त्तव्य करते रहना हक है।' — विनोबा

हक यह है कि एक ही हकीकतकी आवाज सारी दुनियामें गूँज रही है। गीता हिन्दुस्तानकी कुरान है और कुरान अरबकी गीता है।

— ख्वाबुल्लहशाह कलन्दर

हंस

चाहे दुनिया कमलरहित हो जाये या कमल उगें ही नहीं, मगर हंस क्या कभी मुरगेकी तरह घूरेको कुरेदने जायेगा। — अज्ञात

हंस श्मशानमें नहीं खेलता। — अज्ञात

हँसना

जो जवान रोया नहीं है, जंगली है, और जो बूढ़ा हँसता नहीं है बेवकूफ है। — जार्ज सान्तायन

बार-बार और ज़ोर-ज़ोरसे हँसना मूर्खता और बदतहज़ीबीकी निशानियाँ हैं।

— चैस्टर फ़ील्ड

आदमीको इसकी बड़ी अहतियात रखनी चाहिए कि वह इतना ज्यादा अक्लमन्द न हो जाये कि हँसने-जैसी महान् खुशीसे अलग रहने लगे।

— एडीसन

हानि

बुद्धिमान् कभी अपनी हानिपर रोते-धोते नहीं बैठते, बल्कि प्रसन्नतापूर्वक अपनी क्षतिको पूर्ण करनेका उपाय करते हैं। — शेक्सपीयर

हानि क्या है? समयपर चूकना। — भर्तृहरि

जो निन्दनीय मनुष्यकी प्रशंसा करता है या प्रशंसनीय मनुष्यकी निन्दा करता है वह अपने ही मुँहसे अपनी हानि करता है—उसे सुख नहीं प्राप्त होता। — बुद्ध

हार

हारसे दिलोमें हटाव पैदा होता है, क्योंकि जिसकी हार हुई है वह असन्तुष्ट बना रहता है। सुखी वही है जो हार-जीतकी परवाह नहीं करता। — धम्मपद

हित

जितना हित माता पिता या दूसरे भाई-बन्धु कर सकते है, उससे कहीं अधिक मनुष्यका संयत-चित्त करता है। — बुद्ध

हिम्मत

कठोरतम हृदयको भी पिघला देनेकी मुझे उम्मीद है अतः मैं प्रयत्नशील रहता हूँ। — गान्धी

आदमीकी आधी होशियारी उसकी हिम्मतमें है। — अज्ञात

हिंसक

देखो, वह आदमी जिसका सड़ा हुआ शरीर पीपदार जख्मोंसे भरा हुआ है, गुजरे जमानेमें खून बहानेवाला रहा होगा।

— तिरुवल्लुवर

हिंसा

हिंसा बुरी है पर गुलामी उससे भी बुरी है। — अज्ञात

हिंसा आत्म-घाती है और उसके सामने यदि प्रतिहिंसा न हो तो वह जिन्दा नहीं रह सकती। — गान्धी

दूसरोको सतानेके बराबर कोई नीचता नहीं। — तुलसी

जहाँ सिर्फ कायरता और हिंसाके बीच किसी एकके चुनावकी बात हो वहाँ मैं हिंसाके पक्षमें राय दूँगा। — गान्धी

कायरतासे तो हिंसा भली। क्योंकि हिंसा क्या ?—विकृत वीरता, वह तो कायरतासे हजारगुना अच्छी है। उसमे देहका मोह और स्वार्थ इतना नही। — गान्धी

जिनको हिंसा करना पसन्द है उनके पापोकी सीमा नही है। — रामायण

हिंसा श्रेष्ठ कभी नही कही जा सकती। उसमे भलाई इतनी ही ह कि वह कायरतासे कुछ उच्च बुराई है। — गान्धी

हृदय

लोगोके दिलोको एक-दूसरेके खिलाफ नही भिडाना चाहिए, बल्कि एक-दूसरेसे मिलाना चाहिए, और सबोको सिर्फ बुराईके खिलाफ लगाना चाहिए। — कार्लाइल

बडे रूप, बडे बल और बडे धनसे वास्तवमे और सचमुच कोई महान् प्रयोजन नहो निकलता, सम्यक् हृदय सबसे बढकर है। — फ्रैंकलिन

हृदय-दौर्बल्य

दिलके दुर्बल आदमीका अपना नुकसान तो होता ही है वह जिस काममे पडता है उसकी भी हानि हुए बगैर नही रहती। — विवेकानन्द

दुर्बल मनुष्यको किसी भी काममे सफलता मिलना शक्य नही है। दुर्बलकी कौडीकी भी कीमत नहीं। मनकी दुर्बलता सारी गुलामीकी जड है, बल्कि साक्षात् मौत है। — विवेकानन्द

■

क्ष

क्षणिक

धन कमाना तमाशा देखनेके लिए आयी हुई भीडके समान है, और धनका क्षय हो जाना उस भीडके तितर-बितर हो जानेके समान है।

— तिरुवल्लुवर

समृद्धि क्षणिक चीज है। अगर तुम समृद्धिशाली हो गये हो तो ऐसे काम करनेमें देर न करो जिनसे स्थायी लाभ पहुँच सकता है।

— तिरुवल्लुवर

वर्षाबिन्दुने चमेलीके कानमे कहा, मुझे अपने हृदयमे हमेशा रखना।' चमेलीने आह भरकर कहा, 'अफसोस', और जमीनपर आ पडी।

— टैगोर

क्षत्रिय

प्रारम्भिक व अन्तिम अवस्थामे मनुष्य कैसा ही हो, पूर्णत्व प्राप्तिके लिए मध्य जीवनमे क्षत्रिय (योद्धा) होना लाजिमी है। — अरविन्द घोष

क्षमा

जो लोग बुराईका बदला लेते है, बुद्धिमान् उनकी इज्जत नही करते, मगर जो अपने दुश्मनोको माफ कर देते है, वे स्वर्णकी तरह बहुमूल्य समझे जाते है। — तिरुवल्लुवर

क्षुद्र

क्षुद्र लोग तुम्हारी कृतियोका नही, तुम्हारी त्रुटियोका हिसाब रखते हैं।

— कहावत

क्षुद्र जीव जिसको अपना लेता है उसकी तुच्छतापर ध्यान नही देता।

— भर्तृहरि

■

ज्ञ

ज्ञान

कोई दूसरेकी विद्वत्तासे विद्वान् भले ही बन जाये, परन्तु उसे ज्ञानी अपने ही ज्ञानसे होना पडेगा । — अज्ञात

हर क्षण शिक्षण देता है, और हर पदार्थ, क्योकि ज्ञान हर रूपमे भरा हुआ है । —एमर्सन

ज्ञान तीन प्रकारसे मिल सकता है मननसे जो कि सर्वोत्कृष्ट है, अनुसरणसे, जो कि सबमे सरल है, अनुभवसे जो कि सबसे कडवा है ।

— कन्फ्यूशियस

उठो, जागो और श्रेष्ठ पुरुषोके पास जाकर ज्ञान ले लो । इस मार्गसे जाना छुरीकी तेज धारपर चलना है । — उपनिषद्

जिस ईश्वरका साक्षात्कार हुआ है, उसके बिना जाना कुछ भी नही रहा । जिसने परमात्माको जान लिया उसने जानने योग्य सब कुछ जान लिया ।

— आविस

सबको अपनी तरह समझना और सबके अन्दर एक ईश्वरके दर्शन करना, यही ज्ञानकी आखिरी हद है । इस ज्ञानसे बढ़कर आदमीको पाक करने-वाली दूसरी चीज़ इस दुनियामे नही है । इसके लिए महज्ञ श्रद्धाकी और अपनी इन्द्रियोको क़ाबूमें रखनेकी जरूरत है । — गीता

ज्ञान-प्राप्ति उसके लिए सरल है जो समझदार है । — बाइबिल

ज्ञान पाप हो जाता है, यदि उद्देश्य शुभ न हो । — प्लेटो

जिस समय लोग मुझे 'उन्मत्त' और 'मस्त' कहकर मेरी निन्दा करेंगे तभी मेरे मनमें गूढ तत्त्वज्ञानका उदय होगा । — सादिक़

ज्ञान माने आत्मासे आत्माको जानना । — श्री समर्थ

जिस प्रकार स्वच्छ दर्पणमें मुँह साफ दीखता है उसी प्रकार शुद्ध चित्तमें ज्ञान प्रकट होता है । — शकराचार्य

सर्वोच्च ज्ञान क्या है ? सत्यका सबसे छोटा और सबसे साफ रास्ता।

— कोल्टन

ज्ञान आनन्द है। — कन्फ्यूशियस

ज्ञानका पहला काम असत्यको मालूम करना है, दूसरा सत्यको जानना।

— लेकटेण्टियस

ईश्वरके पास अनन्त ज्ञान है दूसरोंके पास वही अनन्त ज्ञान बीजरूप है।

— विवेकानन्द

जानना काफ़ी नहीं है, ज्ञानसे हमें लाभ उठाना चाहिए, इरादा करना काफी नहीं है, हमें करना चाहिए। — गेटे

जहाँ पूर्णज्ञान और तदनुसारिणी क्रिया है, वहाँ नीति, विजय, लक्ष्मी और अखण्ड वैभव है। — गीता

हमारा आखिरी कल्याण ज्ञानमें है — सुकरात

द्रव्य-यज्ञसे ज्ञान-यज्ञ श्रेयस्कर है। तमाम कार्योंकी परिसमाप्ति ज्ञानमें होती है। — गीता

पहलेके अनुभवसे नया अनुभव ले सकना इस क्रियाको ज्ञान कहते हैं।

— विवेकानन्द

जब आदमीको सच्चा ज्ञान हो जाता है, तो वह ईश्वरको दूरकी चीज नहीं समझता। तब वह उसे 'वह' की तरह नहीं, 'यह' की तरह, यहाँ अन्दर—अपनी आत्माके अन्दर—अनुभव करता है। वह सबमें है, जो कोई उसे तलाश करता है उसे वहीं पाता है। — रामकृष्ण परमहंस

वही ज्ञान सच्चा ज्ञान है जिससे मन और हृदय पवित्र हो, बाकी सब ज्ञानका विपर्य्यास है। — रामकृष्ण परमहंस

ज्ञान और भक्तिमें कुछ भेद नहीं है। दोनों ही भव-सम्भव दुःखोंका नाश करते हैं। रामायण

जिस ज्ञानसे मनुष्य अलग-अलग सब जीवोमे एक ही अविनाशी आत्माको देखता है वह सात्त्विक ज्ञान कहलाता है। – गीता

जबतक ईश्वर बाहर और दूर दीखता है तबतक अज्ञान है, जब ईश्वरकी अनुभूति अपने अन्दर होने लगे तभी समझो कि सच्चा ज्ञान प्रकट हो गया। – रामकृष्ण परमहस

ईश्वरीय ज्ञान विश्वास-अनुसारी है। जहाँ विश्वास कम है, वहाँ अधिक ज्ञानकी आशा रखना व्यर्थ है। – रामकृष्ण परमहस

मैने देख लिया है कि जो ज्ञान तर्क करनेसे आता है एक प्रकारका है, और जो ध्यानसे आता है बिलकुल भिन्न प्रकारका है और जो ईशसाक्षात्कार होनेपर रोशन होता है वह और ही प्रकारका है। – रामकृष्ण परमहस

जिन्हे ईश्वरकी स्तुति और ईश्वरका स्मरण करनेके बदले लोगोको शास्त्रोंके वचन सुनाना ही अच्छा लगता है प्राय उन सबका ज्ञान ऊपरी है, जीवन सारहीन है। – मलिक दिनार

ईश्वरने जिसे परमार्थ ज्ञानमे श्रेष्ठ बनाया है, वह पापमे पडकर अपना पतन न होने दे यह उसका पहला कर्तव्य है। – अबु उस्मान

समझो ! क्यो नहीं समझते ? —परलोकमें सम्बोधिका होना वास्तवमे दुर्लभ है। बीती हुई रात्रियाँ वापस नहीं आतीं जीवन भी बारबार मिलना सुलभ नही है। – महावीर

रातको कुत्तोने भौंक-भौंककर नीद खराब कर दी, इससे भलेमानसोको 'दु ख' हुआ, लेकिन उस भौंकनेसे आये हुए चोर भाग गये, ऐसा दूसरे दिन सुबह जाननेपर 'सुख' हुआ। विनोबा

जिसे समझ है वह जानता है कि विद्वत्ता नहीं, बल्कि उसे उपयोगमें लानेकी कलाका नाम ज्ञान है। – स्टील

ज्ञानकी अचूक निशानी यह है कि वह साधारणमें असाधारणके दर्शन करता है। — एमर्सन

ज्ञानकी बातें सुनकर जो उनपर अमल करता है, उसीके अन्तःकरणमें ज्ञान-ज्योति प्रकट होती है। जो सुनकर भी उनपर अमल नहीं करता उसका ज्ञान तो बातों में ही रहता है। — अबु उस्मान

बादल चाहे पदवियाँ और जागीरें बरसा दें दौलत चाहे हमें ढूँढ़े, लेकिन ज्ञानको तो हमें ही खोजना पड़ेगा। — यंग

काम क्रोधको आपसमें लड़ाकर मारना इसमें ज्ञानका कौशल है। — विनोबा

ज्ञानी

जो उन बातोंको नहीं जानता जिनका जानना उसके लिए उपयोगी और आवश्यक है, अज्ञानी है, चाहे फिर वह और कुछ भी क्यों न जानता हो। — टिलटसन

ज्ञानवानके ये लक्षण हैं, किसीकी निन्दा नहीं करना, किसीकी स्तुति नहीं करना, किसीको दोष नहीं देना, अपने विषयमें या अपने गुणोंके विषयमें नहीं बोलना। — एपिक्टेटस

ज्ञानी पुरुष [illegible] अपनेसे आशा रखता है; मूर्ख दूसरोंकी ओर ताकता है। — जीन पॉल

ज्ञानी लोग तुम्हारा तमाम गुप्त इतिहास तुम्हारी आँखोंमें चालमें और बरतावमें बड़ी तेजीसे पढ़ लेते हैं। — एमर्सन

ज्ञानी वह जिसके लिए मानापमान कुछ नहीं और जो सबमें ब्रह्मरूप [illegible]ता है। — रामायण

'ज्ञानी पाप नहीं कर सकता, यह उसकी अपूर्णता है' इस अपूर्णतामें ही उसकी पूर्णता है। — विनोबा

जो ज्ञानियोके साथ चलता है अवश्य ज्ञानी हो जायेगा। — सुलैमान

सुन्दर-सुन्दर भाषण देनेसे ही कोई ज्ञानवान् नहीं हो जाता। जो कोई शान्त है, मैत्रीपूर्ण है, और निर्भय है वह ज्ञानी है। — धम्मपद

मूर्ख लोग सुखमें हर्षते और दुःखमे बिलखते है, ज्ञानी दोनों हालतोंमें समभाव धारण करते हैं। — रामायण

कोई सासारिक भय ज्ञानी मनुष्यके दिलको नहीं दहला सकता, चाहे वह उसके कितने ही निकट पहुँच जाये। जैसे कोई तीर पत्थरकी विशाल ठोस शिलाको नही वेध सकता। — योगवासिष्ठ